तुमि विद्या तुमि धर्म्म

तुमि हृदि तुमि मर्म्म

त्वं हि प्राणाः शरीरे



महान

राष्ट्र-गीत

वन्दे मातरम्

को

शतान्दी के अवसर पर शत शत प्रणाम



श्रीमती चन्द्रा त्रिपाठी

वाराणसी

वाणी विद्या दायिनी नमामि त्वाम्

वन्दे मातरम्

शिक्षा. विज्ञान. की सेवा में ५२ साल से रत

दी एजुकेशनल सप्लाइंग कम्पनी

बुलानाला-वाराणसी

महान राष्ट्र गीत

का

अभिनन्दन करते हैं

ग्रामः लैबइक्विप
फोन : ६३७८९
५३०१३ (नि०)

बाहुते तुमि मा शक्ति

वन्दे मातरम्

मन्त्र की शताब्दी के अवसर पर

वन्दना



कन्हैया लाल गुप्त

बनारस बीड मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी

मोती भवन

बी. एच. यू. मार्ग

वाराणसी—५

कमला कमलदल विहारिणी

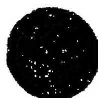
वाणी विद्या दायिनी. नमामि त्वाम्

नमामि कमलां अमलां अतुलाम्

सुजलां सुफलां मातरम्

वन्दे मातरम्





प्रचारक बुक क्लब

हिन्दी प्रचारक संस्थान, पो. बा. १०६, वाराणसी–१

क्या और क्यो ?

- देश मे दिन-प्रतिदिन पाठकीय शक्ति का ह्रास हो रहा है। पाठकों की यह शिकायत है कि अच्छा, सुरुचिपूर्ण स्वस्थ साहित्य उनकी क्रयशक्ति के बाहर है। दस साल के अन्दर ही पुस्तको का मूल्य दुगुना-तिगुना हो गया है। इसका सीधा असर अच्छी पुस्तकों के प्रकाशन पर भी पडा। महँगाई के कारण प्रकाशन में भीषण कटौती हुई और इसके फलस्वरूप नये प्रतिभाशाली लेखकों को समुचित प्रोत्साहन से बंचित होना पड़ा।
- प्रचारक बुक क्लब की योजना उपरोक्त बातों को ध्यान मे रखकर बनायी गयी है, जिसके तीन मुख्य उद्देश्य हैं :—
  - * हिन्दी में लिखे जानेवाले सर्जनात्मक साहित्य के प्रकाशन को प्रोत्साहन तथा पठन रुचि का विस्तार।
  - * पाठकों को कम मूल्य मे अच्छी स्वस्थ पुस्तकें उपलब्ध कराना।
  - * नये प्रतिभाशाली लेखकों को प्रकाश में लाना।
- प्रचारक बुक क्लब हर माह लगभग १००० पृष्ठों की चार किताबों का एक सेट निकालेगा जिसे वह बुक क्लब के सदस्यों को वी० पी० पी० द्वारा भेजेगा। इस प्रकार पाठक सदस्य घर बैठे हर महीने बीस रुपये की पुस्तकें डाक व्यय सहित केवल दस रुपये में पा सकेंगे।
- 'प्रचारक बुक क्लब' का सदस्य बनने के लिए छपे कूपन के आवेदनपत्र को भरकर साथ मे दो रुपये बतौर सदस्यता शुल्क देना होगा। सदस्यों को हर महीने चार पुस्तकें घर बैठे मिला करेंगी।

अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आदत डालिए !

लोग क्या कहते हैं ?

१ योजना बड़ी अच्छी लगी। सफलता की कामना है।
—आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

२. सत् साहित्य कम मूल्य में उपलब्ध कराने की आपकी यह योजना अभिनन्दनीय है।
— करुणापति त्रिपाठी

३. पुस्तके अत्यन्त सस्ती और साहित्य उच्चकोटि का है। निश्चित ही हिन्दी जगत इस योजना का स्वागत करेगा। — प्रभाकर माचवे

४. इस अद्भुत एवं उच्चकोटि की योजना के लिए बधाई
—सिद्धेश्वर प्रसाद (ऊर्जा उपमंत्री, भारत सरकार)

५ मै तो सोच ही रहा था कि हिन्दी मे ऐसी योजना प्रारम्भ करनी चाहिए। —सुमित्रानन्दन पंत

६. इस योजना से नये पाठकों एवं नयी प्रतिमावों की खोज सम्भव है। —प० विद्यानिवास मिश्र

प्रचारक बुक क्लब की सदस्यता के लिए आदेश कूपन

मान्यवर,

प्रचारक बुक क्लब परियोजना के अन्तर्गत हम स्थायी ग्राहक बनना चाहते है।

हम धनादेश संख्या ...... दिनांक...... के द्वारा (अथवा नकद दो रुपये भेज रहे हैं। कृपया हमे प्रचारक बुक क्लव का स्थायी ग्राहक बना लें और निम्नलिखित पते पर बुक क्लब के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकों की वी०पी०पी० नियमतः भेजते रहें। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपकी भेजी वी०पी०पी० निश्चित ही छुड़ा ली जायेगी।

हमारा स्थायी नाम पता .... भवदीय

....

.... दिनांक..............

भारत की पहली बुक क्लब योजना

वन्दे मातरम्

को सौ बार वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्

राष्ट्रीय बचत संगठन उत्तर प्रदेश

की

पुष्पांजली

२५ सूत्रों की माला

आत्मनिर्भरता

अधिक योगदान

(रामजी द्विवेदी)
उपाध्यक्ष

राज्य परामर्शदाता समिति राष्ट्रीय बचत
उत्तर प्रदेश • इलाहाबाद

शुभ्रज्योत्सना

वन्दे मातरम्

को

उत्तर प्रदेश दुग्ध सहकारी संघ

की

सुमनांजली

द्रुम दल शोभिनीम्

वन्दे मातरम्

प्रदेश का २ करोड़ ११ लाख वृक्षों से शृङ्गार

वृक्ष बचाओ

वृक्ष संरक्षण

बहुवृक्ष द्वारा पुण्यार्जन

लगे वृक्षों का संरक्षण

वन विभाग

निर्देशक एवं समन्वयक वृहत वृक्षारोपण परियोजना
द्वारा

वन्दे मातरम्

प्रेरक उद्घोष

बढ़ते कदम

उत्तर प्रदेश सरकार जन सेवा में निरत

किसानों के लिये

- उर्वरक व्यवस्था
- पौधशाला
- सिंचाई सुविधा
- सघन खेती
- सिंचाई ग्रिड
- सीमान्त कृषक योजना

गोबर गैस संयन्त्र

नागरिकों के लिये

- भवन निर्माण
- आवास विकास
- किराया नियंत्रण
- सस्ता गल्ला

मूल्य नियन्त्रण के लियें

- राशनकार्ड
- छात्रावासों में वस्तु सुलभता
- नियन्त्रित मूल्य के वस्त्र
- डबलरोटी, सीमेण्ट, कोयला, मिट्टी के तेल मूल्य नियन्त्रण
- आवश्यक वस्तु आदेश
- मूल्यदरों की कमीकरने के आदेश
- गैरसरकारी समितियां और मानिटरिंग सेल

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित

वन्दे मातरम्

नमामि त्वां सुखदां वरदां मातरम्

ई० सेफ्टन राण्ड कं० (प्रा० लि०) मिर्जापुर

वन्दे मातरम्

भारत माता की सेवा में

वंदना सहित रत

क्रय-विक्रय एवं प्रक्रियात्मक सहकारी समिति लि०

प्रधान कार्यालय–विशेश्वरगंज, वाराणसी

फोन : ६५८३१

शाखा—सहकारी भवन, नदेसर वाराणसी

फोन ६५८४६

रामनयन त्रिपाठी
प्रशासक

उमाशंकर राय
सचिव

वन्दे मातरम् वन्दे मातरम् वन्दे मातरम् वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्
१०० १०० १०० १०० १००

१ ० ० व न्दे मा त र म् १ ० ०



वन्दे मातरम्

शताब्दी समारोह

(१८७५ - १९७६)

स्मारिका



● ***मातृदर्शन*** :–अश्विन शुक्ल अष्टमी
संवत् १९३२
बुधवार शाके १७९७
(७ अक्टूबर १८७५)

● ***मंत्र गीतावतरण*** :–
रविवार, कार्तिक शुक्ल नवमी सवत् १९३२
(जगद्धात्री पूजा) शाके १७९७
(७ नवम्बर १८७५)

● ***मन्त्र प्रभाव आरंभ*** :–
(७ अगस्त १९०५)

● ***मन्त्र फल*** :–
(१५ अगस्त १९४७)

● ***मन्त्र शताब्दी समारोह*** :–
शुक्रवार १ अक्टूबर (महानवमी) से
रविवार, ३१ अक्टूबर (अक्षयनवमी)
१९७६ तक

१ ० ० व न्दे मा त र म् १ ० ०

१०० १०० १०० १०० १००
वन्दे मातरम् वन्दे मातरम् वन्दे मातरम् वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्

• **वन्देमातरम् शताब्दी समारोह समिति**

२०२ रामापुरा, वाराणसी-२२१००१

द्वारा

महामन्त्र को विनीत पुष्पांजली

• सम्पादन— श्री विश्वनाथ मुखर्जी (प्रधान सपादक)
श्री कृष्ण नाथ
श्री जगदीश अरोड़ा
श्री शंभूनाथ मिश्र (परामर्श)
श्री ईश्वरदेव मिश्र (परामर्श)
डा. भानुशंकर मेहता (कार्यकारी सपादक, मुद्रक, प्रकाशक)

• आवरण सज्जा— श्री शिवराज

• फोटो :— श्री ब्राइट स्टूडियो
श्री कुमार स्टूडियो
श्री विश्वनाथ मुखर्जी

• मुद्रण :— श्री वेरोनिका प्रिंटर्स
श्री सुदर्शन मुद्रण
श्री अध्यापक प्रेस

यह
कृतित्व
अर्पित है
उन सभी शहीदों की स्मृति को
जो 'वन्दे मातरम्' कहकर
अमर हो गये

११—अगस्त १९०८	शहीद खुदीराम बोस
१९०८	शहीद कन्हाई लाल दत्त
१९०९	शहीद मदन लाल धींगरा
१९१४	शहीद मास्टर अमीर चन्द
,,	शहीद अवध बिहारी
,,	शहीद बाल मुकुन्द—रामरक्खी
,,	शहीद बसन्त कुमार
१९१७	शहीद डा. अरुण सिंह
१७—दिसम्बर १९२७	शहीद रामप्रसाद बिस्मिल
,,	शहीद डा. रोशन सिंह
१२—फरवरी १९३४	शहीद सूर्य सेन
२७—सितम्बर १९४३	शहीद मानकुमार बसु ठाकुर
,,	शहीद नंद कुमार डे
,,	शहीद दुर्गादास राय चौधरी
,,	शहीद निरंजन बरुआ
,,	शहीद चित्तरंजन मुखर्जी
,,	शहीद फणि भूषण चक्रवर्ती
,,	शहीद सुनील कुमार
,,	शहीद काली पद एंच
,,	शहीद वीरेन्द्र मोहन मुखर्जी

तथा ज्ञात अज्ञात नाम अनेक ***शहीद***

अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं सदी
के
स्वातंत्र्य - सेनानी

दूढिया बाघ
भूषण सिंह
बुलाकी शाह
अचल सिंह
सरदार दुल्ला
रानी चेनम्मा
रायण्णा
मंगल पांडे
गोविन्द चरण चौधरी
वजीर अली
भवानी शंकर
जगन्नाथ घल

मजनू शाह
तीतू मीर
विजय राम राजे
दुदू मियाँ
शायस्सी राजा
वेलूथपी
तीरथ सिंह
नूरुलुद्दीन
शमशेर गार्जी
सुरेन्द्र साई
गंगानारायण
गदाधर सिंह

सिद्धु और कान्हू
नाना साहब
कुमार रुपचंद
लक्ष्मी बाई
तांतिया टोपे
मौलवी अहमद शाह
कुंवर सिंह
अमर सिंह
रामसिंह कूका
टिकेन्द्र जीत
बिरसा मुण्डा

वासुदेव बलवंत फडके
तथा अन्य अनेक

—:●:—

शहीदों की टोली
बीसवीं सदी

सरदार भगत सिंह
राजगुरु
सुखदेव
चंद्रशेखर आजाद
रामप्रसाद बिस्मिल
ऊधम सिंह
भगवतीचरण व्होरा
गोपी मोहन साहा

खुदी राम बोस
चाफेकर बंधु
कन्हाईलाल दत्त
मदनलाल धींगरा
डॉ. रोशन सिंह
यतीन्द्रनाथ दास
सूर्यसेन
महाबीर सिंह
प्रफुल्ल चाकी

अमीरचंद
बालमुकुंद
अवधबिहारी
बसंत कुमार
डॉ. अरुण सिंह
राजेन्द्र लाहिड़ी
बटुकेश्वर दत्त
यतीन्द्रनाथ दास
अशफाकउल्लाखां 'वारसी'

—: अनुक्रमणिका :—

वन्दे मातरम गीत विधान
(संकलित)

विज्ञापन क्रमणिका

१८—रमेशचन्द्र एण्ड ब्रदर्स
१९—महेन्द्र मेडिसिन कं०
२०—एच. एम. अताउल्लाह एण्ड संस
२१—विश्वनाथ फार्मास्यूटिकल्स
२२—भारत फार्मा केमिकल्स
२३—सिंह इंजीनियरिंग वर्क्स
२४—मधु एण्ड कम्पनी
२५—अनुपमा
२६—रमेश मेडिकल हाल
२७—सूरज एण्ड कं०
२८—पीकेज फार्मा
२९—एंग्लो आयुर्वेदीक मेडिकल हाल
३०—स्वस्तिक फार्मा०
३१—खत्री मेडिकल हाल
३२—नेशनल स्टोर्स
३३—वाराणसी नगर महापालिका
३४—काशी कोल्ड स्टोरेज
३५—होटल क्लार्कस
३६—लायन्स क्लब
३७—ओमेगा स्पोर्टस एण्ड रेडियो वर्क्स
३८—प्रदर्शनी-मधुर जलपान
३९—परिवार नियोजन
४०—सैनिटो-राजा सिंह एण्ड सन्स
४१—वस्त्रालय, नगरपालिका-मुगलसराय
४२—काशी व्यापार प्रतिनिधि मंडल
४३—कम्बल घर प्रतिष्ठान
४४—मदन मशीनरी मार्ट-बसन्तलाल एण्ड ब्रदर्स
४५—सर्वोदय प्रेस
४६—विश्वनाथ प्रसाद
४७—मोटर आपरेटर्स यूनियन
४८—वाराणसी जिला परिषद
४९—श्री गोविन्द एण्ड कम्पनी
५०—यूनिवर्सल मेडिकल एजेन्सीज
५१—टैक्सटीको
५२—जानकी प्रसाद एण्ड सन्स
५३—राज ब्रदर्स
५४—रामलाल एण्ड संस
५५—आलोक प्रेस-ओम वाटर पम्प
५६—मूनलाइट इंजी० वर्क्स
५७—चौधरी ब्रदर्स
५८—जयपुरिया इंटरप्राइजेज
५९—आर. के. दास अग्रवाल
६०—मारवाड़ी भोजनालय
६१—डायमंड डेकोरेटर्स
६२—पूर्वोत्तर रेलवे
६३—अग्रवाल रेडियो
६४—मधुलिका
६५—स्टेनलेस स्टील पैलेस
६६—वेद प्रकाश ढोंगरा
६७—सत्यनारायण एण्ड कं०
६८—न्यू काश्मीर ट्रांसपोर्ट प्रा० लि०
६९—होटल नटराज-रामप्रवेश चौबे
७०—मोहनलाल किसन चंद
७१—विजय ब्रदर्स
७२—कहानीकार

विशिष्ट

१- बी. एस. इंडस्ट्रीज
२- राज्य परामर्श समिति
३- उ० प्र० सहकारी संघ
४- वनविभाग
५- सूचना व जनसम्पर्क विभाग
६- ई० सेप्टन एण्ड कं०
७- क्रय-विक्रय एवं प्रक्रियात्मक समिति
८- कनोडिया केमिकल्स एण्ड इंडस्ट्रीज लि०
९- राम भण्डार
१०- स्वदेशी काटन मिल्स
११- यू. पी. कोआपरेटिव फेडरेशन
१२- उत्तर प्रदेश सूचना एवम् जनसम्पर्क विभाग
१३- उ. प्र. राज्य विद्युत परिषद
१४- स्वास्थ्य एवम् परिवार नियोजन विभाग
१५- भूमि विकास बैंक
१६- उपभोक्ता सहकारी संघ
१७- उ. प्र. सिंचाई विभाग
कवर (iii) साहू केमिकल्स
कवर (iv) साहू परिवार (सिन्नी, टुल्लू)

वन्दे मातरम् शताब्दी समारोह समिति

संरक्षक : पं० कमलापति त्रिपाठी

अध्यक्ष—श्री नारायणदत्त तिवारी (मुख्य मंत्री उ० प्र०)

स्वागताध्यक्ष—श्री राजकुमार साहू

कार्यकारी अध्यक्ष—आचार्य राजाराम शास्त्री

उपाध्यक्ष—श्री कुलतार सिंह
श्री रमेन्द्र वर्मा
प्रो० राधेश्याम शर्मा

मंत्री—श्री लोकपति त्रिपाठी, श्रीमती चन्द्रा त्रिपाठी
श्री भानुशंकर मेहता, श्री विश्वनाथ मुखर्जी
श्री जगदीश अरोड़ा, श्री राजकुमार
श्री गिरीन्द्रनाथ शर्मा

अर्थसमिति—श्री राजकृष्ण दास, श्री मुरारीलाल केडिया
श्री शिव प्रसाद हिम्मत सिंह
श्री कमल गुप्त

प्रचार समिति—श्री शम्भूनाथ मिश्र, श्री जयप्रकाश गुप्त, श्री ईश्वरदेव मिश्र, श्री कृष्णचन्द्र बेरी

समारोह समिति—श्री खुशालचंद्र गोरावाला, श्री भूपेन्द्र कुमार गुप्त, श्री शार्दूल विक्रम गुप्त

सजावट—डा० केशवप्रसाद सिंह, श्री आनंद किशोर मिश्र, श्री सुधांशुभूषण मिश्र

अतिथि स्वागत—श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्त, श्री जसवंत प्रसाद मेहता, श्री रामप्रकाश कपूर

स्वयं सेवक—संरचना—श्री श्याम युवक संघ भारतीय, युवक कांग्रेस के सदस्य
जिला और नगर कांग्रेस, वाराणसी।

सदस्य—श्री सिद्धेश्वरी प्रसाद सिंह, श्री शिवनंदन लाल दर; श्री चन्द्रशेखर प्रसाद, श्री रामप्रवेश चौबे,
श्री श्यामलाल यादव, श्री ऋषिनारायण पावन, श्री नरेन्द्र उपाध्याय, श्रीमती ज्ञानेश्वरी बंसल
श्री मनुदेव भट्टाचार्य, श्री प्रतापचंद्र जैन, श्री ईश्वरदत्त सिंह, श्री त्रिलोक सिंह बयोला
श्री अरविंद पारिख, श्री लक्ष्मीनारायण, श्री माधवलाल शर्मा



वन्दे मातरम्

(मूल)

—श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय—

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम्।
शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्॥
सप्तकोटि कण्ठ-कलकल निनाद कराले,
द्विसप्त कोटिभुजैधृत खरकरवाले,
अबला केन मा एत बले।
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणीं मातरम्
तुमि विद्या तुमि धर्म्म
तुमि हृदि तुमि मर्म्म
त्वं हि प्राणा: शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे।
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम्
वन्दे मातरम्
श्यामलां सरलां सुस्मिता भूषिताम्
धरणीं भरणीं मातरम्
वन्दे मातरम्



मातृ वन्दना

—भानुशंकर मेहता

नमस्ते सदावत्सले मातृभूमे ।
त्वया आर्यभूमे । सुखंवर्द्धितोऽहम् ।
महामंगले ! पुण्यभूमे ! त्वदर्थे पतत्वेष कायो नमस्ते नमस्ते !

सुप्रसिद्ध विद्वान प्रो० ग्रियर्सन ने 'वन्दे मातरम्' पर टिप्पणी करते हुए कहा था 'मातृभूमि की कल्पना हिन्दू विचारधारा के प्रतिकूल है पर बहुत संभव है बंकिमचन्द्र ने इसे अपनी योरोपियन संस्कृति से प्राप्त विचारधारा में समाहित कर लिया हो !' क्या यह बात सही है ?

इसका उत्तर ढूँढ़ने के लिये हमे भारतीय वाङ्मय का अवलोकन करना होगा, भारतीय संस्कृति की विचार-धारा के उद्गम स्थलो की यात्रा करनी होगी।

एक बात जो सबसे पहले समझ लेनी होगी कि भारतीय-धर्म और संस्कृति अत्यंत उदार है, वह कूल किनारों से बंधी नदी नही, ओर-छोर-हीन सागर है। भारत के ऋषियों ने कभी किसी सीमाबद्ध राज्य का संकीर्ण जयघोष नही किया। उनकी मंगल कामना मे, उनकी स्तुतियों में समूची पृथ्वी ही नही, सारे विश्व की मानवमात्र के कल्याण की बात ध्वनित होती है। रावण के अत्याचार से एक देश नही धरती, पीड़ित है और धरा धेनु रूप धारण कर नारायण के दरबार में गुहार करती है और प्रभु 'विनाशाय च दुष्कृताम' इस धरा पर (भारत या देश विशेष में नही) अवतरित होते है। भारतीय प्रज्ञा ने 'वसुधैव कुटुम्बकम' की कल्पना की है। अतः स्वाभाविक ही है कि उसके वाङ्मय में 'भारतमाता की जय' का नारा नही मिलता। उस प्राचीन युग में देश, राज्य, कबीले सभी कुछ था पर पृथ्वी माता अंकमें ही सब कुछ था। वेद मे इसी पृथ्वी का स्तवन किया गया है। उसके अन्य स्तवन यथा घरो, सुख संपत्ति की कामना, रोग से मुक्ति, दीर्घायु की कामना, प्रभात का स्वागत आदि सभी ऋचाएं सार्वभौमिक एवम् सर्वदेशीय है। उसमें कही भी यह स्वरित नहीं होता कि सिर्फ भारत देश के आर्यो को ही यह सब उपलब्ध हो। वहाँ तो मानव मात्र के योग-क्षेम की प्रार्थना है। भारतीय वाङ्मय की दृष्टि से 'वन्दे मातरम्' का अर्थ है पृथ्वी माता, भूदेवी को प्रणाम और इस अर्थ मे 'वन्दे मातरम्' केवल भारत ही नहीं, विश्व के प्राणिमात्र का नारा, जय घोष है। वह किसी के विरुद्ध नही है, बल्कि हर धरती के बेटे को, जो कही भी हो, किसी देश, धर्म सम्प्रदाय का हो, पूरी भक्ति-भावना से माटी का चंदन शीश पर धरकर मुक्त कंठ, भक्तिभाव से आलोड़ित आत्म विभोर हो कहना चाहिये 'वन्दे मातरम्'—माँ हम तेरे अंक में पैदा हुए और अंत मे तुझी मे समा जायेंगे, माँ तेरी जय हो वन्दे मातरम्।''

इस वक्तव्य से ऐसा भी नहीं समझ लेना चाहिये कि भारतीय मनीषा ने भारत की चर्चा ही नही की। उन्होंने भारत का जयगान भी किया है। विष्णु पुराण का कवि गा उठा है —

'गायन्ती देवाः किलगीतकानि,
धन्यास्तुते भारत भूमिभागे।

स्वर्गापवर्गास्पद मार्गभूते भवन्ति,
भूयः पुरुषाः सुरत्वात्' ॥
(विष्णु पुराण —२।३।२४)

श्रीमद्भागवत में महर्षि वेदव्यास ने भारत की स्तुति इस प्रकार की है —

'अहो अमीषां किमकारि शोभनं,
प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः।
यैर्जन्म लब्धं नृषु भारत गिरे मुकुन्द,
सेवौ पायिकं स्पृहा हि नः ॥'
(५।१०।२१)

और आदिकाव्य में महर्षि वाल्मीकि के राम कह उठे है —

'नेयं स्वर्णपुरी लंकारोचते मम लक्ष्मण।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥'

और महाभारत में भारत वंदना करते हुए कहा है —

'प्रियं भारत भारतम्'

जब गैरिसन कहते है 'समस्त संसार ही मेरा देश है, सम्पूर्ण मानव-जाति ही मेरे देशवासी हैं' तो वे भारतीय ऋषियो के विचार ही दुहराते है।

रही मां की बात, तो भारत शायद आदि युग से 'मा', 'मातृशक्ति' की आराधना, पूजा, भक्ति करता आ रहा है। भारत ही क्यो विश्व की सभी आदि सभ्यताओं मे 'मा' की ही पूजा होती रही है। अनेक प्राचीन उत्खनो में 'मातृ-मूर्तिया' प्राप्त हुई है। आदिवासियो में 'अम्बा' की पूजा होती आयी है। फिर भारत ने तो 'मातृ-वेद', 'मातृ-तंत्र' की ही रचना कर डाली है (देखें—देवीपुराण की अपरार्क टीका)। 'मातृदेवी' तान्त्रिकों की एक देवी है और अथर्ववेद के एक ऋषि का नाम ही 'मातृनामा है।

'मां' कहते किसे हैं? मा-माङ् अर्थात् मान पूजायाम और मा मे तृ प्रत्यय लगाकर मातृ शब्द बनता है। माति गर्भोऽस्यामिति माता। मान्यते पूज्यते जनैरिति वा माता। 'महपूजायाम' मे अत् प्रत्यय लगानेसे महत् और इमनिच् प्रत्यय लगाकर 'महिमा' शब्द बने है। वैयाकरण मातृ शब्द को मान + तृच से बनाते है। मान का अर्थ है आदर अत. मातृ का अर्थ हुआ आदरणीय। यास्क के मत से मातृ का भाव निर्मातृ = निर्माण करने वाली जननी भी है। आदि युग से आज तक मानव जिसे असीम श्रद्धा भेंट करता रहा है और जिससे अक्षय अजस्र स्नेह पाता रहा है, वह मात्र जन्मदात्री महिला नही, उससे भी बहुत बडी है। उसका स्थान स्वर्ग से ऊँचा है, वह गुरु से भी अधिक पूज्य है। माता सदा माता ही है।

कहा है 'मात्रा भवतु संमनाः' (अथर्व ३।३०।२)। **'मातृ तोऽन्याने देवोऽस्ति तस्मात्पूज्या सदा सुतैः'** (माता पुत्रो के लिए परमपूज्य है, माता के होते दूसरे देवता की आवश्यकता नही।) तथा **'मातुश्च यद्धितं किंचित्कुरुते भक्तितः पुमान'** (माता की भलाई के लिए पुरुष भक्ति पूर्वक जो कुछ भी करता है, वह उसके लिये धर्म है।) अतः **'त्वमाद्य जगतां माता'** (मा को जगन्माता आद्याशक्ति समझ कर उसकी सेवा करो।) **'आपदि मातैवशरणम्'** (विपत्ति आने पर मा की शरण में जाओ), **'मात्रा समं नास्ति शरीर पोषणम्'** (मां के समान और कौन पालन कर सकता है), **'आयुः पुमान यशः स्वर्गकीर्ति पुण्यबलंश्रियम्, पशुं सुखं धनं धान्यं प्राप्नुयामातृवन्दनात्'** (मां की सेवा करने वाले को आयु, पुमान, यश, स्वर्ग, कीर्ति, पुण्य, बल, श्री, पशु, धन धान्य, सभी कुछ प्राप्त होता है। ऐसी है मा की महिमा अतः तैत्तिरीयोपनिषद् ने उद्घोष किया **'मातृदेवो भव'** (१।११)। मनुने व्यवस्था दी है—**'सहस्रं तु पितुर्माता गौरवेणातिरिच्यते'** (पिता की अपेक्षा माता सहस्रगुना बढकर होती है।) देवी भागवत् ने प्रश्न किया है— 'मातुः परतरं किंचदधिक भुवन त्रये ?' (त्रिभुवन में माता से बढकर भी पूजनीय कोई और है क्या ?) (नीलकंठ की टीका)। श्री रामकृष्ण परमहंस देव कहते है—'मा, मैं यंत्र हूँ और तू यंत्र को चलानेवाली यन्त्री', 'हे शिशुहृदय, रंजिनी मा, तेरी जय हो। हे मा प्रज्वलित प्रेमाग्नि मे मैं अहमाव की आहुति देता हूँ इसे स्वीकार कर। स्वाहा। 'बृहद्धर्म पुराण मे व्यास देव 'मातृ स्तोत्र' मे वन्दना करते हुए कहते है —

पितुरप्यधिका माता गर्भधारण पोषणात
अतोहि त्रिषुलोकेषु नास्ति मातृ समोगुरुः ॥
मातरं पितरं चोभौ दृष्ट्वा पुत्रस्तु धर्मवित्
प्रणम्य मातरं पश्चात प्रणमेत पितरं गुरुम् ॥

माताधरित्री जननी दयार्द्रहृदया शिवा
देवी त्रिभुवन श्रेष्ठा निर्दोषा सर्वदुःखहा ॥

और जगत् गुरु शंकराचार्य तो भावविभोर होकर मातृवंदना करते हुए विह्वल होकर कह उठे—'कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति ।'

किन्तु यह मातृ भक्ति केवल जन्म देने वाली माता तक सीमित नही रही । आध्यात्म और सत्य की शोध ने जब ब्रह्म को जानना चाहा तो पाया कि वह 'त्र्यम्बकं यजामहे' (यजुर्वेद) है—(स्त्री अम्बा स्वसायस्य—जो अपने को स्त्री के साथ प्रकाशित करता है), वह अर्धनारीश्वर है, उमा महेश्वर है । स्थाणु ब्रह्म अपनी आद्याशक्ति के सहारे ही इस सृष्टि की रचना करता है । यही आद्याशक्ति जगन्माता के रूप मे सर्वत्र पूजित है । यही है 'या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता' यही **'मातर्जगतोऽखिलस्य'** है, इन्ही जगन्माता की स्तुति करते हुए कहा है—'सर्वदेवमयी देवी सर्वदेवीमयं जगत, अतोऽहं विश्वरूपा त्वा नमामि परमेश्वरीम् ।' यह विश्व जननी भुवनमोहिनी मां है— 'मम्बां त्रिलोक जननी प्रजननी प्रपद्ये और भूखे प्यासे बच्चे की भाँति साधक इन्ही का स्मरण करता है' 'क्षुधातृषार्ता-जननी स्मरन्ति' । यही 'मन्त्राणांमातृका देवी, शब्दानां ज्ञानरूपिणी' माँ है जिनकी महिमा अपरपार है । यह शव को शिव बनाने वाली शिवा है । यह नारायण की 'श्री' है । कहा है **'आदिशक्तिमुपासन्ते गायत्रीं वेदमातरम्'** । शक्ति का यह मातृउपासना रूप अत्यंत प्राचीन है और आरंभ मे यह उपासना अर्धनारीश्वर के रूप में होती थी । केवल हिन्दू धर्म मे ही नही, बौद्धो की आदिमाता एवं बुद्धमाता, करुणामयी देवी कन्नन (जापान), ईसा की माता **मेरी** आईसिस, इश्तर आदि के मातृरूपो मे यही विश्व मातृका सर्वत्र पूजित हैं । दक्षिणामूर्ति संहिता के अनुसार **योषित्पुरुष रूपेण स्फुरान्ति विश्व मातृका'**—यही विश्वमातृका सकल पुरुषों के रूप में स्फुरित होती है । भारत में वैदिक युग से ऐस महाशक्ति की उपासना होती आयी है 'पुरुच्येषा विश्व-मातादि विद्या' (त्रिपुरोपनिषद्) । इसी 'श्री' से सभी कुछ का वेद, विद्या, गिरा, भाषा, देश, कला, संगीत का उद्भव होता है **'वन्दे वाग्भवमैन्दवात्म सदृशं वेदादि विद्यागिरौ'** भाषा देश समुद्भवाः पशुगताश्छन्दांसि सप्तस्वरान् ।

(त्रिपुरामहिम्नस्तोत्र)

श्री सूक्त मे यही प्रार्थना की गयी है कि **श्रियं वासय में कुलेमातरं पद्म-मालिनीम्** (पद्मो की माला धारण करने वाली माता लक्ष्मी देवी को हमारे कुल में स्थापित करे ।) (सौभाग्य लक्ष्मी उपनिषद्) ।

यही माँ हमारे अंग-अग मे व्याप्त है । मातृकान्यास मे देहाविच्छिन्न खण्डीकृत माँ को जगद्व्यापिनी माँ मे मिलाकर हम अखण्ड मातृका-शक्ति का लाभ करते है । मातृकान्यास की अनुभूति का लाभ करने के लिये ही हमारी प्रचलित सरस्वती पूजा है ।

विश्वजननी का एक रूप भूदेवी के रूप मे प्रगट होता है । शेषशायी विष्णु के अंक मे लक्ष्मी के साथ ही हम एक और देवी को देखते हैं, यही भू-देवी है । लकारात् पृथिवी देवी सशैल कानना सकाच्चन्द्रतारादि ग्रहराशि स्वरूपिणी' (ज्ञानार्णव) ।

देवी भागवत्के नवम् अध्याय में पृथ्वी की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है—

'पुण्यतीर्थ तथा पवित्र भारतवर्ष जैसे देशों से सम्पन्न होनेका ऐसे सुअवसर मिलता है। यह पृथ्वी स्वर्णमयी भूमि है।

प्रवाहक्रम से पृथ्वी भी नित्य है । वाराह कल्प मे यह मूर्तिमान रूप से विराजमान हुई थी और देवताओंने इसका पूजन किया था ।

ब्रह्मा ने सम्पूर्ण मनोहर विश्व की रचना की । पृथ्वी की अधिष्ठात्रि देवी एक परम सुंदरी देवी के वेष मे थी ।

भगवान ने कहा—शुभे, तुम सबको आश्रय देने वाली-बनो । सबसे सुपूजित होकर तुम सुख भोगोगी । सभी लोग मेरे वर प्रभाव से तुम्हारी पूजा करेंगे ।

नारद के पूछने पर भगवान ने कहा—सर्वप्रथम भगवान महावाराह ने इस पृथ्वी की पूजा की । फिर ब्रह्मा, मुनियो, मनुओं ओर मानवों द्वारा इसका सम्मान हुआ ।

पृथ्वी देवीका मन्त्र है' ऊँ ह्रीं श्री वसुधायै स्वाहा'

पृथ्वी की स्तुति इन श्लोकों मे की गयी है :

मङ्गले मङ्गलाधारे माङ्गल्ये मङ्गलप्रदे
मङ्गलार्थ मङ्गलेशे मङ्गलं देहिमें भवे ॥
सर्वशस्या लये सर्वशस्याढ्ये सर्वशस्य दे
सर्वशस्य हरे काले सर्वशस्यात्मिकि भवे ॥
भूमे भूमिपकर्वस्वे भूमिपाल परायणे
भूमिपानां सुखकरे भूमिं देहिश्च भूमि दे ॥

"भारतीय साधकों ने इस विश्व प्रकृति की, विश्व-जननी, विश्वरूपणि महाशक्ति की अशेष सौन्दर्यमयी नारी के रूप में और परम कल्याणमयी जननी के रूप मे उपलब्धि की है' (अक्षय कुमार बैनर्जी) ऋग्वेद में पृथ्वी को माता कहकर संबोधित किया है—

'द्यौर्मे पिता नाभिस्त्र बन्धर्मे माता पृथिवी महीयम'
(२-३-२०-सूक्त १६४-३३)

तथा 'सदाधार पृथिवीद्यामुते माँ तस्मै देवाय हविषा विधेम
(ऋक्-१०-१२१ सूक्त)
(यजु: २३।१)

पृथ्वी का चिन्मय चेतन स्वरूप ही श्रीदेवी-भूदेवी है। "श्रिश्च लक्ष्मीश्च ते पत्न्यौ"। ये भूदेवी पृथ्वी की अधिष्ठात्री है, उनका हृदय है, मृत्युलोक से परे परमव्योम मे प्रतिष्ठित है। 'यस्या हृदयं परमे व्यामेन् सत्येनावृतममृत पृथिव्याः'। पृथ्वी सूक्त (अथर्ववेद) में पृथ्वी के अधिभौतिक और आधिदैविक रूपों का स्तवन किया है। वर्णन कही भौगोलिक है, कही पौराणिक। पुराण में पृथ्वी के अधिदेवता को 'गौ' रूप बताया है। ऋषि ने 'कामदुधा पयस्वती सुरभिः' को माता के रूप मे स्वीकारा है। विश्वगर्भा वसुधा से सबका जन्म और पालन होता है अतः माता ही महिमा हृदयंगम करके उत्तम वर के लिये प्रार्थना की गयी है। कुछ मंत्र देखें—

सा नो भूमिर्वि सृजतां माता पुत्राय मे पयः— (१०)
(दे हमको वह भूमि पयस्, सुत को माता सम)

तासुनो धेह्यभिनः पयस्वमाता।
भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।
पर्जन्यः पिता स उनः पिपर्तु॥ (१२)

(पूत हमे कर धरा पुत्र हम तुभसे लालित, रसदायक पर्जन्य पिता से भी हो पालित।)

विश्वस्वं मातरमोषधीनां, ध्रुवां भूमि पृथिवीं धृताम्,
शिवांस्योनामनुचरेम विश्वहा। (१७)

(जिसके उर पर विविध बनस्पतिया और तरुवर
पाते ही रहते विकाश ध्रुव और निरन्तर।
धरा हुई जो धारण करके यह जग सारा,
उनका वन्दना आज कर रहा गान हमारा।)

(श्रीमती महादेवी वर्मा द्वारा अनूदित)

तस्यै हिरण्य वक्षसे पृथिव्या अकरं नमः—(२६)
(तेरा उर है हमे राशि सोने की अभिमत,
देते है हे भूमि तुझे आज नमन शत)

विमृग्वरी पृथिवीमा वदामि,
क्षमां भूमि ब्रह्मणावावृधानाम्। (२९)

(ब्रह्मशक्ति से महान हुई क्षमामयी वसुन्धरे, हम तेरा गुणगान करते है।)

भूम्यै पर्जन्य पत्न्यै नमोऽस्तु वर्षमेदसे (४२)
(वर्षा ही मेदा है जिसका उस पर्जन्यपत्नी भूमि को प्रणाम)

भूमे मातर्निधेहिमा भद्रया सुप्रतिष्ठितम
संविदाना दिवा कवेश्रियां मा धेहिभूत्याम्॥६३॥

(मातृभूमि भद्रभावों के साथ मुझे स्थापित कर, स्वर्गीय भूति प्राप्ति करा, पार्थिव सुख सम्पत्ति दे, जननी मुझे भागवती विभूति प्रदान कर)।

इसी भूवदना ने भारतीय संस्कृति को सिखाया कि नित्य सवेरे उठ कर धरतीमाता को पद स्पर्श करने से पूर्व क्षमा याचना करो—

समुद्रवसने देवि, पर्वतस्तनमण्डले
विष्णुपत्नि। नमस तुभ्यम : पादस्पर्श क्षमस्वमे॥

ऋग्वेद के दसवे मण्डल मे प्रार्थना की है :

मह्द्यावा पृथिवी भूतमुर्वी नारीयह्वोन रोदसी सदनः
(१०।८।९३)

(हे द्यावापृथिवी, अत्यन्त विस्तार वाली होकर तुम हमारे घर मे कल्याणमती नारी के समान आगमन करो।) अर्थात् ऋषि धरती माता और को एक भाव से देखते है।

इसी प्रकार वन्देमातरम् गीत जैसे ही भाव ऋगवेद की

इस ऋचा में वर्तमान है—

घृतव्रती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघेपेशसा।
द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा
विष्कमिते अजरे भूरि रेत सा ॥
असश्चन्ती मूरिधारे पयस्वती
घृतं दुहाते सुकृतेशुचिव्रते।
राजंती अस्य भुवनस्य रोदसी
अस्मै रेतः सिञ्चतयम्मनुर्हितम् ॥

(हे द्यावा पृथिवी, तुम सुजला, सुरूपा, वरुण द्वारा धारण की हुई, नित्य और अनेक कर्मवाली हो। हे द्यावा पृथिवी, श्रेष्ठकर्मवाले पुरुषों को तुम जल प्रदान करती हो, तुम भुवन की अधीश्वरी हो। हमे हितकारी जल प्रदान करो।) (६-६-७०)

फिर वेदो की यह काल्पनिक उड़ान मात्र नही है क्योकि ऋचाकार ने स्पष्ट कहा है 'यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते ?' (जो देखते है वही वर्णन करते है) (५-३-४४)

माता और पृथ्वीमाता के लिये पूज्य भावना का एक रूप देशभक्ति, मातृभूमि की पूजा के रूप में प्रकट हुआ।

ऋग्वेद ने निर्देश किया **'उप सर्प मातरं'** (मातृभूमि की सेवा करो) (१०-१८-१०) और **'यतेमही स्वराज्ये'** (हम स्वराज्य के लिये सदा यत्न करे) (५।५ ६६), यजुर्वेद ने निर्देश दिया है **'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहितः'** (६।२६) हम अपने राष्ट्र मे सावधान होकर नेतृत्व करे, और अथर्ववेद घोषित करता है 'माता भूमिः पुत्रौ अहं पृथिव्याः' (१२।१।१२)

वेद मे जिस राष्ट्र की कल्पना की गयी है वह बडी विशद् है, उसमे सबसे छोटी इकाई है 'गृह' जो क्रमशः कुल, ग्राम, विश्, राष्ट्र और अंत में साम्राज्य बनती है। इस कल्पना मे राष्ट्रधर्म, राष्ट्रोन्नति और राष्ट्रभावना की स्पष्ट छबि मिलती है। वे कहते है सभी अपना कर्तव्य करे (आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसीजायताम्—) और सत्कर्म, सत्यज्ञान, दीक्षा, तप, ब्राह्म यज्ञ पृथ्वी का धारण करते है—(सत्यं बृह दृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवी धारयन्ती।) (७२-१-१) और यह कि हमारा राष्ट्र एक हो, एक संस्कृति, एक सभ्यता, एक भाषा हो (समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं व्रतं सह चित्तैषाम्)—(६।७।६४)।

श्रुतिवचनानुसार 'यस्यां पूर्वेजना विच क्रिरे' (हे पृथ्वी तुम हमारे पूर्वजो की भी माता हो, तुम्हारी गोद मे जन्म लेकर पूर्वजो ने अनेक पराक्रम किये है।) अतः 'नमो मात्रे पृथिव्ये' (यजु. ६।२२)—मातृभूमि को प्रणाम।

महर्षि अरविंद ने लिखा है 'पूर्णजातीयभाव का देश भर में प्रचार होने से नाना भेद संकुल देश में भी एकता की सम्भावना है—स्वदेश प्रेम का आधार मातृपूजा है। जिस दिन बंकिमचंद्र के वन्दे मातरम् गीत ने बाह्येन्द्रिय का अतिक्रमण करके प्राण पर आघात किया, उसी दिन हमारे हृदय मे स्वदेश प्रेम जागृत हुआ और मूर्ति की प्रतिष्ठा हुई। स्वदेश माता है, स्वदेश भगवान है, यही वेदान्त शिक्षा के अन्तर्गत उच्चशिक्षा जातीय अभ्युत्थान का बीज स्वरूप है। जिस प्रकार जीव भगवान का अंश है और जीव शक्ति भगवान की शक्ति का अश है, उसी प्रकार करोड़ो भारतवासियों की समष्टि सर्वव्यापी वासुदेव का अश है। इन करोड़ो मनुष्यों की आश्रय स्वरूपा शक्तिरूपिणी, बहुभुजान्विता बहुबल धारिणी भारत जननी भगवान की एक शक्ति है। यही माता है, यही देवी है, यही जगज्जननी काली का देह विशेष है।'—'जिस दिन हम मातृमूर्ति के अखण्ड स्वरूप का दर्शन करेंगे, उस दिन भारत की एकता सुलभ हो जायेगी।'—'जहाँ एक देश है, एक माता है, वहाँ एक दिन एकता अवश्यम्भावी है और अनेक जातियाँ मिलकर एक बलवान अजेय जाति मे अवश्य परिणत होगी।'—'एक ही माता के गर्भ से जन्म हुआ है, एक ही माता की गोद मे हम सब निवास करते है और एक ही माता के पंचभूत मे हम सब मिल जाते है, आन्तरिक हजार झगड़े होते हुए भी माता के आह्वान पर मिलना होगा।'

इसी राष्ट्रशक्ति के बारे मे विद्वान स्व० डा० राजबली पाण्डेय जी ने लिखा था—'राष्ट्र की शक्ति रूप मे कल्पना नयी नही है। बहुत प्राचीन समय से मनुष्य ने अपनी जन्म भूमि मे शक्ति का अनुभव किया है। माताशिशु को जन्म देकर दिव्य-प्रेम से उसका लालन-पालन करती है। मनुष्य इसी क्रिया को एक लम्बे पैमाने पर अपने देश मे देखता है। इसीलिए जन्मभूमि को मातृभूमि की उपाधि दी गयी है। मातृशक्ति के अतिरिक्त यह रक्षकशक्ति भी है।

भारत माता अथवा भारत-शक्ति इसी शक्ति का अवतार है। इसमे प्रेम और शक्ति दोनों मिले हुए हैं। —जिस प्रकार जन्म देने वाली माता हमारी श्रद्धा, प्रेम और भक्ति की भाजन है, उसी प्रकार हमारी मातृभूमि और उसका शक्तिमय स्वरूप राष्ट्र भक्ति भी है।'

श्री सूक्त मे प्रार्थना की गयी है 'प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रे स्मिन् कीर्तिमृर्द्धि ददातुमे' (हे देवी, मै इस राष्ट्र मे, इस देश मे उत्पन्न हुआ हूँ, मुझे कीर्ति और ऋद्धि प्रदान करें।) एक आंग्ल देशभक्त कवि ने ठीक ही लिखा है 'क्या ऐसा भी कोई प्राणी जीवित है जिसने कभी भी नही कहा कि यह मेरा अपना देश है, मेरी मातृभूमि है? तब तो उसकी आत्मा मर चुकी है' अतः वन्देमातरम्।

ऋषि बंकिम ने इसी जगज्जननी, देशजननी का जयगान, स्तुति की है। इस मातृवन्दना को कुछ भ्रमित लोगों ने मूर्ति पूजा, भारत देशवासियों को हिंसा के लिए उकसानेवाला गीत कहा है। आइये इस मातृवन्दना का अर्थ ग्रहण करें।

बकिम ने देश का हरा भरा सजल रूप देखा था, साथ ही पराधीनता और अकाल पीड़ित रूप भी देखा था। अपने मनमानस मे भारत माता की अनेक छवि स्मृतियाँ धारण किये दुर्गा-पूजा की शुभरात्रि मे महाशक्ति के विग्रह में उन्हें सहसा शक्तिमान भूदेवी के दर्शन हुए, किन्तु वह भूदेवी (दुःख) सागर मे डूब गयी थी और उनका मन-वाराह उसे पुनः अतल जलतल से निकालकर हृदय मंदिर के श्रेष्ठ आसन पर बिठाने को विकल हो उठा तथा उस आह से उपजा यह गान—'वन्दे मातरम्'।

हमारे सांस्कृतिक सन्दर्भ मे 'वन्दे मातरम्' की माता पृथ्वी माता है, केवल यह भारत भूमि नही है। वह सबकी माँ है हिन्दू, मुसलमान, अंग्रेज, फारसी, यूरोपीय, अमेरीकी अफ्रीकी सबकी। ब्रिटिश शासन का सबसे बड़ा अपराध यही था कि 'माँ की जय' कहने वालों पर उसने प्रहार किया, माँ के प्यारे बेटों का बध किया और फलतः सारे संसार से उनके साम्राज्य का सूर्य अस्त हो गया।

धरती माता को देखें, कहाँ वह सुजला, सुफला, मलयज शीतला नही है, सर्वत्र ही तो वह शस्य श्यामला है, चाँदनी से सर्वत्र रातें पुलक उठती है, पुष्प-राजि कहाँ नही विहँसती? माँ सुहासिनी है, सुमधुर भाषिणी है सुख-दायिनी वरदा है।

गीत की अगली पंक्तियाँ विवाद की वस्तु बनीं किन्तु उनका गूढ़ अर्थ है कि हम स्त्री को अबला कहते हैं पर माँ क्या वास्तव में अबला है? बंकिम जब ये पंक्तियाँ लिख रहे थे, उस समय उनके समक्ष सागर में डूबी धरती माता और उन्हे बाहर निकालने का प्रयास करते वाराह अवतार करोडो हाथ थे, श्रम करते सप्तकोटि कण्ठ से माता की जयकार का तुमुल निनाद हो रहा था। 'सप्तकोटि' केवल बंगाल की जनता नहीं—सात महाद्वीपों के करोडो लोग जिन्होंने अपनी सम्मिलित शक्ति माँ को अर्पित कर उसे बहुबल धारिणी बनाया है। इसी भूदेवी की प्रतिमा हर देश प्रान्तर मे (मन्दिरे मन्दिरे) विद्यमान है (माँ कहाँ नही है?) यही लक्ष्मी है (धनवैभव देने वाली), यही दुर्गा है (शोक दुःख नाश करने वाली, दुर्गति विनाशिनी), यही विद्या है, वाणी है। इस अमला, अतुला, श्यामला, सरला, धारण करने और पोषण करने वाली माँ का वन्दन! कोई बताये क्या यह मात्र भारत माँ की वन्दना है? हिन्दू सदा उदार रहा है, उसकी कल्पना, उसकी स्तुति संकीर्णमना हो ही नहीं सकती। वेद-पुराण इसके साक्षी हैं। यह तो विश्वमाता की वन्दना है, भूराष्ट्र का गीत है। कल जब विश्वराज्य स्थापित होगा तो यही उसका राष्ट्र-गान बनेगा। वन्दे मातरम्। ●

(सामग्री के लिए 'कल्याण' के विशेषांकों का आभार)

एक मंच

वन्दे मातरम् एक मंत्र है, जिस प्रकार ॐ में साढ़े तीन मात्रा है उसी प्रकार 'वन्दे' भी ३॥ मात्रा और मातरम् भी ३॥ मात्रा के मन्त्र है। इस प्रकार वैदिक दृष्टि से यह सिद्ध मन्त्र हुआ।

वन्दे मातरम् मंत्र ने पराधीन भारत को जगाकर दिशा प्रदान की थी, प्रेरणा दी थी कि देश गुलामी की जंजीर के बंधन में है उसे स्वतन्त्र कराओ। इस महामंत्र को हमें कभी भूलना नहीं चाहिये। इसकी उपेक्षा अपने आपकी, अपने आदर्श की, अपनी माता की उपेक्षा है। अतः इस महामन्त्र को जागृत कर हमें इसके पुरातन महत्व को पुनः उजागर करना है।

—पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र नाटककार

आमार दुर्गोत्सव

—श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

सप्तमी के दिन किसने मुझे इतना अफीम लेने को कहा। क्यों मै प्रतिमा देखने गया ? जिसे कभी नही देखना था, उसे क्यो देखा ? इस कुहक को किसने दिखाया ?

देखा—अकस्मात काल का स्रोत चतुर्दिक दिगन्त मे व्याप्त होकर प्रबल वेग से दौड रहा है, मै नाव पर बैठा बहता जा रहा हूँ। देखा—अनन्त अकूल अंधकार मे, वात्याविक्षुब्ध तरंग संकुल उस स्रोत में उज्ज्वल नक्षत्र उदित हो रहे है, बुझ रहे है, पुन: चमक रहे है। मैं बिलकुल अकेला हूँ—अकेला हूँ, जानकर भयभीत हो उठा—बिलकुल अकेला—मातृहीन-माँ-माँ पुकार रहा हूँ। मैं इस काल-समुद्र मे मातृ संधान के लिए आया हूँ। कहाँ है माँ ? किधर है मेरी माँ ? कहाँ है कमलाकान्त प्रसूति बंगभूमि ? इस घोर काल समुद्र मे कहाँ हो तुम ? सहसा स्वर्गीय वाद्य से कर्णरंध्र परिपूर्ण हुआ—दिग्मण्डल मे प्रभातारुणोदयवत् लोहितोज्ज्वल आलोक विकीर्ण हुआ—स्निग्ध पवन बहने लगा—उसी तरंग संकुल जलराशि पर, दूर, बहुत दूर देखा—सुवर्ण-मण्डिता इसी सप्तमी की शारदीय प्रतिमा को, पानी मे हँस रही है, तैर रही है, आलोक विकीर्ण कर रही है। क्या यही माँ है ? हाँ, यही माँ है। पहचान गया। यही मेरी जननी है—जन्मभूमि है। यही मृण्मयी–मृत्तिकारूपिणी-अनन्त रत्न भूषिता-इस क्षण काल गर्भ मे निहिता है। रत्न मण्डित दस भुजा–दस दिक्–दसों दिशाओं में प्रसारित, इसमें विभिन्न आयुध रूप मे नाना शक्ति शोभित है। पदतल मे शत्रु विमर्दित पदाश्रित वीरजन-केशरी शत्रु निपीड़न में नियुक्त है। इस मूर्ति को अभी नही देखूँगा, आज नही देखूँगा कल नही देखूँगा–काल स्रोत पार न होने पर नही देखूँगा, किन्तु एक दिन देखूँगा—दिग् भुजा नाना प्रहरण प्रहारिणी शत्रुमर्दिनी, वीरेन्द्र पृष्ठ विहारिणी-दक्षिण मे लक्ष्मी भाग्यरूपिणी, वाम मे विद्या-विज्ञान- मूर्तिमयी, साथ मे बलरूपी कार्तिकेय, कार्यसिद्धि-रूपी गणेश। मैने उसी काल स्रोत में देखा इस सुवर्णमयी बंग-प्रतिमा को।

कहाँ से फूल प्राप्त किया, कह नही सकता, किन्तु उसी प्रतिमा के पदतल मे पुष्पांजलि अर्पण की। आह्वान किया—'सर्व मगल मगल्ये शिवे, मेरी सर्वार्थ साधिके, असंख्य सतान कुल पालिके, धर्म-अर्थ-सुख दु खदायिके, मेरी पुष्पांजलि ग्रहण करो। इसी भक्ति, प्रीति, वृत्ति और शक्ति को कर मे लेकर तुम्हारे पदतल में पुष्पांजलि अर्पण कर रहा हूँ। तुम अनन्त जल मण्डल त्याग करके अपनी इस विश्वविमोहिनी मूर्ति को एक बार जगत के सामने प्रकट करो। आओ माँ, नवरागरंगिणी नवल धारिणी, नव दर्प मे दर्पिणी, नव स्वप्नदर्शिनी, आओ माँ, घर मे आओ, छ: कोटि संतानें एक साथ, एक ही समय, द्वादश कोटि कर जोड़ते हुए तुम्हारे चरण कमलो की पूजा करेंगे। छ करोड़ मुँह से कहेगे—माँ प्रसूति अम्बिके, धात्री-धरित्री धनधान्यदायिके, नगाकंशोभिनी नगेन्द्र बालिके, शरत् सुन्दरी, चारु पूर्णचन्द्र मालिके, कहेगे—सिन्धुसेवी, सिन्धु पूजित सिन्धु मंथनकारिणी, शत्रु वध मे दस भुजावाली, दस प्रहरण–धारिणी, अनन्त श्री, अनन्त काल स्थायिनी, सन्तानों को शक्ति दो। अनन्त शक्ति प्रदायिनी, तुम्हे क्या

कहकर पुकारूँ माँ ? इन छः करोड़ मस्तकों को इस पदप्रान्त में लुंठित कर दूँ—इन छः करोड़ कंठों मे उस नाम को लेकर हुँकार करूँ—इन छः करोड शरीरों को तुम्हारे लिए झुका दूँ—नही कर सकता। ये द्वादश करोड आँखें तुम्हारे लिए रोयेगी। आओ माँ, घर मे आओ। जिसकी छ. करोड़ संतानें है—उसके लिए चिन्ता किस बात की ?

देखते-देखते उस अनन्त काल-समुद्र मे वह प्रतिमा डूब गयी, फिर नही देख सका, अंधकार में उक्त तरंग संकुल जलराशि व्याप्त हो गयी। जल कल्लोल से विश्व संसार भर उठा। उस समय युक्त कर से, सजल नयन से पुकारने लगा—उठों माँ हिरण्यमयी बंगभूमि, उठो माँ। अब हम सुसंतान होंगे, सत्पथ पर चलेंगे, आपकी प्रतिष्ठा स्थिर रखेगे। उठो माँ, देवी देवानुगृहीते—अब नही भूलेंगे, मातृवत्सल होंगे, दूसरो का मंगल करेंगे, अधर्म, आलस्य, इन्द्रिय, भक्ति त्याग देंगे। उठो माँ, अकेले रो रहा हूँ, रोते-रोते अंधा हो जा रहा हूँ। उठो, उठो, उठो माँ बंग जननी।

माँ नही उठी। क्या नही उठेगी ?

आओ, मेरे सभी भाई, हम आज इस अंधकार-रूपी काल स्रोत मे कूद पड़ें। आओ, हम सब अपने द्वादश करोड़ हाथों से उस प्रतिमा को उठाये और छः करोड़ मस्तको पर लाद कर घर मे लाये। आओ, अधेरे से क्या डरना ? वह देखो नभ मे तारा मण्डल रह रहकर जल रहे है, बुझ रहे है, वे हमारा मार्ग दर्शन करेंगे। चलो, चले। असंख्य बाहुओं के प्रक्षेप से, इस काल समुद्र को भगाकर, मथकर, व्यस्त कर, हम सब सन्तरण करे। उस स्वर्ण प्रतिमा को मस्तक पर उठा लाये। डर की क्या बात है ? बहुत होगा डूब जायेंगे। मातृहीनो के लिए जीवन मे काम ही क्या है ? आओ, प्रतिमा को उठा लायें। पूजा की धूम मचायेंगे। द्वेष के छाग को कठघरे मे फँसा-कर सत्कीर्ति के खड्ग से माँ के निकट वलि चढायेंगे। सभी प्राचीन ढोलक, नगाड़ा लेकर बगाल के वाद्य यन्त्रों से आकाश को कँपा देंगे। न जाने कितने ढोल, काड़ा, झाँझ, मृदंगों मे बंगाल की जयकार गूजेंगी। कितनी शहनाइयाँ अपने स्वर मे 'कत नाच गो' गायेगी। पूजा की भारी धूम मच जायगी। न जाने कितने ब्राह्मण-पंडित पूडी-मिठाई की लालच मे बंग पूजा मे आकर पत्तल पर बैठेंगे। न जाने कितने देशी-विदेशी भद्राभद्र लोग आकर माँ के चरणों में भेंट देंगे। न जाने कितने दीन दुःखी प्रसाद खाकर अपना पेट भरेंगे। कितनी ही नर्तकियाँ नाचेंगी, कितने गायक मंगल गान गायेंगे। न जाने कितने भक्त माँ-माँ कहेंगे ?

जय जय जय जय जगद्धात्री।
जय जय जय बंग जगद्धात्री॥
जय जय जय सुखदे अन्नदे।
जय जय जय वरदे शर्म्मदे॥
जय जय जय शुभे शुभंकरी।
जय जय जय शांति क्षेमंकरी॥
द्वेषक दलिनी सन्तान पालिनी।
जय जय दुर्गे दुर्गतिनाशिनी॥
जय जय लक्ष्मी वारीन्द्र बालिके।
जय जय कमलाकान्त पालिके॥
जय जय भक्ति शक्ति दायिके।
पाप ताप भय शोक नाशिके॥
मृदुल गंभीर धीर भाषिके।
जय माँ वटालि अम्बिके॥
जय हिमालय जग बालिके।
अतुलित पूर्णचन्द्र मालिके॥
शुभ शोभने सवार्थ साधिके।
जय जय शान्ति शक्ति कालिके॥
नमोऽस्तु ते देवी वरप्रदे शुभे।
नमोऽस्तु ते कामचरे सदा ध्रुवे॥
ब्रह्माणीन्द्राणी रुद्राणी भूतभव्ये यशस्विनी।
त्राहि माँ सर्वदु खेभ्यो दानवा भयंकरी॥
नमोऽस्तु ते जगन्मातः शैलपुत्री वसुन्धरे।
त्रायस्वं माँ विशालाक्षि भक्तानामार्त्तिनाशिनी॥
नमामि शिरसा देवी बन्धनीऽस्तु विमोचितः।

(अनु०—विश्वनाथ मुखर्जी)

एक टी गीत

—श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय—

'जो देश से वास्तव में प्रेम रखता है, उसका वह प्रेम प्रत्येक वस्तु में बिखर जाता है। स्वदेश-प्रेम इतना गंभीर, इतनी एकान्त प्रेरणा है कि उसके स्पर्श से जीवन की समस्त चेतना एकमुखी हो उठती है। कमलाकान्त एक प्राचीन वैष्णव कविता की व्याख्या कर रहे हैं। आम लोग इसे प्रेम कविता समझते हैं। लेकिन कमलाकान्त ने इस कविता के प्रत्येक अक्षर और प्रत्येक पद में देश-प्रेम की अभिव्यक्ति देखी है। कमलाकान्त के निकट समस्त प्रेम का एक मात्र आधार है—देश जननी।—संपादक]

'सुनो प्रसन्न, आज तुम्हें एक गीत सुनाऊगा।'

सुर सुनते ही प्रसन्न दूध की हडिया अलग हटाकर मेरा कीर्तन सुनने लगी। मैंने उस गीत को आद्योपान्त सुनाया—

एसो एसो बंधु एसो, आधो आँचरे बोसो।
नयन भोरिया तोमाय देखी
अनेक दिवसे, मोनेर मानसे
तोमा धने मिलाइल विधि
मणि नओ, माणिक नओ, जे हार कोरे गले पोरी
फूल नओ जे केशेर कोरी वेश
नारी ना करित विधि तोमा हेन गुणनिधि
लइया फिरिताम देश-देश
बंधु तोमाय जखोन पड़े मने
आमी चाई वृन्दावन पाने
आलुइले केश नाहि बाँधि।
रंधनशाला ते जाई, तुया बंधु गुण गाई।
धूँआर छलना कोरी काँदी

(आओ, आओ मित्र, आओ। आधे अँचरा पर बैठो। जी भरकर तुम्हें देखूँ। अनेक दिनों के बाद मन के मानस में विधि ने तुम जैसे धन से मुलाकात करायी है। मणि नही हो, माणिक नही हो, जो तुम्हें गले का हार बनाकर पहन लूँ। फूल भी नही हो जो अपने केशों की सज्जा कर लूँ। अगर विधि नारी न बनाते, तो तुम्हारे जैसे गुणनिधि को देश-देश मे लेकर घूमता। बंधु, तुम्हारी याद आती है तो मैं वृन्दावन की ओर देखती हूँ। खुले हुए केशों को नही बाँधती। रसोई घर में जाकर तुम्हारा गुण गाती हूँ और धुएँ का बहाना करके रोती रहती हूँ।)

पदों का तुक तो उत्तम है। 'देखी' और 'विधि' मिल गया। पर बंगला भाषा मे इस तरह का एक और मोह-मन्त्र सुनने की मन में बड़ी साध है। जब यह गीत पहले पहल जी भर कर सुना था तब ऐसा अनुभव कर रहा था कि नीले आकाश के नीचे नन्हा पक्षी बनकर इस गीत को गाता रहूँ। सोचता रहा, उस विचित्र सृष्टि कुशली कवि की सृष्टि से देव-वंशी लेकर, मेघों के ऊपर जो वायुस्तर शब्दशून्य, दृश्य शून्य, स्थान है, जहाँ से पृथ्वी दिखाई नही देती, वहाँ अकेले बैठकर, उसी मुरली में, यही गीत गाता रहूँ। इस गीत को कभी भूल नहीं सका, कभी भूल भी नहीं सकूँगा।

एसो एसो बंधु एसो

लोग ऐसा सोचते है या नहीं, कह नहीं सकता, पर मैं कमलाकान्त चक्रवर्ती समझ नहीं पाता कि इन्द्रिय

परितृप्ति में कुछ सुख है या नही। जो पशु इन्द्रिय-परितृप्ति के लिए परसन्दर्शन का आकाक्षी है, वह कभी कमलाकान्त शर्मा के दफ्तर में मुक्तावली पढने न बैठे। मै विलास प्रेमियो के मुख से 'एसो-एसो बधु एसो' समझ नही पाता, पर यह समझ लेता हूँ कि मनुष्य मनुष्य के लिए ही हुआ था। एक हृश्य अन्य हृदय के लिए हुआ था। उसी हृदय हृदय का संघात, हृदय-हृदय का मिलन, मनुष्य जीवन का सुख है। इस जन्म में मानव-हृदय मे एक मात्र तृषा है—अन्य हृदय की कामना। मनुष्य-हृदय अनवरत हृदयान्तर को पुकार रहा है—एसो एसो बंधु एसो। सभी क्षुद्राति क्षुद्र प्रवृत्तियाँ, शरीर-रक्षार्थ महती-प्रवृत्तियो के उद्देश्य से कह रहा है—एसो एसो बधु एसो। तुम नौकरी करते हो पेट भरने के लिए, पर यश की आकांक्षा करते हो दूसरों का अनुराग प्राप्त करने के लिए, जन समाज के हृदय को तुम्हारे हृदय के साथ मिलाने के लिए। तुम जो परोपकार करते हो, वह दूसरों के हृदय का क्लेश अपने हृदय में अनुभव करते हो इसीलिए। तुम जो नाराज होते हो, वह इसलिए कि तुम्हारे मन लायक काम नही हुआ, हृदय-हृदय में नही आया इसीलिए। सर्वत्र यही रव है—'आओ, आओ, बधु आओ।' सभी कार्यों मे वही मन्त्र मुखर है, आओ, आओ, बंधु आओ। जड़ जगत् का नियम है—आकर्षण बृहद् ग्रह-उपग्रह को बुलाता है—आओ, आओ, बन्धु आओ। परमाणु-परमाणु को बुला रहा है—आओ, आओ, बन्धु आओ। सभी जड़, पिण्ड, ग्रह, उपग्रह, धूमकेतु, सभी इस मोहमन्त्र में बँधकर घूम रहे है। प्रकृति पुरुष को बुला रहो है—आओ, आओ बन्धु आओ। जगत् जगद्न्तर को बुला रहा है—आओ, आओ बन्धु, आओ। जगत की यह गभीर अविश्रान्त ध्वनि—आओ, आओ, बन्धु आओ। कमलाकान्त का बन्धु क्या आयेगा ?

आधो आँचरे बोसो

इस तृणशस्य समाच्छन्न, कंटकाकीर्ण कर्कश संसारारण्य में हे वाछित, तुम्हे क्या आसन दे सकता हूँ, मेरे इस हृदयावरण के आधे में उपवेशन करो। कुशकंटकादि से तुम्हारे आच्छादन के लिए मैं अपने अंगो को अनावृत्त कर रहा हूँ। मेरे आँचल में बैठो। जिससे मेरी लज्जा रक्षा, मान रक्षा हो, जिससे मेरी शोभा बढ़े। हे मिलित, तुम भी उसका आधा ग्रहण करो। आधे आँचल मे बैठो। हे दूसरो के हृदय, हे सुन्दर, हे मनोरजन, हे सुखद, पास आओ, मुझे स्पर्श करो, मै तुममे संलग्न होऊँगा। दूर स्थित आसन ग्रहण मत करो—हमारे इसी शरीर संलग्न अंचलार्द्ध में बैठो। हे कमलाकान्त, हे दुर्विनित, हे आजन्म-विवाह शून्य, तुम इसे शान्तिपुरी वल्कादार आँचल का आधा भाग मत समझना। तुम जिस अंचलार्द्ध मे बैठोगे, उसे बनाने वाला जुलाहा आज तक पैदा नही हुआ है। मन का नग्नत्व ज्ञान-वस्त्र मे आवृत्त है। आधे से तुम अपना हृदय आवृत्त रखो, आधे पर वाछित को बैठाओ। तुम मूर्ख हो, फिर भी तुमसे अधिक मूर्ख कोई हो तो उसे बुलाओ—आओ, आओ, बन्धु आओ—आँचल पर बैठो।

नयन भरिया तोमाय देखी

कभी किसी ने देखा है ? तुमने काफी रकम पैदा की है—कभी नयन भरकर आत्मधन देख सके हो ? तुम यशस्वी बनने के लिए जान की बाजी लगा रहे हो, पर कब आत्मयशोराशि देखकर तुम्हारे नयन भर उठे है ? रूप तृष्णा मे तुमने यह जीवन गँवाया, जहाँ फूल फूलते हैं, 'फल हिलते है, जहाँ चिड़िया' उड़ती है, जहाँ मेघ दौड़ते है, गिरि शृंग उठते हैं, नदी बहती है, पानी झरता है, क्या तुमने वहाँ रूप की खोज की है ? जहाँ बच्चे प्रफुल्ल मुख मण्डल आन्दोलित कर हँसते है, जहाँ युवतियाँ ब्रीड़ा रूप मे टूट कर शंकित भाव से गमन करती है, जहाँ प्रौढ़ाएं नितान्तस्फुटिता मध्याह्न पद्मिनीवत् नि.संकोच रूप का विकास करती है, तुम वही रूप की तलाश कर रहे हो। कभी जी भर कर रूप देखा है ? क्या यह नही देखा है कि कुसुम देखते ही देखते सूख जाता है, देखते ही देखते फल पक जाता है।, गिरता है, सड़ता है, गल जाता है, चिड़िया उड़ जाती है, मेघ चला जाता है, गिरि धुएँ में छिप जाता है, नदी सूख जाती है, चाँद डूब जाता है, नक्षत्र बुझ जाते है ? शिशु की हंसी रोग हरण कर लेता है, युवती की लज्जा लुट जाती है ? प्रौढ़ा अधिक उम्र में सूख जाती है। यही इस दुनिया का दूरदृष्ट है, कोई कुछ भी नयन भरकर देख नही पाता यानी इस दुनिया की शुभादृष्ट—कोई नयन भरकर देख नहीं पाता। गति ही संसार का सुख है—चचलता ही संसार का सौन्दर्य है।

नयन नही भरते। वह नयन हमे नही मिला है। अगर मिलता तो ससार दु.खमय लगता। परितृप्ति-राक्षसी हमारे सभी सुखो को ग्रास करती है। जिस कारीगर ने इस परिवर्तनशील संसार और इन अतृप्त नयनो का सृजन किया है, उनकी कारीगरी पर कारीगरी, यही वासना है—नयन भर कर तुम्हे देखूं, जगत परिवर्तनशील है, नयन भी अतृप्त, फिर भी वासना है—आँखो मे भरकर देखूं।

हे रूप, हे वासना—सौन्दर्य, हे अन्त:प्रकृति के साथ सम्बन्ध विशिष्ट, पास आओ, तुम्हें आँखो मे भरकर देखूँ। दूर बैठोगे तो देख नही पाऊँगा, क्योकि देखना केवल नयनों से नही है। संस्पर्श या नैकट्य-व्यतीत मन मे विद्युत प्रवाह नही होता। हम लोग अपना सर्व शरीर देखते हैं। मन से मन मे विद्युत प्रवाह होने पर ही नयन भरेगे। हाय, किससे नयन भरेगा। नयनो के ऊपर पलकें जो है।

अनेक दिवसे-मनेर मानसे तोमाधने मिलाइल विधि हे

कभी-कभी मै सोचता हूँ कि दु:ख के परिमाण के लिए ही दया करके विधाता ने दिवस की सृष्टि की है। वर्ना काल-अपरिमेय और मनुष्य दु:ख अपरिमित होता। इन दिनो हम यह कह सकते हैं कि हम दो दिन, दो माह या दो साल दु:ख भोग चुके हैं, पर अगर दिन-रात का परिवर्तन न होता, काल का पथ चिन्ह-शून्य रहता, तो कौन यह न समझता कि मै अनन्तजाल से दु:ख भोग रहा हूँ। आशा को तब खड़े रहने के लिए स्थान न मिलता,—इतने दिनों बाद दु खों का अन्त होगा, यह बात कोई सोच भी नही सकता। वृक्षादि शून्य-अनन्त प्रान्तरवत्-जीवन का मार्ग अनुत्तीर्य होता। जीवन यात्रा दुस्सह यन्त्रणा से भर जाती। अतएव यह वृहद्-जगत् केन्द्र सूर्य का मार्ग हमारे सुख-दु.ख का मानदण्ड है। दिवस-गणना में सुख है। सुख है तभी तो दुखीजन दिवस गिनते रहते है। दिवस-गणना दु:ख विनोदन। पर कुछ ऐसे दु.खी हैं जो दिवस को गिनते नही। दिवस-गणना उनके लिए चित्र विनोदन नही है। मैं कमलाकान्त चक्रवर्ती—मैने इस पृथ्वी पर भूल से मनुष्य जन्म लिया है। सुखी-हीन, आशा-हीन, उद्देश्य-शून्य, आकांक्षा-शून्य, मैं क्यों दिवस गिनने जाऊँ? इस संसार-समुद्र में मै भासमान तृण हूँ, संसार के वातावरण में चक्कर काटनेवाला धूल का कण हूँ, संसारारण्य में मैं एक निष्फल वृक्ष हूँ, ससाराकाश मे मै वारिशून्य मेघ हूँ, मैं क्यो दिवस गिनूँ?

गिनूँगा। मेरा एक दु ख, एक संताप, एक भरोसा है। सन् १७९७ ई० से दिवस गिनूँगा। जिस दिन से बगाल में हिन्दू नाम लोप हो गया, उसी दिन से गणना करूँगा जिस दिन सप्तदश आश्वारोहियों ने बंगाल विजय किया था, उस दिन से गणना करूँगा। हाय कितना गिनूँगा? दिन गिनते-गिनते वर्ष, वर्ष गिनते-गिनते शताब्दी, शताब्दी को भी सात बार गिनना पडता है। पर कहाँ अनेक दिवस मे, मन के मानस मे, विधि ने कहाँ मिलाया। जो चाहता हूँ, वह कहाँ मिला? मनुष्यत्व कहाँ मिला? एक जातीयत्व कहाँ मिला? एकता कहाँ? विद्या कहाँ? गौरव कहाँ? श्री हर्ष कहाँ? भट्टनारायण कहाँ? हलायुध कहाँ? लक्ष्मण सेन कहाँ? क्या ये नही मिलेंगे? हाय, क्या सभी की इप्सित मिलती है जो कमलाकान्त को मिलेगी?

मणि नहीं, माणिक नहीं जो हार बनाकर गले में पहनूं

विधाता ने जगत् को जड़मय क्यों किया है? रूप जड़ पदार्थ क्यों है? सभी भूत क्यों नही हुए? होने पर हृदय-हृदय से कैसा मिल जाता। अगर रूप के लिए शरीर की आवश्यकता थी तब विधाता ने हमारा-तुम्हारा शरीर एक ही क्यों नही बनाया? तब विच्छेद न होता। क्या अब भी एक शरीर नही हो सकता? मेरे शरीर मे इतनी जगह है कि क्या उसमे तुम्हे रख नही सकता? तुम्हे गले से लगाकर हृदय मे विलम्बित कर रख नही सकता। हाय न तो तुम मणि हो, माणिक भी नहीं जो हार बनाकर गले मे पहनूं।

और बंग भूमि, तुम क्यो मणि-माणिक नही हुई, तुम्हें क्यों नही अपने गले का हार बना सका? तुम्हें अगर गले मे पहन लेता तो जबतक यवन मेरे हृदय पर पदाघात न करते तबतक उनका पदरेणु तुम्हें स्पर्श न कर पाते। तुम्हें सुवर्ण के आसन पर बैठाकर, हृदय मे झुलाते हुए देश-देश की यात्रा करता। योरप, अमेरिका, मिस्र, चीन, देखते तुम मेरी उज्ज्वल मणि हो।

मुझे नारी न बनाते विधि तुम्हारे जैसे गुण निधि को देश-देश में घुमाता

पहले आह्वान, आओ, आओ, बन्धु आओ, बाद मे आदर-आधे आँचल मे बैठो, बाद मे भोग-आँखो मे भरकर देखूं। तब सुख भोग-कालीन पूर्व-दु:ख-स्मृति अनेक दिवस में, मन के मानस मे, तुम्हारे जैसे धन से विधि ने मिलाया। सुख द्विविध, सम्पूर्ण एवं असम्पूर्ण। असम्पूर्ण जैसे मणि नही, माणिक नही जो हार बनाकर गले मे पहनूँ।'

बाद मे सम्पूर्ण-सुख

मुझे नारी न बनाते विधि

तुम्हारे जैसे गुण निधि को

देश-देश में लेकर घूमता

सम्पूर्ण असह्य सुख का लक्षण है शारीरिक चंचलता, मानसिक अस्थैर्य। यह सुख कहाँ रखूं? लेकर क्या करूँगा? मै कहाँ जाऊँ, इस सुख के भार को लेकर कहाँ फेक दूं? इस सुख के भार को लेकर मै नाना देश के चक्कर काटूं? यह सुख एक ही स्थान मे रखा नही जा सकता। पृथ्वी पर जहाँ-तहाँ स्थान है, वहाँ-वहाँ इस सुख को ले जाऊँगा। इस जगत् को इस सुख से भर दूँगा। संसार को इस सुख मे तैराता रहूँगा, मेरु से मेरु तक सुख के तरंगों को नचाऊँगा। स्वय डुबूँगा, तैरूँगा, उठूँगा, चलूँगा और दौडूँगा। इस सुख पर न कमलाकान्त का अधिकार है और न बंगालियो का। सुख की बात पर बगालियो का अधिकार नही है। गोपी को दु:ख है कि विधाता ने उसे नारी क्यों बनाया? हम लोगां को इस बात का दु.ख है कि विधाता ने हमे नारी क्यो नही बनाया—तब तो यह चेहरा दिखाना न पड़ता।

सुख की बात पर बगालियों का अधिकार नही है, पर दु.ख की बात पर है। कातोरक्ति कितनी ही गंभीर, कितनी ही हृदय-विदारक क्यो न हो, वही बंगालियों की मर्मोक्ति है। फिर कातोरक्ति कहाँ नही है? नव प्रसूत पक्षी शावक से लेकर महादेव की श्रृंगध्वनि तक सभी कातोरक्ति ध्वनि करते है। सम्पूर्ण सुख मे सुखी भी सुख के दिनो में पूर्व-कालक का स्मरण करते हुए कातोरक्ति करता है। अन्यथा सुख की सम्पूर्णता क्या है? दु:ख-स्मृति व्यतीत सुख की स्मृति कहाँ है? सुख भी दु:खमय है।

तुम जब याद आते हो,

मै वृन्दावन की ओर देखती हूँ

बिखरे हुए केशों को नहीं बांधती

यह बात सुख-दु:ख की सीमा-रेखा है। जिनमे नष्ट सुखो की स्मृति जागृत होने पर सुख का निर्देशन अब भी दीख जाता है, वह आज भी सुखी है, उसका सुख पूर्ण रूप से नष्ट नही हुआ है, उसका बन्धु, उसका प्रिय, वांछित चला गया, पर वृन्दावन है, इच्छा होने पर वह उस सुख-भूमि की ओर देख सकती है जिसका सुख गया, सुख का निर्देशन गया, बन्धु गया, वृन्दावन भी गया, उसके लिए कही देखने का स्थान नही रहा, वही दु:खी है अनन्त दु खी। विधवा-युवती अपने मृत पति की संजोकर रखी हुई पादुका के खोने पर जितना दु.खी होती है, ठीक उसी प्रकार के दु.ख मे दु खी।

हमारे इस बंग-देश मे सुख की स्मृतियाँ है, निर्देशन कहाँ है? देव पालदेव, लक्ष्मण सेन, जयदेव, श्री हर्ष-प्रयाग तक फैला राज्य, भारत अधीश्वर के नाम से प्रसिद्ध, गौड़ी रीति, इन सबकी स्मृतियाँ है, पर निर्देशन कहाँ है? सुख की याद आयी, पर किस दिशा की ओर देखूँ? वह गौड़ कहाँ है? वह तो केवल शत्रुलांछित भग्नावशेष है। आर्य राजधानी के चिन्ह कहाँ है? आर्यो का इतिहास कहाँ है? जीवन चरित्र कहाँ है? कीर्ति कहाँ है? कीर्ति स्तम्भ कहाँ है? समर क्षेत्र कहाँ है? सुख चला गया है, सुख-चिन्ह भी चला गया है, बन्धु चला गया, वृन्दावन भी चला गया—अब किधर देखूँ?

देखने के लिए एक श्मशान भूमि है—नवद्वीप। जहाँ सप्तदश यवनो ने बंगाल पर विजय प्राप्त किया था। बग माता को याद आ गयी। मै उसी श्मशान भूमि की ओर देख रहा हूँ। जब मै देखता हूँ कि छोटे से गाँव के किनारे आज भी वही कलधौतवाहिनी गंगा कल-कल रव ध्वनि कर रही है तब मै गंगा को बुलाकर पूछता हूँ—तुम तो हो, पर वह राजलक्ष्मी कहाँ है? जिनके पैर धोती थी, वह माता कहाँ है? तुम जिसे घेर-घेरकर नाचा करती थी, वह

आनन्दरूपिणी कहाँ है ? तुम जिसके लिए सिंहल, बाली, सुमात्रा से अपने कलेजे पर धन ढोकर लाती थी, वह धनेश्वरी कहाँ है ? तुम जिसके रूप की छाया पकड़कर रूपसी सजती थी, वह अनन्त सौन्दर्यशालिनी कहाँ है ? तुम जिसके प्रसाद फूल लेकर अपने स्वच्छ हृदय मे माला पहनती थी, वह पुष्पाभरण कहाँ है ? वह रूप-ऐश्वर्य कहाँ है ? धोकर ले गयी क्या ? विश्वासघातिनी । तुम क्यो फिर श्रवण-मधुर कल-कल रव से मन बहला रही हो ? समझ रहा हूँ, तुम्हारे अतल गर्भ मे यवनों के भय से वह लक्ष्मी डूब गयी है । जानता हूँ—'कुपुत्रो का मुँह नही देखूँगी' कहती हुई वे डूब गयी हैं । मन ही मन मै उस दिन की कल्पना करता हुआ रोता रहता हूँ । मन ही मन देखता रहता हूँ—मार्जित वर्छा-फलक उन्नत किये, अश्व पद शब्द मात्र से नैश नीरवता विघ्नित करते हुए यवन-सेना नवद्वीप की ओर आ रही है । काल-पूर्ण होते देख नवद्वीप से बंगाल की लक्ष्मी अन्तर्हिता हो गयी । सहसा आकाश अंधकारमय हो गया, राजप्रसाद के शिखर टूटकर गिरने लगे । पथिक भयभीत होकर मार्ग से हट गये, नागरी (नगरे में रहने वाली स्त्री) के तन से अलंकार गिर पड़े, कुञ्जवन में पक्षी नीरव हो गये; गृह-मयूर कण्ठ मे अर्धव्यक्त केकार शेषांश पुनः प्रस्फुटित नही हुआ । दिवस मे ही निशीथ आ गया, पण्य वीथिकाओ की दीपमालाएँ बुझ गयी, पूजा-गृहो मे बजाने के समय शख नही बजे, पण्डितो ने अशुद्ध मन्त्र पढे, सिहासन से शालिग्राम लुढक गये, युवाओ मे सहसा बल क्षय हुआ, युवतियाँ वैधव्य की आशका से रोने लगी, शिशु बिना किसी रोग के माताओ की गोद मे गिर पड़े । गाढ-तर-गाढतर अंधकार से चारो दिशाएँ घिर गयी । आकाश, अट्टालिका, राजधानी, राजवर्त्म, देवमंदिर, पण्य-वीथिकाओ को उस अन्धकार ने घेर लिया । कुञ्ज तीर भूमि, नदी-सैकत, नदी-तरंग उस घने अन्धकार मे डूब गये । मै अपनी आँखो से सब कुछ देख रहा हूँ, आसमान मे मेघ गरज रहे है । उस सोपानावली को अवतरण करती हुई राजलक्ष्मी पानी मे उतर रही है । अन्धकार मे निर्वाणोन्मुख आलोक विन्दुवत पानी मे क्रमशः वह तेज-राशि विलीन हो रही है । अगर गगा के अतल जल मे नही डूब गयी तो मेरी वह देश लक्ष्मी आखिर कहाँ गयी ?

(अनु०—विश्वनाथ मुखर्जी)

मातृ वंदना

उन दिनों श्री आशुतोष मुखर्जी कलकत्ता विश्व विद्यालय के उप कुलपति थे । पंजाब विश्व विद्यालय ने उन्हें अपने यहाँ दीक्षान्त भाषण देने के लिये बुलाया । पंजाब विश्व विद्यालय के कुलपति थे पंजाब के तत्कालीन गवर्नर । मंच पर वे विराजमान थे । सामने प्रान्त के अनेक मान्य राजभक्त और शिक्षाविद लोग बैठे थे ।

श्री मुखर्जी का जैसा भारी भरकम शरीर था, वैसा ही चेहरा । बड़ी-बड़ी मूँछें, गंभीर आवाज । जब उन्हें भाषण देने के लिये आह्वान किया गया तब मंच के सामने आकर वे गंभीर स्वर में गाने लगे……'वंदे मातरम् सजलां सुफलां'………

उपस्थित लोगों में बेचैनी फैलने लगी । लोग यह अन्दाज लगाने लगे कि कहीं राजद्रोह के अपराज में मुखर्जी महाशय गिरफ्तार न हो जॉय ।

इधर वे सस्वर में गाते गये……मलयज शीतलां, शस्य श्यामलाम् …..

गीत समाप्त करने के बाद श्री आशुतोष मुखर्जी ने कहा—मातृ वन्दना के बाद ही कोई कार्य करना चाहिए । इसके बाद उन्होंने अपना ओजस्वी भाषण दिया । कार्यक्रम समाप्त होने के बाद देखा गया कि कोई नयी बात नहीं हुई । गवर्नर ने कोई कार्यवाही नहीं की ।

यह देखकर सभी लोग कहने लगे—वाह रे, मुखर्जी बाबू । आज अपने कमाल का काम किया । सचमुच में आप शेरे बंगाल है । मर्द हो तो आप जैसा । पंजाब को आप जैसा नेता चाहिए ।

कमलाकान्तेर 'एसो-एसो बन्धु एसो'

—श्री पूर्णचन्द्र चट्टोपाध्याय

रजनी गंभीर ग्राम निस्तब्ध ठीक इसी समय किसी गृहस्थ के घर से एक व्यक्ति तेज कदमो से बाहर निकल कर कुछ दूर गया और बन्दूक से गोली चलायी। साथ ही साथ गाँव की गंभीर निस्तब्धता को भग करते हुए सुषुप्त ग्रामवासियो को जगाने के लिए चारों ओर से ढोल ढाक बजने लगे। उक्त गृहस्थ के घर मे भी ढोल - ढाक बजने लगे। महाष्टमी की रात को संधि-पूजा आरम्म हुई। उन दिनो हर किसी के घर मे घड़ी नही होती थी, इसलिए उक्त भवन के गृहस्थ बन्दूक की आवाज से अन्य पूजा करने वालो गृहस्थो को संधि-पूजा की सूचना देते थे। उस समय रात के कितने बजे थे, मुझे यह स्मरण नही है, क्योंकि यह बहुत पुरानी घटना है। अनुमान है कि रात के दोपहर समाप्त हो गये थे। अष्टमी का चाँद अस्त नही हुआ था। इस गृहस्थ का समस्त भवन प्रकाश से जगमगा रहा था। जिधर देखिये उधर ही रोशनी जगमगा रही थी। छोटे-छोटे दीपको का प्रकाश, संधि पूजा का प्रकाश था। कुछ बच्चे उस प्रकाश के निकट चहल कदमी कर रहे थे। जो दीपक बुझ जाता, उसे तुरत जला देते। पूजा के बरामदे मे भी वैसी ही रोशनी थी। दशभुजा (दुर्गा) के सामने से लेकर आँगन तक दीप मालिकाएँ सजी हुई थी। कुछ देर बाद ढाक-ढोल बजना बन्द हो गये। अब दशभुजा के सामने पुरोहित और तंत्रधारकों के मंत्रों से वातवरण ध्वनित होने लगा। भीतर बरामदे के बीच सिह-पृष्ठ पर असुर-मर्दिनी पूरे भवन को प्रकाशमय कर रही थी। सामने स्तूपाकार विल्व-पत्र और नाना प्रकार के फूल थे। इसमें अधिकतर पद्य फूल थे। पास ही पुरोहित और तत्रधारक बैठे पूजा कर रहे थे। इन लोगो के समीप ही एक खम्भे से टेक लगाये पृथक आसन पर एक व्यक्ति बैठे थे। देखने पर वे साधारण मनुष्य नही लगते थे। इन्हे देखते ही समझ मे आ जाता था कि ये अन्य लोगो से भिन्न स्वतन्त्र प्रकृति के है। ये ही है—बंकिमचन्द्र के पिता। किसी महापुरुष के मत्र-शिष्य, निष्काम धर्मावलम्बी। बंकिमचन्द्र ने अपनी पुस्तक 'देवी-चौधुरानी' आपको समर्पित करते हुए लिखा है—'जिनके लिए प्रथम निष्काम धर्म सुना था, जिन्होंने स्वयं निष्काम धर्म का व्रत लिया था, इस महापुरुष की वय उन दिनो अस्सी के ऊपर हो चुकी थी। दीर्घाकार गौरवर्ण देह, न क्षीण और न स्थूल। फिर भी वयोपयोगी बलिष्ठ, खड्ग की भाँति नासिका, आँखों तीव्र चमक, मस्तक और मुख-मंडल केशहीन। केवल एक चादर ओढ़कर स्थिर भाव से प्रसन्न मुख बैठे थे। भवन के बरामदे मे ही कुछ वृद्ध सज्जन सिर पर चद्दर लपेटे एक गलीचे पर बैठे जप कर रहे थे। प्रतिमा के पश्चिम की ओर अन्त:पुर के प्रवेश द्वार के समीप कुछ सधवा, विधवा और वृद्धाएँ गले में आँचल लपेटे जप कर रही थी।

मैं एक खम्भे से टेक लगाये खड़ा था। क्या देखता रहा, यह स्मरण नही है। लड़के दीपकों के पास चक्कर काटते रहे। कही उनके कपड़े में आग न लग जाय, शायद यही देख रहा था। ठीक इसी समय न जाने कौन मेरे पीछे आकर खड़ा हो गया। पलटकर देखा—बंकिमचन्द्र थे। उन्हे देखकर मै जरा पीछे हटकर खड़ा हो गया। उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखते हुए मुझे खींचा अर्थात् हटने के लिए मना किया। उन दिनो उनकी उम्र ३५ से ४० के

बीच थी। मूँछों के बाल पकने लगे सिर के बाल काफी सफेद हो गये थे। उन दिनों बंग दर्शन का पूर्ण यौवन बंग साहित्य था, समाज मे एकाधिपत्य था। वे देरतक स्थिर भाव से प्रतिमा की ओर देखते रहे। मुँह से एक शब्द नही बोले।

मैने उनके आने के कुछ देर पहले असुर के सिर पर कृष्णवर्ण का एक पदार्थ देखा था, पर वह क्या चीज थी, दूरसे समझ नहीं पा रहा था। बाद मे पता लगा कि वह बिल्वपत्र था। बंकिमचन्द्र से मैने पूछा—'असुर के सिर पर वह क्या चीज है ?'

कुछ देर बाद उत्तर मिला—'गणेश का चूहा है।'

मैंने पूछा—'गणेशका चूहा असुरके सिरपर क्यों है।'

उन्होंने—'क्षुद्र जानवरों के लिए असुर के कंधे पर चढने का ठीक समय है। देखो, कार्तिक की सवारी मयूर ने असुर काटने के लिए गर्दन घुमायी है। और वह देखो, प्रतिमा के चारों ओर जो पक्षी है, वे अपने पंख फड़फड़ा रहे हैं। वे सभी उड़कर असुर के कंधे पर बैठ जायँगे और उसे कुतरने लगेंगे।'

मैंने पूछा—'असुर का अपराध '

उन्होने कहा—"अपराध कुछ भी नही है। जो लोग प्रबल प्रतापान्वित अपराजेय है, जिनसे सभी डरते है, उनकी मुमूर्षु, अवस्थामे क्षुद्र प्राणी भी उनपर यथा साध्य अत्याचार करते हैं।'

मैंने पूछा—'अभी असुर की मुमूर्षु अवस्था कहाँ है ? वह देखिये, भीषण मूर्ति धारणकर देवी को तलवार उठा कर मारने जा रहा है।'

उन्होने उत्तर दिया—'जरूर-जरूर। वीर पुरुष, तेजस्वी पुरुष शत्रुके हाथो इसी तरहते मर है, वे मरकर भी नही मरते। पर असुर जीवित कहाँ है ? सिंह के भीषण दाँतों ने उसे काट लिया है और देवी ने उसके ऊपर एक भयानक साँप छोड़ दिया है। वह रह-रहकर चोट कर रहा है और देवी स्वयं दाहिने हाथ बर्छा उसके कलेजे पर चला चुकी है बाकी आठों हाथ भिन्न-भिन्न अस्त्र-निक्षेप करते हुए उसे क्षत-विक्षत कर रहे है। असुर मर चुका है और यही समय है जब प्राणी उस पर चढ़ेंगे।"

मुझे यह सारी बातें याद हैं। केवल अपनी भाषा में उसे स्पष्ट कर रहा हूँ। इस बातचीत के बाद बंकिमचन्द्र चले गये। मैं भी बैठक में जाकर बैठ गया। वहाँ कोई हुक्का पी रहा था तो कोई गप्प लड़ा रहा था। ये लोग बंकिम के पड़ोसी थे। कुछ लोग रात को फलाहार करने के बाद घर वापस न जाकर यहीं ठहर गये थे। इनमें एक सज्जन बाहरी थे। इस गाँव के एक व्यक्ति ईस्ट इंडिया रेलवे के आफिस में नौकरी करते है, पर इनका मुख्य कार्य है कलकत्ता स्थित प्रधान कार्यालय में खुशामद करना। जब इनको पत्नी नैहर रहती थी तब प्रत्येक शनिवार और अन्य छुट्टियो के दिन काँटालपाड़ा आकर बंकिमचन्द्र और उनके भाइयों के पास रहते थे। आपकी कहानी आगे चल कर बताऊँगा। एक अन्य परदेशी व्यक्ति भी मौजूद थे। आपका नाम बलहरि दास है। रानीहाटी परगना मे आपका घर है जहाँ का कीर्तन "रैनिटी" नाम से प्रसिद्ध है। आप बड़े सुन्दर ढंग से कीर्तन गाने का अभ्यास कर चुके है। बंकिमचन्द्र के जेष्ठ भ्राता के समीप रहते है। आज उन्हीं के आदेशानुसार आये हैं। कुछ देर बाद सभी भाई उपस्थित हुए। प्रसिद्ध डिप्टी मैजिस्ट्रेट स्व० ईश्वरचन्द्र मित्र ने एक बार मुझसे कहा था कि बँकिमचन्द्र जब किसी मजलिस में आता है तब जैसे समास्थल लोगो के शरीर में इलेक्ट्रिसिटी दौड़ा देता है, सभी उल्लसित हो उठते है। यह बात मे स्वयं देख चुका हूँ कि यह गुण न केवल बँकिमचन्द्र में था, बल्कि दीनबन्धु, हेमचन्द्र और मधुसूदन मे भी था। पर उसका रूप कुछ और था। बहरहाल ज्योंही बँकिम ने भीतर प्रवेश किया त्योंही मजलिस में सरगर्मी आ गयी। जो लोग चद्दर ढांके सो रहे थे, वे उठकर बैठ गये। हास्य से वातावरण मुखरित होने लगा। तम्बाकू के धुएँ से प्रकाश मटमैला हो उठा। शायद आप लोगो को यह जानकर परेशानी होगी या आप चौंक उठ सकते हैं कि हम चारों भाई एक साथ बैठकर हुक्का पीते थे। और काफी पीते थे, यहाँ तक कि मुँह से सटक नहीं हटाते थे।

इसके बाद उक्त सज्जन बँकिमचन्द्र को प्रसन्न करने के लिए या किसी उद्देश्य से यह बताने लगे कि बँकिमचन्द्र के बारे में किसने, कब क्या कहा।

उन आलोचनाओं की बातें मुझे विशेष रूप से स्मरण नहीं है, पर वे सभी बँकिम की रचनाओं के बारे मे थी। बँकिम की रचनाओ का उन दिनों काफी विरोध होता रहा।

बहरहाल, अब मैं महाष्टमी की रात की बात पर पुनः आ रहा हूँ। उस समय रात गहरी हो गयी थी। नींद के झोंके आने के कारण मैं सो गया था। पता नही, कब तक सोता रहा। अचानक सुदूर निःसृत मधुर संगीत ने कर्ण कुहरों मे प्रवेश किया। जो लोग अर्द्ध निद्रावस्था में संगीत सुन चुके हैं, वे ही इसका सुखानुभव कर सकते हैं। उस समय गायक एक गीत गा रहा था, वह गीत था—

'एसो, एसो, एसो, बंधु, आध आँचरे बसो'

काफी देर बाद बन्द हुआ। गायक बाहर चला गया। मैं उठकर बैठ गया। चारों ओर गौर से देखा-बँकिमचन्द्र बायें हाथ पर सिर टेके चुपचाप बैठे हैं। मुँह से सटक गिर गया है, पर उनकी दृष्टि कहाँ है? वे एक चित्र को एकटक देख रहे थे। वह एक बिलायती तसवीर थी, एक अनुपम सुन्दरी की। उसके गले में मोती की माला थी। उक्त सुन्दरी एक डिब्बे से एक ओर मोती की माला निकाल रही थी। सँकोच के साथ पीछे न जाने किसकी ओर देख रही थी जैसे बिना उसकी अनुमति लिए ऐसा कर रही हो।

अलंकार-प्रिया सुन्दरी का हृदय एक लड़ी मोतियों की माला से खुश नही हुआ है। अत. एक और लडी निकाल रही है। वह जिस किसी की ओर देख रही थी, उसकी आकृति तसवीर में नही थी। चित्र बहुत ही सुन्दर था, सभी उसकी प्रशंसा कर रहे थे, पर बँकिमचन्द्र उस उस तसवीर में क्या देख रहे थे? उनके मन में कौन सी भावना उदय हो रही थी? मानव का स्वभाव है कि जब वह एकाग्र चिन्तन करता है तब वह साधारण तौरपर अंतर मन से किसी पदार्थ विशेष की और दृष्टि जमा लेता है। उसकी दृष्टि एक स्थान पर जम जाती है। मुझे समझते देर नही लगी कि उनका हृदय उच्छ्वासोन्मुख समुद्र की भाँति स्फीत हो उठा है और शायद इसीलिए उनकी दृष्टि उक्त तसवीर पर जम गयी है। उन्होंने स्वयं ही 'बंग दर्शन' में लिखा है—'जब यह गीत पहले पहल जी भरकर सुना था तब ऐसा अनुभव कर रहा था कि नीले आकाश के नीचे नन्हा पक्षी बनकर इस गीत को गाता रहूँ। सोचता रहा, उस विचित्र सृष्टि कुशली कवि की सृष्टि से देव-वंशी लेकर, मेघों के ऊपर जो वायुस्तर शब्दशून्य, दृश्यशून्य स्थान है, जहा से पृथ्वी दिखाई नहीं देती, वहाँ अकेले बैठकर उसी में, यही गीत गाता रहूँ। इस गीत को कभी नहीं भुला सका, कभी भूल भी नहीं सकता।'

जिस प्रकार गीत समाप्त होने पर तसवीर की ओर एक टक बँकिमचन्द्र देखते रहे, उसी प्रकार उनके अग्रज संजीचन्द्र गीत समाप्त होने पर लेटकर धरन की ओर देखते रहे। वे भी प्रतिभाशाली थे। उनके मन में कौन सी भावना उत्पन्न ही रही थी, कौन जाने?

गायक पुनः कमरे के भीतर आया। पुनः गीत शुरू हुआ। इस बार नया प्रारम्भ हुआ—'एसो तोमाये नयने लुकाये थोबो।'

सोचा—यह तो किसी और कवि की रचना है। ठीक इसी समय संजयचन्द्र बोले—'यह अन्य कारीगर की रचना है।'

इसके बाद चण्डीदास, गोविन्द दास, विद्यापति आदि के गीत चलते रहे। अन्त में पुनः 'एसो, एसो, एसो' गीत गाने की फरमाइश हुई। सुर की तरंग उठी। शरीर रोमांचित हो उठा। सभी निस्पन्द सुनते रहे। गायन समाप्त हुआ।

इसी बीच न जाने कौन खिडकियो को खोल गया था। बाहर की ओर झांककर देखा भोर हो गया था। नीले आकाश में नक्षत्र ज्योतिहीन हो रहे थे, केवल पूर्व दिशा मे शुक्रतारा चमक रहा था। बंकिमचन्द्र के भवन के सामने एक बड़ा मैदान था, उसके पूर्व की ओर दक्षिण मे आम्र कानन था। उन पेड़ों पर असंख्य पक्षी कलरव कर रहे थे। धीरे-धीरे सफेदी बढ़ती गयी और पक्षी भोजन की तलाश में उड गये। बैठकखाने के बाबू लोग अपने अपने घर चले गये। इस प्रकार महाष्टमी की रात्रि के अन्त मे 'एसो-एसद' गीत को बंकिम चन्द्र ने सुना। इस घटना के बहुत दिनों बाद कमलाकान्त चक्रवर्ती ने प्रसन्न अहीरिन को 'बंग दर्शन' मे यह गीत सुनाया था।

(अनु०—विश्वनाथ मुखर्जी)

वन्दे मातरम्

— श्री ललित कुमार मित्र —

'वन्दे मातरम्' गीत लिखा जाने के बाद बंकिमचन्द्र के घर तत्कालीन सुकण्ठ गायक भाटपाड़ा के स्वर्गीय यदुनाथ भट्टाचार्य महाशय ने इसमे स्वर संयोजन करते हुए पहले पहल गाया था। उस दिनो 'बंग दर्शन' पत्रिका के कार्याध्यक्ष पंडित श्रीयुक्त रामचन्द्र वंद्योपाध्याय महाशय वहाँ उपस्थित थे। कार्यानुरोध से बनर्जी महाशय इस बात का ख्याल रखते रहे कि कैसे 'बंग दर्शन' का मैटर जल्द से जल्द भर जाय। उन्होने बकिमचन्द्र से कहा था—'गीत चाहे जैसा भी हो, वन्दे मातरम् से बंग दर्शन का पेट नही भरेगा। आप एक उपन्यास लिखना प्रारंभ करे।'

प्रत्युत्तर में बंकिमचन्द्र ने कहा था—'इस गीत का मर्म्म तुम लोग नही समझ सकोगे। अगर पच्चीस वर्ष जीवित रह गये तो देखोगे कि इस गीत के पीछे सारा बंगाल पागल हो उठेगा।'

महाऋषि की उक्त भविष्यवाणी आज सत्य में परिणत हो गयी है। इसे स्पष्ट करने की आवश्यकता नही। आज सोनार बंगाल का कानन-प्रान्तर वन्दे मातरम् ध्वनि से प्रति ध्वनित हो रहा है। आबाल-वृद्ध-वनिता सभी के कठो में 'वन्दे मातरम्' निनादित है। वन्दे मातरम् के रव से प्रवाहिणीकूल कल्लोलित और गिरि मालाएँ मुखरित है। स्वयं शब्द गुणमय अन्तरिक्ष आज वन्दे मातरम् मंत्र से विकम्पित है।

बंकिमचन्द्र की यह भविष्यवाणी काफी पहले उनके कनिष्ठ भ्राता पूजनीय पूर्णचन्द्र चटर्जी महाशय की जवानी सुन चुका था। पिछले १५ आषाढ़ (सन् १६१४) को जिस दिन रथयात्रा के अवसर पर कलकत्ता का 'वन्दे मातरम्—सम्प्रदाय' बंकिम-तीर्थ की ओर रवाना हुआ, उसी दिन पण्डित रामचन्द्र बनर्जी महाशय के साथ मेरी मुलाकात हुई थी और उन्ही की जबानी इस घटना को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ था।

अनेक लोगों का विश्वास है कि स्वदेश-प्रतिमा का स्तव करने के लिए आनन्द मठ में वन्दे मातरम् सन्निविष्ट किया गया है। पर अब मालूम हो गया कि आनन्दमठ की कल्पना के काफी पहले ही वन्दे मातरम् मन्त्र का उदय हो गया था। स्थिर भाव से चिन्तन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि आनन्दमठ मे बंकिमचन्द्र ने वन्दे मातरम् मंत्र की कवित्वमयी व्याख्या की है। उपन्यास के रूप मे देखने पर आनन्दमठ उद्देश्य मूलक ज्ञात होता है, इसीलिए बंकिम चन्द इसे काव्यांश के रूप मे निकृष्ट कहते रहे।

उनकी मृत्यु के कई माह पूर्व मे उनके श्रीचरणों का दर्शन करने गया था। कौतूहलवश उनसे पूछा था कि आपके उपन्यासों मे कौन सा श्रेष्ठ उपन्यास है?

उन्होंने कहा था—'कृष्णकान्त का वसीयतनामा, विष बृक्ष और राजसिंह का नया संस्करण।'

आनन्दमठ का उल्लेख न करते देख चकित रह गया था। मैं प्रारम्भ से आनन्दमठ का पक्षपाती रहा हूँ। शायद इसलिए कि अपने सुहृद मित्र यानी मेरे पितृदेव की स्मृति से यह पुस्तक सम्बन्धित है।

मैने उनसे निवेदन कि देश-प्रेम की कृति के रूप में आनन्दमठ अतुलनीय है।

उन्होंने कहा—'यह ख्याल अच्छा है, पर उसमें कला कम है। इसे माधुर्यमय और पवित्रतापूर्ण किया है।'

एक अन्य विषय के बारे मे बकिम चन्द्र की भविष्य दृष्टि का परिचय प्राप्त होता है। उनका आदेश था कि उनकी मृत्यु के बारह वर्ष बाद तक उनकी जीवनी अप्रकाशित रहे। आज १२ वर्ष बीत चुके हैं।[१] पहले वे साहित्य जगत् के अधिपति के रूप मे सम्मानित और आदृत थे पर आज वे 'वन्दे मातरम्' मंत्र के ऋषि के रूप में सर्वत्र पूजित हैं।

'बंकिम प्रसंग'—सुरेश समाजपति द्वारा संकलित पुस्तक से (पृ० २८७ से २८६)

(अनु० विश्वनाथ मुखर्जी)

१. बंकिम बाबू द्वारा लिखित कोई भी आत्म जीवनी प्राप्त नही है।—सम्पादक

मंत्र का जन्म

—श्री भवतोष दत्त—

भारत के राष्ट्रीय इतिहास में 'वन्दे मातरम्' का महत्व अद्वितीय है। ज्ञातव्य है कि "आनन्द मठ" नामक उपन्यास प्रकाशित होने के पूर्व ही इस गीत का प्रचार आम जनता मे हो चुका था। बंग-भंग आन्दोलन तथा गाधोजी के असहयोग ग्रान्दोलन मे यह गीत प्रेरणा देता रहा। "वन्दे मातरम्" मंत्र-शक्ति के रूप मे हमारी आजादी की लडाई और क्रांतिकारियो की टोली मे बिजली की तरह काम करता रहा।

श्री बंकिम चंद्र चट्टोपध्याय ने इस गीत को कब लिखा? सन् १८८० मे 'बंग दर्शन'[1]. नामक मासिक पत्रिका मे बंकिम बाबू का ग्रानन्दमठ उपन्यास धारावाहिक रूप मे छपना प्रारम्भ हुआ था। पुस्तक रूप में यह प्रथम वार १५ दिसंबर १८८२ को प्रकाशित हुआ। किन्तु मान्यता है कि 'बंग दर्शन' में प्रकाशित होने के पाँच वर्ष पूर्व वन्दे मातरम् गीत लिखा गया था। कवि ने इस गीत को लिखने के बाद बिना प्रकाशित कराये रख छोड़ा बाद में आनन्दमठ उपन्यास में प्रकाशित कराया।

जिस समय यह गीत लिखा गया था, बंकिम बाबू 'बंग दर्शन' पत्रिका के संपादक थे। यह सन् १८७२ से १८७६ की बात है। एक दिन पत्रिका का प्रकाशन-कार्य चल रहा था। अचानक मेक-अप के समय पता चला कि कुछ मैटर की कमी पड़ रही है। इधर पास मे कम्पोज करने लायक कोई मैटर नही था। प्रेस के मैनेजर रामचन्द्र बंद्योपाध्याय यह बात कहने के लिए संपादक श्री बंकिम बाबू के पास आये।

अचानक रामचन्द्र बंद्योपाध्याय की नजर एक ताजी कविता पर पड़ी। कविता संपादक जी की टेबुल पर रक्खी थी। रामचन्द्र ने कहा—'फिलहाल इस कविता को आप दे दीजिए तो काम बन जाय।'

बंकिम बाबू उस समय उस कविता को प्रकाशित कराने को राजी नही हुए। उन्होने कहा—'इस गीत का अर्थ इस समय कोई नही समझ सकेगा। लेकिन एक दिन आयेगा जब सम्पूर्ण देशवासी इसके महत्व को समझ सकेंगे।'

इस घटना की बात रामचन्द्र वद्योपाध्याय ने अमर नाट्यकार दीनवंधु के पुत्र ललित कुमार मित्र को सन् १९१४ ई० मे बतायी थी। [illegible] मे ललित कुमार ने इसका उल्लेख अपने एक लेख मे किया। पूर्णचन्द्र चट्टोपाध्याय ने भी इस घटना का अन्यत्र वर्णन किया है।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि मार्च सन् १८७६ के पहले ही यह कविता लिखी जा चुकी थी, क्योकि इसके बाद बकिम बाबू "बंग दर्शन" पत्रिका के सपादक नही रहे। लेकिन ठीक तारीख बताना कठिन है, केवल अनुमान लगता रहा।

"वन्दे मातरम्" गीत में जिस मातृमूर्ति की कल्पना की गयी है, उनकी जानकारी कमलाकान्त के दफ्तर के 'आमार दुर्गोत्सव' नामक रचना से प्राप्त होती है। वहाँ मातृभूमि दश-भुजा के रूप में प्रकट होती है। वहाँ कमलाकान्त माँ-माँ कहता हुआ उन्हे पुकार रहा है, संकल्प कर रहा है। वह काल समुद्र से माँ का उद्धार कर पुनः प्राचीन महिमा से उन्हे मंडित करना चाहता है। उसका यह संकल्प आनन्दमठ के संतानों की तरह का था। "आमार दुर्गोत्सव" रचना के समय में ही 'वन्दे मातरम्' की रचना हुई थी, इसमे तनिक भी सन्देह नहीं। गंभीर देश-प्रेम भावना और मातृभूमि की जननी के रूप में कल्पना कर तीव्र भावावेग से वे अभिभूत हो उठे और फलस्वरूप मातृभूमि के रूप मे वन्दे मातरम् मत्र उनके कंठ से फूट पड़ा।

'आमार दुर्गोत्सव' रचना फसली संवत् १२८१ (१८७५ ई०) के कार्त्तिक मास के बंग दर्शन मे छपी थी। इस दोनो रचनाओं में घनिष्ट सम्बन्ध है। विशेषतः मातृभूमि की दुर्गा विग्रह के रूप मे कल्पना करना। इसके पूर्व बंकिम की किसी भी रचना मे यह कल्पना नही मिलती। भूदेव मुखोपाध्याय की 'पुष्पाजलि' नामक पुस्तक के नवम अध्याय में देवीमूर्ति की कल्पना की गयी है जो सिंहवाहिनी सजीवनी देवी है। इसके अलावा अन्य कोई वर्णन नही है। कुछ लोगों का विश्वास है कि "ग्रानन्द मठ" का भावबीज इसमे निहित था। यह बताना कठिन है कि बंकिम बाबू ने इससे प्रेरणा ली थी या नहीं। लेकिन 'पुष्पांजलि' का प्रकाशन कमलाकान्त के बाद हुआ था।

---

१. उन दिनों इस पत्रिका के संपादक बंकिम बाबू के बड़े भाई श्री सजीव चन्द्र चटर्जी थे।

'आमार दुर्गोत्सव' की कल्पना के पीछे कोई आधार नही था, ऐसी बात नही है। पूर्णचन्द्र चटर्जी ने बंकिम बाबू के घर पर दुर्गा पूजा हुई थी। उक्त पूजा के साथ कमलाकान्त के 'एक टी गीत' का गहरा संबध है। महा-ष्टमी को रात को एक कीर्त्तनिया के कण्ठ से बंकिम एक गीत सुन रहे थे 'एसो-एसो बधु, 'आध आंचरे बसो।'

इस गीत ने बंकिम को इस तरह मोहाविष्ट कर लिया की वे इसे भूल नही सके उन्होंने इस गीत के बारे में अपने उद्गार कमलाकान्त की जवानी स्पष्ट किये है—'जब यह गीत पहले पहल जी भरकर सुना था तब ऐसा अनुभव कर रहा था कि नीले आकाश के नीचे क्षुद्र पक्षी बनकर इस गीत को गाता रहूँ। सोचता रहा, उस विचित्र सृष्टि कुशली कवि की सृष्टि से देव-बंशी लेकर, मेघों के ऊपर जो वायुस्तर शब्दशून्य, दृश्य शून्य स्थान है, जहाँ से पृथ्वी दिखाई नही देती, वहाँ अकेले बैठकर उसी मे, यही गीत गाता रहूँ। इस गीत को कभी भूल नही सका, कभी भूल भी नही सकूंगा।'

दर असल उन दिनों इस गीत की क्या कोई व्याख्या कर सकता था? राधिका का यह रोदन लेखक के हृदय में एक दूसरे ही रूप में बज रहा था। कृष्ण परित्यक्त वृन्दावन रूपान्तरित हुआ था अस्तमित गौरव बंग भूमि के रूप में। अन्तर्हित आजादी के लिए कमलाकान्त का हृदय छटपटाने लगा। सच तो यह है कि उन्ही दिनो तुर्की पर हमला किया गया था। उसकी स्वाधीनता समाप्त हो गयी थी। वैष्णव कवि के गीत ने बंकिम के दिल में स्वाधीनता की वह्नि जला दी।

सन् १८६९ ई० में जब बंकिम बाबू 'मृणालिनो' लिख रहे थे तभी से वे पराधीनता की घुटन अनुभव कर रहे थे। सन् १८७४ ई० मे प्रकाशित अपने प्रिय मित्र राजकृष्ण मुखोपाध्याय की कृति 'प्रथम शिक्षा बांगलार इतिहास' की समालोचना (१८७५) करते हुए 'बांगालीर इतिहास' निबन्ध में उन्होने इसे 'स्वर्ण मुष्ठि' कहा था।

इस समालोचना के कई माह बाद 'आमार दुर्गोत्सव' और 'एक नये गीत' की सृष्टि हुई। यह और कोई गीत नहीं—वन्दे मातरम् था।

वन्दे मातरम् गीत लिखे जाने के बाद इसे सुर से प्रथम बार सँवारा था—अमर गायक यदु भट्ट ने। आनन्दमठ में उक्त सुर का निर्देश है—मल्हार राग कौव्वाली ताल में। बंकिम बाबू यदु भट्ट से गायन भी सीखते थे।

आनन्दमठ से संयुक्त होने से पहले ही यह गीत सुर में बँधकर आम जनता में प्रचारित हो चुका था। पूर्णचन्द्र चटर्जी ने लिखा है कि इसे प्रथम बार गाया था—यदु भट्ट ने। इसका उल्लेख ललित कुमार मित्र ने भी किया है।

सन् १८८२ ई० में पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित होने के बाद 'वन्दे मातरम्' गीत की अपूर्व ख्याति मिली। लगता है कि प्रकाशित होने के पूर्व आम जनता में प्रचारित हो जाने के कारण ही घटना हुई।

सन् १८८५ ई० में ठाकुर परिवार की सदस्या ज्ञानदा सुन्दरी के संपादन 'बालक' नामक पत्रिका में गायन अध्याय कालम में इस गीत का प्रकाशन हुआ था। प्रतिभा देवी ने इस बारे में लिखा था कि वन्दे मातरम् गीत पूर्ण रूप से प्रकाशित नहीं किया जा रहा है, क्योकि इसका सुर अत्यन्त कठिन है।

आगे चलकर प्रतिभा देवी ने इसे रागिनी देस ताल कौव्वाली में बांधा था। बाद में इसे उन्होंने बिहाग में भी बांधा। इस गीत को रवि बाबू ने देस रागिनी मे निबद्ध किया था।

सन् १८८६ ई० में कलकत्ता कांग्रेस में कविवर हेमचन्द्र ने राखी बन्धन शीर्षक से काव्य पाठ किया था—

गाहिलो सकले मधुर काकली
गाहिलो वन्दे मातरम्
सुजलाम, सुफलाम मलयज शीतलाम
सुखदाम वरदाम मातरम्।

इससे यह तो स्पष्ट नहीं होता कि इस अधिवेशन में "वन्दे मातरम" का गायन हुआ था या नहीं, पर सन् १८९६ ई० के कांग्रेस अधिवेशन का जो कलकत्ता मे हुआ था, आरम्भ इसी गीत से हुआ था और उस समय इस गीत को स्वयं रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने गाया था।

(आनन्द बाजार, रविवासरीय १२ आश्विन १३७६ से)

(अनु० विश्वनाथ मुखर्जी)

ऋषि बंकिम चंद्र

—श्री अरविंद घोष—

बहुत से लोग इस महान और प्राचीन राष्ट्र के अतीत वैभव की याद करके रुदन करते है। वे कुछ इस प्रकार चर्चा करते हैं मानो चिंतन और सभ्यता के प्रेरक प्राचीन ऋषि हमारे गौरव काल के चमत्कार थे और हम पतित लोगों और हमारे विपन्न वर्तमान में उनका पुनरागमन संभव नहीं है। यह एक भूल है, बारम्बार भूल है। हमारा देश शाश्वत है, लोग शाश्वत है, धर्म शाश्वत है, इनकी शक्ति, महानता, पवित्रता कभी-कमी धूमिल हो सकती है किन्तु कभी भी एक क्षण के लिये भी शेष नही होती। नायक, ऋषि, सन्त हमारी भारत की मिट्टी के सहज सुफल हैं कोई भी ऐसा युग नही है जिसमें ये पैदा नही हुए। हम अन्ततोगत्वा समझे हैं कि हमे उत्तर काल के ऋषियों में उस व्यक्ति का नाम सम्मिलित करना चाहिये जिसने वह संजीवन मंत्र दिया जो नये भारत का सृजन कर रहा है—वन्दे मातरम् का मंत्र।

ऋषि संत से भिन्न होता है। सम्भव है उसका जीवन श्रेष्ठ पवित्रता से या उसका चरित्र आदर्श सौंदर्य से परिपूर्ण न हो। वह स्वयं क्या था इस कारण नही, बल्कि अपनी वाणी के कारण महान है। किसी राष्ट्र को या मानवता को एक महान या संजीवन सन्देश दिया जाना है, और ईश्वर ने एक मुख विशेष का चयन किया है जिसपर शब्दों और सन्देश का निर्माण होना है। एक महत्वपूर्ण दिव्य दर्शन का प्रागट्य होना है और प्रभु ने सर्व प्रथम उसकी आँखें खोली है उसे जो सन्देश प्राप्त हुआ है, जिस दिव्य दर्शन की उसे कृपा पूर्ण झाँकी मिली है, वह अपनी समस्त शक्ति के साथ उसे विश्व के सामने उद्‌घोषित करता है, प्रेरणा के चरम क्षण मे वह उसे ऐसे शब्दो में व्यक्त करता है जिनके उच्चारण मात्र से मानवों के अन्तरतम मे स्पन्दन होने लगता है, मन स्वच्छ हो जाते है, हृदय अभिग्रहीत हो जाते है और वे ऐसे कर्म करने को प्रेरित करते है जो सामान्य क्षणों में असम्भव ही होते। ये शब्द हैं मंत्र जिन्हे प्रगट करने को उसका जन्म हुआ और उस मंत्र का वह ऋषि है।

हम आज बंकिम के नाम की पूजा किस कारण करते हैं? उसने हमें क्या संदेश दिया है या उसने कौन सा दिव्य दर्शन किया था, जिसे देखने में उसने हमारी सहायता की है। वह महान कवि था, सुन्दर भाषा का आचार्य था और कल्पना-जगत में सुन्दर-लावण्यमयी स्वप्न-प्रतिमाओ का सृष्टा था, किन्तु आज बंगाल कवि, शैलीकार या उपन्यासकार के रूप मे उसका सम्मान नहीं करता। संभव है कि भविष्य मे साहित्य आलोचक 'कपालकुंडला', 'विषवृक्ष' और 'कृष्णकांतेर विल' को उसकी उत्कृष्ट कलाकृतियाँ माने और सापेक्ष प्रशंसा के साथ 'देवी चौधरानी', 'आनन्दमठ', 'कृष्णचरित्र' या 'धर्मतत्व' की चर्चा करें। फिर भी इन्हीं बाद में लिखी कृतियों का बंकिम न कि प्रथमोक्त महान् सृजनात्मक उत्कृष्ट कृतियों का सृष्टा बंकिम आधुनिक भारत के निर्माताओं की श्रेणी मे रक्खा जायेगा। पूर्वोक्त बंकिम केवल कवि और शैलीकार था—दूसरा बंकिम ऋषि और राष्ट्र निर्माता था।

किन्तु कवि और शैलीकार के रूप मे बंकिम ने एक चरम राष्ट्रीय महत्व का काम किया जो सारे भारत के लिये या केवल अप्रत्यक्षरूप से समूचे भारत के लिये नही, बल्कि बगाल के लिये था जिसकी नियति थी भारत का नेतृत्व, राष्ट्रीय विकास मे अग्रणी की भूमिका। अपने विकासशील नवरूप मे बिना विचारों और भावनाओ को स्थायी रूप देने वाली भाषा के जो नयी प्रेरणा को तीव्रगति और उल्लास सहित सभी की चेतना में बैठा सके, तदर्थ अभिव्यक्ति के सतोषप्रद माध्यम को पाये बिना कोई भी राष्ट्र विकसित नही हो सकता। यह बंकिम द्वारा भारत की पहली सेवा थी कि उसने अग्रजी जाति को ऐसा पूर्ण और संतोषप्रद माध्यम प्रदान किया। बगवाणी की पवित्रता को दूषित करने का उसपर दोषारोपण किया गया है, किन्तु प्राचीन कवियों की शुद्ध बगला केवल रूढ़ और अप्रगतिशील बगाल के अलावा और कुछ अभिव्यक्त न कर पाती। जाति बढ़ रही थी, बदल रही थी और उसे परिवर्तन और परिवर्द्धन

आओ हम सब मिलकर कहें वन्दे मातरम्

—महामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री—

......परहित के बदले उन्होंने देशहित की ओर ध्यान दिया। कभी वे देश के सौन्दर्य का वर्णन करते रहे और अब उसी पूंजीभूत, राशिकृत सौन्दर्य का एक मात्र आधार बँग-देश को प्यार करना सिखाने लगे। जन्म भूमि को माँ कहना सिखाने लगे। हिन्दुओं के जितने देवी—देवता हैं, सभी एक ही माँ की प्रतिमूर्ति है, यह बताने लगे। सभी से कहने लगे कि एक बार जी भरकर कहो—"वन्दे मातरम्।"

इसके बाद से उनकी जितनी भी रचनाएँ प्रकाशित हुई, वे सभी देश—भक्ति पूर्ण थी। भगवत् गीता की टीका करते हुए वे हिन्दू-धर्म का प्रचार करने लगे, वह हिन्दू-धर्म उनकी अपनी निजी रूचि का था।

बँकिम बाबू ने जो कुछ भी किया, चाहे इच्छा से या अनिच्छा से सब कुछ एक ही मार्ग की ओर गया है। वह मार्ग है—जन्मभूमि की उपासना। जन्मभूमि को माँ कहना, जन्मभूमि को प्यार करना, जन्मभूमि के प्रति भक्ति करना। उन्होंने जो महान् कार्य किया है, वह अन्य किसी ने नहीं किया है। इसलिए वे हमारे निकट पूज्य हैं, वे हमारे मंत्रकृत है, वे हमारे मंत्रद्रष्टा है और वह मंत्र है—वन्दे मातरम्।

जिस दिन उनके दरबार में बैठकर सर्वप्रथम "वन्दे मातरम्" गीत सुना, उस दिन किसी को पसन्द नहीं आया। एक ने कहा—अत्यन्त श्रुतिकर हुआ है। शस्य श्यामलाम् श्रुतिकटु नहीं तो क्या है? द्विसप्त कोटिभुर्जेधृंत खरकरवाले—इसे कोई भी श्रुति मधुर नहीं कहेगा।"

दूसरे ने कहा—"के बले माँ तुमि अबले, अबले का एकार न व्याकरण है और कुछ।"

इस तरह की बाते बँकिमचन्द्र एक घण्टे तक धैर्य पूर्वक सुनने के बाद बोले—"मुझे अच्छा लगा, इसलिए लिखा। तुम लोगों की इच्छा हो तो पढ़ो, न हो फेंक दो और नहीं तो पढ़ो मत।"

श्रुतिकटु और व्याकरण दोष रहने पर भी "वन्दे मातरम्" सम्पूर्ण भारत में फैल गया। बँकिम की जय हुई है। आओ हम सब मिलकर कहें—वन्दे मातरम्।

(अनु-विश्वनाथ मुखर्जी)

को अभिव्यक्त कर सकने वाले माध्यम की आवश्यकता थी। उसे पंडितों की श्रेष्ठ साहित्यिक बंगला के स्थान पर मिश्रित लोकभाषा को जो न तो पांडित्यपूर्ण भाषा थी, न अच्छी लोक भाषा, स्थापित करने का दोषी ठहराया गया है। किन्तु पंडितों की बंगाली की हठीली अनन्य बोझिलता ने विकासशील बंगाल-प्रतिभा की प्रचुरता, विविधता और मुक्तदोलिता को कूच दिया होता। सम्मानपूर्ण प्रबन्धों और पांडित्यपूर्ण रचनाओं के सृजन के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिये हम एक भाषा की आवश्यकता थी। हमें एक ऐसी भाषा की जरूरत थी जिसमें संस्कृत की शक्ति और कमलकांत सौदर्य के साथ देशी भाषा की ऊर्जस्विता और उत्साह हो, जिसके एक छोर पर चरम देशीय गतिशीलता हो तो दूसरे पर गुजायमान गुरुता। बंकिम ने हमारी आवश्यकता का अनुमान किया और उसे पूर्ण करने को

अनुप्रेरित हुआ, बंगाल की आत्मा अपने आपको अभिव्यक्त कर सके उसने हमे ऐसा एक माध्यम दिया।

जैसे उसने देश के भविष्य के लिये भाषाई आवश्यकता को परिकल्पना की उसी प्रकार उसने उसकी राजनीतिक आवश्यकताओं का भी अनुमान किया। हमारे इस महान प्रथम विधिवेत्ता ने अपने समय मे चल रहे राजनीतिक आंदोलन की निरर्थकता और अनुपयोगिता को समझा और अपने 'लोकरहस्य' तथा 'कमलकातेर दफ्तर' के निर्मम व्यंग द्वारा उसका पर्दाफाश किया। किंतु मात्र विध्वंसात्मक आलोचना मात्र से वह संतुष्ट नही था, देश के उद्धार के लिये किस चीज की जरूरत है इसके बारे में उसकी एक अस्त्यात्मक दृष्टि थी। उसने देखा कि ऊपरी ताकत का सामना नीचे से अधिक शक्तिशाली प्रतिकारक ताकत से करना चाहिये। उसने हमें निदेश दिया कि कुत्ता आंदोलन के तरीके छोड़कर सिहवृत्ति अपनाओ। उसके दिघ्यदर्शन में माँ ने अपने द्विसप्त कोटि हाथो मे तीक्ष्ण खड्ग धारण किया है संन्यासिनी का खप्पर नही। 'आनंदमठ' और देवी चौधरानी' में प्रस्तुत चरित्रों मे आवरण के अंदर से उन्होंने इसी शक्ति के कठोर पाठ का प्रचार किया है। इस भौतिक शक्ति के पीछे खड़ी रहने वाली नैतिक शक्ति का भी उन्हे प्रेरणाप्रद निर्दोष दर्शन मिला था। उन्होंने देखा था कि नैतिक शक्ति का प्रथम तत्व 'त्याग' होना चाहिए, देश के लिये संपूर्ण आत्म बलिदान और मुक्ति के कार्य के लिए संपूर्ण आत्मनिष्ठा। उनके मातृभूमि के कार्यकर्ता और सैनिक राजनीतिक बैरागी है जिनके मन मे माँ के प्रति अपने कर्तव्य के अलावा और कोई विचार नहीं है और जो सब कुछ कम प्रिय तथा कम मूल्य का मान कर अपने पीछे छोड़ आये है और माँ का काज होने के बाद ही वे उन्हें पुनः प्राप्त करेंगे। जो भी अपने आपको या पत्नी या या बच्चे या सम्पत्ति को देश से अधिक प्यार करता है वह दरिद्र और अधूरा देशभक्त है और उसके द्वारा महान कार्य सम्पादित नहीं हो सकते। पुनः उन्होंने देखा कि नैतिक शक्ति के लिये आवश्यक दूसरा तत्व आत्मानुशासन और संगटन होना चाहिये। इस सत्य की अभिव्यंजना उन्होंने देवी चौधरानी के कार्य हेतु विशद् प्रशिक्षण में, 'आनंदमठ' के संगटन के कठोर नियमों में, और इन पुस्तकों में वर्तमान आदर्श संगटन के चित्रों में की है। अंत में उन्होंने देखा कि नैतिक शक्ति का तृतीय तत्व देशभक्ति के कार्यों में धार्मिक भावना या समावेश होना चाहिये। देशभक्ति का धर्म ही बंकिम के कृतित्व का प्रधान विचार बिंदु है। इसका पूर्वाभास 'देवी चौधरानी' मे वर्तमान है। 'धर्मतत्व' में विचारधारा और कृष्ण चरित्र' में आदर्श बहुमुखी कर्मयोग का चित्र अंकित है और इसका लक्ष्य बिंदु है अपने देश या अपनी जाति के लिये कार्य करना। 'आनदमठ' में यही विचार संपूर्ण पुस्तक का मूल स्वर है और संयुक्त भारत का राष्ट्रगान बन गये उस महान गीत मे इस विचार को संगीतमय पूर्ण अभिव्यंजना मिली है। बंकिम की अपने देश के लिये की गयी दूसरी महान् सेवा यह है कि उसने देश को मुक्ति का मार्ग प्रदर्शित किया और उसे देशभक्ति का धर्म प्रदान किया। इस नयी चेतना के जो राष्ट्र को पुनरुत्थान और स्वातन्त्र्य की ओर ले चल रही है, वे ही प्रेरक और राजनीतिक गुरु हैं।

बंकिम की तीसरी और अन्यतम राष्ट्रसेवा यह है कि उसने हमें अपनी माँ का दर्शन कराया। मातृभूमि का नयी बौद्धिक कल्पना अपने आप में कोई प्रबल प्रेरक शक्ति नहीं है और स्वतंत्रता की वांछनीयता की स्वीकृति मात्र कोई प्रेरक उद्देश्य नही है। आज बहुत कम भारतीय है, राजनीतिक विचारो से चाहे वे राजभक्त, नरमदल के या राष्ट्रवादी हो, जो यह नही समझते कि देश का उनपर कुछ दावा है या कि अमूर्त रूप में स्वतंत्रता वाँछनीय वस्तु है। किंतु हम में से अधिकतर लोग जब प्रश्न देश के दावे के मुकाबले दूसरे दावो का उठता है तो व्यवहार में हम देश की सेवा को वरीयता नहीं देते, और जहाँ बहुत से लोग भले ही यह चाहते हो कि देश स्वतत्र हो जाय पर कुछ लोगों में उसे सम्पादित करने का संकल्प होता है। अनेक चीजें ऐसी है जिन्हे हम अधिक प्रिय मानते हैं और स्वतंत्रता के संघर्ष में या उसकी उपलब्धि मे इनके खतरे में पड़ जाने का हमें डर लगता है। जब तक मातृभूमि धरती का एक टुकड़ा या जन समूह मात्र से अधिक कुछ होकर मन की आंखों के आगे सरकार नही होती, जब तक वह दिव्य मातृशक्ति मन पर छा जाने वाली, हृदय को बांध लेने वाली सौंदर्यमयी के आकार में रूपायित नहीं होती, तब तक ये क्षुद्र भय और आशाएँ अपनी माँ और उसकी सेवा के चित्ताकर्षक मनोभाव में डूब नहीं पाते। ऐसा होता है तब मरणासन्न राष्ट्र की रक्षक और चमत्कारी देशभक्ति का जन्म

होता है। यह दिव्यदर्शन कुछ लोगों को सौभाग्य से मिलता है और वे इसे दूसरों को दिखाते हैं। बत्तीस वर्ष पूर्व बंकिम ने अपना यह महान गीत लिखा था और कुछ ही लोगो ने उसे सुना, किंतु लंबी मोहनिद्रा से आकस्मिक जागरण के क्षण में बंगाल के लोगों ने सत्य के लिये इधर-उधर देखा और उसी सौभाग्य क्षण मे कोई "वन्दे-मातरम्" गा उठा। मंत्र दिया गया और एक दिन में समूचा राष्ट्र देशभक्ति के धर्म का अनुयायी बन गया। मां ने अपना दिव्य दर्शन दिया था। जहाँ लोगों को वह दर्शन मिला, फिर आराम नहीं था, शांति नही थी, जब तक मंदिर बन कर तैयार न हो जाय, मूर्ति प्रतिष्ठापित न हो जाय और बलि अर्पित न कर दी जाय, पुन: निद्रा की बात ही नहीं। एक महान राष्ट्र जो यह दिव्य दर्शन पा चुका है पुन: कभी भी किसी विजेता के चरणों के नीचे नही आ सकता।

१७हवीं अप्रैल १९०७

(अनु०—भानु मेहता)



रामचन्द्र "वन्देमातरम्"

(हैदराबाद के प्रख्यात स्वातंत्र्य सेनानी)

वीर सावरकर, स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज से विदेशी गुलामी के प्रति विद्रोह की प्रेरणा प्राप्त की। निजाम द्वारा हिन्दू जनता पर किये गये अत्याचारों ने हृदय को ओर भी विद्रोही बना डाला।

छात्रावास में बी० ए० में पढ़ते समय उस्मानिया विश्वविद्यालय में "वन्दे मातरम्" गाने पर लगे प्रतिबन्ध को तोड़ डाला, एक वर्ष तक जेल में रहा। १९३८ में राजद्रोह का मुकदमा चलाकर १८ वर्ष की सजा दे दी गयी। जेल में ही "वन्दे मातरम्" गाना प्रारम्भ किया तो बेतों की सजा दी गयी। सरकार को सजा पूरी होने से पहले ही छोड़ देना पड़ा। वीर सावरकर ने पंढर पुर में हिन्दू महासभा अधिवेशन में "वन्दे मातरम्" की उपाधि से विभूषित किया।

वन्दे मातरम् : इतिहास के दर्पण में

—श्री विश्वनाथ मुखर्जी

सन् १९७६ ई० भारतवासियों के लिए गौरवशाली वर्ष है। आज से १०० वर्ष पूर्व ऋषि बँकिम चन्द्र चट्टोपाध्यायने "वन्दे मातरम्" गीत लिखा था जिसे भारत सरकार ने राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार कर लिया है। इस गीत की रचना तथा काल के विषय में विभिन्न मत है। वास्तव में इस गीत की कल्पना के पीछे अनेक घटनाओ का प्रभाव है।

सन् १८५७ ई० के विप्लव के बाद समग्र भारत में जो जन-चेतना की लहर पैदा हुई, वह शनैः-शनैः जड़ पकड़ती गयी। बँगाल के तत्कालीन कवियों ने जन-मानस को उद्वेलित करनेमें पर्याप्त योगदान दिया। बँकिम बाबू का यह गीत केवल बँगाल के लिए नही, बल्कि भारत के लिए लिखा गया था, इस बात का उल्लेख करते हुए श्री अक्षय कुमार गुप्त ने लिखा है—

"बँकिम से पूर्व तथा बाद में अनेक राष्ट्रीय कवियों ने "भारत" के सम्बन्ध में, भारत के दुःखों के बारे में अश्रुपात किया था। भारत का जय गान तथा उसकी स्वतन्त्रता के बारे में प्रचार किया था। इन कवियों की किसी भी रचनाओं में केवल "बँगाल" की चर्चा नहीं है, बल्कि समग्र भारत की कल्पना है—"

कत काल परे बल भारत रे।
दुःख सागर सांतारि पार हबे॥

—गोविन्द राय

मलिन मुख चन्द्रमा भारत तोमारि।
रात्रि दिवा झरिछे लोचन वारि॥

—राजकृष्ण घोष

प्राण कांदे बलिते भारत विवरण।
भूमण्डले नाहि मेले द्वितीय आर एमन॥

—मनमोहन बसु

दिनेर दिन सबे दिन भारत हये पराधीन
नीरव भारत केन भारतीर वीणा।
सोनार प्रतिमा शोकेते मलिना॥
हबे भारत पुनः एमन सुदिन।

मिले सब भारत सन्तान,
एक तान मन प्राण।
गाओ भारतेर यश गान॥

—सत्येन्द्रनाथ ठाकुर

(बँकिम चन्द्र, पृष्ठ ३१०)

हिन्दू मेला की देन

ज्ञातव्य है कि बँगाल में राष्ट्रीय भावना जागृत करने में "हिन्दू मेला" का पर्याप्त योगदान रहा है। श्री राज-नारायण वसु द्वारा सन् १८६१ में मिदनापुर में जातीय गौरव सम्पादिनी सभा की स्थापना हुई और इसीने सन् १८६६ के बंगला चैत्रमास में हिन्दू मेला आरम्भ किया। सन् १८६८ ई० में कविवर सत्येन्द्रनाथ ठाकुर ने "गाओ भारतेर जय" शीर्षक से एक कविता लिखी। भारत के इस यशोगान से अंग्रेजी दैनिक "अमृत बाजार पत्रिका" के प्रधान संपादक महात्मा शिशिर घोष इतने प्रभावित हुए कि उन्हें भी "भारत माता" नामक एक छोटी कविता लिखनी पड़ी।

इस कविता के आधार पर श्री किरण चन्द्र बंदोपाध्याय ने "भारत माता" नामक एक छोटा सा नाटक लिखा। इस नाटक की विषय वस्तु थी—भारतीयों पर अंग्रेजों का अमानुषिक अत्याचार। इस नाटक का प्रकाशन सन् १८७३ ई० में हुआ था। बंगाल के प्रसिद्ध नाट्यकार तथा निदेशक श्री अमृतलाल बसु ने १५ फरवरी १८७३ ई० को नेशनल थियेटर में प्रस्तुत किया था।

इस नाटक के बारे में अमृत लाल बसु ने लिखा है—"भारत माता का अभिनय बडे शुभ क्षण में हुआ था। आम जनता ने इसे बहुत पसन्द किया था। 'भारत माता' में जितने गीत थे, वे इतने जनप्रिय हो गये थे कि जिस दिन यह नाटक नही खेला जाता था, उस दिन दर्शकों को प्रसन्न करने के लिए प्लाकार्ड मे भारतीय संगीत के नाम से विज्ञापन दिया जाता था।"

डा० अरुण कुमार मित्र ने लिखा है—'भारत माता' नाटक के अभिनय से ही रंगमंच पर प्रथम बार जन्मभूमि की पूजा हुई।'

नेशनल कांग्रेस की स्थापना के बहुत पहले 'हिन्दू मेला' के अवसर पर भारत माता के अभिनय से जनता में राष्ट्रीय भावना जागृत हुई थी।

(अमृतलाल बसुर जीवनी और साहित्य, पृष्ठ ४१५)

यहाँ एक अन्य बात का उल्लेख कर देना उचित होगा कि "भारत माता" नाटक के आधार पर आधुनिक हिन्दी के जन्मदाता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने "भारत जननी" नामक नाटक प्रस्तुत किया था जिसे उन्होंने संशोधित अनुवाद कहा है।

भारत माता

यह ठीक है कि बंगाल के तत्कालीन कवियों ने राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने के लिए अनेक गीत लिखें, किन्तु इनमें से किसी ने भी भारत को माता की संज्ञा नहीं दी। वाल्मीकि रामायण में 'जननी जन्म भूमिश्च' जरूर कहा गया है, पर बंगाल में सर्वप्रथम भारत भूमि को माता कहने वाले कवि थे—श्री ईश्वरचन्द्र गुप्त। कहा तो यहाँ तक जाता है कि भारतीय लेखकों में सर्वप्रथम गुप्तजी ने ही भारत भूमि को जननी कहा है।

श्री ईश्वरचन्द्र गुप्त एक प्रकार से बँकिम बाबू के साहित्यिक गुरु थे। बँकिम बाबू के उदय से पूर्व बँग-साहित्य में उनका एक छत्र राज्य था। वे दैनिक तथा मासिक "संवाद-प्रभाकर" के संपादक थे। बँकिम की प्राथमिक रचनाओं का प्रकाशन इन्होंने ही किया था और वे बराबर लेखक को प्रोत्साहन देते रहे।

श्री ईश्वर चन्द्र गुप्त ने लिखा है—

जननी भारत भूमि
आर केन थाक तुमि
धर्म रूप भूषाहीन हये
तोमार कुमार यत
सकलेई ज्ञान हत
मिछे केन मर भार बये।

बँकिम बाबू ने आगे चलकर "ईश्वर चन्द्र गुप्तेर जीवन चरित्र और कवित्व" नामक एक लेख लिखते हुए उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

श्री ईश्वरचन्द्र गुप्त के बाद अगर हम किसी की रचना में भारत को मातृ सम्बोधन करते देखते हैं तो एक मात्र बँकिम बाबू की अमर रचना 'वन्दे मातरम्' तथा 'आमार दुर्गोत्सव' मे।

श्री अक्षय कुमार दत्त गुप्त का कहना —"वन्दे मातरम गीत आनन्दमठ में प्रकाशित होने के कई वर्ष पूर्व बंकिम बाबू ने लिखा था। कमलाकान्त के मातृ मूर्ति-दर्शन विवरण और सत्यानन्द ठाकुर के मठ में मातृमूर्ति की प्रतिष्ठा से पहले। अगर पाठक गौर करेंगे तो उन्हें ज्ञात होगा कि वन्दे मातरम गीत में और कमलाकान्त के ध्यान में भी देश-माता का चिरंतन सौन्दर्य तथा भावी गौरव दर्शन जनित आनन्द विद्यमान है। उसमे वीर रस बहुल कवियों की काव्य की तरह उत्तेजना नही है। बँकिम माता की सुजलां, सुफलां मलयजशीतलां मूर्ति प्रत्यक्ष कर पुलकित हुए हैं। भविष्य मे माँ का शौर्य, ऐश्वर्य, विद्या, बल, सिद्धि की मोहिनी प्रतिमा कल्पना की आँखों में देखकर वे विस्मय से मुग्ध हो उठे थे।

(बँकिम चन्द्र, पृष्ठ ३१६)

'आमार दुर्गोत्सव' नामक लेख में भी उन्होंने लिखा है—"पहचाना, यही मेरी जननी-जन्मभूमि-यह मृण्मयी मृत्तिका रूपिणी-अनन्तरत्न भूषिता इन दिनों काल-गर्भमें हैं।'

वन्दे मातरम् की प्रेरणा

अब एक मुख्य प्रश्न उठता है कि आखिर किस प्रेरणावश काव्य का यह चमत्कार उनके मन में उत्पन्न हुआ ? बँकिम बाबू भाषा के आचार्य थे और उनकी प्रत्येक रचना में इस प्रतिभा के दर्शन होते हैं, पर वन्दे मातरम् के प्रेरक भाव का उद्भव एक विशेष महत्व रखता है।

राष्ट्रीय कविताएँ, हिन्दू मेला, भारत माता नाटक आदि का प्रभाव उनपर अवश्य पड़ा है। इसका उदाहरण हमें "बँग दर्शन" में प्रकाशित एक पुस्तक की आलोचना से प्राप्त हो जाता है। श्री राजनारायण बसु की पुस्तक "हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता" की आलोचना करते हुए उन्होंने अपने विचार से तथा बसु महाशय की कविता के कुछ अंशो को उद्धृत किया है—

"हिन्दू जाति के बारे में देखा कि मेरे सामने नये सिरे से महाबल पदाकान्त हिन्दू-जाति निद्रा से जाग उठी है और उसका वीर कुण्डल स्पन्दन कर रहा है। देवक्रम से वह उन्नति की ओर बढ़ रही है। मै स्पष्ट रूप से देख रहा हूँ कि यह जाति पुनः नवयौवन प्राप्त कर ज्ञानधर्म और सभ्यता से उज्वल होकर पृथ्वी को सुशोभित कर रही है। हिन्दू जाति की गरिमा से पृथ्वी पुनः विस्तारित हो रही है। इसी आशा के साथ मै भारत का जयोच्चारण करते हुए अपना वक्तव्य समाप्त कर रहा हूँ—

मिले सब भारत सन्तान
एक तान मन प्राण,
भारत भूमिर तुल्य आछे कोन स्थान ?
कोन अद्रि हिमाद्रि समान ?
फलवती बसुमती स्रोतवती पुण्यवती
शतखनि रतनेर विधान
होक भारतेर जय
जय भारतेर जय
गाओ भारतेर जय
कि भय कि भय
गाओ भारतेर जय
रूपवती साध्वी सती भारत ललना
कोथा दिबे तादेर तुलना ?
शर्म्मिष्ठा सावित्री सीता दमयन्ती पतिरता
अतुलना भारत ललना
होक भारतेर जय—आदि

"राजनारायण बाबू की लेखनी पर पुष्प-चन्दन वृष्टि हो। यह महागीत सम्पूर्ण भारत के लिए गीत बने। हिमालय की कन्दराएँ गूँज उठे। गंगा, यमुना, सिन्धु, नर्मदा, और गोदावरी के तटों पर स्थित प्रत्येक वृक्ष मर्मरित हो उठे।



ऋषि बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय

पूर्व और पश्चिम के सागर के गंभीर-गर्जन से मन्द्रीभूत हो विंशति कोटि भारतवासियों का हृदय यंत्र इसके साथ बजता रहे।"

(बंग दर्शन, चैत्र १२७९, पृष्ठ ५७१, ५७६)

बंकिम बाबू की इस आलोचना से साफ स्पष्ट है कि उनके अन्तर मे भावनाएँ उमड़-घुमड़ रही थी, पर उसका विकास आगे चलकर हुआ। 'आमार दुर्गोत्सव' और 'एक टी गीत' नामक रचना में यही भावना काम करती रही जो एक दिन 'वन्दे मातरम्' गीत में पूर्ण रूप से विकसित हुई।

इसके अलावा एक अन्य कारण भी बताया जाता है। श्री हेमेन्द्र घोष का कहना है कि वन्दे मातरम् गीत का बीजारोपण चुँचड़ा में हुआ था। यहाँ के मछुए बड़े मधुर गीत गाते थे। वन्दे मातरम् का चुँचड़ा से गहरा सम्पर्क है। चुँचड़ा बंगालियों के निकट साहित्यक तीर्थ-भूमि है।

चुँचड़ा स्थित वटना के बारे में स्वयं बंकिम बाबू ने लिखा है— 'एक दिन वर्षाकाल में गंगा तीरस्थ किसी भवन मे बैठा था। प्रदोषकाल प्रस्फुटित चन्द्रालोक से विशाल विस्तीर्ण भागीरथी लक्षबीचीविक्षेपशालिनी मृदु पवन हिल्लोल से तरंग भंग चंचलचन्द्रकर माला लक्ष तारकाओं

की तरह प्रस्फुटित हो रही थी और बुझ रही थी। मैं बरामदे में बैठा था और नीचे वर्षा की तीव्रगामी वारि-राशि मृदु रव के साथ दौड़ रही थी। आकाश में नक्षत्र और नदी-वक्ष पर नौकाओ में प्रकाश, तरंगों पर चन्द्ररश्मि! काव्य का राज्य समुपस्थित हुआ। सोचा, कविता पाठ करते हुए मन को तृप्त करूँ अंग्रेजी कविता से काम नहीं चला। अंग्रेजी-काव्य में भागीरथी के बारे में कुछ नहीं मिलता। कालिदास और भवभूति भी दूर रहे।

मधुसूदन, हेमचन्द्र, नवीनचन्द्र से तृप्ति नहीं मिली तो फिर चुपचाप बैठा सोचता रहा ठीक इसी समय गंगाके वक्ष से मधुर संगीत ध्वनि उठी। मछुए गा रहे थे—

साधो आछे, मा, मने।
दुर्गा बले प्राण त्यजिब जाह्नवी जीवने॥

प्राण तृप्त हो गया। मन को सुर मिला। बंगला भाषा में बंगालियों के मन की आशा सुन पाया। यह जाह्नवी-जीवन दुर्गा कहकर प्राण त्यागने लायक है, यह समझ गया। तब शोभामयी जाह्नवी और वह सौन्दर्यमय जगत् अपने लगने लगे।

(बंकिमचन्द्रेर विविध रचनावली पृष्ठ १००)

यों अधिकतर लोगों की मान्यता है कि बकिम बाबू को 'एक टी गीत' और 'आमार दुर्गोत्सव' लेख लिखते समय वन्दे मातरम् गीत लिखने की प्रेरणा मिली है, परन्तु मैं इसे इसलिए स्वीकार नहीं कर पाता कि उनके मन में विभिन्न घटनाओं का प्रभाव पड़ता रहा। यह ठीक है कि 'आमार दुर्गोत्सव' और 'एक टी गीत' लिखते समय सहसा वन्दे मातरम् गीत का जन्म हो गया हो।

श्री शचीन्द्रनाथ चटर्जी ने लिखा है— "मेरा विश्वास है कि यह गीत झटके में नही लिखा गया है। जबतक लेखक आत्मस्थ न हो, तन्मय न हो, अनुप्राणित न हो तब तक नही लिखा जा सकता। बंकिम बाबू आम लेखकों की तरह कुछ लिखकर तुरत नहीं छपाते थे।"

कब लिखा गया ?

वन्दे मातरम् गीत आनन्दमठ उपन्यास में सम्मिलित करने के काफी पूर्व लिखा गया था, इस बात को अधिकांश लेखक स्वीकार करते हैं। यहां तक कि बंकिम बाबू को आनन्दमठ उपन्यास छपने से पहले यह गीत हारमोनियम पर गाते उनके मित्रों ने देखा था।

सन् १८७५ ई० के दौरान यह गीत लिखा गया था, इसका प्रमाण हमें प्रसिद्ध नाट्यकार श्री दीनबन्धु मित्र के सुपुत्र श्री ललित कुमार मित्र तथा बंकिम बाबू के अनुज श्री पूर्णचन्द्र चटर्जी के लेख से प्राप्त होता है।

श्री ललित कुमार मित्र ने लिखा है—उन दिनों 'बंग-दर्शन' पत्रिका के कार्याध्यक्ष पण्डित श्रीयुक्त रामचन्द्र बंद्योपाध्याय महाशय थे। उन्हें इस बात की चिन्ता बराबर बनी रहती थी कि कैसे 'बंगदर्शन' का मैटर जल्द से जल्द भर जाय। उन्होंने बंकिम चन्द्र से कहा था'—गीत चाहे जैसा भी हो, वन्दे मातरम् से पेट नहीं भरेगा। आप एक उपन्यास प्रारम्भ करें।'

प्रत्युत्तर में बंकिमने कहा था—'इस गीत का मर्म तुम लोग अभी नही समझ सकोगे। अगर पच्चीस वर्ष जीवित रह गये तो देखोगे कि इस गीत के पीछे सारा बंगाल पागल हो उठा है।'

श्री ललित कुमार मित्र बंकिम बाबू से कई बार मिल चुके थे और इनके पूज्य पिता दीनबंधु मित्र बंकिम बाबू के घनिष्ठ मित्र थे। आनन्दमठ पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुई तो बंकिम बाबू ने उसे अपने इन्ही स्वर्गीय मित्र की स्मृति मे समर्पित किया था।

इस गीत के बारे में 'बंग दर्शन' प्रेस-पत्रिका के मैनेजर तथा बंकिम बाबू के अनुज श्री पूर्णचन्द्र चटर्जी ने लिखा है— 'साहित्य-पत्रिका' में वन्दे मातरम् के बारे में ललित कुमार मित्र ने विस्तार से लिखा है, पर मुझे जो कुछ मालूम है, उसका उल्लेख कर रहा हूँ। पत्रिका मे एक पृष्ठ मैटर कम पड़ जाने पर रामचन्द्र बैनर्जी बंकिम बाबू के कमरे में आकर बोले कि एक पेज मैटर चाहिए।'

बंकिम ने कहा— "ठीक है, मिल जायगा।"

उस समय बंकिम बाबू की टेबुल पर 'वन्दे मातरम्' गीत लिखकर तैयार रखा था और शायद बैनर्जी महाशय खड़े खड़े उसे पढ़ चुके थे। रामचन्द्र बैनर्जी ने कहा—'देर होने से सारा काम रुका रहेगा। यह जो सामने गीत पड़ा है, कोई बुरा नही है। इसे क्यों नहीं दे देते ?'

इतना सुना था कि बंकिम बाबू नाराज हो उठे। मेज की दराज में उस कविता को बन्द करते हुए बोले—"यह अच्छा है या बुरा, इसे अभी तुम नही समझ सकोगे। कुछ



बंकिम स्मृति मंदिर बायें
सामने बंकिम बाबू का पैतृक भवन

दिनों बाद समझ सकोगे । उस समय शायद मैं जीवित नही रहूँगा, पर तुम रहोगे ।'

(बंकिम चन्द्रे र बाल्यकथा, सुरेशचन्द्र समाजपति द्वारा संपादित बंकिम प्रसंग से, पृष्ठ ५२-५३)

कांटाल पाड़ा (बंकिम बाबू का पैतृक भवन) स्थित बंकिम स्मृति मंदिर के क्यूरेटर प्रख्यात् लेखक श्री गोपालचन्द्र राय ने मुझे जबानी तथा अपने एक लेख मे भी यह बताया है कि वन्दे मातरम् गीत अगस्त सन् १८७५ ई० से मार्च सन् १८७६ ई० के बीच लिखा गया है, क्योंकि उन दिनो वे अपने कार्य से छुट्टी लेकर, अपने घर में ही स्थित "बंग-दर्शन प्रेस" से पत्रिका के प्रकाशन का कार्य देख रहे थे। इसी के बाद बंग-दर्शन पत्रिका का प्रकाशन बन्द कर दिया गया।

ज्ञातव्य है कि बंग दर्शन पत्रिका का प्रकाशन उनके सपादन मे सन् १८७३ से मार्च सन् १८७६ ई० तक होता रहा। अगस्त १८७५ ई० से पूर्व बंकिम बाबू नौकरी के सिलसिले मे विभिन्न स्थानों पर कार्य करते रहे। इस बीच वे अपने पैतृक निवास मे थे ।

इन्ही दिनों[1] बंकिम बाबू के यहाँ दुर्गा-पूजा हुई थी । इसी पूजा के अवसर पर कीर्तन मण्डली वालो ने 'ऐसो-एसो बंधु' आध आँचरे बसो' गीत गाया था । इसी दिन बंकिम बाबू के भावो मे पर्याप्त परिवर्तन हुआ था जिसका वर्णन श्री पूर्णचन्द्र चटर्जी ने 'कमलाकान्तेर एसो एसो बंधु एसो' नामक लेख में विस्तार से किया है। इस गीत को सुनकर उनके मन की क्या स्थिति हो गयी थी, इसका वर्णन हमें 'कमलाकान्तेर दफ्तर' पुस्तक मे एक टी गीत लेख में मिलता है । इस लेख में उन्होने विस्तार के साथ गीत की व्याख्या की है। जिस ढग से व्याख्या की गयी है, उससे साफ जाहिर है कि उन्होंने अपनी मातृभूमि के हर रंग को जी भरकर देखा था । पराधीनता की घुटन उनके अन्तर को बुरी तरह मथ रही थी । अगर वे सरकारी कर्मचारी न होते तो न जाने क्या कर डालते ।

श्री अमित्रभूषण का कहना है—अनुमान किया जाता है कि 'आमार दुर्गोत्सव' नामक लेख लिखने के बाद वन्दे मातरम् गीत लिखा गया था । आमार दुर्गोत्सव मे ६ करोड़ सन्तान, द्वादश करोड़ हाथ है और वन्दे मातरम् गीत मे सात करोड संतान चौदह करोड़ हाथ का जिक्र है । इससे स्पष्ट है कि आमार दुर्गोत्सव रचना के बाद ही यह गीत लिखा गया था और उन्ही दिनों 'एक ही गीत' नामक लेख भी लिखा गया था । आमार दुर्गोत्सव नामक लेख १२८१ बंगाब्द, कार्तिक के बंग दर्शन मे छपा था । इससे स्पष्ट है कि कार्तिक से चैत्र के बीच वन्दे मातरम् का जन्म हुआ था । (१५।८।७६ देश साप्ताहिक)

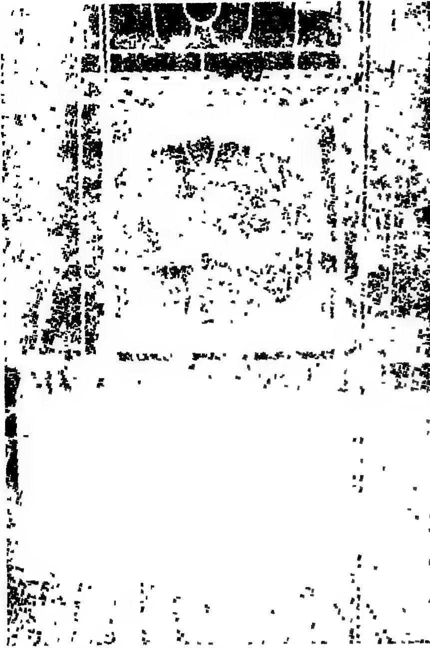
ज्ञातव्य रहे कि सन् १९३७ मे 'इन्दु प्रकाश' मे वन्दे मातरम् पर एक लेख लिखते हुए स्वयं महर्षि अरविन्द ने भी यह स्वीकार किया है कि १८७५ ई० मे यह गीत लिखा गया था ।

वन्दे मातरम् में परिवर्तन और संगीत

वन्दे मातरम् गीत को लेकर बंकिम बाबू के मित्रो मे काफी नोकझोक हुई थी । बंकिम बाबू के मित्र महामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री ने अपने एक लेख में लिखा है—"जिस दिन उनके दरबार मे बैठकर सर्वप्रथम 'वन्दे मातरम्'

---

१. अक्टूबर, १८७५ ई०, महाष्टमी ।



बंकिम बाबू के गृह देवता—राधाजीऊ की मूर्ति। यहीं दुर्गा पूजा होती थी।

गीत सुना, उसी दिन की बात है। गीत लोगों को पसन्द नहीं आया। एक ने कहा—'अत्यन्त श्रुति कटु हुआ है। शस्य श्यामलाम् श्रुतिकटु नहीं तो और क्या है? द्विसप्त कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले—इसे भी कोई श्रुति मधुर नही कहेगा।'

दूसरे सज्जन बोले—'के बोले मा तुम अबले' अबले का एकार न व्याकरण है और न कुछ।

इस तरह की बातें एक घण्टे तक अत्यन्त धैर्य पूर्वक सुनने के बाद बंकिम बाबू बोले-'मुझे अच्छा लगा, इसलिए लिखा। तुम लोगों की इच्छा हो तो पढ़ो, न हो तो फेंक दो, नही तो मत पढ़ो।' (बँकिम स्मृति पृष्ठ १७२)

इसी प्रकार एक बार जब उनके दरबार में बंग-दर्शन के स्थायी लेखकों का दल यानी राजकृष्ण मुखर्जी, चन्द्रनाथ बसु, नवीन बाबू आदि मौजूद थे तब बातचीत के सिलसिले मैं नवीन चन्द्र सेन ने कहा—'इतना अच्छा गीत आधा बंगला आधा संस्कृत में लिखकर आपने चौपट कर दिया। लगता है जैसे गोविन्द अधिकारी (जैसे लोकगीत गायक—ले०) का गीत हो।'

इस पर बंकिम बाबू उखड गये, बोले—'देखो भाई, अच्छा न लगे तो मत पढ़ो। मुझे अच्छा लगा है इसलिए लिखा। लोगों को अच्छा लगेगा या नही, क्या यह सोच कर लिखूंगा?'

(बंकिम प्रसंग-श्रीशचन्द्र मजुमदार पृष्ठ १८१)

बँकिम बाबू के यहाँ भाटपाड़ा के यदुनाथ भट्टाचार्य जिन्हे आम तौरपर यदु भट्ट कहा जाता है, संगीत के अध्यापक थे। उन दिनों उनकी गणना भारत के प्रसिद्ध गायकों में होती थी। यही यदु भट्ट रवि बाबू के भी संगीत-शिक्षक थे।

इन्ही से बंकिम बाबू ने 'वन्दे मातरम्' की पहली स्वरलिपि तैयार करवायी थी। बादमें इसी धुनमें बंकिम बाबू जगदीशनाथ राय, हेमचन्द्र बनर्जी, तारा प्रसाद चट्टोपाध्याय, रामदास सेन इसे गाते रहे।

बँकिम बाबू मित्र अक्षयचन्द्र सरकार ने लिखा है—'जब आनन्दमठ का जन्म नहीं हुआ था तब बंकिम बाबू अपने मित्र क्षेत्रनाथ मुखर्जी को साथ लेकर हारमोनियम पर इस गीत को गाते थे। मैं भी इस गोष्ठी में अक्सर जाया करता था। वे इसे 'मल्लार सुर' में गाया करते थे। सुर के लिए उन्हें मूल वन्दे मातरम् को कई बार परिवर्तित करते देख चुका हूँ।'

श्री प्रियनाथ जाना ने लिखा है—' बंकिम बाबू वन्दे मातरम् गीत को प्राय: हारमोनियम पर अपने घरमें, कविवर हेमचन्द्र और नवीनचन्द्र के सामने गाया करते थे।

(जातीयतार मंत्र गुरु जांरा, पृष्ठ ८६-८७)

सन् १८७७ ई० आते-आते बंकिम बाबू का वन्दे मातरम् गीत निश्चित रूपसे लोकप्रिय हो गया था। अभी हाल ही में साहित्य अकादमी की ओर से 'गीत पंचशती' नामक एक पुस्तक रवि बाबू के काव्यों का संग्रह प्रकाशित हुआ है जिसमे पृष्ठ ३४३ में "स्वदेश गीत" नामक गीत की ये दो लाइनें गौर करने लायक है—

एक सूत्रे बांधियाछी सहस्रटि मन
एक कार्ये संपियाछि सहस्र जीवन
वन्दे मातरम्

पूरी कविता आठ लाइन की है और प्रत्येक दो लाइन के अन्त में वन्दे मातरम् लिखा गया है। रचनाकाल १८७७

ई० है। इससे स्पष्ट है कि उस समय तक लोगों को "वन्दे मातरम्" गीत ने निश्चित रूप से प्रभावित कर लिया था।

यहाँ प्रसंगवश बता देना आवश्यक समझता हूँ कि रवि बाबू के नाम से यह कविता छपने पर भी यह उनकी नही मालूम पड़ती। यह कविता शायद श्री दीनेन्द्रनाथ ठाकुर की है। रवि बाबू ने केवल स्वरलिपि तैयार की है जो कि स्वर वितान के ४६ वे खण्ड में प्रकाशित है। यह विचार बंग साहित्य के मोपासा तथा रवीन्द्रनाथ के जीवनी-लेखक श्रद्धेय श्री प्रभात मुखोपाध्याय के है। उन्होने मुझे शान्ति-निकेतन स्थित अपने भवन मे बताया 'अभी मैं खोज कर रहा हूँ। लेकिन जहाँ तक मेरा ख्याल है कि यह रचना उनकी नहीं है पर निश्चित रूप से बता नही पा रहा हूँ। वजह यह है कि रवि बाबू ने अनेक ऐसे गीतों की स्वरलिपियाँ तैयार की हैं, जो यद्यपि उनकी रचना नहीं है, पर उनके नाम से प्रसिद्ध हो गया है।'

बहरहाल रचना चाहे किसी की हो, पर समय के हिसाब से यह स्पष्ट हो जाता है कि बँकिम बाबू के वन्दे मातरम् ने कवि को सन् १८७७ में प्रभावित किया था।

आगे चलकर सन् १८८६ ई० में 'बालक पत्रिका' की सहायक सम्पादिका श्रीमती प्रतिभा सुन्दरी देवी ने गायन शिक्षाकालम के अन्तर्गत वन्दे मातरम् गीत की स्वरलिपि 'रागिनी देस, ताल कौव्वाली' मे तैयार कर प्रकाशित की थी। अपने नोट में उन्होने लिखा है—'बँकिम बाबू रचित वन्दे मातरम् नामक विख्यात गीत सम्पूर्ण रूप से प्रकाशित नहीं किया जा सका, क्योंकि इस गीत का सुर अत्यन्त कठिन है। सम्पूर्ण रूप मे तैयार करने पर पाठक बोधगम्य नहीं कर सकेंगे। वन्दे मातरम् गीत मे अनेक अलंकार लगाये गये हैं।'[1]

(ज्येष्ठ १२९२ प्रथम वर्ष, द्वितीय संख्या, पृष्ट ९५-९६)

स्वयं रवि बाबू ने भी रागिनी देस एक ताल में स्वर लिपि तैयार कर बँकिम बाबू को दिखाया था। सरला देवी द्वारा सम्पादित 'राष्ट्रीय संगीत' तथा स्वर वितान मे यही



इसी कक्ष में वन्दे मातरम् गीत लिखा गया था।

स्वरलिपि प्राप्त है। शांति निकेतन में यह राग देसी में ही गाया जाता है।

आगे चलकर वन्दे मातरम् सम्प्रदाय ने कोरस रूप में गाने के लिए इसे मिश्र सुर में तैयार किया था। श्री पूर्ण-चन्द्र चटर्जी का ख्याल था कि अगर इसे राग बिहाग मे तैयार किया जाता तो शायद और मधुर होता।

सन् १८८० में जिन दिनों आनन्द मठ का बंग दर्शन में क्रमिक प्रकाशन हो रहा था तब उसमे राग मल्लार-कौव्वाली ताल का जिक्र किया गया था—

वन्दे	मात	रम
०	१	×१

(बंग दर्शन, पृष्ट ५५५)

काँग्रेस मंच पर

सन् १८८६ ई० में कलकत्ता में काग्रेस का दूसरा अधिवेशन दादा भाई नौरोजी के सभापतित्व में हुआ था।

---

१. 'बालक पत्रिका में विख्यात गान (प्रसिद्ध गीत) कहा गया है। आनन्द मठ मे छपने के तीन साल बाद ही यह गीत कैसे इतना प्रसिद्ध हो गया कि ठाकुर परिवार द्वारा प्रकाशित पत्रिका मे स्वरलिपि सहित इसे छापा गया? यह निश्चित है कि आनन्दमठ में प्रकाशित होने के पूर्व सम्पूर्ण बंगाल में यह गीत प्रचारित हो गया था। आनन्दमठ के कारण इसे प्रसिद्धी प्राप्त नहीं हुई थी।

बीडन उद्यान (रवीन्द्र कानन) जहाँ रवि बाबू ने वन्दे मातरम् गीत गाया था।

उक्त अधिवेशन में कविवर हेमचन्द्र वंद्योपाध्याय ने पहले कुछ अपनी लाइनें जोड़कर बीच में वन्दे मातरम् के कुछ अंशों को सम्मिलित करके गाया था।

कि आनन्द आज भारत भुवने भारत जननी जागिल
आहा कि मधुर नवीन सुहासि
मायेर अधरे रयेछे प्रकाशि
जेनो बा प्रभातेर किरणेर राशि उषार कपोले ज्वलिल
मरि कि सुषमा फुटेछे बदने
किवां ज्योति ज्वले उजल नयने
कि आनन्दे दिक पूरिल - भारत जननी जागिल।
पूरब बांगला, मगध, बिहार,
देरा इस्माइल, हिमाद्रिर धार
कराची, मद्रास शहर बम्बई
सुरटि, गुजराती, मराट्ठी भाई, चौदिके मायेर घेरिल
प्रेम आलिंगने करे राखी कर
खुले देछे हृदि, हृदि परस्पर
एक प्राण सबे एक कण्ठ स्वर मुखे जय ध्वनि करिल।
प्रणय विह्वले धरे गले गले
गाहिल सकले मधुर काकले गाहिल वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयजशीतलां सुखदां वरदां मातरम्॥
शुभ्र पुलकित यामिनीं
फुल्ल कुसमित द्रुमदल शोभिनीं
सुहासिनी सुमधुरभाषिणी सुखदां वरदां मातरम्
बहुबल धारिणी नमामि तारिणीं रिपुदल वारिणीं
उठिल से ध्वनि नगरे नगरे
तीर्थ देवालय पूर्ण जयस्वरे भारत जगत मातिल॥

अर्थ—आज भारत तथा जगत मे कितना आनन्द है कि भारत जननी जाग गयी है। अहा, कितनी मधुर और नवीन हँसी माता के अधर पर जगमगा रही है मानो उषा के कपोलों पर प्रभात की सूर्य किरणें दमक रही है।

चेहरे पर क्या अनुपम सुषमा खिल रही है, उज्ज्वल नयनो मे कैसी ज्योति जल रही है, कितने आनन्द से दिशाएँ पूरित हो रही है, भारत जननी जाग गयी है।

पूर्व बंगाल, मगध, बिहार, डेरा इस्माइल, हिमालय का किनारा, कराची, मद्रास, बम्बई शहर, सूरत, गुजराती, मराठी भाइयों ने चारों तरफ से माँ को घेर लिया। प्रेम आलिगन में आवद्ध होकर हाथ में हाथ रखकर परस्पर हृदय खोल दिया है और एक प्राण तथा एक कंठ होकर सब लोग जय ध्वनि कर रहे हैं।

प्रेम से विह्वल होकर गले से गले लगाकर सबने मिलकर मधुर स्वर में गाया—वन्दे मातरम्।

इसके बाद द्वितीय बार सम्पूर्ण रूप से महाकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने बंकिम बाबू के देहान्त के बाद, कांग्रेस के १२वें अधिवेशन में कांग्रेस के मंच से गाया था। यह अधिवेशन रवि बाबू के भवन के निकट बीडन-उद्यान (आजकल इस बाग का नाम रवीन्द्र कानन है) में हुआ था। सभापति थे—बम्बई के प्रसिद्ध वकील श्री मुहम्मद रहीमतुल्ला सयानी। स्वागताध्यक्ष सर रमेशचन्द्र मित्र और प्रधान मंत्री श्री दीनशा ईदलजी वाचा थे। दिन था—२८ दिसम्बर सन् १८९६ ई०। रवि बाबू श्वेत वस्त्र पहन कर अपनी ओजस्वी वाणी मैं जब गाने लगे तो सभा में बिजली सी दौड़ गयी। उनके पास ही बैठे ज्योतिरिन्द्रनाथ साथ में आर्गन बजा रहे थे[1]।

---

१. महाकवि रवीन्द्रनाथ द्वारा गाये का रेकर्ड १९०४-०५ में एच० बोस के टंकिम मशीन में रेकर्ड किया गया था। यही प्रथम गीत था जिसमें रवीन्द्रनाथ का कन्ठस्वर रेकर्ड किया गया था। रेकर्ड का समय २ मिनट ३३ सेकेण्ड है। इसकी प्रतिलिपि शान्तिनिकेतन में सुरक्षित है।

बंग-भंग आन्दोलन में वन्दे मातरम् गीत की भूमिका

— श्री विश्वनाथ मुखर्जी —

'वन्दे मातरम्' गीत को जन्म देने के साथ ही श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्यायको यह आत्म विश्वास हो गया था कि आगे चलकर यह गीत एक दिन देश की जनता के हृदय में महत्वपूर्ण स्थान बना लेगा और बंगाल उन्मत्त हो उठेगा। उनके मन में यह धारणा आज से सौ वर्ष पूर्व उत्पन्न हो गयी थी। उन दिनों वे सरकारी नौकरी से छुट्टी लेकर 'बंग दर्शन' पत्रिका का संपादन कर रहे थे। अपने प्रेस के मैनेजर के एक प्रश्न के उत्तर में उन्होने कहा था—'इस गीत का मर्म अभी लोग नहीं समझ सकेंगे। लेकिन एक दिन ऐसा आयेगा जब सारा बंगाल इस गीत के पीछे पागल हो उठेगा। शायद यह सब देखने के लिए मैं जीवित न रहूँ, पर तुम रहोगे, देख लेना।'

उनकी यह वाणी सत्य प्रमाणित हुई थी और उनके प्रेस के मैनेजर श्री रामचन्द्र वंद्योपाध्याय ने अपने जीवन

इसके बाद १६०१ मे जब पुनः कलकत्तामें श्री दीनशा वाचा के समापतित्व में कांग्रेस अधिवेशन हुआ तब श्री दक्षिणारंजन सेन ने एक नयी स्वरलिपि तैयार की जिसे उक्त अधिवेशन मे गाया गया। इसी अधिवेशन मे प्रथम बार गांधी जी के दर्शन हुए। सरला देवी 'जीवनेर झरापाता' (पृष्ठ १६८) मे लिखती हैं—'इस समारोह मे दक्षिण अफ्रीका के बैरिस्टर मि० गांधी उपस्थित थे।'

आगे चलकर कांग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में वन्दे मातरम् का गायन मंगलाचरण के रूप में होता रहा। वन्दे मातरम् को सर्वाधिक ख्याति बंग भंग आन्दोलन के समय प्राप्त हुई। भारत का सम्पूर्ण क्रान्तिकारी आन्दोलन वन्दे मातरम् पर ही आधारित रहा।

सन् १६३७ ई० में पहली बार वन्दे मातरम् गीत के प्रति मुसलमानों को गहरी आपत्ति हुई। फलस्वरूप १६३८ ई० मे जब हरिपुरा मे कांग्रस का अधिवेशन हुआ तब इस गीत के कुछ अंशों को स्वीकार किया गया। सप्तकोटि के स्थान पर त्रिंश कोटि कण्ठ और द्विसप्त कोटि के स्थान पर द्विंत्रिश कोटि शब्द परिवर्तन इसलिए किया गया जिससे यह गीत सम्पूर्ण भारत के लिए बन जाय।

आजादी के बाद भारत सरकार ने इस गीत में पुनः एक बार परिवर्तन किया। अब त्रिश कोटि और द्विंत्रिश कोटि के स्थान पर 'कोटि-कोटि' शब्द रखा गया। दिनांक २४-८-४८ को 'जन गण मन' के साथ इस गीत को भी राष्ट्रीय गीत के रूप में स्वीकार कर लिया गया।

इसके बाद २४ जनवरी १६५० के अधिवेशन में संवैधानिक रूप से इसे राष्ट्रीय गीत मान लिया गया। उन दिनों श्री अनन्त शयनम् आयंगर ने 'जन गण मन' को और श्रीमती पूर्णिमा बनर्जी आदि ने 'वन्दे मातरम्' को राष्ट्रीय गीत मानने के लिए प्रेसीडेण्ट से कहा था। ठाकुर रघुनाथ सिंह ने मुझे बताया मेरे जैसे कुछ लोगों ने यह कहा कि 'वन्दे मातरम्' को ही राष्ट्रीय गीत माना जाय। किन्तु सदन ने इसे स्वीकार नहीं किया। फलतः इसी बात पर तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष बाबू पुरूषोत्तम टण्डन ने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया था।

सन् १६६१ ई० के बाद वन्दे मातरम् गीत पर जब पुनः आपत्ति उठायी गयी तब इस पर विचार करने के लिए सम्पूर्णानन्द कमेटी बनायी गयी जिसने यह निर्णय दिया कि विद्यार्थियों को राष्ट्र गीत वन्दे मातरम् याद होना चाहिए। इसके बाद ही आकशवाणी के प्रसारण में भी इसे स्थान दिया गया।

काल में न केवल बंगाल को बल्कि संपूर्ण भारतीय जनता को पागल बनते देखा था। वे १९०५ से लेकर १९१४ तक हुए उन सभी आन्दोलनो को प्रत्यक्ष रूप से देख चुके थे।

सन् १८९० ई० यानी अपनी मृत्यु के चार वर्ष पूर्व बंकिम बाबू ने अपनी बडी लडकी को ऐसा ही जबाब दिया था। बंकिम बाबू के भतीजे श्री शचीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ने उन दिनों के संस्मरण में लिखा है—'एक बार दीदी ने (बंकिम बाबू की बड़ी लड़की) उनसे वन्दे मातरम् गीत के बारे मे प्रश्न किया था। शायद उनके जीवित काल में, उस समय तक लोग उतना महत्व नहीं दे रहे थे जितनी आशा उनके मन मे थी। दीदी ने एक दिन उनसे पूछा—पिताजी, आखिर लोग तुम्हारे वन्दे मातरम् गीत को क्यों नही पसन्द करते ?

बंकिम बाबू ने जवाब देने के बदले उल्टा प्रश्न किया—क्या तू भी पसन्द नही करती ?

दीदी ने कहा—उतना नहीं करती।

महापुरुष ने गंभीर होकर कहा—एक दिन देखोगी, अधिक नही, दस-बीस वर्ष बाद देखोगी कि इस गीत के पीछे सारा बंगाल उन्मत्त हो उठा है। बंगाली पागल हो गये हैं।

यह कहानी मैने बंकिम बाबू की मृत्यु के कुछ दिनों बाद दीदी की जबानी सुनी थी।' (बंकिम कहानी, पृ०५३)

बंकिम बाबू की भविष्यवाणी २०-३० वर्ष बाद नहीं, बल्कि उनकी इस घोषणा के १५ वर्ष बाद ही सत्य प्रमाणित हो गयी। उनकी लडकी ने प्रत्यक्ष देखा कि जिस गीत को वह पसन्द नही करती थी, आज वह समस्त बंगाल की हवा मे गूँज रहा हैं और उसकी प्रतिध्वनि बंगाल की खाड़ी से उठकर सारे भूमण्डल में फैलती जा रही है।

अपने जीवन काल में ही बंकिम बाबू ने इस गीत की लोकप्रियता का अन्दाज तभी लगा लिया था जब उनके नारे का प्रयोग समकालीन कवियों ने करना प्रारम्भ कर दिया था। पत्र-पत्रिकाओं में चर्चा का विषय बन गया। नाटकों में प्रयोग होने लगे, कांग्रेस की सभाओं में मंगल गान का रूप ले रहा था। संगीतज्ञ विभिन्न रागों में स्वर लिपियाँ तैयार करते रहे। आगे चलकर एक दिन यह गीत मन्त्र के रूप में अवश्य प्रतिष्ठित हो जायगा। वन्दे मातरम् गीत को अधिक मान्यता दिलाने और सभी लोगो के लिए बोधगम्य बनाने की दृष्टि से उन्होंने आनन्दमठ मे सम्मिलित कर दिया। आनन्दमठ के पात्र की जबानी प्रश्नोत्तर के माध्यम से व्याख्या करायी। फलतः गीत का मर्म जन साधारण के निकट स्पष्ट हो उठा और दिन प्रति दिन उसकी लोकप्रियता बढती गयी। अगर यह गीत उनके अन्य गीतों की तरह प्रकाशित होता तो शायद इतना महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण न कर पाता। आनन्दमठ में छपने के साथ ही लन्दन तक हलचल मच गयी। सन् १८८२ ई० में इस पुस्तक का प्रकाशन प्रथम बार हुआ था और उसी समय ४ अप्रैल, १८८२ के अंक मे लिबरल ने लिखा—

'इस पुस्तक की कथावस्तु का मुख्य विचार विन्दु यह है कि क्या राष्ट्रीय-मानस को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध हिंसात्मक विचारों को प्रश्रय देना न्यायोचित है ? अगर इस प्रश्न को दूसरे रूप में कहें तो क्या अंग्रेजी प्रभुत्व की स्थापना किसी भी अर्थ में देवी घटना है ? या इसे और अंतिम निर्णयात्मक रूप में रखें कि भगवान ने किस उद्देश्य और किस तात्कालीक आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इस देश में ब्रिटिश सत्ता को भेजा ? तात्कालिक उद्देश्य का संक्षेप में वर्णन भूमिका में दिया है और वह यह कि बंगाल में मुस्लिम अत्याचार तथा अराजकता का अंत करना। इसी उद्देश्य को बड़े प्रभावशाली ढंग से पुस्तक के अंतिम अध्याय में चित्रण किया गया है।'

बंग-भंग की पृष्ठभूमि

इतिहासकारों के मत में लार्ड कर्जन के शासनकाल मे कोई भी कार्य इतना अप्रिय सिद्ध नही हुआ जितना कि बंगाल का विभाजन। बंगालियों के निरंतर विरोध करते रहने पर भी कर्जन ने उसका अंगच्छेद कर किया। सरकार की ओर से यह तर्क दिया गया कि बंगाल प्रान्त बहुत बड़ा हो गया हैं, इसलिए उसका शासन प्रबन्ध ठीक से नहीं हो पाता है। पूर्वी बंगाल की बराबर उपेक्षा की जा रही है। वहाँ के निवासियों के लिए नैतिक और भौतिक उन्नति के लिए कुछ भी नही किया जा रहा है। इस फतवे को देने के बाद सन् १९०५ में यह घोषणा की गयी कि अब एक नये प्रान्त का रूप दिया जायगा। इस प्रान्त का

नाम पूर्वी बंगाल और ओर आसाम रखा जायगा। इस प्रान्त का शासन एक लेफ्टिनेंट गवर्नर करेगा। इस नये प्रान्त की राजधानी ढाका होगी। इंगलैण्ड की सरकार ने लार्ड कर्जन के इस प्रस्ताव को बहुमत से स्वीकार कर लिया और आदेश दिया कि वे इस प्रस्ताव को अमल में ला सकते हैं।

यह आदेश मिलते ही कर्जन बराबर पूर्वी बंगाल के मुसलमानों की सभाओं में भाषण देते हुए यह समझाने का प्रयत्न करने लगा कि बंगाल का बंटवारा यहाँ के लोगों के हित के लिए किया जा रहा है। कर्जन का असल उद्देश्य था—बंगाल की बढ़ती हुई राष्ट्रीय भावना को दबाना। वह अपनी इस चाल के जरिये हिन्दुओ को मुसलमानों के विरुद्ध करने के लिए बनायी थी।

कर्जन ने इस दुष्कर्म के बारे में अंग्रेजी समाचार पत्र स्टेट्समैन ने जो ब्रिटिश सरकार का पृष्ठ पोषक था, लिखा—ब्रिटिश भारत के इतिहास में कभी ऐसा समय नही आया जब सर्वोच्च सरकार ने सार्वजनिक भावनाओ को और मतों की ऐसी उपेक्षा की हो जैसी कि वर्तमान सरकार कर रही है।···सरकार इसे भली भाँति समझती है कि उसकी योजना बगाली जाति की दृढ़ता और बढ़ती हुई राजनीतिक शक्ति पर प्रत्यक्ष आघात है।'

लन्दन के डेली न्यूज ने भी राज्य सचिव श्री बाउरिक से बंगाल भंग रोकने की प्रार्थना की। श्री गोखले ने व्यवस्थापिका सभा में अनुनय स्वर में कहा—'माई लार्ड बंगाल को मना लीजिये।'

पहले लोगों को यह आशा थी कि जन साधारण के विरोध का ख्याल किया जायगा और शायद इंगलैण्ड की सरकार लार्ड कर्जन को ऐसा करने से रोके, लेकिन यह ख्याल निर्मूल प्रमाणित हुआ। इंगलैण्ड से स्वीकृति पाने के बाद कर्जन ने घोषणा की कि आगामी १६ अक्टूबर, १९०५ ई० को नये प्रान्त की स्थापना हो जायगी। इस प्रान्त के गवर्नर होंगे ले० बेम्फिल्ड फुलर। बगाल के बुद्धिजीवियो का ख्याल था कि शायद उन्हे कोई आन्दोलन नहीं करना पड़ेगा और मामला शान्त हो जायगा। लेकिन इस घोषणा को सुनते ही समस्त बंगाल में आग लग गयी। सरकार के इस निश्चय का जोरदार विरोध किया गया। बंग-भंग होने के पूर्व ही प्रातः स्मरणीय पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के नाती 'साहित्य' पत्रिका संपादक श्री सुरेश समाजपति ने वन्दे मातरम् सम्प्रदाय' नामक एक संस्था का गठन कर चुके थे और यह पहले ही तय हो गया था कि अगर सरकार ने बंग-भग किया तो इस समिति की ओर से जोरदार आन्दोलन किया जायगा। स्वदेशी वस्तु का प्रचार और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया जायगा।

१६ अक्टूबर के पूर्व ही बगला साहित्यके परम श्रद्धेय विद्वान पं० रामेन्द्र सुन्दर त्रिवेदी ने एक वक्तव्य देते हुए कहा—'उस दिन प्रत्येक परिवार मे अरंधन [भोजन नही बनेगा] व्रत पालन किया जाय।'

श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी जिन्हें इस आन्दोलन का नेता बनाया गया था, उन्होने कहा— 'इस दिन रोगी और बच्चो को छोड़कर कोई भी व्यक्ति अन्न-जल ग्रहण नही करेगा। किसी भी बंगाली के घर चूल्हा नहीं जलेगा।'

कांग्रेस का जन्म होने के बहुत पहले जब वन्दे मातरम् गीत का जन्म नही हुआ था, उन दिनों बकिम बाबू 'वंग-दर्शन' पत्रिका के संपादक थे। उन्होंने सन् १८७२ मे अपने एक संपादकीय में लिखा था— 'भारतवर्ष की विभिन्न जातियाँ जब तक एक मत, एक परामर्श और एकोद्योगी नहीं होगी तबतक भारतवर्ष की उन्नति नही होगी। उनका यह सपना अब पूरा होने जा रहा था।'

सच तो यह है कि बंग-भंग आन्दोलन के कारण ही संपूर्ण भारत में राष्ट्रीय चेतना की लहर उत्पन्न हो गयी थी। उन्ही दिनो पूर्वी बंगाल और आसाम के मनोनीत गवर्नर फुलर ने एक गन्दा भाषण दिया। उसने कहा—'मेरी दो बीवियाँ है। एक हिन्दू और दूसरी मुसलमान। इनमे दूसरी बीबी मेरी चहेती बीबी है।'

इस वक्तव्य ने जन साधारण के आक्रोश की आग मे घी का काम किया। महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने एक वक्तव्य जारी करते हुए कहा—'दोनों बंगाल की एकता कायम रखने के लिए हम लोग इस दिन राखी बंधन मनायेंगे।'

१६ अक्टूबर, १९०५ का वह दिन आ गया। उस दिन सुबह होते ही कलकत्ता नगरी के उत्तर-दक्षिण से जनता की अपार भीड़ आने लगी। लोग गंगा-स्नान करने के बाद सड़कों पर गाने लगे—

सात कोटी लोकेर करुण क्रन्दन,
सुने ना सुनिल कुर्ज्जन दुर्ज्जन।
ताइ निते प्रतिशोध मनेर मतन,
करिलाम राखी बंधन।
नगरे नगरे ज्वाला रे आगुन,
हृदये हृदये प्रतिज्ञा दारुण।
विदेशी वाणिज्ये कर पदाघात,
मायेर दुर्दशा घुचाबे भाई।

[बांगलाय विलव बाद, पृष्ठ १७]

(सात करोड़ लोगों का करुण क्रन्दन सुनकर भी दुर्जन कर्जन ने ध्यान नहीं दिया, इसलिये हम बदला लेने के लिये राखी बन्धन का व्रत पालन करने जा रहे हैं। नगर-नगर में आग लगा दो, प्रत्येक के हृदय में यह प्रतिज्ञा उत्पन्न कर दो कि हम विदेशी सामग्रियों को ठुकरा कर मातृभूमि की दुर्दशा को दूर करेंगे।)

चारों ओर जिधर देखिये जन समुद्र वन्दे मातरम् का नारा लगाते हुए बीडन स्क्वायर (सन् १८९६ ई० मे २८ दिसम्बर के दिन जब यहाँ कांग्रेस का बारहवाँ अधिवेशन हुआ था तब पहले पहल राग देसो में महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने वन्दे मातरम् गीत गाया था।) में पहुँचने लगे। यहाँ बग भंग आन्दोलन के विरोध में सभा हुई।

इस सभा मे महाकवि रवीन्द्रनाथ ने बंगाल की जनता को एक नया गीत दिया जिसे वे स्वयं गाने लगे—

बाँगलार माटी, बाँगलार जल,
बाँगलार वायु, बाँगलार फल,
पुण्य होउक, पुण्य होउक
पुण्य होउक, हे भगवान।
बाँगलार घर, बाँगलार माट,
बाँगलार बन, बाँगलार हाट,
पूर्ण होउक, पूर्ण होउक,
पूर्ण होउक हे भगवान।
बाँगालीर पण, बाँगालीर आशा,
बाँगालीर काज, बाँगालीर भाषा।
सत्य होउक, सत्य होउक,
सत्य होउक, हे भगवान।
बाँगालीर प्राण, बाँगालीर मन,
बाँगालीर घरे जत भाई बोन,
एक होउक, एक होउक,
एक होउक, हे भगवान।

[मुक्तिर संधाने भारत, श्री योगेशचन्द्र बागल]

वन्दे मातरम् की ख्याति

श्री अयोध्या सिंह तथा भूपेन्द्र कुमार दत्त की पुस्तकों से यह ज्ञात होता है कि मुगल शासनकाल में यानी जब ईष्ट इंडिया कम्पनी भारत के पूर्वी भाग में पैर जमा चुकी थी तब संन्यासी विद्रोह के समय विद्रोहियोंने ओ३म वन्दे मातरम् का नारा लगाया था। बँकिम बाबू को इन दिनों की कहानी और नारा अपने चचेरे पितामह से प्राप्त हुई थी। संन्यासियों को यह नारा कहाँ से प्राप्त हुआ था, इसका उल्लेख जो प्रामाणिक माना जाय, नही प्राप्य है। मान्यता है कि अघोर पंथियों के एक संप्रदाय में वं देही मातरम् नामक एक मंत्र है, पर महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज या अन्य तंत्र शास्त्रोंकी पुस्तकोमें इसका उल्लेख नहीं है।[1] बहरहाल यह सत्य है कि बँकिम बाबू को कही से यह नारा मिला था और उस नारे के आधार पर हमारे राष्ट्रीय गीत का जन्म हुआ। भारतीय कांग्रेस के जलसों में वन्दे मातरम् गीत मगल-गान के रूप में बराबर गाया जाता रहा, पर वन्दे मातरम् का नारा नही लगाया जाता था। इस नारे की शुरुआत बँग-भँग आन्दोलन से ही प्रारम्भ हुआ और अब तक वही परम्परा कायम है।

बँग-भँग आंदोलन के कारण ही वन्दे मातरम् गीत बगाल की धरती से उठकर विश्व भर में फैल गया। एक प्रकार से यह आन्दोलन देश के लिये वरदान प्रमाणित हुआ। यहाँ तक कि वन्दे मातरम् के नारे को लेकर विभिन्न शहरों में कवियों ने अनेक गीत लिखे। श्री सतीशचन्द्र ने लिखा—

---

१. बँकिम बाबू तथा उनके पिता श्री यादवचन्द्र चटर्जी का सम्पर्क कापालिकों से था।

'वन्दे मातरम्' दैनिक पत्र का प्रकाशन

— श्री तारणी शंकर चक्रवर्ती —

वन्देमातरम्

६ अगस्त १९०६ को वन्दे मातरम् का प्रकाशन हुआ। इसका जन्म ब्रह्म बांधव उपाध्याय के प्रयत्न से हुआ और प्रकाशन आरम्भ करने के लिए काली घाट के हरिदास हाल्दार ने पाँच सौ रुपये लगाये। श्री बिपिनचन्द्र पाल के नेतृत्व मे वन्दे मातरम् निकला। श्री सुबोध चन्द्र मल्लिक ने भी आर्थिक सहायता देने का वचन दिया।

अगस्त मास के मध्य मे बड़ौदा (गुजरात) से नौकरी छोड़कर श्री अरविन्द राष्ट्रीय विश्व विद्यालय के अध्यक्ष होकर कलकत्ता आये। वहाँ उन्होंने राजनीति में भाग लेना शुरू किया।

बिपिन चन्द्र पाल ने सशस्त्र क्रांति के विरोध मे लेख लिखा अतः १७ दिसम्बर १९०६ को वे सम्पादक पद से हटा दिये गये।

अरविंद सम्पादक बने।

२ मई १९०८ अलीपुर बम केस में अरविन्द गिरफ्तार कर लिये गये और बिपिन चन्द्र पाल पुनः सम्पादक बने।

वन्दे मातरम् का अंतिम अंक २९ अक्तूबर १९०८ को निकला। अर्थात कुल आयु दो वर्ष, दो मास, तेईस दिन।

वन्दे मातरम्

महाराष्ट्र मे लोकमान्य तिलक द्वारा संगठित उग्र पन्थी दल के साथ सम्बद्ध बंगाल के उग्र पन्थी दल का मुख पत्र था।

वन्दे मातरम् पढ़कर राष्ट्र की धमनियों मे नये रक्त का संचार हुआ। इसकी ओजस्वी भाषा और कानून के नाग पाश से बच कर लिखे लेख देश की अनमोल थाती है। इन लेखों को पढ़कर एंग्लो इंडियन अखबारो के क्षोभ का अन्त न था।

वन्दे मातरम् के सम्पादक के रूप में श्री अरविन्द पर मुकदमा दायर हुआ, पर वे ही सम्पादक है, इसका कोई प्रमाण न था। बिपिन चन्द्र पाल ने गवाही नही दी और इस कारण उन्हें छः मास की सश्रम कारावास की सजा मिली। इस मुकदमे के कारण श्री अरविन्द का नाम देश भर मे फैल गया तथा 'वन्दे मातरम्' अखबार की मांग बढ़ गयी।

बिपिन चन्द्र पाल जेल से छूटे तो विशाल भीड ने उनकी आभ्यर्थना की और प्रसिद्ध पर्चा 'नाउ ऑर नेवर' (अभी या कभी नही) बाँटा गया।

बिपिन चन्द्र पाल ब्रिटिश शासन से मुक्त पूर्ण स्वायत्त शासन चाहते थे, कांग्रेस औपनिवेशिक स्वराज्य चाहती थी किन्तु श्री अरविंद की माँग थी—पूर्ण स्वतन्त्रता। उनके विचार से बिना इसके सच्ची राष्ट्रीयता पनप नही सकती उनके स्वराज्य का अर्थ था पूर्ण स्वतन्त्रता। देशवासी आदर्श की इस नवीनता के प्रति आकृष्ट ही नही हुए, बल्कि इस आदर्शने संजीवनी मंत्र के समान काम किया और राष्ट्र ने मानो नया जन्म लिया।

(भारत मे सशस्त्र क्राति की भूमिका, क्राति प्रकाशन मिर्जापुर से साभार)

स्वदेशो संग्रामे चाई आत्मदान
वन्दे मातरम् गाओ रे भाई।

[राष्ट्रीय आन्दोलन में आत्मदान की आवश्यकता है, वन्दे मातरम् गाते रहो भाई।

काली प्रसन्न की दो पंक्तियाँ—

मा गो जाय जेन जीवन चले,
शुधु जगत माझे तोमार काजे
वन्दे मातरम् बले।

बरिसाल - कांग्रेस

इसी बीच आन्दोलनकारियो ने नैहाटी स्थित बंकिम भवन मे वन्दे मातरम् के अमर गायक बंकिम बाबू के नाम

पर उत्सव मनाने के लिए एकत्रित हुए और दूसरा ओर राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपना अगला अधिवेशन बरिसाल मे करने का निश्चय किया। जनता के बढ़ते हुए विद्रोह को देखकर संपूर्ण बंगाल मे वन्दे मातरम् गीत तथा नारा लगाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। फलस्वरूप लोगो मे आक्रोश उत्पन्न हो गयी। सरकार ने जब देखा कि बरिसाल कांग्रेस को रोकना ठीक नही है तो उसने यह शर्त्त रखी कि बिना नारा लगाये शान्ति पूर्वक अधिवेशन कांग्रेस कर सकती है। शर्त्त के अनुसार काग्रेस के अधिकारियो ने स्टेशन से जुलूस शान्ति के साथ निकला। इसी समय न जाने किस बात पर पुलिस बड़ी बेदर्दी के साथ जनता पर लाठी बरसाने लगी। हजारों लोग घायल हो गये। एक ओर वन्दे मातरम् तो दूसरी घायलों के चीत्कार से नगर काँपने लगा।

इस सम्बन्ध मे श्री प्रेमेन्द्र मित्र ने लिखा है—'बरिसाल कांग्रेस मे कांग्रेस सभापति का जुलूस शव - यात्रा के रूप परिणत हो गया। पुलिस ने बड़ी निर्दयता से लोगो को पीटा। इस लाठी चार्ज मे श्री मनोरंजन गुह ठाकुर के पुत्र श्री चित्तरंजन गुह ठाकुर बुरी तरह घायल हो गये। आश्चर्य की बात यह है कि उन पर जब तक लाठियो की वर्षा होती रही और उन्हे होश रहा तबतक वे वन्दे मातरम् का नारा लगाते रहे।

[बंकिमचन्द्र जीवन और साहित्य, श्री प्रेमेन्द्र मित्र]

श्री अरविन्द घोष की देन

१९०५ ई० तक श्री अरविन्द घोष महर्षि के पद पर नही पहुँचे थे। बंग भंग आन्दोलन के बारे में मान्यता है कि आम जनता में राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने के पीछे दार्शनिक व्याख्याकार थे—श्री विपिनचन्द्र पाल, कार्यकर्त्ता थे—श्री अरविन्द घोष और कवि थे—श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर। रवि बाबू ने बंग भंग आन्दोलन के दौरान १५ सूत्रीय कार्यक्रम तैयार करके दिया था। अगर उसका पालन निष्ठा से की जाती तो स्वराज पहले ही आ जाता। समय - समय पर मातृ वंदना के रूप मे अनेक गीत उन्होंने जनता को दिये।

श्री अरविन्द के जीवन पर बंकिम बाबू के साहित्य का गहरा प्रभाव पडा था। अपने विचारों से वे क्रान्तिकारी बन गये थे। उन्हीं दिनों उन्होंने वन्दे मातरम् के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये। अगर वे सक्रिय रूप से बंग भंग आन्दोलन मे भाग न लेते तो इतना महत्व न बढ़ता। एक प्रकार से अरविन्द का राजनीति में देश के लिए शुभ हुआ। श्री प्रेमेन्द्र मित्र के विचार से—"श्री अरविन्द ने वन्दे मातरम् गीत की दार्शनिक व्याख्या बम्बई से प्रकाशित पत्रिका 'इन्दु प्रकाश' मे की। वन्दे मातरम् के सम्बन्ध मे यही प्रथम राजनीतिक व्याख्या थी।"

श्री अरविन्द ने वन्दे मातरम् गीत के बारे में कहा था कि बकिम ने ही स्वदेश को माता की संज्ञा दी है। वन्दे मातरम् संजीवनी मंत्र है। हमारे स्वाधीनता आन्दोलन का हथियार वन्दे मातरम् है। उन्होने लोगों को बताया कि वन्दे मातरम् सामान्य गीत नही, बल्कि एक ऐसा मंत्र है जो हमे मातृभूमि की वंदना करने की सीख देता है। उनके इस वक्तव्य के कारण ही बंग भग के आन्दोलनकारियों तथा परवर्त्ती क्रान्तिकारियों के निकट यह नारा तथा गीत मंत्र बन गया। वन्दे मातरम् गीत ने श्री अरविन्द को इतना प्रभावित किया कि वे बम्बई से आकर बंग भग आन्दोलन की राजनीति मे कूद पड़े।

इन्ही दिनो 'वन्दे मातरम्' समिति ने यह महसूस की कि अपने विचार आम जनता तक पहुँचाने के लिए अपना एक एक निजी पत्र होना चाहिए। इस निश्चय के बाद समिति की ओर से वन्दे मातरम् नामक एक अंग्रेजी दैनिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया गया। इस पत्र का प्रकाशन ६ अगस्त १९०९ ई० से हुआ। इसका मोटो था—'इंडिया इडियनो के लिए'। पत्र के सम्पादक मण्डल मे सर्व श्री विपिनचन्द्र पाल, श्याम सुन्दर चक्रवर्त्ती और हेमेन्द्र प्रसाद घोष थे। बाद मे आगे चलकर श्री अरविन्द इस पत्र के कर्णधार बने।

वन्दे मातरम् पत्र के कारण स्वतन्त्रता-आन्दोलन जोर पकड़ता गया। उन्हीं दिनों किसी सभा मे बंकिम बाबू के वन्दे मातरम् गीत का उल्लेख करते हुए सर गुरुदास बनर्जी ने उन्हें 'ऋषि बकिमचन्द्र' कहा। उक्त सभा में वन्दे मातरम् के सम्पादक हेमेन्द्र प्रसाद घोष मौजूद थे। सर गुरुदास बनर्जी जैसे नेता ने बकिम बाबू को ऋषि कहा है, यह उनके लिए नयी बात थी। उन्होंने तत्काल यह समाचार श्री अरविन्द को दिया। आगे चलकर जब कभी अपने लेख में



१८ अगस्त, १९०७ ई० को मैडम भीकाबाई कामा ने इसी झण्डे को फहराया था। केसरी कार्यालय, पूना से साभार।

अरविन्द बंकिम बाबू का उल्लेख करते रहे तब उन्हें 'ऋषि बंकिम' लिखते रहे। वन्दे मातरम् के सम्पादनकाल में जितने लेख अरविन्द ने लिखे, उनकी भाषा ज्वालामयी रही। श्री हरीदास मुखर्जी तथा उमा मुखर्जी द्वारा संपादित पुस्तक में उनके अग्रलेखो का संग्रह देखा जा सकता है। यहाँ तक कि गरम दल के नेता होने के कारण वे अपने लेखों में कांग्रेस के नरम दलवालो की कटु आलोचना करने से नही चुके।

शासन की कड़ी आलोचना करने के कारण उन्हे १९०७ मे बन्दी बना लिया गया। श्री अरविन्द की गिरफ्तारी से सारे राष्ट्र में हलचल मच गयी। सरकार का ख्याल था कि इससे आन्दोलनकारी हतोत्साह हो जायँगे, पर इसका फल उल्टा हुआ। कवीन्द्र रवीन्द्रको इस अवसरपर लिखना पड़ा—

अरविन्द रवीन्द्रेर लह नमस्कार।

(हे अरविन्द, रवीन्द्र का नमस्कार ग्रहण करो।)

ब्रिटिश सरकार के कर्मचारियों को वन्दे मातरम् नारे से कितना चिढ थी, इसी बात से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि नयी पीढी के मन मे घृणा के बीज बोने के लिए किशोरगज महाविद्यालय के प्रधानाध्यापक ने सरकारी आदेश पर अपने स्कूल के विद्यार्थियों को आदेश दिया कि प्रत्येक छात्र अपनी कापी मे ५०० बार यह लिखे—'वन्दे मातरम् चिल्लाने मे अपना समय नष्ट करना मूर्खता है और अभद्रता है।'

(श्री गिरिजा शंकर रायचौधुरी, श्री अरविन्द ओ बांगलाय स्वदेशी युग, पृष्ट १०६)

विश्व विजयी तिरंगा प्यारा

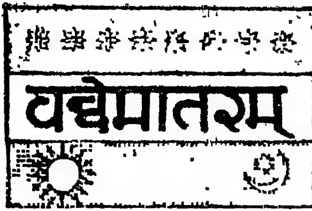
१८ अगस्त, १९०७ ई० को जर्मनी के स्टुटगार्ट शहर मे एक समाजवादी अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए विश्व के प्रत्येक देश के प्रतिनिधि अपने देश का राष्ट्रीय झंडा लेकर आये। भारत का अपना कोई झण्डा नही था। इस सम्मेलन में व्यवस्थित रूप से मैडम भीकाबाईजी कामा और सरदार सिह राणा गये हुए थे। जब उस सम्मेलन मे मैडम कामा को बोलने का अवसर दिया गया तो वन्दे मातरम् गीत गाने के बाद अत्यन्त ओजस्वी भाषा मे भाषण देते हुए उन्होंने भारत मे अंग्रेजों द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों का वर्णन किया। उनके भाषण को सुनकर उपस्थित देशो के प्रतिनिधि रोमाँचित हो उठे।

श्री नरेन्द्र भट्टाचार्य ने लिखा है—'मैडम कामा अपने भाषण समाप्त करने के बाद एक तिरंगा झण्डा सम्मेलन मे फहराया। इसे फ्रांस मे रहने वाले प्रसिद्ध क्रातिकारी श्री हेमचन्द्र कानून गो ने बनाया था। झण्डा फहराते समय वन्दे मातरम् का उन्होंने नारा लगाया था।

(भारतेर स्वाधीनता संग्रामेर इतिहास)

ज्ञातव्य है कि मैडम कामा के मूल झंडे में सफेद रंग नही था और न चरखा का चित्र। ऊपर हरे रग की भूमि मे सात तारे अंकित थे बीच मे पीली जमीन पर हाथ से **वन्दे मातरं** शब्द लिखा गया था, सबसे नीचे लाल जमीन पर एक ओर सूरज और दूसरी ओर चाँद बनाया गया था।[1]

१. अभी हाल में पता चला कि मैडम कामा के पहले सिस्टर निवेदिता ने पहले पहल राष्ट्रीय झण्डा बनाया था। उसमें देवनागरी में 'वन्दे मातरम्' लिखा था मूलझण्डे का स्वरूप कही प्राप्य नही है।



बायें—१७ अगस्त १९०६ में बनाया गया झण्डा। दायें—१८ अक्टूबर १९०७ में बनाया झण्डा। चित्र हिन्द समाचार पत्र संग्रहालय हैदराबाद—२ से समाचार प्राप्त



मैडम कामा का मूल ध्वज लिऐ एक चित्र जो कि प्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री श्यामकृष्ण वर्मा के पेरिस स्थित दफ्तर में था, श्री इन्दुलाल याज्ञिक को प्राप्त हुआ। वे १९३० ई० में उसे भारत ले आये और मराठी साहित्य वयोवृद्ध विद्वान श्री गजानन विश्वनाथ केतकरजी को दिया। केतकरजी ने उसका एक तेलचित्र बनाकर शिवाजी के मंदिर में जहाँ वन्दे मातरम् खुदा हुआ है, लगाया। मूल चित्र केसरी कार्यालय पूना में सुरक्षित है। श्री केतकरजी के कथनानुसार मूल झण्डे के निर्माता श्री हेमचन्द्र दास रहे। श्री बंकटलाल ओझा के कथनानुसार १७ अगस्त १९०६ ई० को कलकत्ता मे प्रथम राष्ट्रीय झण्डे की रचना हुई। सबसे ऊपर हिन्दुओं का लाल रँग जिसमें आठ कमल, बीच मे पीले रंग पर वन्दे मातरम् और नीचे मुसलमानों का हरा रंग जिसमें सूरज, चाँद, तारे थे।

दूर की कौड़ी

भारत मे चाटुकारिता करनेवालों की कभी कमी नहीं रही। यहाँ तक कि इतिहास को गलत तथ्य देनेवालों की भरमार है। बंग-भंग आन्दोलन के कारण वन्दे मातरम् तथा आनन्दमठ की लोकप्रियता काफी बढ़ गयी थी। सन् १९०७ ई० के दौरान श्री सिद्धमोहन मित्र जो कि हैदराबाद से प्रकाशित होनेवाले 'दक्कन पोस्ट' के संपादक थे, लन्दन के टाइम्स अखबार में वन्दे मातरम् और आनन्दमठ के बारे में लिखा— "सन् १८८२ में इलबर्ट बिल आन्दोलन के समय बहु चर्चित उपन्यास बंकिम बाबू ने लिखा था। [ज्ञातव्य है कि यह उपन्यास सन् १८८० के पूर्व लिखा जा चुका था — लेखक] बहु चर्चित वन्दे मातरम् गीत फ्रांसीसी राष्ट्रीय गीत मार्सेलज का बंगला संस्करण है। [फ्रांसीसी राष्ट्रीय गीत के लेखक प्रसिद्ध कवि रुजेत दे लाइन थे।— लेखक] इसमें कुछ उत्तेजनात्मक शब्द जोड़कर लोगों को उत्तेजित करने का प्रयास किया गया है।"

(श्री हेमचन्द्र घोष, बंकिमचन्द्र, पृष्ठ २२५)

टाइम्स में प्रकाशित इस लेख का विरोध तत्कालीन अंग्रेजी द्वारा संचालित पायनियर ने जोरदार शब्दों में किया— "कविता की दृष्टि से तथा रचना के सौष्ठव से वन्दे मातरम् गीत फ्रांसीसी राष्ट्रीय गीत से कहीं अधिक ऊँचा है। मार्सेलज में कवि का हृदय नही है, पर वन्दे मातरम् में कवि ने अपनी आत्मा को इस कदर ढाल दिया है कि प्रत्येक व्यक्ति की हृदय तंत्री झनझना उठती है। फ्रांसीसी और भारत के राष्ट्रीय गीतों में यहीं सबसे बड़ा अन्तर है। वन्दे मातरम् प्रार्थना है। आद्या शक्ति को स्वदेश के आधार में प्रतिष्ठित कर उसे माँ कहा गया है। अपनी जन्मभूमि को न केवल माँ कहा गया है बल्कि माँ की तरह प्यार और श्रद्धा करने का निर्देश दिया गया है। जो गीत किसी भी देशवासी को अपनी जन्मभूमि के प्रति माँ की तरह प्रेम करना सिखाये, उस गीत की तुलना भला मार्सेलज से कैसे की जा सकती है ?।

टाइम्स में प्रकाशित इस लेख को पढ़कर डाक्टर ग्रियर्सन ने इंगलैण्ड की एक सभा में स्वयं वन्दे मातरम् गीत गाने के बाद अपने भाषण में कहा—"जिन लोगों को भारत से प्यार है या करते है, भारत के हितैषी है, वे लोग इस गीत को मंत्र के रूप मे स्वीकार करेंगे।"

रवि बाबू ने कहा था— "यह मंत्र केवल बंगाल के लिए नही है। यह वास्तव में विश्व माता की वदना है।" (जातीयतार मंत्र गुरु जांरा, श्री प्रियनाथ जाना, पृष्ठ ८६-८७)

बहरहाल इतना निश्चित है कि बंग-भंग आन्दोलन के कारण लार्ड कर्जन की जो दुर्दशा हुई, वह इतिहास की वस्तु बन गयी। यहाँ तक कि उन्हे भारत से विदा ले लेनी पड़ी। उन्ही दिनों इस आन्दोलन के कारण कांग्रेस में दरार पड़ गयी। लार्ड कर्जन के भूलों के प्रति चेतावनी देते

(शेष पृष्ठ ४२ पर)



इसी भवन में आनन्द मठ उपन्यास और वन्दे मातरम् गीत लिखा गया था

आनन्दमठ और वन्दे मातरम् गीत

—श्री विश्वनाथ मुखर्जी

सन् १९७१ में संसद सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री के एक लेख में यह जिक्र था कि बंकिम बाबू ने आज से सौ वर्ष पूर्व वन्दे मातरम् गीत लिखा था। पता नहीं, उन्हे यह यह बात कहाँ से प्राप्त हुई थी ? इसके बाद श्री बालकवि बैरागी का एक पत्र छपा कि इस गीत की जन्म शताब्दी मनाना चाहिए। बैरागीजी ने बड़े जोरदार शब्दों में शताब्दी मनाने के लिए आह्वान किया, पर कही कुछ नही हुआ। शायद इन दोनो विवरणों को पढ़कर मेरे मित्र डाक्टर भानुशंकर मेहता को शौक चर्राया कि वन्दे मातरम् गीत की जन्म शताब्दी का आयोजन काशी में किया जाय। इस सम्बन्ध में जब मुझे कार्य सौपा गया तो बंकिम बाबू की किसी भी जीवनी में यह तथ्य नही मिला कि यह गीत कब लिखा गया था।

आनन्दमठ की भूमिकामें भी प्राप्य नहीं हुआ। अधिकतर लोगोंकी तरह मैं भी यह मानता रहा कि वन्दे मातरम् गीत आनन्दमठ उपन्यास का ही एक अंग है जिसे भवानन्द गाता है और व्याख्या करता है। सन् १९७५ में अचानक एक पुस्तक प्राप्त हुई जिसमें श्री अरविन्द का एक लेख पढ़ने में आया कि वन्दे मातरम् गीत सन् १८७५ ई० में लिखा गया था। यद्यपि उक्त लेख में ठीक सन् नहीं बताया गया था, पर यह जरूर लिखा गया था कि आज से ३२वर्ष पूर्व यह यह गीत लिखा गया था। महर्षि अरविन्द का वह लेख सन् १९०७ में प्रकाशित हुआ था। इस सूत्र को पाने के बाद में कलकत्ता चला आया और लगभग २१८ पुस्तकों के अध्ययनके बाद यह पता चला कि कब और किस अवसर पर यह गीत लिखा गया था। अगर बंकिम बाबू के छोटे भाई श्री पूर्णचन्द्र चटर्जी तथा श्री ललित कुमार मित्र के लेख प्राप्त न होते तो कोई भी लेखक यह नही बता सकता था कि हमारे राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् का जन्म कब हुआ था ? इन दोनों व्यक्तियो के प्रत्यक्ष विवरण से साफ हो जाता है कि यह गीत सन् १८७५ में लिखा गया था।

वन्दे मातरम् गीत लिखने के बाद बंकिम बाबू इसे बराबर संवारते रहे। भारत प्रसिद्ध गायक यदु भट्ट से सुर दिलाने के कारण यह गीत छपने के पहले ही प्रसिद्ध हो गया था। आनन्दमठ में व्याख्या के साथ प्रकाशित होने के साथ ही लोगों को उस का महत्व अधिक समझ में आया। आनन्दमठ में भवानन्द गाता है—

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयजशीतलां
शस्य श्यामलाम मातरम्

इन पंक्तियों को सुनकर महेन्द्र चौक उठता है और भवानन्द से पूछता है—माता कौन है ?

इस प्रश्न का उत्तर न देकर भवानन्द आगे गाने लगता है—

शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्

महेन्द्र ने कहा—यह तो देश है, माँ नहीं है।

भवानन्द कहता है—हम लोग दूसरी माँ को नहीं मानते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी, हमारी माता, जन्मभूमि ही जननी है। हमारे न माँ है, न पिता, न भाई, कुछ नही है, घर भी नही, मकान भी नही। हमारी अगर कोई है तो वह है—सुजला, सुफला, मलयज-शीतला शस्यश्यामला—

बंकिम बाबू द्वारा की गयी व्याख्या को श्री हर प्रसाद भट्टाचार्य ने और साफ करते हुए लिखा है—"बंगाल की अवनति से बंकिम बाबू बहुत दुःखी थे। वे चाहते थे कि बंगाल समृद्धशाली हो। उनके वन्दे मातरम् गीत का यह मूल उद्देश्य रहा है। तभी तो वे कामना करते है—सुजला हो, सुफला हो और मलयज से शीतला हो। यही नहीं, वह शस्य श्यामला हो, ऐसी माता का वे जयगान करते है। जहाँ की भूमि शुभ्र ज्योत्सना से दमक रही हो, यामिनी पुलकित हो, फूलो और द्रुमदलों से शोभित हो, वह सुख दे, वर दे, ऐसी माता को प्रणाम। कौन ऐसी माता को अबला कह सकता है जिसकी सात करोड़ संताने है, चौदह करोड़ हाथ जिसकी सेवा के लिए तत्पर है। वह माँ तो अतुल बलशालिनी है। अपने रिपुओं का अनायास संहार कर सकती हैं ऐसी माँ की प्रतिमा क्यों न प्रत्येक मंदिर मे स्थापित की जाय। जिनके पास माँ दुर्गा की तरह दस भुजाएँ हैं जो कमलदल मे बिहार करती हैं, वाणी और विद्या देती हैं, सरल और सुस्मिता है, ऐसी माँ की कौन पूजा नहीं करेगा?"

आनन्दमठ का निर्माण

आनन्दमठ के बारे में आमतौर पर एक शिकायत यह है कि प्रस्तुत उपन्यास मुसलमानों के विरुद्ध लिखा गया है। हाल की खोज ने इस धारणा को असत्य करार कर दिया है। आनन्दमठ पहले अंग्रेजो के विरूद्ध लिखा गया था, पर बंकिम बाबू के मित्रो ने उन्हें बताया कि आप सरकारी नौकरी करते हैं, कहीं लेने के देने न पड जाय। उदाहरण के लिए अपने भाई की घटना को ले सकते है। एक बार बँकिम बाबू के बड़े भाई ने नगरपालिका की सड़कों के अंग्रेजी नामकरण पर करारा व्यंग्य किया था। 'बऊमार गली' जिसका अर्थ होता है—बहू की गली। उसका अंग्रेजी में नाम रखा गया—'डाटर लेन'। उसवक्त श्री संजीवचन्द्र चटर्जी ने उठकर खड़े होते हुए कहा—अनुवाद कार्य के लिए वजट में और अधिक रकम बढ़ायी जाय। मसलन 'काली पद मित्र लेन' का नाम बदलने के लिए हमें 'ब्लैक लेग फ्रैण्ड लेन' रखना पड़ेगा। इस प्रकार के अनेक नाम बदलने होगे। उनकी बात सुनकर सदस्य लोग हँस पड़े और इस प्रस्ताव को लाने वाले कमिश्नर का चेहरा लाल हो उठा। कई महीने तक बराबर जाने पर भी कमिश्नर ने इनसे मुलाकात नहीं की। काफी मनाने के बाद उनकी नौकरी बच गयी। बँकिम बाबू इस घटना से परिचित थे। उन्होंने तुरत अंग्रेजों के स्थान पर मुसलमानों को पात्र बनाया। झाँसी की रानी पर भी एक उपन्यास उनकी लिखने की इच्छा थी, पर

(पृष्ठ ४० का शेषांश)

हुए लार्ड मिण्टो ने अपने २० दिसम्बर, १९०५ के पत्र मे जो कि मार्ले को लिखा गया था, लिखा है— "मैं कर्जन की योग्यताओं की प्रशंसा करने के लिए तैयार हूँ, परन्तु तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि उसने बंग-भंग करके तथा इस संबंध में भाषण देकर भारतीयों में कटु भावना उत्पन्न कर दी है।"

बंग-भग आन्दोलन ने जहाँ आम जनता मे राष्ट्रीय भावना का विकास किया, वहीं अग्रेजो को फूट डालो राज करो नीति अपनाने को बाध्य किया। उसी आन्दोलन के दौरान मार्ले ने लार्ड मिण्टो को अपने ६ जून के पत्र में लिखता है—"... " तुम हमेशा एक सी भावना से शासन नही कर सकते। तुम्हें कांग्रेस पार्टी और कांग्रेस के शासन से निपटना है, चाहे तुम इनके विषय में कुछ भी सोचो। यह निश्चित समझ लो कि मुसलमानों को तुम्हारे विरुद्ध कांग्रेस के साथ मिल जाने में देर नही लगेगी।"

इससे स्पष्ट है कि हिन्दू और मुसलमानों में फूट के बीज डालने की शुरुआत उन्ही दिनों से हो गयी थी जो बराबर कायम रही।

आनन्दमठ को लेकर जो उपद्रव हुआ, उससे वे खिजला उठे और बँगला पाठकों को वह उपन्यास नहीं मिल सका।

एक बार बँकिम बाबू के मित्र श्री काली प्रसन्न घोष ने उन्हें सूचित किया कि मैं 'आनन्दमठेर मूल मंत्र' पर एक लेख लिखना चाहता हूँ तब बँकिम बाबू ने उन्हे लिखा—"मैंने आनन्दमठ लिखकर क्या किया और आप उसका मूल मत्र बताकर क्या करेगे? इस ईर्षा परवश आत्मोदर परायण जाति की उन्नति नही हो सकती। बोलो वन्दे उदरं।' इस दर्द से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके जीवित काल में उनकी आकांक्षा की पूर्ति नही हुई थी।

अगर बँकिम बाबू के मन में मुसलमानो के प्रति नफरत की भावना रहती तो वन्दे मातरम् लिखने के एक साल पहले और आनन्दमठ के जन्म के कई वर्ष पहले वे यह न लिखते—

'बंगाल हिन्दू-मुसलमानों का प्रदेश है, अकेले हिन्दुओं का नही। पर आजकल हिन्दू-मुसलमान अलग है,आपस में सहृदयता नही हैं। बँगाल की भलाई के लिए यह जरूरी है कि हिन्दू-मुसलमान में एकता हो। जबतक उच्चवर्ग के मुसलमानों में यह भावना रहेगी कि वे दूसरे मुल्क के हैं, बँगला उनकी भाषा नही है, वे न तो बँगला लिखेंगे, न सीखेंगे, सिर्फ उर्दू-फारसी से काम चलायेंगे तबतक एकता स्थापित नही हो सकती, क्योकि राष्ट्रीय एकता की जड़ मे भाषा की एकता होती है।

[बँकिमचन्द्र, बंग-दर्शन, पौष १२८०] (१८७४)

सन् १९३७ मे वन्दे मातरम् गीत पर जब विवाद चला था तब श्री रेजाउल करीम ने अपने दो लेखों के माध्यम से तत्कालीन लीगी नेताओ को काफी फटकारा था। 'वन्दे मातरम् गीत के प्रति आपत्ति क्यो' तथा 'इस्लाम और वन्दे मातरम्' नामक लेख मे उन्होने यह दिखाने की कोशिश की कि यह गीत न तो बुतपरस्ती से पीड़ित है और न भारतीय जनता के लिए वर्जनीय है।

आनन्दमठ उपन्यास तथा वन्दे मातरम् गीत के बारे में अधिकतर विद्वानो की राय है कि इन दोनों का जन्म 'आमार दुर्गोत्सव' नामक लेख से ही हुआ है। एक बार दुर्गा पूजा के अवसर पर बँकिम बाबू अपने घर पर एक कीर्तन मण्डलीवालों से कीर्तन सुन रहे थे। इस घटना के बाद ही उन्होंने उक्त गीत की व्याख्या अपने 'एक टी गीत' नामक लेख मे करते हुए समस्त प्रेम का एक मात्र आधार देश-जननी कहा है। श्री प्रेमेन्द्र मित्र की राय है—"एक टी गीत पहले लिखा गया था। आमार दुर्गोत्सव ही आनन्दमठ का पूर्व रूप है।

आमार दुर्गोत्सव मे कमलाकान्त कहता है —'देश मूर्ति ही देवी मूर्ति है वर्तमान में वह देवी काल सागर के गर्भ में है। देवी के संतान जब मातृवत्सल होगे अधर्म, आलस, इन्द्रिय-भक्ति त्याग देगे तब वे प्रत्यक्ष रूप से दर्शन देंगी। आनन्दमठ में देवी का यही रूप हमें प्राप्त होता है।"

मेरे विचार से मित्र महाशय की राय ठीक है। आमार दुर्गोत्सव में एक जगह वे कहते हैं—"माँ, प्रसूति अम्बिके धात्री धरित्री धनधान्यदायिके, नगांकशोभिनी नगेन्द्र-बालिके, शरत्सुन्दरी, चारुपूर्णचन्द्रभालिके...हमे शक्ति दो।"

इसी भाव भूमि पर वन्दे मातरम् और आनन्दमठ का निर्माण हुआ है। राजकृष्ण मुखोपाध्याय और ईश्वरचन्द्र गुप्त की पुस्तकों की आलोचना करते समय भी वे अपने अन्तर की भावनाओं को रोक नही सके।

संकीर्णता का प्रभाव

वन्दे मातरम् गीत के बारे में एक आम शिकायत यह रही कि कवि ने इसकी रचना संपूर्ण भारत के लिए नही, केवल बंगाल की जन्मभूमि मानकर की है। यह शिकायत एक हद तक ठीक है। शायद इसलिये इसे अखिल भारतीय बनाने के लिये कांग्रेस ने एक बार त्रिंश कोटि और आगे चलकर कोटि-कोटि शब्द जोड़ा था। बंगाल मे रहनेवाले बंगाली ही नही, प्रत्येक प्रान्त के लोग स्थानीय प्रभाव के कारण बंगाल के बाहरी भाग को विदेश [परदेश] समझते हैं। 'आमार दुर्गोत्सव' और 'एक टी गीत' मे बंगभूमि ही का जिक्र है। दोनो ही लेखो में छः करोड़ संतान और बारह करोड़ हाथ का जिक्र है जो कि वन्दे मातरम् गीत में सात करोड़ संतान और चौदह करोड़ हाथ हो गया है। स्वयं बंकिम बाबू ने बंग देश का मतलब बंगभूमि से लगाया गया है। उन्होंने लिखा

है—'एक ही लेफ्टिनेंट गवर्नर के अधीन शासित बंगाल बिहार, आसाम, उड़ीसा और छोटा नागपुर का इलाका बंग प्रदेश है जिसकी कुल आबादी ६६६,५६,८५६ थी।'

डाक्टर सत्यनारायण दास ने लिखा है—'वन्दे मातरम्' गीत मे सप्तकोटि का जो जिक्र आया है, वह केवल बंगालियों से संबंधित है, संपूर्ण भारत के लिए नही। सन् १८७६ की एक रिपोर्ट से पता चलता है कि उन दिनों इस प्रान्त की आबादी सात करोड़ थी। बंकिम बाबू के 'लोक रहस्य', 'कमलाकान्त', 'बंग देशेर कृषक' और हर प्रसाद शास्त्री के लेखो मे भी सप्तकोटि की चर्चा है, अतएव हमें यह मान लेना चाहिए कि वन्दे मातरम् में सप्तकोटि की चर्चा बंगदेश और बंग-संतान के लिए की गयी है। स्वयं रवि बाबू ने एक स्थान पर लिखा है—'सात कोटि संतानेरे हे मुग्धा जननी, रेखेछो बांगाली करे मानुष करोनी।'

[बंग दर्शन और बांगालीर मनन साधना]

श्री प्रेमेन्द्र मित्र का भी यही विचार है—'आमार दुर्गोत्सव मे छः करोड़ मुण्ड है और आनन्दमठ और वन्दे मातरम् मे सात करोड़ हो गया। यह निश्चित है कि इस इस बीच बंगाल की जनसंख्या एक करोड़ नहीं बढ़ी होगी। इन दिनों इसकी जनसंख्या छः करोड़ थी, सात करोड़ कैसे हो गयी? क्या छन्द मिलाने के लिए या और कोई बात है?''

श्री अक्षय कुमार दत्तगुप्त ने लिखा है—''बंकिम बाबू के वन्दे मातरम्, कमलाकान्त के ध्यान, सत्यानन्द ठाकुर की साधना में जहाँ कहीं स्वदेश की कल्पना है, वहाँ बंगदेश की ही मूर्त्ति है।''

[बंकिमचन्द्र, पृष्ठ ३२५]

श्री अक्षयचन्द्र सरकार जो कि बंकिम बाबू के घनिष्ठ मित्र थे और बराबर उनके घर में होनेवाली गोष्ठियों में भाग लेते रहे, सन् १६०५ ई० में जब बंकिम बाबू के काँटालपाडा स्थित भवन में बकिम-उत्सव हो रहा था, गये थे। उस दिन के अपने संस्मरण में उन्होंने लिखा है—

''मेरी नाव जब कांटालपाड़ा घाट किनारे लगी तब मैंने देखा कि पास ही गर्दन भर पानी में खड़े होकर ब्रह्म बांधव (बंगाल के महान क्रांतिकारी नेता और पत्रकार) स्नान कर रहे हैं। उन्हें देखते ही मैंने पूछा—आप लोग बंगमाता-बंग माता का नाम लेकर इतना उपद्रव कर रहे हैं और जगत्-जननी भारतमाता को भूलते जा रहे हैं, आखिर ऐसा क्यों? क्या हम लोग काशी, मथुरा, काँची की माया भूल जायेंगे? वेद, स्मृति, पुराण आदि भूल जायँगे? राम, लक्ष्मण, द्रोण, भीष्म को याद नहीं करेंगे? आखिर यह कैसी देश भक्ति है?

मेरे प्रश्न को सुनकर उपाध्यायजी भौचक रह गये। सिर पोंछते हुए बोले—'आप यहाँ बंकिम बाबू के निवास स्थानपर बंकिमोत्सव में आये है। बंकिम बाबू ने जब ही सप्तकोटि कठ निनाद कराले कह गये है तब तो केवल बंगला ही हुआ न?

मैने कहा—संन्यासियों ने समझा था कि भारतमाता के लिए [फाइटिंग फोर्स] तलवार पकड़ने के उपयुक्त सात करोड़ संतान है।

उपाध्याय—वन्दे मातरम् तो बंगालियो को लेकर लिखा गया है ?

मैंने कहा—यह आपको किसने बताया? वन्दे मातरम् संगीत समग्र भारत के लिए सुबोध सहज संस्कृत में रचित है। इससे क्या यह स्पष्ट नही होता कि इसका संगीत भारत माता से सम्बन्धित है?

मेरे इस प्रश्न का उत्तर उन्होंने नहीं दिया।

बंकिम युग मे बंगाल कहने का मतलब बंगाल, बिहार, उड़ीसा आसाम और छोटा नागपुर था। इतने बड़े इलाके की जन-संख्यां साढ़े छ करोड़ थी। जो लोग इस गीत को बगाल के लिए मानते है, वे यह कह सकते है कि साढ़े छः करोड़ की राउण्ड फिगर सप्तकोटि हो सकती है। सख्या गणित पर विश्वास करते हुए जो लोग साहित्य का विचार करते हैं, उन्हे स्मरण रखना चाहिए कि उस पद्धति से सही निर्णय नहीं होता। बंकिम बाबू ने खास बंगाल की आबादी एक करोड़ अस्सी लाख बताया है। राजनीतिक बंगाल की आबादी सप्तकोटि नही हो सकती। ऐसी हालत में क्या यह मान लिया जाय कि बंगाल के मुसलमान भी तलवार लेकर मुस्लिम राज्य के विरुद्ध लड़ने को तैयार हुए थे? अगर इस बात को स्वीकार कर लिया जाय तो उसमें हिन्दू गंध का

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

वन्दे मातरम गीत का जन मानस पर प्रभाव

—श्री विश्वनाथ मुखर्जी—

वन्दे मातरम् गीत का प्रथम प्रकाशन आनन्दमठ उपन्यास मे हुआ था जो कि 'बंग दर्शन' पत्रिका मे सन् १८८० ई० से १८८२ ई० तक धारावाहिक रूप से प्रकाशित होता रहा। 'बंग दर्शन' के प्रथम अक मे ही वन्दे मातरम् गीत छपा था।[1] यही वजह है कि लोग वन्दे मातरम् गीत को आनन्दमठ उपन्यास का ही एक अंग मानते हैं। बहुत कम लोग यह जानते हैं कि यह गीत आनन्दमठ में छपने के पाँच पूर्व लिखा जा चुका था। सिर्फ यहीं नहीं, भारत के तत्कालीन संगीत सम्राट यदुनाथ भट्टाचार्य ने इसकी स्वर-लिपि तैयार की थी। आम जनता में इस गीत का प्रचार हो जाने के कारण पुस्तक छपते ही हाथों हाथ बिक गयी।

आनन्दमठ उपन्यास का प्रथम संस्करण १५-१२-१८८२ ई० को हुआ था। उन दिनो उसमे १९१ पृष्ठ थे और मूल्य था—एक रुपया आने। बंकिम बाबू ने इस पुस्तक को बंगाल के प्रसिद्ध नाट्यकार और अपने घनिष्ठ मित्र श्री दीनबन्धु मित्र को समर्पित किया था।

इसके बाद २०-७-८३ को दूसरा, १५-४-१८८६ को तीसरा, २०-१२-१८८६ को चौथा और २०-११-१८९२ ई० को पाँचवाँ संस्करण प्रकाशित हुआ। ये सभी संस्करण बंकिम बाबू के जीवनकाल मे ही प्रकाशित हुए थे।

किसी लेखक ने लिखा है कि सन् १८८५ ई० में श्री एच० ए० डी० फिलिप्स ने आनन्दमठ का अंग्रेजी में तथा सन् १८८६ ई० मे प्रोफेसर क्लेम ने जर्मन भाषा मे अनुवाद किया था। पता नही, यह बात अपने आप मे कहा तक सच है।

आनन्द मठ का अन्य अनुवाद 'बग-भंग' आन्दोलन के दौरान यानी सन् १९०६ ई० मे "द एबे आफ ब्लिस" शीर्षक से श्री नरेश चन्द्र सेन ने किया था जो प्राप्य है। उन्हीं दिनों वंदे मातरम् गीत का अंग्रेजी मे अनुवाद महर्षि अरविन्द ने किया था।

(बंकिम चन्द्र जीवन और साहित्य, पृष्ठ ५-६)

रंग-मंच पर प्रदर्शन

रवि बाबू तथा कविवर हेमचन्द्र के गायन के काफी पहले वन्दे मातरम् गीत नेशनल थियेटर के मंच पर भवानन्द का अभिनय करने वाले पात्र ने गाया था।

वन्दे मातरम् गीत के कारण अथवा आनन्दमठ की लोकप्रियता से प्रभावित होकर इस पुस्तक का नाट्य-रूपान्तर सन् १८८३ ई० में श्री केदार चौधरी ने किया था जो कि उन दिनों प्रताप जौहरी के नेशनल थियेटर के अध्यक्ष थे। इस नाटक का मंचीकरण भी उन्होंने किया था। इस दृष्टि से यह मान लेना पड़ेगा कि वन्दे मातरम् गीत जन साधारण के सामने सन् १८८३ ई० को प्रस्तुत किया गया था।

एक मान्यता यह है कि आनन्दमठ नाटक ने हमारी राष्ट्रीय भावना को उतना बल नहीं दिया जितना श्री क्षीरोद प्रसाद विद्या विनोद के नाटक "प्रतापादित्य" ने दिया था। बंग-भंग आन्दोलन का यही प्रेरणा श्रोत नाटक रहा। (श्री नलिनी रंजन सरकार, श्रद्धास्पदेषु, पृष्ट २०)

आगे चलकर इस उपन्यास काएक अन्य नाट्य-रूपान्तर सन् १९४५ ई० में श्री वाणी कुमार ने तथा १-२२-

१. बंगाब्द १२८७ चैत्र संख्या के बंग दर्शन के पृष्ठ ५५५-५६ पर यह गीत प्रथम बार आनन्दमठ उपन्यास के अर्न्तगत प्रकाशित हुआ था।

६२ को श्री शचीन्द्रनाथ बनर्जी ने किया था। श्री बनर्जी द्वारा नाट्य-रूपान्तर का प्रदर्शन २५-११-६२ ई० को हुआ था जिसमें भारत के प्रसिद्ध निदेशक श्री पंकज मल्लिक ने संगीत दिया था उन्ही दिनो इस नाटक का हिन्दी रूपान्तर श्री ठाकुर प्रसाद सिंह ने किया और जिसे वाराणसी की नाट्य परिषद् ने इक्कीस दिनो तक मंचित किया था।

पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी के शब्दों में—"वन्दे मातरम्" का हिन्दी में पहला अनुवाद पूर्णिया के राजा कमलानन्द सिंह ने १९०४-०५ के लगभग किया था जो वेंकटेश्वर प्रेस से छपा था। उसमे वन्दे मातरम् का अनुवाद भी पद्य मे दिया गया था। बाद में द्विवेदी जी (श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी) ने उसका अनुवाद किया था, किन्तु मुझे दोनो ही अनुवाद नीरस लगे। वास्तव मे मेरी सम्मति से मूल गीत ऐसी भाषा मे है कि हिन्दी वालो के लिए उसे समझने में कोई कठिनाई नही है। अनुवाद में मूल का भाषा सौष्ठव लाना अत्यन्त दुष्कर कार्य है।"

(२०-१२-७५ के एक पत्र से)

वन्दे मातरम की व्यापकता

१९०७ के दौरान अंग्रेजी में 'वन्दे मातरम' पत्र प्रकाशित होने लगा। कहा जाता है कि एक पत्र बँगला मे भी प्रकाशित होता था। सन् १९०५ ई० (आश्विन १३१२ बंगाब्द) को श्री जितेन्द्र मोहन बनर्जी ने एक लेख 'वन्दे मातरम्' पर वसुधा नामक पत्रिका मे प्रकाशित कराया था।

इन्ही दिनो यानी बंगाब्द १९०६ में 'वन्दे मातरम्' नामक एक पुस्तक जो कि गीतों का संग्रह था, श्री योगीन्द्र सरकार ने प्रकाशित करायी थी। प्रकाशक थे— सिटी बुक सोसायटी, ६५ नं० कालेज स्ट्रीट कलकत्ता। मूल्य चार आना। इस पुस्तक की भूमिका प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्रद्धेय श्री सखाराम गणेश देउस्कर ने लिखी थी। इस पुस्तक मे श्री सतीश चन्द्र ने लिखा है—

'स्वदेशी संग्रामे चाई आत्मदान।
वन्दे मातरम् गाओ रे भाई॥

श्री काली प्रसन्न की दो लाइनें—

मागो जाय जेन जीवन चले,
शुधु जगत माझे तोमार काजे।
वन्दे मातरम् बले॥

इसी प्रकार प्रत्येक कवियो के गीत मे वन्दे मातरम् का ठेका दिया गया है। इससे स्पष्ट है कि बंग-भंग आन्दोलन में वन्दे मातरम् हमारे लिए कितना ऊँचा और पवित्र नारा बन गया था।

इन्ही दिनों २६-८-१९०७ ई० को अदालत के अपमान के सिलसिले मे श्री विपिन चन्द्र पाल को छः

(पृष्ठ ४४ का शेषांश)

अपवाद क्यो है? दर असल में सप्तकोटि एक परिकल्पना है। भारतमाता के लिए तलवार लेकर लड़नेवाले। सात करोड़ व्यक्ति।

वन्दे मातरम् गीत की भाषा संस्कृतमयी है। सिर्फ इसी से यह समझ लेना चाहिए कि यह गीत सम्पूर्ण भारत के लिए लिखा गया है। अगर बंगला के लिए लिखा जाता। बीच मे सिर्फ ९ पंक्तियाँ बंगला में क्यों है? मेरा ख्याल है कि दो विभिन्न अवसरो पर इसकी रचना हुई है।[1] आगे चलकर आनन्दमठ में सम्मिलित करने के लिए और आदर्श को पूर्णता प्रदान करने के उद्देश्य से इसे समन्वित किया गया।

[बंकिम सरणी, पृष्ठ २३३—३४]

बंकिम बाबू के घनिष्ठ मित्र होने के कारण सरकार महोदय ने अपना यह तर्क दिया है, पर उसे अखिल भारतीय बनाने के लिए कांग्रेस ने १९३१ में त्रिंश कोटि और आजादी के बाद कोटि-कोटि कर लिया।

---

१. कई बार इसमें परिवर्त्तन किये गये हैं।

महीने की सजा हुई। अदालत के बाहर कई हजार नागरिक उनका स्वागत करने के लिए खड़े थे। ज्यो ही वे बाहर आये त्योंही 'वन्दे मातरम्' की ध्वनि से समस्त वातावरण प्रकंपित हो उठा। सरकारी आदेश से पुलिस बुरी तरह लाठी चार्ज करने लगी। यह दृश्य देखकर पन्द्रह वर्ष के एक बालक से नही रहा गया। पहले उसने उन्हे फटकारा और जब उसकी बातो का प्रभाव नही पडा तो उसने आगे बढकर सार्जेण्ट के चेहरे पर मुक्का मारा।

इस अपराध के कारण उस बालक यानी श्री सुशील चन्द्र सेन को १५ बेंत मारने की सजा दी गयी। यह समाचार पूरे कलकत्ते मे दावाग्नि की तरह फैल गया।

उसी दिन यह निश्चय किया गया कि इस बालक के सम्मान में २८ अगस्त को नगर के सभी महाविद्यालय बन्द रक्खे जायेगे। कालेज स्ववायर मे उसके सम्मान में एक विराट सभा हुई। यह समाचार देशनायक श्री सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के पास पहुँच चुका था। उन्होंने इस वीर बालक के लिए अपनी ओर से सोने का एक तमगा भेजा। बाद में काफी लम्बा जुलूस निकाल कर उसे सभा स्थल ले आया गया। उस दिन सम्पूर्ण कलकत्ता नगरी इस गीत से गूँज उठी थी—

जाय जाबे जीवन चले
जगत माझे तोमार काजे-वंदे मातरम् बले।
बेंत मेरे कि मा भोलाबि
आमरा कि मायेर सेई छेले

(भारत में सशस्त्र विप्लव)

बंकिम बाबू का प्रभाव श्री अवनीन्द्रनाथ ठाकुर पर भी पड़ा था। उन्होंने 'भारत माता' का एक चित्र बनाया था।

(श्री अरविन्द और बांगलाय स्वदेशी युग, श्री गिरिजा शंकर राय चौधुरी, पृष्ठ १०६)

विदेशों में

१९०७ ई० मे गंगा की पावन भूमि से उड़कर यह ध्वनि जर्मनी की राइन नदी के किनारे गूँज उठी थी। उन दिनों मैडम कामा ने तिरंगा झण्डा फहराकर उसमे 'वन्दे मातरम् शब्द अंकित किया था। सिडिशन कमेटी रिपोर्ट पृष्ठ ९४ के अनुसार सन् १९०८ के नवम्बर मे ढाका के 'भूतेर बाड़ी' स्थित अनुशीलन समिति' के दफ्तर की तलाशी में कुछ अभिलेख प्राप्त हुए, जिनके अनुसार उस क्रातिकारी दल की 'द्वितीय विशेष प्रतिज्ञा का प्रारंभ 'ओऽम वन्दे मातरम्' से होता था। १९.४ ई० आते-आते वन्दे मातरम् गीत कनाडा की भूमि तक जा पहुँचा। 'कोमागातामारू' जहाज के झण्डे में भी 'वन्दे मातरम्' 'सत श्री अकाल' तथा 'अल्लाहो अकबर' के नारे अंकित थे। यह जहाज सिंगापुर, हागकांग, जापान से कनाडा तक गया था। (स्वाधीन भारत के नागरिक के रूप में अभी हाल मे इस जहाज के अन्तिम जीवित सरदार ९४ वर्ष की अवस्था मे पुनः कनाडा अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए गये है। —लेखक)

संभवतः 'कोमागातामारू' जहाज के भारतीयो के उपद्रव से चिढकर या अन्य किसी कारणवश अमेरिका ने भी भारतीयों के लिए नया इमिग्रेशन कानून जारी किया। प्रवासी भारतीयो के लिए प्रकार से यह काला कानून था। इस कानून का बड़े कड़े शब्दो मे, गदर पार्टी के सेक्रेटरी श्री हरदयाल जी ने विरोध किया। फलत वे गिरफ्तार हो गये।

सजा समाप्त करने के बाद वे २५।३।१९१४ को स्वीट्जरलैण्ड चले आये। यहाँ से उन्होंने भी अंग्रेजी में 'वन्दे मातरम्' पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया। इसके पूर्व योरोप से मैडम कामा भी 'वन्दे मातरम्' पत्रिका का प्रकाशन करती रही। इस प्रकार दोनों पत्रों के माध्यम से योरोप की जनता अंग्रेजों की समस्त नादिरशाही का अवलोकन करती रही।

(भारतेर स्वाधीनता संग्रामेर इतिहास,
लेखक-श्री नरेन्द्र भट्टाचार्य)

जिस प्रकार रवि बाबू की प्राथमिक रचनाओं पर बंकिम बाबू का प्रभाव है, विशेष रूप से 'राजर्षि' और 'बऊ ठाकुरानीर हाट' उपन्यास में, ठीक उसी प्रकार उनके महत्वपूर्ण उपन्यास 'घरे बाहिरे' पर 'वन्दे मातरम्' गीत की छाप है। बंग-भंग आन्दोलन और १९१४ ई० के आन्दोलन ने उन्हे जरूर प्रभावित किया था और उसी दौरान उन्होंने यह उपन्यास लिखा है

इसका नायक कहता है—'यह शक्ति पृथ्वी जय करने की शक्ति है, अन्य कोई उपाय नही है, उपकरण नही,। यही

(Bombay Students' Non Co operation Board)

Bande Mataran.

INDIA CALLS UPON

Every Student To do his duty.

Come out of Your Colleges.

Serve Your Motherland

AND

WIN Swarajya IN

Eight Months.

N. B:-N C. O. Student will please register their names at the "Bombay Students' Non-Co-operation Board Office" at the Indian Home Rule League Office, Girgaum.

Empty Your Colleges

AT ONCE

असहयोग आन्दोलन के समय बम्बई में विद्यार्थियों की ओर से प्रकाशित एक पोस्टर जिसमें 'वन्दे मातरम्' नारा है। चित्र-धर्मयुग से साभार।

सम्मोहन है। कौन कहता है सत्यमेव जयते। जय होगा मोह का। बंगाली इस बात को समझ गये थे, इसीलिए बंगालियों ने दस भुजा की पूजा शुरू की, बंगालियों ने सिंहवाहिनी की मूर्ति बनायी। वही बंगाली आज पुनः मूर्ति बनायेंगे, विश्व विजयी बनेंगे, वन्दे मातरम् के सम्मोहन से।'

"भगवत गीता और वन्दे मातरम् दोनों की हमें जरूरत है।"

"जन्न समुद्र की लहरों पर नौका नाचती रहेगी, जिस पर वन्दे मातरम् की पताका उड़ती रहेगी।"

"......वन्दे मातरम्—वन्दे मातरम् के मंत्र से आज लोहे के सन्दूक खुलेंगे, भण्डार धर के प्राचीर खुलेंगे। और जो लोग धर्म के नाम पर उस महाशक्ति को नहीं मानते, उनका हृदय विदीर्ण हो जायगा। बोलो भक्षी—वन्दे मातरम्।"

"तोमारी प्रतिमा गड़ी मंदिरे-मंदिरे।"

आन्दोलनों का प्रतीक

भारत का समस्त आन्दोलन वन्दे मातरम् पर आधारित था। श्री सीतारामजी सेकसरिया ने एक वक्तव्य में कहा—"वन्दे मातरम् कहने का स्पष्ट अर्थ यह था कि ब्रिटिश सरकार जो कुछ कर रही है, उसका हम इस नारे से विरोध कर रहे हैं। कलकत्ता स्थित इलिसियम रोड कभी देश भक्तों के लिए मौत का घर था, यहाँ उनपर भयंकर अत्याचार किये जाते थे। नाखूनो से लेकर तमाम बदन में पिन चुभोना, बर्फ की सिल्लियों में दबाये रखना आदि नृशंस अत्याचार किये जाते थे। मगर वे वीर आत्माएँ इन तमाम यातनाओं को सहते हुए 'वन्दे मातरम्' के नारों से भवन को गुंजित करती रहती थी।

जेलों में जब राजनीतिक कैदी बन्द होते और जब उनकी गणना होती तब आनन्द लेने के लिये थाली-बाटा (थाली पर कटोरी बजाना) करते हुए वे समवेत स्वर में "वन्दे मातरम्" गाते थे। चाहे लाठी चार्ज हो या बैरक के भीतर जाना हो। किसी भी कार्य का विरोध करना हुआ तो वन्दे मातरम् का नारा लगाया जाता था। बैरक का दरवाजा बन्द करने के बाद भी हम वन्दे मातरम् मन्त्र जपते थे।

कांग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में, सभी जुलूसों में वन्दे मातरम् गीत बराबर गाया जाता था। कार्यक्रम का प्रारंभ वन्दे मातरम् गीत से ही होता था और समाप्त वन्दे मातरम् नारे से होता था। जेल से जब राजनीतिक कैदियों को मोटर में लादकर सिपाही अदालत तक ले जाते थे तब सड़क पर खड़ी जनता को देखकर वे मातरम् का नारा लगाते थे अदालत के भीतर प्रवेश करते और सजा पाने के बाद, बाहर आते समय भी वन्दे मातरम् की आवाज लगाते थे।

स्वाधीनता आनदोलन के समय जब कहीं बंकिम बाबू का वन्दे मातरम् गीत गाया था तब लोग खड़े हो जाते थे। इस अवसर पर वन्दे मातरम् के तर्जपर हिन्दी, उर्दू तथा बंगला भाषा में अनेक वन्दे मातरम् गीत चालू हुए, पर वे सब अब प्राप्य नहीं हैं। जब इन गीतों को गाया जाता था तब लोग खड़े नहीं होते थे।

'वन्दे मातरम्' का नारा लगाते समय सुभाष बाबू अक्सर अपना दाहिना हाथ उठा लिया करते थे। एक बार लाठी चार्ज में उनका हाथ टूट गया था। न जाने कितने देश भक्ति फाँसी के तख्ते पर चढ़ते समय वन्दे मातरम् का नारा लगा चुके हैं। लाठी चार्ज के अवसर नारा लगाते हुए घायल हो गये हैं।

बुतपरस्ती का झंझट

सन् १९३७ ई० मे जब वन्दे मातरम् गीत को कांग्रेस राष्ट्रीय गीत के रूप मे स्वीकार करने जा रही थी, उस समय मुसलमानों की ओर से गहरी आपत्ति की गयी। भरसक यह प्रयत्न किया गया कि कांग्रेस इस गीत को अपना राष्ट्रीय गीत न माने।

पता लगाने पर जब कांग्रेस के कर्णधारों को ज्ञात हुआ कि वन्दे मातरम् गीत में बुतपरस्ती की भावना है और अगर इसे निकाल दिया जाय तो फिर मुसलमान इसे मंजूर कर लेगे तो वे इस ओर प्रवृत्त हुए पर इस समस्या को लेकर बगला के अखबारों ने पुन: तूफान खड़ा कर दिया।

'प्रवासी' के सम्पादक श्रद्धेय श्री रामानन्द चटर्जी को अपने संपादकीय में लिखना पडा— "रिपुदलवारिणीम् पद में 'रिपुदल' का अर्थ मुसलमान नही समझना चाहिए, क्योकि त्रिशंकोटि बनाने पर उसमे मुसलमान भी तो आ जाते है। आनन्दमठ में यह गीत प्रकाशित है, इसलिए ऐसा माना जाय तो यह गलत होगा। वास्तव में लेखक ने अंग्रेजो को रिपु कहा है।"

(प्रवासी १३४४ पृ० २९२-२९३)

दूसरा पक्ष यह भी कहता था कि 'तोमारी प्रतिमा गडी मंदिरे-मंदिरे' लाइन साफ तौर पर बुतपरस्ती की भावना लिए हुए है। कहा जाता है कि इस रचना मे कितनी पक्तियां बुतपरस्ती भावना से ग्रस्त है, यह जानने के लिए पं० जवाहर लाल नेहरू कवीन्द्र रवीन्द्र के पास आये थे। बातचीत क्या हुई, यह तो किसी को नहीं मालूम, परन्तु यह अफवाह फैल गयी कि रवि बाबू के कारण वन्दे मातरम् गीत का अंगच्छेद कर दिया गया है। फलस्वरूप रवि बाबू को २-११-३७ को एक वक्तव्य प्रकाशित कराना पड़ा—

"वन्दे मातरम् संगीत हमारे देश के लिए राष्ट्रीय संगीत के रूप में गृहीत होने लायक है या नहीं, इस बारे मे काफी विवाद उत्पन्न हुआ है, यह बड़े खेद का विषय है। इस बारे में अपने विचार प्रकट करते समय मुझे एक बात याद आ रही है कि गीत के लेखक के जीवन काल में पहले पहल उसमें सुर देने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था और कलकत्ता में हुए कांग्रेस के एक अधिवेशन में मैने इसे गाया था। इस गीत के प्रथमांश में कोमल भावना और श्रद्धा का विश्वास है तथा हमारी मातृभूमि के सौन्दर्य का प्राचुर्य परिचय है, इन सबने मुझे बुरी तरह से प्रभावित किया था। फलत: उक्त कविता जिस पुस्तक में प्रकाशित हुई थी, उसमें से अलग कर लेने में मुझे कोई कष्ट नही हुआ। अपने पिता के एकेश्वरवादी आदर्श मे लालित-पालित होने पर भी उसके सभी अंशों के प्रति मेरी सहानुभूति है।

शासकों ने हम लोगों की इच्छा के विरुद्ध जब बंगाल का विभाजन करना चाहा था तब उस संग्राम की संकटपूर्ण स्थिति मे राष्ट्रीय-गीत के रूप में इसका प्रचलन हुआ था। बाद में जिन घटनाओं मे वन्दे मातरम् जयध्वनि के रूप में स्वीकृत हुआ, उसमे हमारे अनेक युवकों के त्याग निहित है। आज उन सभी विवरणों का उल्लेख करने का अवसर आया है, ऐसा मेरा व्यक्तिगत विश्वास है।

मैं निस्संकोच रूप से यह स्वीकार करता हूँ कि बंकिम का वन्दे मातरम् संगीत का समग्र अंश जिस पुस्तक मे हैं, अगर उसके साथ पढ़ा जाय तो मुसलमानों के मन में चोट पहुँच सकती है। लेकिन उक्त संगीत का प्रथमांश जो राष्ट्रीय संगीत के रूप में परिणत हुआ है, उसके साथ हमेशा हम लोगों को उसका अवशिष्ट अंश जिस उपन्यास में, घटनाक्रम से सम्मिलित हुआ है, उसका भी स्मरण करना पड़ेगा, ऐसी बात नही है। यह गीत स्वतंत्र सत्ता और प्रेरणा-प्रदायी भाव प्राप्त कर चुका है। इसमें किसी सम्प्रदाय या धर्मावलम्बी को आपत्ति नहीं करनी चाहिए।"

(बसुमती, १६वाँ वर्ष, अगहन १३४४, पृष्ठ २८६)

कवियों और लेखकों पर प्रभाव :

सामयिक घटनाओं का लेखकों और कवियों पर प्रभाव पड़ता है। वे भी समाज के प्राणी होते है और जनता के मनोभावों को उद्वेलित करने में वे कभी पीछे नहीं रहते। इस दृष्टि से जब कभी राष्ट्र पर संकट आया है तब इनका योगदान या भूमिका सराहनीय रही है और उनकी देन इतिहास की वस्तु बन गयी है।

बंकिम बाबू के नाम से ही वन्दे मातरम् संगीत पर एक महत्वपूर्ण रचना प्रकाशित हुई है, पर वह पुस्तक नेशनल लाइब्रेरी में भी प्राप्य नहीं है।

मराठी में श्री विनायक सदाशिव सुखठणकर ने 'वन्दे मातरम्' नामक एक उपन्यास लिखा है जो देश प्रेम पर आधारित है और इसका हिन्दी में अनुवाद प्राप्य है। बंगला में 'वन्दे मातरम्' नामसे कई उपन्यास कालेज स्ट्रीट कलकत्ता के फुटपाथो पर दिखाई दिये, पर उनके लेखक तथा प्रकाशकों के नाम ज्ञात नही हो सके।

'वन्दे मातरम' नामक एक अन्य हिन्दी उपन्यास श्री रवीन्द्र नाथ बहरो 'अज्ञात' के नाम से प्रकाशित है। कथा-वस्तु सुभाष बाबू के आजाद हिन्दी फौज से सम्बन्धित है।

'वन्दे मातरम्' (बँकिम चन्द्र चटर्जी) नामक एक पुस्तिका जिसके प्रकाशक हैं—फैकल्टी आफ आर्ट्स, यूनिवर्सिटी आफ दिल्ली, १९६७ ई०, प्रकाशित हुई है। इस पुस्तिका मे महर्षि अरविन्द द्वारा अनुदित अंग्रेजी मे 'वन्दे-मातरम्' गीत का अनुवाद है। इनके अलावा सर्वश्री महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, प्रमथनाथ बिशी, आर० के० दास के वन्दे मातरम पर लघु लेख है।

'वन्दे मातरम' शीर्षक से एक अन्य पुस्तक बंगला में प्राप्य है जिसके लेखक श्री निशाकान्त है। आप पहले काफी दिनों तक शांति निकेतन में थे, बाद में अरविन्द आश्रम चले गये जहाँ आपका हाल ही मे देहान्त हो गया। आपकी यह पुस्तक १५।८।१९४९ को अरविन्द आश्रम से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक में वन्दे मातरम शीर्षक से ८।। पेज की एक लम्बी कविता है। नमूने के लिये दो पंक्तियाँ—

मातृ वन्दना उदार मंत्रे जागे भारतवर्ष।
वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम् ।।

वन्दे मातरम नाम से आनन्दमठ का हिन्दी अनुवाद हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय ने भी प्रकाशित किया है। सन् १९५४ ई० में वन्दे मातरम् नामक एक पत्रिका का प्रकाशन कलकत्ते से किया जाता था। इस पत्रिका के सम्पादक श्री आलोक कृष्ण चक्रवर्ती और रामकृष्ण चौधरी थे। पत्रिका का प्रकाशन वन्दे मातरम् प्रकाशनी कलकत्ता से होता रहा।

१५-८-४८ ई० में वन्दे मातरम् नामक एक लघु पुस्तिका बम्बई से प्रकाशित हुई जिसके लेखक सर्व श्री नगेन्द्र नाथ गुप्त और आर० के० प्रभु हैं। इस पुस्तक में संक्षिप्त रूप से वन्दे मातरम का इतिहास तथा मैडम कामा के झण्डे का ब्लाक छापा गया है।

'वन्दे मातरम्' नामक एक महत्वपूर्ण पुस्तक श्री अमरेन्द्र गाडगिल की मराठी और श्री शिवराम की 'वन्दु कथा वन्दु व्यथा' के नाम से कन्नड़ भाषा मे प्राप्य है। यही दोनों प्रामाणिक और तथ्य से परिपूर्ण पुस्तकें हैं।

बम्बई से गुजराती में और पंजाब में लाला लाजपत राय के सम्पादन में 'वन्दे मातरम्' दैनिक पत्र का प्रकाशन होता रहा।

जिस प्रकार आजाद हिन्दी फौज के कारण लोग प्रणाम-नमस्कार, जय गोपाल की जगह जय हिन्द कहने लगे है, उसी प्रकार बँग भँग आन्दोलन के बाद से भगत सिंह की फाँसी के समय तक 'वन्दे मातरम्' कहा करते थे। पंजाब, बंगाल और महाराष्ट्र में आपस में गले मिलते समय तथा पत्र व्यवहार में वन्दे मातरम् लिखते रहे। सरकारी कार्यालयों में जो पत्र जनता भेजती रही, उनमें भी वन्दे मातरम का उल्लेख होता रहा।

अमर शहीद भगत सिंह के बारे में कहा जाता हैं कि उन्होंने इनक्लाब-जिन्दाबाद का नारा दिया, यह ख्याल गलत है। दिल्ली जेल से २६-४-२९ को उन्होंने एक पत्र अपने पूज्य पिता के नाम भेजा था जिसमें प्रणाम के स्थान पर वन्दे मातरम शब्द का प्रयोग है। (देखिये 'क्रांति दूत भगत सिंह और उनका युग,' श्री मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ट १८४-८५)

वन्दे मातरम् ।।
श्रीमान् मंत्री महा. व नगर कांग्रेस
कमेटी बनारस आपके यहां से
जो धोती २ व लंगोट ४ दिये गये थे
वो कपड़े जिला जेल बनारस में
मुन्शी हरनारायण लाल [illegible]
[illegible]
ता० ९।१।२२ आजाद

अमर शहीद चन्द्रशेखर 'आजाद' का एक पत्र

(शेष पृष्ठ ५२ पर)

आनन्दमठ का उद्भव स्थल

— श्री विश्वनाथ मुखर्जी —

आनन्द मठ उपन्यास के कारण ही हमारा राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् प्रसिद्ध हुआ। यह ठीक है कि इस उपन्यास के प्रकाशन के पांच वर्ष पूर्व लिखा गया था और आम लोगों में प्रचारित हो गया था, परन्तु लोकप्रियता आनन्दमठ के कारण प्राप्त हुई।

यह बड़े खेद की बात है कि कलकत्ता के राष्ट्रीय पुस्तकालय मे भी इस उपन्यास का प्रथम संस्करण या द्वितीय संस्करण प्राप्य नही है तृतीय संस्करण की हालत इतना खस्ता है कि आम लोगो को पढ़ने के लिए नही दी जाती। पाचवें संस्करण तक की प्रतियो के अध्ययन से यह स्पष्ट हो गया कि हिन्दी में आनन्दमठ के जितने संस्कण प्राप्य हैं, वे सब छठे संस्करण या उसके बाद के संस्करणो से अनूदित है। पांचवे संस्करण में बकिम बाबू ने पर्याप्त संशोधन किया था।

आनन्दमठ की ऐतिहासिकता

श्री क्षेत्र गुप्त के एक लेख से यह पता चलता है कि बंकिम बाबू ने अपने मित्र श्री नवीन चन्द्र सेन के नाम १५-७-१८८० को एक पत्र लिखा था जिसमें आनन्दमठ समाप्त करने की चर्चा है। इससे स्पष्ट है कि इस समय तक उपन्यास लिखा जा चुका था।

आनन्दमठ उपन्यास जब पुस्तकाकार रूप में छपकर बाजार में आया तब पाठकों के मन मे एक जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि क्या इस उपन्यास की कहानी सत्य है? क्या वास्तव में ऐसी घटना हुई थी? इस सम्बन्ध में बंग दर्शन के तत्कालीन संपादक श्री संजीवचन्द्र चटर्जी तथा बंकिम बाबू के पास पाठकों के अनेक पत्र आये थे।

पाठकों की इस जिज्ञासा को शान्त करने के लिए सन् १८८४ ई० मे देवी चौधुरानी उपन्यास के विज्ञापन मे उन्होंने लिखा—'आनन्दमठ प्रकाशित होने के बाद से अधिकांश पाठकों ने यह जानना चाहा है कि उक्त उपन्यास का कोई ऐतिहासिक आधार है या नही? संन्यासी-विद्रोह ऐतिहासिक घटना जरूर है, पर पाठकों को यह बताने का विशेष प्रयोजन नही है।'

आनन्दमठ के तृतीय संस्करण में उन्होंने यह स्वीकार किया है— ग्लैग की कृति 'वारेन हेस्टिंग्स के जीवन के संस्मरण' और सर विलियम हण्टर के 'एनाल्स आफ रूरल बेगाल' से तथ्य संग्रह किया है।

लेकिन मूलकथा उन्हें कहाँ से प्राप्त हुई थी, यह उन्होंने नही बताया। इसका विवरण हमें उनके छोटे भाई श्री पूर्णचन्द्र चटर्जी के एक लेख से प्राप्त होता है। उन्होंने लिखा है—

"हमारे चचेरे पितामह एक सौ आठ वर्ष तक जीवित रहे। उनके निकट हम सब यानी बँकिमचन्द्र भी कहानियाँ सुना करते थे। खासकर बंगाल के इतिहास सम्बन्धी घटनाएँ। वे बंगाल के मुसलमानो शासन के अंतिमकाल की घटनाएँ सुनाया करते थे। उन्हीं की जबानी गड़मन्दार की घटना उन्होंने सुनी थी। मन्दारण गांव जहानाबाद और विष्णुपुर के मध्य में है। इस कहानी को उन्होंने १९ वर्ष वय में सुनी और इसके कई वर्ष बाद दुर्गेशनन्दिनी उपन्यास लिखा। (बँकिम प्रसंग, पृष्ठ ४९-५०)

इन दोनों तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि आनन्दमठ मूलत: ऐतिहासिक उपन्यास है, कपोल कल्पित नहीं। इस

उपन्यास को लिखने के लिए अपने पितामह की जबानी कहानी सुनने के अलावा उन्होंने दो पुस्तकों का अध्ययन भी किया था। श्री राखालदास बनर्जी के बँकिम बाबू के इतिहास-ज्ञान के सम्बन्ध मे लिखा है—"उन्होंने इतिहास संबंधी जो तथ्य दिये हैं, वे चौकानेवाले हैं। वह इसलिए कि उस समय तक 'तबकात इ-नासिरी' का कोई विश्वसनीय संस्करण नही छपा था और न 'बावार्टी' का अनुवाद ही प्राप्य था। केवल इलियट कृत प्रकाशित 'ताज-उल-मासिरा' या 'तबकात-इ-नासिरी' का सारांश ही प्राप्य था।"

(नारायण, वैशाख, १३२२ पृ० ५६७)

आनन्दमठ में जिन अंग्रेजो के नामों का प्रयोग किया गया है, वे सभी ऐतिहासिक पात्र थे। कप्तान टामस, (जिसने रंगपुर पर आक्रमण किया था) मेजर एडवर्डस (चिलमारी पर आक्रमण किया था) लेफ्टिनेंट बाटसन (बाउटन, राजशाही जिले का निरीक्षक) आदि पात्र संन्यासी आन्दोलन के प्रमुख पात्र थे। स्वयं बँकिम बाबू ने पाँचवें संस्करण के पूर्व अपने पात्रों के बारे मे यह लिखा है—'पहले मैने कैप्टन एडवर्ड के स्थान पर मेजर उड के नाम का प्रयोग किया था, यह कोई बड़ी गलती नहीं थी।'

संन्यासी आन्दोलन

सन् १७७० ई० मे भयंकर अकाल पड़ा था। बंकिम बाबू को इस अकाल के बारे मे अपने पितामह की जबानी अनेक बाते मालूम हुई थी। पूर्णचन्द्र चटर्जी ने लिखा है—उन दिनों लोग अधिकतर खेती-बारी या अकाल के बारे में चर्चा किया करते थे। मँझले पितामह ने पहले खेती-बारी की चर्चा की, फिर अकाल का वर्णन करने लगे। उन्होंने यह बताया था कि अकाल के दिनों बंगाल की स्थिति कितनी खराब हो गयी थी। पिछले ३–४ सालों से खेती खराब हो रही थी और सन् १७७० ई० मे फसल पैदा नहीं हुई। लगातार कई वर्षों तक ठीक से खेती न होने के कारण निम्न श्रेणी के लोगों का आहार बन्द हो गया। आगे वही स्थिति मध्यम श्रेणीवालों की हुई। बाद में धनाढ्य भी भूखे रहने लगे। धनाढ्यों के लाखों रुपये जमीन में गड़े थे, फिर भी वे भूखों मरने लगे। रुपया रहते वे अनाज नहीं खरीद पा रहे थे। सच तो यह है कि अनाज कही नहीं था। इसमें हर वर्ग के लोग थे। बाद में ये ही लोग डकैती करने लगे।

मैं इस कहानी को भूल गया था, पर वे नही भूले थे। सन् १८६६ ई० जब उड़िसा में भयंकर अकाल पड़ा तब इस कहानी को उनकी जबानी सुना। शायद इस अकाल को लेकर एक उपन्यास लिखने की इच्छा उनके मन में थी।"

(बंकिम प्रसंग, पृष्ठ ५१ से ५३)

इतिहासकारों ने सन् १७७० के अकाल के बारे मे जो कुछ लिखा है, उनका हुबहू वर्णन हमें आनन्दमठ के प्रथम खण्ड के प्रथम परिच्छेद मे प्राप्त हो जाता है, उस अकाल मे

(पृष्ठ ५० का शेषांश)

इसी प्रकार श्री आजाद भी अपने पत्रों मे वन्दे मातरम का प्रयोग करते रहे। पूज्य काका कालेकर, जमना लाल बजाज महादेवी वर्मा, पूज्य विनोवा भावे आदि भी अपने पत्रों में वन्दे मातरम लिखते आ रहे हैं।

प्रसिद्ध क्रातिकारी तथा पत्रकार श्री रामचन्द्र नरहरि बापट ने एक भेंट में बताया कि इनक्लाब-जिन्दाबाद का नारा तो १९२८ के बाद आया। उसका प्रमुख कारण है—क्रांतिकारियो द्वारा मार्क्सवादी साहित्य का अध्ययन। कहने को सरकार क्रांतिकारियों को कम्युनिस्ट कहकर जेल में बन्द रखना चाहती थी, पर मार्क्सवादी साहित्य की सप्लाई सरकारी तौर पर अंग्रेज करते रहे और बदनाम हमें करते थे कि चोरी से मँगाकर ये साहित्य पढ़ते हैं। वन्दे मातरम प्रत्येक क्रांतिकारियों के निकट मंत्र जैसा रहा। हिन्दी के अनेक कवियों पर वन्दे मातरम गीत का प्रभाव पड़ा है, उनमें से अधिकाश इस स्मारिका में प्रकाशित किये जा रहे है। फलतः यहाँ उसका उल्लेख नही किया जा रहा है।

●

एक तिहाई आबादी अन्नाभाव के कारण काल के गाल मे चली गयी थी।

उपन्यास के आरम्भ में ही उन्होने लिखा है—'कल ईश्वर की कृपा से ११७६ का साल समाप्त हुआ। बंगाल की आबादी के छः आने आदमियों को—कितने करोड़ होते है कौन जाने—यमराजपुर भेजकर यह बुरा साल काल के ग्रास मे पतित हुआ।'

बंगला सन् ११७६ मे ५९४ जोड़ने पर १७७० ई० का वर्ष आ जाता है। इससे स्पष्ट है कि तत्कालीन अकाल तथा सन्यासी आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर आनन्दमठ आधारित है। जब उन्होने अपने जीवन काल में सन् १८६६ ई० का अकाल देखा तब पितामह की जबानी सुनी कहानी को उपन्यास का रूप दिया।

इस अकाल के बारे में आनन्दमठ में उन्होने लिखा है—"लोग पहले भीख माँगने लगे, भीख कौन दे? उपवास करने लगे, रोगो के शिकार हुए। ढोर बेचे, हल और माची बेचे, बीज के धान बेचे, घर-द्वार बेचे, जर-जमीन बेची। इसके बाद लड़की-लड़का और स्त्री बेचने लगे, पर कौन खरीदे? खरीददार कोई नही, सभी बेचने वाले थे। भोजन के अभाव मे लोग पेड़ के पत्ते खाने लगे। नीची जाति के लोग कुत्ते, चूहे, बिल्लियाँ खाने लगे।'

ठीक इसी प्रकार का वर्णन श्री एल० एस० एस० ओमैली तथा हण्टर ने 'हिस्ट्री आफ बेंगाल, बिहार एण्ड ओरिसा अण्डर ब्रिटिश रूल' मे किया है।

श्री अयोध्या सिह ने अपनी पुस्तक 'भारत का मुक्ति संग्राम मे लिखा है—ईस्ट इण्डिया कम्पनी के गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने इस विद्रोह का नाम "संन्यासी-विद्रोह" दिया था और इसे 'हिन्दुस्तान के यायावरों का पेशेवर उपद्रव, दस्युता और डकैती" बताया था। कितने ही इतिहासकारों ने हेस्टिंग के सुर में सुर मिलाया है। लेकिन सरकारी दस्तावेजों की छानबीन करने से पता चला है कि यह ब्रिटिश पूंजीवादियो और हिन्दुस्तानी जमीदारों के खिलाफ किसान विद्रोह था। विद्रोही सेना और विद्रोही नेता जहाँ कही भी गये, साधारण किसानो ने उनका स्वागत किया, उनकी सहायता की और विद्रोही सेना मे शामिल होकर उनकी शक्ति बढ़ायी। भारत के सरकारी इतिहास और गजेटियर के रचयिता सर विलियम हण्टर ने 'एनाल्स आफ रूरल बेंगाल' (१९६५ का संस्करण, पृष्ठ ४४७) मे लिखा है—'जीवन यापन के शेष उपाय का सहारा लेने को वाध्य हुए थे। ये तथाकथित गृहत्यागी और सर्वत्यागी संन्यासियों के रूप में पचास-पचास हजार के दल बाँधकर सारे देश मे घूमा करते।'

सरकारी इतिहास ओर गजेटियर के दूसरे रचयिता श्री एल० एस० एस० ओमैली ने हण्टर के मत को दोहराया है—'विद्रोही ध्वस्त सेना के सैनिक और सर्वहारा किसान थे। मुगल साम्राज्य के पतन के फलस्वरूप बहुत से सैनिको की रोजी चली गयी थी। उनकी कुल संख्या लगभग २० लाख थी। जमीन से बेदखल, सर्वहारा किसान और कारीगरों ने उनकी संख्या बढ़ायी। (हिस्ट्री आफ बेंगाल, बिहार एण्ड ओरिसा अण्डर ब्रिटिश रूल, १९२५ का संस्करण, पृष्ठ २०७)।

लेस्टर हचिन्सन नामक इतिहासकार ने लिखा है—संन्यासियों ने जो धार्मिक भिक्षु थे, किसानो के अर्थनीतिक विद्रोह को धार्मिक प्रेरणा दी। उन्होंने शिक्षा दी कि देश को मुक्त करना सबसे बड़ा धर्म है। पराधीन जाति की मुक्ति के लिए सर्वस्व त्याग, मातृभूमि मे अचल भक्ति……" (लेस्टर हचिन्सन, दि एम्पायर आफ द नबाब्स, १८३७ का संस्करण पृष्ठ ९२)

डा० भूपेन्द्रनाथ दत्त ने लिखा है—'ढाका के रमना के काली मन्दिर के महाराष्ट्रीय स्वामीजी कहा करते थे कि सन्यासी योद्धा' ओऽम् 'वन्दे मातरम्' का रणनाद करते थे। (भारतेर द्वितीय स्वाधीनता संग्राम प्रथम खण्ड, द्वितीय सस्करण, पृ० ९७)

इन संन्यासियों के बारे में श्री तारिणी शंकर चक्रवर्ती ने लिखा है—सशस्त्र फकीरों का प्रादुर्भाव स्वाभाविक क्रम से हुआ था। ये अपने नाम के साथ 'शाह' पद जोड़ते थे। शाह का मतलब राजा से होता था। ये लोग कट्टर मुसलमान नही थे। 'दबिस्तां' के अनुसार ये सूफीमत के माननेवाले हिन्दू[1] थे। मदारी फकीर अवधूत संन्यासियो की तरह जटा बढ़ाते, सर्वांग मे भभूत मलते थे। मदारियों में बदिउद्दीन

१. बंगाल के बाउल भी सूफी मत के होते है।

मदार नाम के एक विख्यात योगी रहे। इन फकीरो के दल में मजनू शाह के दल को विशेष ख्याति मिली। अंग्रेजी सेना से इस फकीर दल का जमकर सघर्ष हुआ था। बंकिमचन्द्र के देवी चौधुरानी उपन्यास के नायक भवानी पाठक और देवी चौधुरानी मजनू शाह के दल के थे। (भारत मे सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलन, पृष्ठ २२)

ईस्ट इंडिया कम्पनी के गर्वनर जनरल वारेन हेस्टिग्स ने इस विद्रोह को 'संन्यासी-विद्रोह' कहा और हिन्दुस्तान के के यायावरों का पेशेवर उपद्रव, दस्युता और डकैती बताया। निम्नलिखित पत्र इस बात का गवाह है कि हेस्टिग्स कितना बड़ा झूठा था।

यह पत्र नाटोर के सुपरवाइजर ने दिनांक २५।१।१७७२ को रेवेन्यू कौसिल के नाम लिखा था—

"मेरा हरकारा खबर ले आया है कि कल फकीरो का एक बड़ा दल सिलेबरी (बगुड़ा जिला) के गाँव में आकर इकट्ठा हुआ। उनके नेता मजनू शाह ने अपने अनुयायियो को कठोर आदेश दिया कि वे आम जनता पर कोई अत्याचार या बल प्रयोग न करें। आम जनता जो कुछ अपनी इच्छा देती है, उसे छोड़कर और कुछ न ले।"

महारानी भवानी ने नाम अपने एक पत्र मे मजनू शाह ने लिखा है—"बंगाल मे हम अपने दल के साथ हर साल मंदिरो और तीर्थ स्थानों का दर्शन करते फिरते है और बंगाल के निवासियो से हमे सदैव अच्छे वर्ताव, भिक्षा और हर प्रकार की सहायता मिली है।" (भारत मे सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलन, पृष्ठ २५-२६)

इन उद्धरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि संन्यासी विद्रोही थे, डाकू नही। दर असल भारत में स्वतन्त्रता संग्राम काफी दिनों से चल रहा था। जो लोग केवल १८५७ को प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम मानते हैं, उनका यह ख्याल गलत है। ये सँन्यासी वास्तव मे मुगल सेना से निकाले गये वे सैनिक थे जो उन दिनों खेती का कार्य करते थे। वे अंग्रेजो के दुश्मन थे। इन विद्रोहियों में हिन्दू-मुसलमान दोनो ही शामिल थे। इनमें से प्रत्येक के दल में ५०-५० हजार विद्रोही थे जिसमें मजनू शाह, मूसाशाह, चिराग अली, भवानी पाठक, देवी चौधुरानी, कृपानाथ, नुरुल मुहम्मद, पीताम्बर, अनूप नारायण, श्री निवास आदि के नाम प्राप्त हुए है।

अधिकतर विद्वान यह मानते है कि इनका मुख्य क्षेत्र उत्तरी बङ्गाल का रँगपुर क्षेत्र था। श्री अयोध्या सिह ने लिखा है—"१७७३ मे विद्रोहियो का प्रधान कार्य क्षेत्र रँगपुर था। इन विद्रोहियो का दमन करने के लिए अंगरेज सेनापति टामस बड़ी भारी सेना लेकर आया। ३० दिसम्बर १७७२ की प्रातः काल रंगपुर के शहर के नजदीक श्याम-गंज के मैदान में उसने विद्रोहियों पर आक्रमण आरंभ किया विद्रोहियों के चतुर नेताओं ने हारकर भागने का बहाना किया और टामस की सेना को पास के जङ्गल में खीच ले गये। विजय के आनन्द से अंगरेज सेना ने गोला गोली आदि समाप्त कर दिये। इसके बाद ही विद्रोही घूमकर अँगरेज सेना पर टूट पड़े और चारो तरफ से उसे घेर लिया। इस अंचल के सब गाँवों के किसान तीर, धनुष, भाला बल्लम, लाठी, डण्डा लेकर आ पहुँचे और विद्रोहियों के साथ मिलकर अंगरेज सेना पर हमला करने लगे। सेना-पति टामस ने अपनी सेना देशी सिपाहियो को जबावी हमला करने का हुक्म दिया, लेकिन इन सिपाहियो ने अपने देश के किसानो पर आक्रमण करने से इनकार कर दिया। थोड़ी देर मे ही अंग्रेजी सेना हार कर भाग खड़ी हुई। टामस मारा गया। इस घटना पर अफसोस करते हुए रंगपुर के सुपरवाइजर पालिग ने रेवेन्यू कौसिल के पास ३१ दिसम्बर १७७२ को लिखा—

"किसानों ने हमारी सहायता तो की ही नही, बल्कि उन्होंने लाठी आदि लेकर संन्यासियों की तरफ से युद्ध किया। जो अंगरेज सैनिक जंगल की लम्बी घास के अन्दर छिपे थे, किसानों ने उन्हे खोजकर बाहर निकाला और मौत के घाट उतारा। जो भी अग्रेज सैनिक गाँव में घूसे, किसानों ने उनकी हत्या की और बन्दूकों पर कब्जा किया।

संन्यासियों कार्यवाही का वर्णन वारेन हेस्टिंग्स ने स्वयं अपने एक पत्र मे इस तरह किया है—

"हमारे प्रांत में इस समय लड़ाई हो रही है। एक संन्यासी टोली ने सिपाहियों की पूरी टुकड़ी पर आक्रमण करके दो अधिकारियोंका सिर काट लिया।

इनमें से एक आपके सुपरिचित कैप्टन टामस थे। ब्रिगेड के सिपाहियों की चार बटालियनें इनका पीछा कर रही हैं, पर वे सामने नहीं आते। इनकी कोई छावनी नहीं है। इतना ही नहीं, इनके अंग पर वस्त्र तक नही है। नदी नालों का आश्रय लेकर ये लड़ रहे है। न तो इनका घर है, न परिवार, ये गाँव-गाँव भटकते फिरते हैं। जहाँ इन्हे नवयुवक दिखते हैं, वे तुरत उसे अपने दल में शामिल कर लेते हैं। ये महाबलवान कर्तव्य करने वाले लोग है। इनमें कुछ व्यापारी भी है, लेकिन बाकी सब बैरागी साधु हैं अतः नागरिको में इनके प्रति आदर है। इसी कारण इनकी बाबत कुछ भी पता नहीं चलता। आकाश से उल्कापात की भांति आक्रमण कर ये लुप्त हो जाते हैं, इसी से असामान्य उत्साह में डूबे ये लोग हमें भारी पड़ रहे हैं।'

ढाका में रमना का एक मैदान था। अब वहाँ कुछ नही है। संन्यासियों के दल का पहला हमला इसी मैदान में स्थित ईस्ट इंडिया कम्पनी की कोठी पर किया था। इसका प्रमाण भी अब प्राप्त हो गया है— 'रात के अंधेरे में विद्रोहियों ने चारों तरफ से कोठी को घेर लिया। ओऽम वन्दे मातरम्' का नारा बुलन्द कर, रमना के काली मंदिर के महाराष्ट्रीय स्वामी के मतानुसार उन्होने कोठी पर आक्रमण किया कोठी के अंग्रेज सौदागर सब धन-सम्पत्ति छोड़ दुम दबाकर पीछे के दरवाजे से नाव में बैठकर भागे। कोठी के पहरेदार उनसे भी पहले भाग खड़े हुए। ईस्ट इंडिया कम्पनी के कर्ताधर्ता राबर्ट क्लाइव ने अंग्रेज सौदागरो की इस बुजदिली से नाराज होकर इस कोठी के व्यवस्थापक लीसेस्टर को पदच्युत कर दिया'— ढाका (ईस्टर्न बेंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स), कलकत्ता १९१२, पृ० ४१-४२

आनन्दमठ के सँन्यासी

आनन्दमठ उपन्यास में वर्णित जो सँन्यासी हैं, वे वास्तव में फकीर नहीं है। सँन्यासी-विद्रोह की पटभूमि लेने पर भी बकिम के सँतान-सम्प्रदाय वैष्णव हैं। श्री अयोध्या सिंह ने इस सम्बन्ध में लिखा है—"बंगाल के उपन्यासकार बंकिम चट्टोपाध्याय ने आनन्दमठ में संन्यासी-विद्रोह का जो चित्रण किया है, वास्तविक रूप उससे भिन्न था, फिर भी आनन्दमठ बंगाल के मध्यमवर्ग के उग्रवादियों का बायबल और संन्यासी-विद्रोह उनका आदर्श बना।"

आनन्दमठ के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि संतान-सम्प्रदाय के लोग परम वैष्णव थे जब कि उत्तरी बंगाल के सँन्यासी शैव थे। उनमें आदर्श वाद की भावना नहीं थी। आदर्शवाद की भावना तो वैष्णवो में थी।

इस बारे मे प्रोफेसर भवतोष दत्त ने लिखा है—"बंकिम का वैष्णव-आदर्श चैतन्यदेव द्वारा प्रवर्त्तित आदर्श का अनुगत नही है। जयदेव के दशावतार स्तोत्र में विष्णु की वन्दना इन शब्दों मे की गयी है—

जय जगदीश हरे।
म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि कर वालम्॥

ये सन्तान इसी विष्णु के उपासक थे। आनन्दमठ का प्रमुख पात्र सत्यानन्द एक जगह महेन्द्र से कहता है—चैतन्यदेव का वैष्णव-धर्म वास्तव में वैष्णव-धर्म नहीं, वह अर्द्ध धर्म मात्र है। चैतन्यदेव का विष्णु सिर्फ प्रेममय है। सन्तानों (आनन्दमठ के संन्यासी) के विष्णु शक्तिमय हैं। हम सब वैष्णव हैं, पर वे सब आधे वैष्णव हैं।



केन्दुली गाँव के मेले में आये बाउल और यात्री

वास्तव में उन्होने बाउलों (सूफीमत के संन्यासी) से लेकर आनन्दमठ लिखा है। आनन्दमठ का उद्भव स्थल वीरभूमि जिले का केन्दुली गाँव है जो कि महाकवि जयदेव की जन्म-भूमि है जहाँ प्रति वर्ष १४ जनवरी से ३१ जनवरी तक मेला लगता है अपने उपन्यास में उन्होंने वीरभूमि को वरेन्द्रभूमि लिखा है।

केन्दु बिल्व गाँव

महाकवि जयदेव की जन्मभूमि केंदुली गाँव का दर्शन जो लोग कर चुके है, उन्हें ज्ञात होगा कि श्री निकेतन से दो मील आगे बढ़ने पर घने जंगलों का सिलसिला प्रारम्भ हो जाता है जो बराबर इलाम बाजार के समीप जाकर समाप्त होता है मार्ग के दोनो ओर शाल तथा अन्य वृक्ष पंक्तिवार सैनिक की तरह खड़े हैं।

आनन्दमठ में इस स्थान के बारे में लिखा है—"खूब विस्तृत अरण्य। अरण्य में अधिकांश शाल के पेड़ तथा अनेक जातियों के पेड़ है।"

इलाम बाजार पार करने के बाद चारों ओर खेत मिलते हैं। मकर संक्रान्ति के दिनो यह इलाका जैसे जाग उठता है। बोलपुर स्टेशन से हर आधे घंटे बाद बसे रवाना होती हैं। केवल बंगाल के विभिन्न स्थानों से ही नही, बिहार और उड़िसा से भी निजी बसे आती है। कई हजार बैलगाड़ियाँ आती है। एक प्रकार से १५ दिनो के लिए शहर बस जाता है।

ज्ञात रहे कि आचार्य क्षितिमोहन सेन हर साल मकर संक्रान्ति के दिन बाउल गीत सुनने के लिए यहाँ आते रहे। उनके द्वारा संग्रहीत बाउल गीतो से रवि बाबू काफी प्रभावित हुए हैं। केंदुली मेले का प्रभाव न केवल रवि बाबू के साहित्य पर बल्कि बंगाल के अनेक साहित्यकारो पर पड़ा है। असम, बंगाल बिहार उड़ीसा से यहाँ बाउलों का दल आता है तथा यहाँ स्थित जितने आश्रम हैं, भक्ति के साथ पूजा करते हैं और आशु कवियों की तरह गीतों का निर्माण कर आम लोगों को सुनाते हैं। बंकिम बाबू ने आनन्द मठ में इस मेले का वर्णन किया है—

"सामने माघी पूर्णिमा आयी। उनके पड़ाव के पास नदी किनारे एक मेला लगेगा। इस मेले की बड़ी तैयारियाँ



महाकवि जयदेव का मंदिर

है। सहज ही मेले में एक लाख की भीड होती है। इस बार वैष्णव राजा हुए है अतएव मेले में वैष्णव बड़ी तैयारिया से आयेंगे, ऐसा संकल्प किया है। अस्तु पूर्णिमा के दिन कुल संतानो को मेले मे एकत्र होने की सम्भावना है"।

मेले बारे मे विस्तार से लिखने पर भी उन्होंने उस नदी का नाम नही लिखा। अन्यत्र अपने अनजाने नदी का भी नाम बता गये है—

"लडाई में जीत होने के बाद अजय नदी के किनारे सत्यानन्द को घेरकर विजयी वीर नाना प्रकार के उत्सव मनाने लगे।"

बंगला साहित्य के प्रख्यात लेखक श्री ब्रजेन्द्रनाथ वंद्योपाध्याय ने लिखा है—"प्रथम चार संस्करणों में घटनास्थल वीरभूमि था। अजय नदी के किनारे स्थित कोई पर्वतीय स्थल। जबकि संन्यासी विद्रोह की घटना उत्तरी बंगाल में हुई थी। अपने इस भूल का उल्लेख बंकिम बाबू ने तीसरे संस्करण में जरूर किया है, पर संशोधन नही। पांचवे सँस्करण में उन्होंने थोड़ा सा परिवर्त्तन किया है फिर भी सम्पूर्ण पुस्तक में वीरभूमि की नदी, पहाड़ और जँगलों



अजय नदी के तट पर बाउल और भक्त स्नान कर रहे है।

का वर्णन इस तरह स्पष्ट हो उठा है कि वीरभूमि वरेन्द्रभूमि नहीं बन सका है।''

केन्दुली गाँव ही वह स्थल है जिसे कभी देखकर बँकिम बाबू ने आनन्दमठ को सँन्यासियों का स्थान बनाया था। बाउल ही नागा सँन्यासी के रूप मे चित्रित हुए हैं। उनका एक और प्रमाण हमे प्राप्त हो जाता है। केन्दुली महाकवि जयदेव की जन्मभूमि होने के कारण वैष्णवो की पवित्र भूमि है। आनन्दमठ मे जयदेव के पदों को सांकेतिक भाषा में थोड़े परिवर्त्तन के साथ उपयोग किया गया है। महाकवि जयदेव का एक पद है—**'न कुरु नितविनि गमनविलम्बन मनुसर तं हृदयेशम्।'**

यह पद एक पद के नीचेवाला अंश है और इसके बाद ही वह विख्यात् पद है—**'धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली।'**

इन दोनों पदों को उलट पुलटकर उन्होंने नायक के मुँह से कहलाया है—

''धीर समीरे तटनीतीरे वसति वने वर नारी।
न कुरु धनुर्धर गमन विलम्बन नमति विधुरा सुकुमारी॥''

जिस वक्त नायक को सिपाही गिरफ्तार कर जङ्गल के बीच से ले जा रहे थे, उस समय अपने अनुचरों को यह बताने के लिए कि सुकुमारी नदी किनारे है, धनुष वगैरह लेकर तुरत चले जाओ, विलम्ब मर करो, उन्होंने इस पद का गायन किया।

वन्दे मातरम् गीत और महाकवि जयदेव

वन्दे मातरम् का नारा बँकिम बाबू को चाहे जहाँ से भी मिला हो, पर सम्पूर्ण गीत की भाव-भाषा पर अगर ध्यान दिया जाय तो यह स्पष्ट हो जाता है कि महाकवि जयदेव की गीत गोविन्द का प्रभाव इस रचना पर पडा है। सँगीतमय शब्द की कल्पना, भाषा सौष्ठव जयदेव की तरह है।

गलत धारणा

श्री सिद्धमोहन मित्र नामक एक लेखक ने बँग भँग आन्दोलन के समय लन्दन के 'टाइम्स' अखबार मे लिखा था कि सन् १८८१ में इलवर्ट बिल आन्दोलन हुआ था, उसी आन्दोलन से प्रभावित होकर बँकिम बाबू ने आनन्द-मठ लिखा।

मित्र महोदय के विचारों का खण्डन तत्कालीन पायनियर अखबार ने कर दिया था। आनन्दमठ तो सन् १८८० के पूर्व लिखा जा चुका था।

अभी हाल में श्री विमान विहारी मजुमदार ने एक लेख में बताया कि महाराष्ट्र में अग्रेजों के विरुद्ध श्री वासुदेव बलवन्त फड़के ने संगठित रूप से लूटमार की थी, उसीके आधारपर आनन्द मठ लिखा गया था। यह घटना सन् १८७९ ई० में हुई थी।

लेकिन मैं श्री मजुमदार के तथ्य को इसलिए स्वीकार नही कर पाता कि वन्दे मातरम् गीत का वृहद रूप ही आनन्दमठ है और उसकी पृष्ठभूमि वीरभूमि जिले का केन्दुली गाँव का संन्यासी आन्दोलन है। सबसे मुख्य बात है—भारत की आजादी का सवाल। बंकिम बाबू के मन में बहुत पहले से ही आजादी के लिए तड़पन थी जैसा कि आगे के लेखों में बताया जा चुका है।

इस बारे में श्री प्रथमनाथ बिशी का ख्याल सही है। उनका कहना है कि आनन्दमठ उपन्यास का जनक 'आमार दुर्गोत्सव' नामक लेख ही है जो कि बंग दर्शन के नवम्बर १८७५ के अंक में प्रकाशित हुआ था। उस लेख में कमला-कान्त कहता है—''देशमूर्ति ही देवीमूर्ति है। वर्त्तमान में वह देवी काल सागर गर्भ में निहित है। देवी के सन्तान जब मातृ वत्सल होंगे, अधर्म-आलस, इन्द्रिय-भक्ति त्याग देंगे तभी वे प्रत्यक्ष दर्शन देगी।'' आनन्दमठ में यही रूप विस्तार के साथ है। ●●

वन्दे मातरम्

— श्री हर प्रसाद मित्र —

डा० रमेशचंद्र दत्त वंदेमातरम् गीत के बारे मे अपने विचार प्रगट कर गये हैं "जहाँ तक इस कविता के सही सही महत्व का संबंध है इस बाबत काफी विवाद फैला है। 'वन्देमातरम्'— 'हेल टु दी मदर' या और अधिक शाब्दिक अर्थ में 'माँ मैं तुझे प्रणाम करता हूँ' का संस्कृत शब्द है। डा० जी० ए० ग्रियर्सन (दी टाइम्स, सितंबर १२, १६०६) के अनुसार 'इसका और कोई भी अर्थ नही लगाया जा सकता, सिवा इसके कि यह हिंदू-धर्म की एक मातृदेवी का उद्बोधन हैं। उसकी राय में यह काली है— मृत्यु और विनाश की देवी । इसके विपरीत सर हेनरी काटन (दी टाइम्स सितंबर १४, १६०६) इसे केवल बंगालियो की मातृभूमि की वंदना मात्र मानते है और अपनी मान्यता के समर्थन में इस कविता के स्वर्गीय ड०ल्यू० एच० ली कृत मुक्त अनुवाद का हवाला देते हैं और बिला शक तत्काल ही कहा जा सकता है कि यह प्रमाण विश्वसनीय नहीं है, किंतु जैसा ग्रियर्सन संकेत करते हैं कि 'मातृभूमि' की कल्पना हिंदू विचार-धारा के पूर्णतः प्रतिकूल है पर बहुत संभव है कि बंकिम चंन्द्र ने इसे अपनी योरोपियन संस्कृति से प्राप्त विचारधारा मे समाहित कर लिया। वास्तविक समाधान शायद वह है जो मिस्टर जे० डी० एडरसन ने २४ सितम्बर १६०६ के टाइम्स में दिया था, वे कहते हैं कि आनंदमठ के पहले खण्ड के ११वें अध्याय में संन्यासी विद्रोह काली—"माता जो हो चुकी हैं' की प्रतिमा के साथ ही एक श्वेत संगमरमर की प्रतिमा 'माता जो होगी' की स्थापित करते हैं और यह मातृभूमि का स्पष्ट प्रतीक है तथा वन्देमातरम् गीत स्पष्टतः इस दोनों ही प्रतिमाओं को सम्बोधित है। अतः उनका सिद्धांत है कि यह कविता एक हिंदू आदर्शवादी की रचना है जिसने बंगाल को मूर्तिमंत पवित्र आध्यात्मिक काली का रूप माना है, काव्य की छत्तीस पंक्तियों में जिनमें कुछ संस्कृत में लिखी हैं कुछ बंगाली भाषा मे, अधिकतर काफी हानि रहित हैं, किंतु यदि कवि 'माँ' का जयगान गा रहा हो तभी, जल मे विकसित कमलदल पर बैठी लक्ष्मी रूपिणी के साथ ही वह उसकी दुर्गा दस शस्त्रधारिणी के रूप में भी प्रशंसा करता है और १०, ११ तथा १२वीं पंक्तियाँ तो बहुत ही खतरनाक सिद्ध हो सकती हैं, इनका अनुवाद इस प्रकार हैं "उसका जयगान करने के हेतु उसके पास सात करोड़ कंठ है, उसके लिए लडने को सात करोड़ के दूने हाथ हैं, तब बंगाल शक्तिहीन कैसे है ?" जैसा कि एस० एम० मित्र (इडियन प्राब्लेम्स, लंदन १६०८) बताते हैं "यह भाषा विशेष ध्यान देने योग्य है क्योंकि उपन्यास में 'वन्देमातरम्' वह आराधना थी जिसे गाकर संन्यासी ब्रिटिश सत्ता पर आक्रमण करने की शक्ति प्राप्त करते थे"।

बंकिम चंद्र चैटर्जी के जीवन काल में वन्देमातरम् की खतरनाक प्रवृत्तियाँ पहिचान ली गयी थी, फिर भी दल के युद्ध के नारे के रूप में इसका उपयोग नहीं हुआ। उदाहरण के लिए इलवर्ट बिल आंदोलन के समय और न सन् १८८३ में सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी के मुकदमे के समय न्यायालय के चतुर्दिक भीड़ लगाये विद्यार्थियो ने इसका उपयोग किया, फिर भी बंगाल विभाजन के समय हुए आंदोलन के समय इसे दुष्टतापूर्ण ख्याति प्राप्त हुई । किंतु स्वयं बंकिम चंद्र ने इसके ऐसे उपयोग की कल्पना की थी या ऐसा चाहा था, यह मानना असंभव है। एस० एम० मित्रा के अनुसार उन्होंने तो उत्तम पेट भर भोजनोपरान्त, और वे भोजन-प्रेमी थे, राष्ट्रप्रेम के उन्माद के क्षण में इसकी रचना कर डाली थी, बाद में इसे हिंदू-संगीत-जिसे कहते हैं 'मलार कौवाली ताल' में निबद्ध किया गया । स्वर की अद्भुत प्रकंपन शक्ति और बंगाली अंशों के संस्कृत के साथ चातुर्यपूर्ण समन्वय ने इसे लोकप्रिय बना दिया । बंकिम चंन्द्र की साहित्यिक कृतियों में परिस्थितियों ने वंदेमातरम् के प्रभाव क्षेत्र को अत्यधिक प्रसिद्ध और अत्यधिक प्रचारित बना दिया।

('बंकिम साहित्यपाठ' पृ० ४७३-४७४)

अनु०— विश्वनाथ मुखर्जी

●

वन्दे मातरम् और बीस सूत्री कार्यक्रम

—डाक्टर भानु मेहता

वन्देमातरम् एक मंत्र है और जैसा तांत्रिक बताते हैं कि बिन्दु में ही समष्टि हैं, पिंड मैं ही ब्रह्माण्ड है, उसी प्रकार यह मन्त्र भी सर्वव्यापी है। आज के सन्दर्भ में जब देश मे आपात स्थिति चल रही है और प्रधान मंत्री के बीस सूत्री कार्यक्रम का अनुसरण कर देश प्रगति कर रहा है तो सहज ही जिज्ञासा होती है कि क्या "वन्देमातरम्" हमारे राष्ट्रगान में ये सूत्र प्रतिभासित होते हैं या नही ! आइये इस कसौटी पर वन्देमातरम् की परीक्षा करें।

वन्देमातरम्—२० सूत्री कार्यक्रम के पुष्पों की माला चढ़ाकर, हे मातृभूमि, हम तेरी वन्दना करते है।

सुजलां—सप्तम सूत्र कहता है कि ५० लाख हैक्टेयर भूमि मे सिचाई की व्यवस्था की जायगी। भूमिगत जल का
७ अधिकाधिक उपयोग करने के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाये जायगे, अतः हे सुजला मातृभूमि तेरा वन्दन।

सुफलां—पहले सूत्र के अनुसार आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं के दामों में गिरावट के रुझान को बनाये रखकर, उत्पादन
१ और उत्पादकता की गति तेज कर वसूली, वितरण व्यपस्था को प्रभावशाली बनाकर, सरकारी खर्च कम कर व्यवस्था का सुफल प्राप्त करने का हम संकल्प लेते हैं।

मलयज शीतलां—तृतीय सूत्र के अनुसार भूमिहीनों तथा समाज के कमजोर वर्गो के लिए आवास भूमि के आवंटन
३ को तेजी से लागू करना जिससे देश की वायु सबके लिए शीतल सुगंध युक्त हो।

शस्य श्यामलां—दूसरे सूत्र के अनुसार कृषि भूमि की हदबन्दी को तेजी से लागू करके, अतिरिक्त भूमि को तेजी से
२ भूमिहीनों के बीच बांटना और भूमि सम्बन्धी प्रलेख तैयार करना जिससे कृषक निश्चिन्त हो खेती कर सके तथा यह मातृ भू शस्य-श्यामला हो सके।

मातरम्—मां, मातृभूमि तुझे प्रणाम निवेदित है।

शुभ्र ज्योत्सनां पुलकित यामिनीम्—चोरी और आर्थिक भ्रष्टाचार ने देश को पतन के गर्त में गिराया, उसके
१२ कुपुत्रो ने निर्मल चाँदनी रातो को अपने अपराधों से काली रात बना दिया। द्वादश सूत्र की हुकांर है कर चोरी करने वाले को कड़ा दण्ड दिया जाय जिससे मातृ भू का शुभ्र ज्योत्सना से शृंगार हो और रातें पुलकित हो सके।

फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्—प्रथम द्वितीय और तृतीय सूत्र द्वारा मातृ भू को पुष्पित पल्लवित करके
१-२-३ उनका शृंगार करना।

सुहासिनी—सप्तदश सूत्र ने मध्य वर्ग को आयकर में छूट दी है और सहज ही मधुर मुस्कान से उनका आनन
१७ प्रफुल्लित हो उठा है। सन्तान को सुखी देखकर माता भी प्रसन्न हो सुहासिनी बनी है।

सुमधुर भाषिणीं—दशम सूत्र का उदेश्य है श्वेत वस्त्र को उत्तम बनाना, वितरण व्यवस्था सुधारना, जिससे माता
१० की संतान शुभ्र वस्त्र धारिणी हो। यह सुमधुर बात सभी को प्रिय लगेगी। नये पर्व के अवसर पर बच्चों को नये वस्त्र पहनने को बुलाती माता कितनी मिठबोली लगती है।

चैटर्जी–बंकिम चन्द्र

(बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय) १८३८-१८६४

भारतीय उपन्यासकार का जन्म बंगाल के चौबीस परगना के जिले में २६ जून १९३८ को हुआ था, जाति से वे ब्राह्मण थे, बी० ए०, रायबहादुर, सी० आई० थे। इनका निधन ८ अप्रैल १८९४ को हुआ।

उनकी प्रमुख कृति है आनन्दमठ, सन् १७७२ ई० के संन्यासी विद्रोह की कथा। इन विद्रोहियों ने ब्रिटिश तथा मुहम्मदी सेनाओं को बुरी तरह परास्त किया था, किन्तु सफलता का अनुवर्तन नहीं किया गया।

इसी पुस्तक में प्रसिद्ध गीत वन्दे मातरम् वर्तमान है। यद्यपि चैटर्जी के जीवन काल में वन्दे मातरम् का किसी दल के रणघोष के रूप में उपयोग नहीं किया गया, किन्तु बंगाल के विभाजन के बाद जो आन्दोलन हुआ उसमें यह क्रान्तिकारी दल का मान्य राष्ट्रीय गीत बन गया।

'वन्दे-मातरम्'—'हेल टु दी मदर' ये शब्द आम तौर से काली-मृत्यु और संहार की देवी, का उद्‌बोधन माने जाते है। बताया गया है कि संन्यासी विद्रोहियों ने काली के श्यामवर्ण विग्रह 'माँ जो थी' के साथ ही संगमरमर क धवल प्रतिमा 'माँ जो होगी' भी स्थापित की थी और कवि 'माँ' स्तुतिगान करता है।

'कमला कमल दल विहारिणी' के साथ ही कवि दुर्गा दश प्रहरण धारिणी' की भी स्तुति करता है। गीत के अन्य अंश भी क्रांतिकारी व्याख्या प्रवण हैं।

चैटर्जी का जो भी मूल उद्देश्य रहा हो (कभी-कभी कहा जाता है कि यह केवल मातृभूमि का स्तुतिगान है) संन्यासियों की भावना, इसकी भावोत्तेजक लय की विचक्षण भाषा और मल्लार कौवाली ताल का हिन्दू मानस पर विचित्र प्रभाव पड़ता है और वन्दे मातरम् राजनीतिक आन्दोलनों में सशक्त प्रभाव बन गया है और उग्रपन्थी दल का मान्य स्तोत्र।

(इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका खण्ड ५-१९४८)

सुखदां वरदां—बीसवें सूत्र में समाज के कमजोर वर्ग को रोजगार व प्रशिक्षण दिलाने बात है जो सुखदायिनी भी
२० है, वरदायिनी भी।

मातरम्—मां, रूपहली पल्लवित रात में तेरी विहंसती, मधुर वचन कहती, सुखद वरदायिनी छवि को हम नमस्कार करते हैं।

कोटि कोटि कंठ कलकल निनाद कराले—चतुर्थ सूत्र मजदूर, मेहनतकश वर्ग को बेगारी तथा दासता से मुक्त
४ कराने का संकल्प करता है। युग-युग की गुलामी से मुक्त हो कोटि-कोटि मानव-कंठ कराल निनाद कर उठेंगे—"माँ तेरी जय हो"

कोटि कोटि भुजै धृत खरकर वाले—प्रथम सूत्र का संकल्प है कि उत्पादन की गति तेज करेंगे, क्योंकि हमारे
१ पास करोड़ों सशक्त सक्षम हाथ हैं।

के बोले माँ तुमि अबले—अष्टम सूत्र विद्युत शक्ति के उत्पादन में तेजी लाने को कहता है, सुपरताप बिजली
८ घरों की स्थापना करता है। अपार विद्युत शक्ति से युक्त होने पर फिर कौन हमारी ममतामयी माँ को अबला कहने का साहस करेगा? वन्दे मातरम्!

बहुबल धारिणीं—छठा सूत्र मजदूरों की आय बढ़ाने, उन्हें सम्पन्न बनाने की चेष्टा करता है। श्रम बल से माँ की
६ शक्ति बढ़ेगी, वह बहुबल धारिणी बनेगी।

वन्दे मातरम् कोश

माता-मातृ—जननी, पूज्य आदरणीय महिला, अम्बा, माँ, माई मां, गौ, भूमि, विभूति, लक्ष्मी, खेती, इन्द्रवारुणी, जटामासी, शीतला, आखुकर्णी, जीव, आकाश, दुर्गा, शिव वा स्कंद मातृकाएं।

मातृका—धाय, माता, जननी, उपमाता-सौतेलीमाँ, तांत्रिकोंकी सप्तमातृकाएं—ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाहरी, इन्द्राणी और चामुंडा। वर्ण माला की बारहखड़ी, दादी।

मातृगण—इनकी संख्या ७, ८ और १६ बतायी गयी है।

मातृतीर्थ—हथेली में सबसे छोटी उँगली के नीचे का स्थान।

मातृ देवी—तांत्रिकों की एक देवी।

मातृदेश—मातृभूमि, जन्मभूमि।

मातृमना—एक ऋषि।

मातृपूजा—(मातृका पूजन)—विवाह से पूर्व पितरपूजनकी एक विधि।

मातृ भक्त—माता का भक्त।

मातृमंडल—दोनों आँखों के बीच का स्थान।

(भानु)

नमामि तारिणीं—पंचम सूत्र गरीब ग्रामीण को कर्ज से, युगों से चले आये अभिशाप से मुक्ति दिलाता है, और
५ मानव निर्मित इस कष्ट-मुक्त मानव को माँ तारने वाली, दुख सागर से पार लगाने वाली प्रतीत होगी—ऐसी तारिणी मां को नमस्कार।

रिपुदल वारिणीं—देश माता के दुश्मन हैं तस्कर, चोर बाजारी करने वाले और त्रयोदश सूत्र उनका उन्मूलन करने
१३ का रिपुदल वारण करने का संकल्प लेता है।

मातरम्—मां, मेहनतकश मजदूर-किसान कर्ज से मुक्त होकर, विद्युत शक्ति से परिपूर्ण होकर, देश के दुश्मनों का विनाश कर, तुझे नमस्कार करता है।

तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि हृदि, तुमि मर्म त्वं हि प्राणाः शरीरे—मां, भावी कर्णधार हमारे छात्र हैं, वे विद्या
१८ अभ्यासी बनें, तुम्हारी अर्चना को ही धर्म, माने, हृदय मे तुम्हारी भक्ति धारण करे, तुम्हारा मर्म समझे कि तुमसे निर्मित शरीर में तुम्हीं प्राण शक्ति हो, इसके हित अष्टादश सूत्र उन्हें आवश्यक वस्तुओं की चिन्ता से मुक्त करता है। बाल गोपाल का मंगल हो जिससे वे निर्द्वंद्व भाव से तुम्हारी जय पुकार सके।

बाहुते तुमि मा शक्ति हृदये तुमि मा भक्ति—हम बाहु शक्ति से तुम्हारी अर्चना करेंगे, तुम्हारी भक्ति से प्रेरित हो
९ तन-मन से नवम सूत्र पर चलकर हथकरघा उद्योग का विकास करें जिससे देशी वस्त्रों से मां तुम्हारा शृंगार हो सके।

तोमारई प्रतिमा गड़ि मंदिरे मंदिरे—मां, हर पूजन स्थल, देवालय में तुम्हीं तो विराजमान हो। एकादश सूत्र
११ संकल्प है कि तुम्हारी संतति के लिए सर्वत्र आवास-मंदिरों का निर्माण होगा जिससे अशरण लोग तुम्हारी छत्र छाया में बैठकर तुम्हारी वंदना कर सकें।

त्वंहि दुर्गा दशप्रहरण धारिणी—देश के दुश्मन तस्करों के विनाश के लिए तुम दश भुजा में शस्त्र लिए शक्ति रूपा
१३ दुर्गा सी प्रबल हो। त्रयोदश सूत्र का संकल्प है कि तुम्हारे इस रूप को देखकर तस्कर भूलुंठित होंगे, असुर
मर्दिनी, तुम्हारी बंदना।

कमला कमल दल विहारिणी—माँ, तुम्ही लक्ष्मी हो जो उद्योग में बसती है। पंचदश सूत्र उद्योग के उन्नयन का
१५ संकल्प लेते हुए तुम्हारे 'श्री' स्वरूप का वंदन करता है।

वाणी विद्या दायिनी नमामि त्वां—मां तुम विद्याकी देवी सरस्वती स्वरूपा भी हो। उन्नीसवां सूत्र विद्याकी साधना
१९ करने वाले विद्यार्थियों को पूजन की सामग्री पुस्तक-लेखनी आदि का घोष करता है जिससे वे विद्यामृत पान
करते हुए तुम्हें प्रणाम कर सकें।

सुजलां सुफलां मातरम्—मां, तुम्हारे बच्चे छात्र समुदाय निश्चित हो विद्याध्यन करें, दस्तकारियां विकसित हों,
सबको शरणालय मिले, दुष्टजनों का विनाश हो, उद्योगों का विकास हो, ज्ञान कला कौशल की बृद्धि हो, चतुर्दिक
समृद्धि बढ़े, तभी है करुणामयी सुजला माँ तुम्हारी वन्दना का सुफल हमें मिलेगा।

नमामि कमलां अमलां अतुलां—माँ, तुम्हें समृद्ध बनाना है अतः चतुर्दश सूत्र पूंजी निवेश को उदार बनाता है। इस
१४ उदारता का दुरूपयोग करने वाले को दण्डित करने का भी संकल्प करता है जिससे हमारी धन लक्ष्मी अम्लान
हो, अतुलित हो। माँ, वैभवशालिनी तुम्हारा वंदन।

श्यामलां—कृषि को उन्नत कर तुम्हारा हरित आवरण से शृंगार करना ही दूसरे सूत्र का अभिष्ट है।
२

सरलां सुस्मितां—माँ, तुम्हारे वक्ष पर दौड़ते वाहन अबाध गति से मार्ग तय करें जिससे तुम्हारे सरल स्मित की झांकी
१६ प्राप्त हो सके। इसके हित सोलहवां सूत्र परिवहन को गतिशील बनाता है।

भूषितां—माँ, वस्त्राभूषण से तुम्हारा शृंगार करने को हमने दसवां सूत्र संकल्प लिया है कि हम उत्तम वस्त्र बनाकर
१० तुम्हारी लज्जा को ढंक देंगे।

धरणी भरणी—हे पालन पोषणकर्ती माँ, बीसवें सूत्र में हमने संकल्प लिया है कि सबको रोजगार-धंधा मिलेगा और
२० वे प्रसन्न मन से तुम्हारी वन्दना कर सकेंगे।

मातरम्—कृषि से शस्य श्यामला माँ, सुगतिशील मां, वस्त्राभूषण आभूषित मां, संततिपालक पोषक माँ, हमारी वन्दना
स्वीकार करो।

वन्दे मातरम्—माँ, धरती माता, भूदेवी, भारत जननी, तुम्हारी संतति विंश-सूत्र संकल्प धारण कर तुम्हारी वंदना
करती है। हम पर प्रसन्न हो, हमे वर दो, सुख दो, अभय करो, निर्भय करो, मुक्त करो, हमारी वन्दना
स्वीकार करो।

(न्यूयार्क के) स्क्रिबनर्स ने न्यायोचित ढंग से उपन्यास की पृष्ठभूमि को शामिल करते हुए उदार व्याख्या की है, यह पृष्ठभूमि ज्ञात ऐतिहासिक युग की है भले ही उपन्यास का एक भी चरित्र अपने ऐतिहासिक प्रतिरूप से साम्य नहीं रखता।

(दी लन्दन टाइम्स—२८ दिसम्बर १९३७)



वन्दे मातरम् शताब्दी

—श्री वेंकट लाल ओझा

बंगला के महान उपन्यासकार बाबू बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रथम दो स्नातकों में से थे। वह डिप्टी कलक्टर जैसे बड़े पद पर पहुँच कर भी देशभक्ति से परिपूर्ण थे। उनका जन्म १८३८ में हुआ और निधन १८९४ में। उनके उपन्यास राजनैतिक दासता का विरोध तथा राष्ट्रीय गौरव व वीरता से परिपूर्ण थे। देश-गौरव की ललक उत्पन्न करने वाले थे। उनके पात्र चरित्र, साहस, शूरवीरता और त्याग की ज्योति के पूँज थे। वे पथ प्रदर्शक और पथ के शोधक थे। उनका पहला उपन्यास 'दुर्गेश नन्दिनी' ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर रचित था और १८६४ में प्रकाशित हुआ। १८७२ मे उन्होंने लोगों को आंग्ल प्रभाव से मुक्त करने तथा जनता से उस भाषा में बातचीत करना जिसे वे समझते हैं, कि पवित्र व पावन उद्देश्य से 'बंगदर्शन' पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। अगस्त १८७५ में उन्होंने वन्दे मातरम् गीत लिखा और बाद में १८८२ में उनके आनन्दमठ नामक उपन्यास में यह छपा।

छपते ही यह लोकमानस पर छा गया। विप्लवियों ने इसे अपना मूलमन्त्र बना लिया जिससे यह देशदेशान्तर में देशभक्तों के हृदय का हार बन गया। अंग्रेज सरकार वन्देमातरम् के जय घोष से उतनी डरती थी जितनी की साँड़ लाल रङ्ग से। क्रान्ति के अग्रदूत वासुदेव बलवन्त फडके ने १७ जनवरी १८८३ में अदन जेल की कालकोठरी में प्राण छोड़ते हुए वन्दे मातरम् का ही जयघोष किया था। चाफेकर बन्धुओं ने भी इसका अनुसरण किया। इस तरह क्रान्तिकारियों के कारण यह देश भक्तों का मन्त्र बन गया।

मदन लाल धींगरा को १७ अगस्त १९०९ में फाँसी दी गयी तो उसके विरोध में वीर सावरकर ने 'वन्दे मातरम्' नामक एक पत्रक प्रकाशित कर उसे श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए उसके कार्य का समर्थन किया। बंगभंग के आन्दोलन के समय तो इसके कारण लार्ड कर्जन के नाकों दम था। चाहे क्रान्तिकारियों का आन्दोलन हो या महात्मा गांधी का असहयोग आन्दोलन हो, वन्दे मातरम् बराबर गूँजता रहा। इतना ही नही, १८९६ की कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में (जो श्री मुहम्मद रहीमतुल्ला के सभापतित्व में हुआ था) में भी इसे एक प्रस्ताव द्वारा इस गीत को राष्ट्रीय गान के रूप में मान्य किया गया। तब से कांग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन और समारोहों का श्री गणेश इसके गान से ही होने लगा।

सारांश यह है कि महात्माजी के १९२० के सत्याग्रह, १९३० के नमक सत्याग्रह, विदेशी वस्त्रों की होली १९३२ का सत्याग्रह और अन्त में १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन, बम्बई नौ सेना के विद्रोह में भी वन्दे मातरम् की उल्लेखनीय भूमिका रही।

विदेशों में भी चाहे अमेरिका की गदर पार्टी हो या लन्दन की अभिनव भारत समिति, सभी ने वन्दे मातरम् से प्रभावित होकर अपने कर्तव्य के प्रति सजग हुए हैं। विश्व यात्री श्री रामनाथ विश्वास के कथनानुसार विदेशों बसे देशभक्तों को जब भारत आने की भावना तीव्र हो जाती तो वे वन्दे मातरम् का बोल कर ही अपने आवेग को शान्त करते थे। तेहरान, बगदाद आदि नगरों में उन्हें ऐसा ही अनुभव हुआ। १९३७ में तुर्की के अदान नामक नगर में भारतीय मस्जिद के बाहर तुर्की लिपि में वन्दे मातरम् लिखा हुआ था। जिसे छोटे-छोटे तुर्की बालक वन्दे मातरम् जोर जोर से पढ़कर चिल्लाते थे। मस्जिद की चोटी पर भारत की राष्ट्रीय पताका फहराती है और हर शुक्रवार को सुबह उस पताका की सफाई की जाती और जुम्मे की नमाज के समय वन्दे मातरम् के साथ फहराई जाती है, तब

कही नमाज पढ़ते है। अन्त में वे लिखते हैं 'भारतीय सीमा लाँघते ही प्रत्येक के मन में कुछ राष्ट्रीयता के भाव आप से आप जगने लगता है। उस वक्त केवल तब वन्दे मातरम् की आवश्यकता अनुभव होने लगती है।' जो यह सिद्ध करती है कि वन्दे मातरम् का प्रभाव देश से बढ़ कर विदेशों में भारतीय अधिक अनुभव करते हैं। उस समय उनका यह संबल बन सकता है।

जब १९३७ में कांग्रेस ने प्रान्तीय सत्ता ग्रहण की तब शपथविधि वन्दे मातरम् के बाद ही हुई। विधानसभाओं में भी कांग्रेसी सदस्यों ने वन्दे मातरम् ही सामूहिक रूप से गाया था। मद्रास विधानसभा के अध्यक्ष श्री साम्बूमर्तिने तो नित्य ही वन्दे मातरम् गान के बाद ही विधानसभा की कार्यवाही आरंभ करने निर्णय दिया। तब इसका विरोध अंग्रेज समर्थक कुछ विधायकों ने किया था। फिर भी यह काफी समय तक चालू रहा।

निजाम राज्य में उस्मानिया विस्वविद्यालय के छात्रों ने प्रातः वन्देमातरम् को अपनी प्रार्थना में सम्मिलित किया तो उन पर बडा अत्याचार किया गया। आन्दोलन ने इतना उग्ररूप धारण किया कि अन्त में उन छात्रों को विश्वविद्यालय से ही निकाल दिया गया। तब वे नागपुर विश्वविद्यालय मे अपनी शिक्षा को आगे चालू रखने के लिये गये। वहाँ भी उनका पीछा निजाम के विशेष दूतों के रूप मे श्री फरनाडिस ने किया और तत्कालीन कुलपति श्री केदार को इन विद्रोही छात्रों को प्रवेश न देने के लिए समझाने का प्रयत्न किया। इस आन्दोलन का नेता नेतृत्व करने वाले श्री रामचन्द्रराव का नाम ही श्री वन्दे मातरम् रामचन्द्रराव पड़ गया।

इन दिनों लोग अपनी चिट्ठी-पत्री में जय गोपाल, जय श्री कृष्ण आदि के स्थान पर वन्दे मातरम् लिखते थे। चाहे पत्र किसी भी भाषा में किसी को क्यों न लिखा जाय। यहाँ तक कि सरकार से पत्र लिखते समय भी इसका प्रयोग होता था। वाइसराय को भी पत्र मे वन्देमातरम् लिखा जाता था। इस तरह वन्दे मातरम् हमारी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक था। देश देशान्तर में इसको महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था।

इस तरह सतत् ७२ वर्ष तक वन्दे मातरम् हमारी राष्ट्रीयताका प्रतीक रहा। इसी का जय घोष करते हुए असंख्य क्रान्तिकारियों ने फांसी का आलिंगन किया। लाखों ने लाठियाँ खायी। असंख्य नर-नारी अंग्रेजों की गोलियों को अपने सीने पर झेल कर देश पर बलि हुए। कइयो पर इसी नारे के कारण मुकदमे चले और उन्हे लंबी-लम्बी सजाएँ हुई। अन्दमान की जेल में लोग गये। यातनाएं सही। क्षमा तो क्या खेद प्रकाश भी नहीं किया। इतना प्यारा और ओजस्वी मंत्र है वन्दे मातरम्।

१५ अगस्त १९४७ को देश स्वतंत्र होने के बाद विश्वकवि रविन्द्रनाथ ठाकुर के जनगण मन को प्रथम राष्ट्रीय गीत का स्थान मिला और वन्दे मातरम् को दूसरा। पहले सभी समारोहों में जनगण मन आरम्भ में और वन्दे मातरम् अन्त में गाया जाता था, पर धीरे धीरे अब इसको गाने की प्रथा कम होती जा रही है। कुछ काल के बाद भावी पीढ़ी इसे भूल जाय। क्योंकि स्वतंत्रता के बाद भारतीय स्वतंता संग्राम के कई इतिहास मूर्धन्य इतिहास वेताओं की पुस्तकें छपी हैं, उनमें वन्दे मातरम् का उल्लेख तक नहीं है। जबकि यह राष्ट्रीय एकता का, हमारी देश भक्ति का यह ज्वलंत प्रतीक रहा है।



वन्दे मातरम्

—श्री अमरेन्द्र लक्ष्मण गाडगिल—

वन्दे मातरम् ! मैं हाथ जोड़ता हूँ, पर किस माँ को नमस्कार करूँ ? 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' इस ऋषि प्रमाण से विचार करते मेरे मन में प्रश्न उठता है—किस माँ का मैं ध्यान करूँ ? मलय-कंबोज से काबुल कंदाहार तक और लंका से ल्हासा तक फैली प्राचीन मातृमूर्ति को ? कि ब्रह्मदेश से खैबर तक और सेतु से हिमालय के शिखर तक फैली ऐतिहासिक मातृभूमि को ? कि कुछ दशक पूर्व की अपनी प्रत्यक्ष देखी बंगभूमि से सिंधु तक सीमित हिंदुस्थान राष्ट्र भू को कि पश्चिम बंगाल से राजस्थान की सीमा तक वर्तमान 'भारत' की नयी भूमि को ?

हृद्गत

वन्दे मातरम्—'अर्थात् मां को नमस्कार ! या देवी सर्वभूतेषु मातृ रुपेण संस्थिता नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमोनमः । देवी महात्म्य मे इस प्रकार जगन्माता की स्तुति की गयी है । माता माने जननी, मात्र जन्मदात्री नहीं जगद्धात्री, जगत्निर्माण में निराकार परमब्रह्म की सगुण साकार शक्ति, आदि माया । यह हमारे भारतीय तत्वज्ञान की मान्यता है । जगन्माता का ही रूप है हमारी मातृभूमि—भारतमाता । और जन्म देने वाली माँ है अतः वे हमारी प्रिय हैं, पूजनीय हैं । हमारा आधुनिक राष्ट्रीय उद्घोष 'वन्देमातरम्' है । क्योंकि वही सहज है । हम 'वन्देभातरम्' नही, 'वन्देमातरम्' कहते हैं । क्योकि यही राष्ट्रीय मंत्र है ।) मातृ संस्कृति ही भारतीय संस्कृति है और प्रभु श्रीराम से रामकृष्ण परमहंस तक, भगवान श्री कृष्ण से छत्रपति शिवाजी तक यह संस्कृति विद्यमान है ।

उसी देश में बंकिम चन्द्र के 'वन्देमातरम्' ने भारतीय जनमानस को व्याप्त किया । जगत् मे इतने देश, इतने राष्ट्र हैं, राष्ट्र से उत्कट प्रेम करने वाले भी हैं पर किसी के कंठ से ऐसा निनाद नहीं उमगा, उमगा केवल यहाँ भारत भूमि में, क्योंकि मातृभक्ति यहाँ की संस्कृति है, यहाँ की प्रजा का स्थायी भाव है । माँ का हमारे हृदय में उच्च स्थान है ।

माँ की आज्ञा मानकर राम राज्य त्याग कर बनवास करने चले गये । मातृभूमि के हित प्राणप्रिय पुत्रों का बलिदान देने वाले गोविन्द सिंह इसी माँ के बेटे थे । जगन्माता को सर्वस्व मानने वाले और जीवन में उनकी अर्चना करने वाले परमहंस इसी भूमि मे जन्मे थे । माता हमारे शरीर के कण-कण में व्याप्त हैं—व्यवहारिक अर्थ में भी परमार्थिक अर्थ में भी । यही हमारा विश्वास है, यही हमारी प्रेरणा है, यही विश्वास का घोष है, 'वन्देमातरम्' और इसी प्रेरणा के कारण असंख्य मातृभूमि-भक्त मरने-मारने को जूझते रहे हैं ।

'वन्देमातरम्' ! केवल इन दो शब्दों में हमारा सारा इतिहास सिमटा है और यही हमारा प्रेरणा स्रोत है ।'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' "मेरी माँ भूमि है और मैं पृथ्वी माता का पुत्र हूँ" कितने हजारों वर्ष पूर्व अथर्ववेद ने यह उद्घोष किया था । "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" यह अजर अमर वाक्य श्रीमद्रामायण का है ।

वोरा एंड कम्पनी, ३ राउंड बिल्डिंग, मुंबई २ से प्रकाशित (१९७२) मराठी पुस्तक का सार संक्षेप ।

हमने वन्दे मातरम् महामंत्रका आत्मसात किया है। यह मंत्र हमारा नैसर्गिक मंत्र है, हमारा सहज उद्‌घोष है। इस वन्देमातरम् के लिए कितने लोगों ने कष्ट सहे, कितने वीरो ने प्राण त्यागे, इस मंत्र ने कितने तेजस्वी और पराक्रम भरे इतिहास रचे है। सबसे पहले बंगाल मे, फिर महाराष्ट्र में और शनैः-शनैः सारे देश मे यह लघु मंत्र-ज्योति भयंकर ज्वाला और तूफान बन गयी। आखिर ब्रिटिश सत्ता और पराधीनता इसमे जल कर खाक हो गयी। हमारी राष्ट्रीय प्रतिभा इस अग्नि से दिव्य होकर निकली। आनन्द मे डूबे 'वन्देमातरम्' का घोष करते कितने ही १४-१५ वर्ष के किशोर फाँसी चढ गये। इन्हे देशभक्ति किसने सिखायी थी? किस क्रांतिकारी समिति मे इन्हे प्रशिक्षण मिला था? किस दल की बैठक ने इन्हें यह सीख दी थी? माँ को प्रेम करना भी सिखाना पड़ता है क्या? मातृभक्ति की रक्षा के लिए क्या शिविर चलाने होते है? वह तो उपजती है, वह नैसर्गिक है। और भारतमाता या मातृभूमि से जो ऐसा नैसर्गिक प्रेम करता है, वही मातृभूमि का सुपुत्र है, वही सच्चा हिन्दी, सच्चा भारतीय है, वही इसका वारिस है। और वही इस राष्ट्र का स्वामी है। और किसी भी बने हुए जरखरीद, स्वार्थी, इस मातृभूमि को उपभोग की पाशविक दृष्टि से देखने वाले को इस पर रंचमात्र भी अधिकार नही है।

माता का गुणगान करने के हेतु शब्द अपर्याप्त हैं। इस भारतमाता का। अगणित लोगों की माँ का। थोड़े से ग्रन्थों में गुणगान नहीं हो सकता। फिर गुणगान मात्र से माँ की सेवा नही होती। माँ के लिए कर्तव्यों का भी पार नही है। अभी हमे राजनीतिक स्वतन्त्रता मात्र मिली है। अभी हम स्वावलम्बी नही हुए हैं। धनधान्य, शस्त्र, शास्त्र, शिक्षण, शासन सभी में कमी है, करोडों का कर्ज है, नाना-विधि वस्तुओ को विदेश से मंगाना पड़ता है, शास्त्र का ज्ञानामृत भी परायी अंजली से पीने की प्रवृत्ति वर्तमान है। यह सब क्यों है? इसका एक ही उत्तर है—सभी समस्याओं का एक ही कारण है कि हम 'वन्दे मातरम्' महामन्त्र को भूल गये है।

पर हम सुधरना चाहते है, हम जिस मार्ग पर चल चुके हैं, उसे छोड़कर पुनः योग्य श्रेयस्कर मार्ग ग्रहण करें। अपनी माँ की हमने कितनी प्रतारणा की है, कितनी हेठी की है, हमने उसके प्रति द्रोह किया है। हमें पुनः उनकी शरण में जाना होगा, उनके चरणों में जाकर मातृभक्ति पूर्वक सिर नवाना होगा तभी उसके संजीवक स्तन से हमे अवश्य ही पोषण मिलेगा। हम कैसे ही कुपुत्र क्यों न हो, पर उसके परम-पवित्र सानिध्य से हमारा कुपुत्रत्व लुप्त हो जायगा। हम सुपुत्र बनेंगे—माँ का, भारतमाता का अभिमान, मान ऊँचा उठायेंगे, पराक्रम और तेजस्वी अस्मिता से उनका मुखमण्डल फिर उजला करेंगे, अपनी कर्म कुशलता से निखिल मातृभक्ति पर लगा कलंक धो डालेंगे। उनके अन्तःकरण में पुत्रों के लिए अपार आत्मीयता, अटूट प्रेम है। उन्हें त्रैलोक्य जानता है। वे नित्य सनातन हैं। वे सदा गौरवान्वित रहें, प्रतिष्ठित हों। तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहे न रहें।

अतः एक ही साधन है—"वन्दे मातरम्"। माँ की शरण में जाओ, उसकी प्रतिष्ठा के लिए उठ खड़े हो। उनके गौरव के लिए अविरत कार्यरत हो। एक ही मन्त्र, एक ही तन्त्र, एक ही लक्ष्य है—'वन्दे मातरम्' 'वन्दे मातरम्' 'वन्दे मातरम्'।

स्फुल्लिंग

'वन्दे मातरम्' का जन्म कब हुआ इस सम्बन्ध में कुछ मतभेद हैं। 'बंगदर्शन' में सन् १८८० से८२ तक **'आनन्द मठ'** धारावाहिक रूप में छपा। पर वास्तविक गीत १८७५ में लिखा जा चुका था ऐसी सूचना उपलब्ध है! प्रेरणा के क्षण में रचना के बाद यह उपन्यास में शामिल कर लिया गया और इसके बीच पाँच वर्ष का अन्तराल है।

बँकिम चन्द्र ने १८८० के मध्य में आनन्दमठ लिखना शुरू किया। नवीन चन्द्र सेन को लिखे पत्र (१५ जुलाई १८८०) में इसका उल्लेख है। बँकिमचन्द्र का लेखन १८७२ से ही प्रसिद्ध हो चला था। बँकिम चन्द्र चटर्जी का जन्म २६ जून १८३८ को बंगाल के चौबीस परगना स्थित कांटालपाड़ा ग्राम में हुआ। यहीं उनके अन्तःकरण में स्वदेश प्रेम और स्वाभिमान वृत्ति ने जड़ जमायी। जनमानस में स्वतन्त्रता की लालसा पुनः उत्पन्न कराने हेतु उन्होंने लिखना शुरू किया।

१८५७ के स्वातन्त्र्य समर में बंगाल शामिल नहीं था। उत्तर हिन्दुस्तान में क्रांति की लपट में जो प्रत्यक्ष विरोध का स्वर उठा था, उसका उठना उस समय बंगाल मे सम्भव नही था तथापि स्वतन्त्रता की उर्मि बँगाल तक पहुँची लेकिन हुंकार बंकिम चन्द्र की लेखनी से उठी थी। वे काली के, देवी के उपासक थे। उन्होने जिस सहजभाव से मातृभक्ति का रूप प्रगट किया उसमें आश्चर्य मानने की कोई बात नहीं। इससे पूर्व की अपनी पुस्तक 'कमलाकांतेर दफ्तर' में बँकिम चन्द्र ने आरम्भ मे ही माँ को चर्चा की है, इस ग्रन्थ में भारत माता की पूर्वप्रतिष्ठा पुन: प्राप्त कराने का उल्लेख है। साक्षात् जगन्माता की प्रार्थना का गीत बँकिम चन्द्र के अन्त:करण मे देश की परतन्त्रता से मुक्त कराने की भावना से ओतप्रोत है 'जय जय जय जय जगद्धात्री। नमामी शिरसादेवी वंधनोऽस्तु विमीचित:।' यही भारतमाता को बन्धन मुक्त करने का सूत्र आनन्द मठ में वर्तमान है

बंकिम चन्द्र का युग है १८३८ से १८९४ तक। 'आनन्द मठ' का प्रकाशन १८८० से १८८२ के बीच पूर्ण हुआ। इसी युग में क्रान्तिकारी वासुदेव बलवन्त फड़के का तेजस्वी आत्मवृत्त सन् १८८० (८ फरवरी) में बंगला भाषा में अनूदित होकर छपा। बकिम चन्द्र वासुदेव बलवन्त फड़के के समकालीन थे। अत. वासुदेव वलवन्त के क्रान्तिकारी कर्तृत्व की छाप बकिम चन्द्र के मन पर पड़ी हो तो कोई आश्चर्य नही। उनके उपन्यास आनन्द मठ का एक ऐतिहासिक सूत्र भी है, १७७२ के मध्य बगाल में संन्यासी लोगो द्वारा मुसलमान और अंग्रेजों के जुल्मों के विरुद्ध शस्त्र उठाना। बंकिम चन्द्र के पुस्तक मे इसी विषय को उठाया है, पर वास्तव में १८७९ मे महाराष्ट्र मे फड़के के प्रवल विद्रोह की छाप आनन्द मठ पर सहज ही पड़ी होगी। 'आनन्द मठ की घटना और फड़के इतिहास में साम्य है, और फडके द्वारा आचारित युद्ध से ''आनन्द मठ' को प्रेरणा मिली हो, यह सहज शक्य है' ऐसा डा० विमान बिहारी मजुमदार का निश्कर्ष है।

''आनन्द मठ'' मे लिखे समर्पण में बंकिम चन्द्र ने मातृभक्ति को प्रधान्यता दी है। वहाँ उद्धृत श्रीमद्भागवत-गीता श्लोक भक्तियोग से संबंधित है, उस भक्ति से लेखक का अभिप्राय है माता-जननी-जन्मभूमि। उसका मनोहारी चित्रण बंकिम बाबू ने दसवें परिच्छेद में बड़े सहज, पर प्रभावशाली ढंग से किया है। भवानन्द स्पष्टीकरण करते हुए कहता है ''यह देश का वर्णन है, दुर्गा देवी का नही। हमारी एक ही माता है जन्मभूमि, हमारी और कोई दूसरा माँ नहीं है, पिता-बहन-भाई-बच्चे घर-संसार कुछ नही। हमारी एक ही मां है, सुजला, सुफला, मलयज शीतला देशमाता-महाजननी 'भवानन्द मठ में महेन्द्र को दो मूर्तियों के दर्शन कराता है। एक सर्वाभरण भूषित, समृद्ध, सम्पन्न जगद्धात्री और दूसरी काली माता की। इन दो मूर्तियो की बाबत भवानन्द का समाधान जानने योग्य है। वह बताता है ''जगद्धात्री का, महाजननी का यह पूर्व स्वरूप है, सर्वस्व अपहरण हृदय पर सहन कर यह नग्नरूप हमारी काली माता है'' भारतमाता की भक्ति ही बंकिम चन्द्र को अभिप्रेत थी यह इससे स्पष्ट है।

सूचना

''वन्देमातरम्'' गीत की रचना कैसे हुई, इस बाबत दो-तीन प्रकार की कथाएँ प्रचलित हैं। एक कथा के अनुसार कलकत्ता के कांटालपाड़ा जाते हुए रेल से उन्होंने जन्मभूमि का जो नैसर्गिक सौंदर्य देखा उसी से प्रेरित हो यह गीत लिखा। दूसरी कथा के अनुसार कविता का कारण उनकी कन्या थी। उसी के आग्रह पर उन्होंने यह गीत लिखा था। तीसरी मान्यता के अनुसार बंकिम को निद्रा में इस गीत का साक्षात हुआ और वे स्वप्न देखते हुए जो बोल रहे थे, वह उनके भाँजे ने लिख लिया।

कुछ लोगों के मतानुसार ''वन्देमातरम्'' महान क्रान्तिकारी गीत बन जायगा, इसकी प्रारम्भ में बंकिम चन्द्र को कल्पना भी नही थी। परन्तु यह पूर्णत: सत्य नही है, ऐसा स्वयं बंकिम चन्द्र के उद्गारों से स्पष्ट होता है। उनके कुछ विद्वान मित्रों को गीत पसन्द नही आया था, सस्कृत प्रचुर शब्द रचना पर उन्हे आपत्ति थी। मित्रों की

आलोचना की परवाह न करते हुए उन्होने उसे "आनन्द मठ" में समाविष्ट किया, क्योंकि इस गीत की भवितव्यिता पर उन्हे अटल विश्वास था। परन्तु 'आनन्दमठ' प्रकाशित होने पर कोई भी प्रतिक्रिया नही हुई, इससे स्फूर्ति ग्रहण कर विदेशी सत्ता के विरुद्ध कोई ज्वाला नही सुलगी, इससे उद्विग्न होकर उन्होने जो विचार प्रगट किया था वह भरपूर वाचाल है। बांधव मासिक के सपादक के नाम लिखे पत्र मे (६ जनवरी १८८३) वे लिखते है— **'मै 'आनन्दमठ' लिखकर क्या कर सका ? हिन्दुस्तान के लालची और स्वार्थी लोगों की उन्नति की आशा नहीं है। 'वन्दे मातरम्' से ज्यादा वे 'वन्दे उदरम्' पसन्द करते हैं'** इस गीत के बारे मे उन्होने कहा है, **'मेरी सारी कृतियाँ गंगा मे डुबा दो तो कोई हानि न होगी, परन्तु यह एक शाश्वत महान् गीत बचा रहेगा तो देश के हृदय में मैं जीता रहूँगा।** एक बार उन्होने अपनी पुत्री से कहा था—**"एक दिन ऐसा आयेगा कि बंगभूमि इस गीत को सुनकर नाचने लगेगी। एक बंगाल क्या सारा हिन्दुस्तान इस गीत से प्रेरणा ग्रहण करेगा। सारा देश एक सुर से यह गीत गाने लगेगा।'**

जब आनन्दमठ उपन्यास लिखा गया उस समय बँकिमचन्द्र सरकारी नौकरी करते थे। सरकारमे उनके कामका आदर था। 'आनन्द मठ' का प्रकाशन सरकार को रुचा नहीं। अतः बँकिम चन्द्र की सरकारी नौकरी के संदर्भ में "यह काम सरकार को पसन्द नही है" ऐसी सूचना देने का गुप्त निर्णय लिया गया, परन्तु बंकिम चन्द्र की कार्यकुशलता देखते हुए उन्हे ऐसी चेतावनी देना ठीक होगा क्या ? प्रस्तुत ग्रन्थ में उन्होने संतानों का जो उल्लेख किया है वह बहुत अंशो मे ऐतिहासिक कागज पत्रो से लिया गया है, वह केवल इतिहास-कथन मात्र है उनसे कहा गया कि वे ऐसा सिद्ध करें। इसकी उन्हे सुविधा दी गयी। बँकिम ने इसे सिद्ध कर दिया। 'इंडियन मिरर' तथा सरकारी अंग्रेजी दैनिकों ने इस उपन्यास का अभिप्राय स्पष्ट करने के लिए बहुत कुछ लिखा। अंत में 'आनन्द मठ' संन्यासी विद्रोह का इतिहास मात्र है, ऐसा मानकर सरकार ने उनके विरुद्ध कार्यवाही नहीं की।

बंकिम चन्द्र की बाबत एक मजेदार प्रसग उल्लेखनीय है। यह घटना स्वतंत्रता के युग की है। सन् १९७० में दो विशेष महानुभाओं ने बंकिम चन्द्र चटर्जी के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने की सरकार से मांग की थी। गृहमंत्री ने लोक सभा को यह सूचना देते हुए सभासदो की हंसी के बीच बताया कि सम्मानित सभासदों ने १८९४ में दिवंगत हुए एक महान देशभक्त और उनके साहित्य के विरूद्ध 'कड़ी कारवाई' की मांग की है।

'आनन्द मठ' और विशेषतः उसका गीत दोनों ही क्रातिकारक बने। बंकिम चन्द्र के जीवन काल में १८८२ से १८९४ तक आनन्दमठ के पांच संस्करण हो गये। इस उपन्यास का विलक्षण प्रभाव हुआ। 'वन्दे मातरम्' इस हेतु स्फुलिंग बना। 'आनन्द मठ' के अग्निकुण्ड मे वह ऐसी चिनगारी था जिसके संसर्ग मात्र से हिन्दुस्तान के जनमानस में भरी देशभक्ति को आतिशबाजी के गोदाम में आग लग गयी और इसके लिये बारीसाल उद्रेक स्थल के रूप में उपयोगी सिद्ध हुआ।

उद्रेक स्थान

जैसे 'मारो फिरंगी को' के लिए मेरठ, 'चलो दिल्ली' के लिए कोहिमा, 'भारत छोड़ो' के लिए बम्बई, वैसे ही 'वन्दे मातरम्' के लिए स्वदेश के इतिहास में बारीसाल चिरस्मरणीय रहेगा।

बीसवी सदी के पहले दशक में बंगाल की स्थिति भयंकर विस्फोटक हो गयी थी। इस दशक में अनेक क्रांतिकारी तथा दूरगामी परिणाम कारक घटनाएँ हुई। बीसवी सदी के प्रारम्भ में भयंकर अकाल पड़ा। सन् १९०५ में कर्जन ने बंगाल के विभाजन की घोषणा की जिसका केवल बंगाल ही नहीं, सारे देश ने विरोध किया। स्वदेशी और बहिष्कार का शस्त्र रूप मे उपयोग हुआ। हिन्दुस्तान के विभाजन के लिए जिम्मेदार राष्ट्र विरोधी मुस्लिम लीग का जन्म १९०६ में हुआ। इसी वर्ष कलकत्ता कांग्रेस (२२सवां अधिवेशन) मैं दादाभाई नौरोजी ने 'स्वराज्य' की घोषणा की। १९०८

में तिलक को ६ वर्ष कारावास की सजा हुई। १६०६ में सशस्त्र क्रातिकारियो के क्रांति कार्यो का विलक्षण जोर बढा, इस वर्ष लन्दन में मदन लाल धींगरा ने कर्जन वायली का वध किया। इसी वर्ष नासिक में जैकसन को कान्हेरेने परलोक पठाया। १८६६ में कुख्यात कर्जन हिन्दुस्तान का वाइसराय बना। उसके सात वर्ष के कार्यकाल मे उसने हिन्दुस्तान की प्रजा को हिला डाला। १६०५ में उसने बंगाल प्रांत का विभाजन घोषित किया। संसार मे बहुत से देशों के विभाजन का इतिहास रक्तरंजित है, बंगाल का विभाजन इसका अपवाद नही था।

इस समय भारत में ब्रिटिश सत्ता की राजधानी कलकत्ता थी अतः बगाल विभाजन की दुष्ट घोषणा, १ सितम्बर १६०५ को कलकत्ता में ही हुई। विभाजन रद्द करने के लिए आन्दोलन शुरू हुआ और इसकी तीव्रता दिनों दिन बढ़ती ही गयी। राज्य परिषद का प्रांतीय अधिवेशन पूर्व बंगाल के बारीसाल मे करने का निश्चय हुआ। परन्तु इससे पहले सारा बंगाल एक ही नारे से निनादित था और वह नारा था 'वन्दे मातरम्'। यह बंगाल के विभाजन के पागलपन के भूत को उतारने का तो मानो मन्त्र ही था, बंगाल के देशभक्तों की आंतरिक और बाह्य-शक्ति का आवाहन करने वाला ईश्वरी निनाद था।

'वन्दे मातरम्' इन दो शब्दों से सारा बंगाल व्याप्त हो गया। इन दो शब्दों से अंग्रेजी नौकरशाही डोल उठी। २५ वर्ष पूर्व इसके जनक ने जो भविष्य वाणी की थी वह खरी उतरी—**'सारा बंगाल इस गीत से पागल होकर नाच उठेगा।'** यही हो रहा था। राजकीय वातावरण गरम हो गया। कर्जन की दमननीति ने उग्र रूप धारण किया। देश भक्तो के विश्वास का शब्द 'वन्दे मातरम्' कर्जनशाही की दृष्टि में राजद्रोह का प्रतीक बन गया। अत: पूर्व बंगाल में कर्जन के चेले ले० गवर्नर फुलर ने कानूनन वन्दे मातरम् पर प्रतिबन्ध लगाया और इस कारण देशभक्तों ने 'बंदी विरोधी' समिति की स्थापना की। बाबू सुरेन्द्र नाथ बनर्जी इस कार्य के नेता थे, उन्होंने प्रतिकार हेतु संघटन किया और इसमें इतना यश अर्जित किया कि 'बंगाल के अनभिषक्त सम्राट' के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

बारीसाल

बारीसाल कोई बड़ा शहर नही है, पर स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन के कारण उस नगर ने बड़ी ख्याति पायी थी। पूर्व बंगाल में स्वातन्त्र्य आन्दोलन का वह एक गढ़ था। अश्विनी कुमार दत्त स्थानीय नेता थे, उन्होंने ब्रजमोहन इंस्टीट्यूट की सहायता से बारीसाल में नवयुवक विद्यार्थियो का सबल सघटन तैयार किया था। यही प्रांतीय अधिवेशन होना था। शनिवार १४ अप्रैल १६०६ का दिन तय था। बड़ी सफलता से तैयारियाँ पूरी हो चुकी थी। बंगाल के कोने-कोने से 'वन्दे मातरम्' के नारे लगाते देश भक्तों के झुण्ड के झुण्ड आने लगे थे। समिति के अधिकतर सदस्य 'वन्दे मातरम्' पर प्रतिबन्ध की सरकारी आज्ञा के विरुद्ध थे।

'वन्दे मातरम्' पर बन्दी लगते ही यह बंगाल भर मे सर्वव्यापी हो गया था। सभा-सम्मेलनो में इसका नारा लगता था, अखबारों मे भी इसका समाचार छपता था। लोगो ने वन्दे मातरम् लिखे बिल्ले लगाने शुरू कर दिये थे। इससे चिढ़कर साम्राज्य शाही के अत्याचार बढ़े थे और इसी परिमाण में प्रतिकार भी बढ़े थे। ऐसी परिस्थिति में बारीसाल अधिवेशन शांतिपूर्वक सम्पन्न नहीं होगा, अग्रेजी नौकरशाही उसे सफल नही होने देगी, इसका आभास दूरदर्शी नेताओं को था। मैजिस्ट्रेट इमर्सन ने अधिवेशन के नियन्त्रण हेतु आदेश निकाला कि जुलूस या सार्वजनिक स्थान पर 'वन्दे मातरम्' का कोई नारा नही लगायेगा। दमनशाही ने पहले से ही तैयारी कर ली थी। ६०० गुरखा सिपाहियों की पलटन बारीसाल मे आकर ठहरी थी। ऐसी स्थिति मे अधिवेशन के संयोजकों ने जिला मजिस्ट्रेट को वचन दिया था कि **"हम प्रतिनिधियों के स्वागत में 'वन्दे मातरम्' का घोष नहीं करेंगे।"** जैसे भी हो अधिवेशन आरम्भ होने से पहले उस पर प्रतिबन्ध न लगे, यही संयोजको की इच्छा थी।

एक दिन पूर्व १३ अप्रैल को अधिवेशन के प्रेरक और तत्कालीन बंगाल के सर्वमान्य नेता बाबू सुरेन्द्र नाथ बैनर्जी ढाका से जहाज द्वारा बारीसाल पहुँचे। कलकत्ता आदि अनेक स्थानो से सैकडों प्रतिनिधि जल-मार्ग से बारीसाल पहुँचे। तब तक शाम हो चुकी थी। परन्तु बाहर से आये प्रतिनिधि अपनी नौकाओ मे ही बैठे रहे। वे उतरने को तैयार न थे। इसका कारण भी ऐसा ही था और इस बाबत सुरेन्द्र बाबू का मत जानने के लिए वे प्रतीक्षा रत थे। स्थानीय नेताओं ने सुरेन्द्र बाबू से भेंट की, उन्हें वस्तु स्थिति समझायी। "वन्दे मातरम्" बिना अधिवेशन का अर्थ था झण्डा बिना युद्ध। कोई भी सलाह मानने को तैयार न था। अमृत बाजार पत्रिका के सम्पादक मोतीलाल घोष ने तो यहाँ तक कह दिया "अच्छा है कि मेरी गरदन उड़ा दी जाय, पर मैं तो वन्दे मातरम् कहूँगा ही।" अधिकतर प्रतिनिधि इसी मत के थे।

परन्तु सुरेन्द्र बाबू ने मार्ग निकाला। वास्तविक प्रतिबन्ध लगाने वाली मूल सरकारी आज्ञा कानूनन ठीक नही है यह विधिज्ञों का मत था, पर स्थानीय मण्डली ने अधिकारियों को जो वचन दिया था उसका क्या करना? आखिर इसका भी समाधान निकला। स्थानीय समिति का वचन स्वागत समारम्भ तक ही सीमित था, बाकी समय में 'वन्दे मातरम्' घोष किया जा सकता है, ऐसा निश्चय हुआ। नाव से उतरकर प्रतिनिधि आवासो में गये।

अधिवेशन का दिन आया। प्रत्येक प्रतिनिधि ने अभिमान सहित अपनी छाती और कंधे पर 'वन्दे मातरम्' का बिल्ला लटकाया। कार्य-क्रम का प्रारम्भ जुलूस से होना था। यह जुलूस प्रतिनिधि आवास से अधिवेशन मण्डप तक जाने वाला था। मार्ग में तीन-तीन की कतार मे 'वन्दे मातरम्' की गर्जना करते चलना था। जुलूस में 'वन्दे मातरम्' अंकित बड़े-बड़े झण्डे भी जाने थे।

पर जुलूस निकलने ही नहीं देना है, यह पुलिस का पूर्व निश्चय था। निश्चय के अनुसार दो बजे जुलूस की तैयारी हुई। सुरेन्द्र बाबू जैसे मान्य नेता और अधिवेशन के अध्यक्ष बैरिस्टर अब्दुल रसूल (अपनी आंग्लपत्नी के साथ) आगे के हिस्से में थे। अभी जुलूस का आगे का भाग रास्ते पर भी नही पहुँचा था कि एकाएक पुलिस ने लाठी लेकर आक्रमण कर दिया।

यह हिन्दुस्तान के इतिहास में पहला लाठी चार्ज था। निःशस्त्र, निरपराध नागरिकों पर सहस्त्र रंग-रूप सिपाहियों द्वारा बेगुमान हमला करने की प्रथा उसी दिन से आरम्भ हुई। ब्रिटिश सरकार ने आगामी वर्षों में इस पर अमल करके कितने हजारों देश भक्त नागरिको (जिनमे स्त्रियाँ और बच्चे भी थे) के सिर फोड़े, इसकी गिनती ही नहीं है।

बारीसाल अधिवेशन और जुलूस मे उपस्थित थे श्री मोतीलाल घोष, तरुण नेता विपिनचन्द्र पाल, अरविन्द घोष और अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति। पुलिस की निर्मम मार से कोई भी नहीं बचा। उनके शरीर पर लगे वन्दे मातरम् पदक नोच कर फेंक दिये गये, पर रक्त बहते अंग से वे वन्दे मातरम् घोष करते ही रहे। मारने वाले निर्दय हाथ थक गये, पर देशभक्तों के हृदय से निकलती मातृभक्ति की हुँकार थमी नही।

सुरेन्द्रनाथ को जिला मैजिस्ट्रेट इमर्सन ने जुलूस में भाग लेने और अदालत का अपमान करने के अपराध में दो-दो सौ रुपये के दो जुर्मानों की सजा दी। दण्ड भरकर वे अधिवेशन में पहुँचे तो 'वन्दे मातरम्' का गगनभेदी नाद दीर्घकाल तक होता रहा।

दूसरे दिन अधिवेशन का कार्य आरम्भ होते ही एक पुलिस अधिकारी मिस्टर कैम्प ने मंच पर आकर सभा-बन्दी की आज्ञा अध्यक्ष को दी। साथ ही यह भी आज्ञा दी कि बाहर निकल कर कोई भी 'वन्दे मातरम्' नारा नहीं लगायेगा। दफा १४४ लगा देने की सूचना भी दी गयी और सभा गैरकानूनी घोषित कर दी गयी। बारीसाल का ऐतिहासिक अधिवेशन अधूरा ही समाप्त हो गया, पर इस अधिवेशन ने देश को जगाने का महान कार्य पूरा कर लिया था। इस स्फुलिंग से विस्फोट होने के उद्रेक स्थल के रूप में बारीसाल हिन्दुस्तान के इतिहास में अमर रहेगा।

विस्फोट

बारीसाल के जुलूस पर हिंस्र हमले और अधिवेशन पर प्रतिबन्ध की जो प्रतिक्रिया हुई, वह वास्तव में अपूर्व थी। बारीसाल में दबाने के फलस्वरूप 'वन्दे मातरम्' का देश की विस्फोटक परिस्थिति पर जो प्रभाव हुआ, उससे भयंकर विस्फोट हो गया। आनन्द बाजार पत्रिका ने १६ अप्रैल १६०६ के अंक में लिखा **''यह भंयकर लाठी चार्ज देशभर के लोगों को भड़काने वाला है। आगे बारीसाल की पुनरावृत्ति होने पर लोग प्राणों की परवाह नहीं करेंगे।''** टाइम्स ऑफ इंडिया जैसे सरकारी मान्यता प्राप्त पत्र ने २८ अप्रैल १६०६ को लिखा **''बारीसाल की घटना से देशभर में मुक्ति आन्दोलन पर व्यापक प्रभाव होगा। पुलिस के अत्याचार के फलस्वरूप केवल बंगाल ही नहीं सारा राष्ट्र जाग उठा है।''**

सरकारने निर्णय में भूल की, बारीसाल में सरकारी अधिकारियों की ज्यादती ने इस स्वतंत्रता आन्दोलन का उपकार किया। वास्तविक परिस्थिति ऐसी थी कि वन्दे मातरम् की बंदी आज्ञा का कोई तर्कसंगत कारण नहीं था। कर्जन त्यागपत्र देकर स्वदेश लौट गया और उसके स्थान पर मिटो वाइसराय होकर आया। इंगलैड में लिबरल दल की सरकार सत्तारूढ़ हुई जो भारतीय राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अधिक अनुकूल थी।

बारीसाल प्रकरणपर ब्रिटिश पार्लमेंट में चर्चा हुई, पुलिस अत्याचार का खुलासा माँगा गया। इसके फलस्वरूप नये वाइसराय को अत्याचारी कार्यों से अलिप्त रहने की सूचना दी गयी। 'वन्दे मातरम्' के सम्बन्ध में स्वयं मिंटों का मत था कि बंदी आज्ञा का कोई तुक नही था, 'वन्दे मातरम्' पुकारने से कोई अनर्थ नही होना था। उल्टे बंदी आज्ञा से सरकार की अधिक हानि हुई। नये भारत मंत्री मार्ले ने इसी से निश्चय किया कि ऐसी नीति अपनाओ जिससे किसी भी प्रकार हिन्दुस्तान में ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध असंतोष न भड़के। इमी दृष्टि से मिंटों के सहकार से उसने सुधार आरम्भ किये और १६०६ मे इंडियन कौसिल्स एक्ट द्वारा मार्ले-मिंटो रिफार्म पेश किये गये।

व्यापक प्रभाव

पर इधर वन्देमातरम् ने सारे देश पर जादुई प्रभाव डाला था। वन्दे मातरम् ने बंगवासियों के मन को तो पहले ही पकड़ लिया था। ७ अगस्त १६०५ को श्री अरविन्द ने कहा **'कर्जनशाही की क्रूर दमन नीति का सटीक उत्तर देने के लिए बंगाल ने कमर कस ली है।'** वंग भंग के विरुद्ध स्थान स्थान पर निषेध सभाएं होने लगी। कलकत्ता के कालेज स्ववायर में एक सभा में हजारों विद्यार्थियों ने भाग लिया। सभी वर्ग के विद्यार्थी जमा थे, वातावरण परदेसी सत्ता के विरुद्ध भावना से भरा था और ऐसे समय में किसी ने सहसा घोषणा की 'वन्दे मातरम्'। अरविन्द लिखते है **बत्तीस वर्ष पूर्व बंकिम ने यह गीत लिखा था पर तब इसे थोड़े ही लोगों ने सुना। पर दीर्घकालीन निद्रा से एका एक जाग उठे बंगवासी उस क्षण सत्य की शोध में रत थे तभी किसी दिव्य क्षण में कहीं से किसी ने 'वन्देमातरम्' का नारा लगाया और आज ७ अगस्त १६०५ के दिन असंख्य कंठों से राष्ट्रीय मंत्र मुखरित हुआ।'**

कालेज स्क्वायर के टाउनहाल से विद्यार्थियों का विशाल जुलूस निकला जो कलकत्ता के प्रमुख भागों से 'वन्दे मातरम्' का जयनाद करता चल रहा था। उसी वर्ष कलकत्ता मे 'वन्दे मातरम् भिक्षु सम्प्रदाय' की स्थापना हुई (१३अक्टूबर १६०५)। इसका उद्देश्य था 'वन्देमातरम्' की सहायता से राष्ट्रीयता को उभार कर जनता को जागृत करना। इस संस्था के उत्साही सदस्य हर रविवार को 'वन्दे मातरम्' गीत गाते 'वन्दे मातरम्' का उद्घोष करते रास्तों पर प्रभात फेरी निकालते। इसके अध्यक्ष थे मन्मथनाथ मित्र, मंत्री थे सुरेशचन्द्र समाजपति और कोषाध्क्ष थे अमृत लाल मित्र बहादुर।

पर 'वन्देमातरम्' केवल बंगाल तक या एक सम्प्रदाय या संस्था विशेष तक सीमित नही रहा। वह देश भर मे देशभक्तों की स्वतंत्रता की ढाल का प्रतीक बन गया। क्रांतिकारी हो या अहिंसात्मक आन्दोलन, सभी के हृदय में इसका अचल स्थान था।

वन्देमातरम् दैनिक

बंगाल में ६ अगस्त १९०६ को 'वन्देमातरम्' नाम से एक अंग्रेजी दैनिक का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके संस्थापक थे बिपिनचन्द्र पाल, सुप्रसिद्ध 'लाल-बाल-पाल' त्रयी में एक। 'वन्देमातरम्' का कुछ मास बाद संपादन श्री अरविन्द घोष ने किया और इस पत्र ने स्वतंत्रता की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

'वन्देमातरम्' लोगों के हृदय में बस गया। राष्ट्रीय आन्दोलन का कोई भी कार्यक्रम 'वन्देमातरम्' के उद्घोष बिना पूर्ण हो ही नहीं सकता था। **कलकत्ता कांग्रेस में (२६ दिसम्बर १९०६) भगिनी निवेदिता ने जो राष्ट्रध्वज तैयार किया था उस पर देवनागरी लिपि में 'वन्देमातरम्' लिखा था।** इसी प्रकार मैडम कामा ने (१८ अगस्त १९०८) जर्मन के स्टुटगार्ट मे अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में हिन्दी राष्ट्रध्वज फहराया था, उसमें भी देवनागरी लिपि में 'वन्देमातरम्' अंकित था। 'वन्देमातरम्' नामक एक बंगला अखबार भी सन् १९०६ मे निकला था। शब्दद्वय में इतना अधिक आकर्षण था कि वह दीर्घकाल तक कायम रहा। १९२० मे लाला लाजपत राय ने दिल्ली से हिन्दी में, १९४१ में बम्बई से गुजराती मे 'वन्देमातरम्' अखबार निकाले।

दूरस्थ पंजाब में 'वन्देमातरम्' ने कितना प्रभाव उत्पन्न किया था, इसकी झलक लाहौर के 'ट्रिब्यून' (२५ नवम्बर १९०५) के इस वक्तव्य में मिल सकती है **'वहाँ (बंगाल में) लोगों ने 'वन्देमातरम्' जयघोष करना शुरू किया है। इन शब्दों का अर्थ है 'माता की वंदना'। इसमें कुछ भी भयंकर नहीं है—तब दमनशाही द्वारा 'वन्देमातरम्' कहने की मनाही क्यों ? अब तो पंजाब तक में सुशिक्षित लोग एक दूसरे से भेंट होने पर 'वन्देमातरम्' कहकर एक दूसरे का अभिवंदन करते हैं। इस प्रकार सारे हिन्दुस्तान में असंख्य मुखों से निरन्तर निकलते 'वन्देमातरम्' को बन्द करने के लिए सरकार को कितने सिपाहियों और अधिकारियों की आवश्यकता होगी ? पूर्व बंगाल की जनता के साथ सारे हिन्दुस्तान की सहानुभूति है।'**

देशभर में राष्ट्रीय स्वातंत्र्य आन्दोलन से सम्बन्धित प्रत्येक कार्यक्रम 'वन्दे मातरम्' गायन से आरम्भ होने लगे। अ०भा० कांग्रेस के अधिवेशन भी 'वन्दे मातरम्' गायन से ही शुरू होते थे। इन शब्दो को नया अर्थ प्राप्त हुआ था और ये भारत के स्वतन्त्रता संग्राम की युद्ध गर्जना बन गये थे। स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों को ये शब्द प्राणप्रिय हो गये थे। 'वन्दे मातरम्' कहकर वे सिर पर लाठियों की मार सहन करते थे। श्री अरविन्द ने ठीक ही कहा था **'एक दिन यह देशवासियों को राष्ट्रधर्म की दीक्षा देने का मन्त्र बनेगा।'**

'बंगभाषी' २८ अप्रैल १९०६—**'वन्दे मातरम्' की घोषणा देशभक्ति सूचक है, राजद्रोह की नहीं। इसमें स्वदेश प्रेम तो है पर विदेश से विद्वेष नहीं है। इसमें अधंकार नहीं प्रकाश है। यह विष नहीं अमृत है। कंटक विहीन कमल है, मृत्युंजय चैतन्य है।**

'युगांतर' (२ नवम्बर १९०७)—**'वन्दे मातरम्' की घोषणा से शत्रु का धैर्य छूट गया है, उसकी सामर्थ्य टूट गयी है।**

पूना में लोकमान्य के अँग्रेजी अखबार 'मराठा' ने **'शाउटिंग आफ वन्दे मातरम्'**, शीर्षक से २२ अप्रैल १९०६ एक तेजस्वी लेख छापा था।

बम्बई से प्रकाशित होने वाले अखबार **'बिहारी'** में सन् १६०६ में स्वा०वि०दा० सावरकर ने 'वन्दे मातरम्' शीर्षक से एक बड़ा लेख लिखा। चैत्र शुक्ल द्वितीया (शक्) १८२८ के अङ्क मे प्रकाशित इस लेख के अन्त में मातृभूमि विषयक एक अप्रतिम स्तोत्र दिया गया है जो मूल बङ्गाली गीत 'वन्दे मातरम्' से मिलता जुलता है।

'ए बुक आफ इन्डिया' (पृ० ६६) मे बँकिम चन्द्र के 'वन्दे मातरम्' के बारे में एक स्थान पर उल्लेख है कि **'शीघ्र ही यह सारे हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय आन्दोलन का 'मार्सेलिस' बन गया।'**

वीर सावरकर को जिन लेखों के कारण काला पानी का दण्ड मिला, उसमे सबसे महत्वपूर्ण लेख 'वन्दे मातरम्' है। 'हुतात्म्यानों' (ओ मार्टिर्स) शीर्षक से सावरकर द्वारा लन्दन में प्रकाशित जगत् प्रसिद्ध लेख का अंत 'वन्दे मातरम्' शब्द से ही हुआ है।

लन्दन में कैक्सटन सभा घर में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में 'बंग-भंग-दिन' मनाया गया था। इसमें बिपिन चन्द्र पाल ने भाषण किया था। इसका वृतांत लिखते हुए सावरकर बताते हैं—**'अरविन्द और तिलक के नाम पर (पालके भाषण में) तीस-चालीस मिनिट लगे, कारण यह कि हर नाम पर तालियाँ बजती तथा पन्द्रह मिनट तक वन्दे मातरम् के सतत् नारे लगते रहते थे। इसके बाद बिपिन बाबू ने जब राष्ट्रहित में अपार यातना सहते, देह की ममता का त्याग करने वाले युवकों का स्मरण किया तो हाल तालियों की गड़गड़ाहट से देर तक गूँजता रहा और उसमें केवल 'वन्दे मातरम्' ही एक ध्वनि सुन पड़ती थी।'**

शहीद मदन लाल धींगरा को फांसी की सजा मिलने पर उनका जवानी बयान 'आह्वान' (चैलेंज) डेलीन्यूज में प्रकाशित हुआ (१६ अगस्त १६०६) और इसके अंतिम शब्द हैं—'वन्दे मातरम्'।

१६०६ में नासिक में भी 'वन्दे मातरम्' का एक अध्याय खुला। देश में 'वन्दे मातरम्' पर लगा प्रतिबन्ध तोड़ने की घोषणा हुई, पर सरकारी अधिकारियों को यह अच्छी नहीं लगी थी। कितने ही स्थानो पर अधिकारी और पुलिस खोज बीन कर रहे थे पर 'वन्दे मातरम्' जैसे कहीं छुप गया था। नासिक के जिला मजिस्ट्रेट ने 'वन्दे मातरम् की घोषणा पर रोक लगा दी। अतः संघर्ष हुआ। पुलिस ने लोगों को पीटा। धर पकड़ हुई। वामन राव खरे, बाबा राव सावरकर तथा नौ छात्र पकड़े गये। उन पर मुकदमा चला और यह बहुत प्रसिद्ध हुआ, इसका नाम ही 'वन्दे मातरम्' काण्ड पड़ा।

यह सब मातृभूमि से प्रेम का उद्रेक था। पर इसका विस्तार इतना तीव्र और व्यापक था कि उसने विस्फोट का रूप धारण कर लिया और ब्रिटिश राज सत्ता कांप उठी। इस विस्फोटक महामन्त्र के उद्गाता कौन थे ?

उद्गाता

कुछ लोग विशिष्ट कार्य सम्पादनार्थ जन्म लेते हैं, वाल्तेयर रूसो के ग्रन्थों ने फ्रांस में राज्यक्रांति कर दी, मार्क्स के **'कैपिटल'** ने संसार को क्रांति की ओर उन्मुख किया, लोकमान्य का **'गीता रहस्य'** आधुनिक भारत की गीता बना। सावरकर के **'सत्तावन का स्वातन्त्र्य समर'** ने देश और विदेश में क्रांति की ज्वाला सुलगायी, चिपलूणकर की 'निबन्ध माला' ने आधुनिक महाराष्ट्र को देशभक्ति की दृष्टि प्रदान की। बंगाल में बंकिम चन्द्र चैटर्जी का जन्म ही मानो आधुनिक भारत को एक महान क्रांतिकारी मन्त्र देने के लिए हुआ।

बंकिम के बारे में श्री अरविन्द ने लिखा है—**'राष्ट्र को एक महान संजीवन संदेश की आवश्यकता थी, उस समय ईश्वर ने इस संदेश को शब्दरूप देने के लिए एक वाणी की योजना की।'**

सन् १८५७ का स्वातन्त्र्य समर समाप्त अवश्य हो गया था, पर उसका प्रभाव अमिट था। उसी वर्ष बंकिम चन्द्र ने शिक्षा पूर्ण की और नौकरी में लगे। सत्तावन के विद्रोह के दण्डस्वरूप ब्रिटिश शासन ने अनेक उपाय किये थे।

विद्रोह की आग ठण्डी हो चली थी। सत्तावन के प्रमुख सेनानी बहादुर शाह का ७ नवंबर १८६२ को रंगून मे निधन हो गया। अन्य नेता पहले ही दिवंगत हो चुके थे। ब्रिटिश सत्ता ने अभी आराम की सांस ली ही थी कि १८७६ के बीच महाराष्ट्र में वासुदेव बलवंत ने सशस्त्र क्रान्ति के निशान उभारे। उसी वर्ष पंजाब मे राम सिंह कूका उठा। उत्तर पूर्वी सीमान्त पर १८६० के सितम्बर मास में सेनापति टिकेन्द्रजित सिंग ने मणिपुर मे ब्रिटिश राज के विरुद्ध विद्रोह किया। १८६६-१६०० के बीच बिहार मे राँची के मुँडा लोगों ने ब्रिटिश सत्ता से टक्कर ली।

यह सब कहने का कारण यह कि सन् १८५७ के बाद हिन्दुस्तान ठंडा नही हो गया था, बल्कि ज्वालामुखीकी तरह अन्दर-अन्दर धधक रहा था। बंगाल में उन्नीसवी सदी के मध्य कुछ ऐसी परिस्थिति थी कि शासन ने अंग्रेजी सभ्यता की शराब पिलाकर लोगों को बहका दिया था, ऐसे समय में बंकिमचन्द्र के पिता ने एक अच्छा कार्य यह किया कि अपने पुत्र को **अंग्रेजी के साथ संस्कृत की भी शिक्षा प्रदान की,** अत. बंकिम के अन्तर में नये की जानकारी के साथ पुरातन का महत्व भी स्पष्ट बैठ गया था। प्राचीन और नवीन का सामञ्जस्य बैठा कर राष्ट्र का उन्नयन करने के लिए उन्होने एक नयी भाषा शैली का आविष्कार किया। बंकिम चन्द्र का सांस्कृतिक और धार्मिक ध्येय था परिपूर्ण मानव की कल्पना, देश के अतीत में पैर जमाकर खड़े भारतीय मन और प्राचीन आदर्श के प्रति प्रगाढ़ प्रेम का भावी जागृति के हेतु उन्होंने उपयोग किया। रवीन्द्र ने उनके प्रथम दर्शन के बाद कहा था—**'उनके मस्तक पर राजपुरुष के अदृश्य चिन्ह मुझे दिखे।'** उन्हे इनका साहित्य आम बंगीय साहित्य से अलग प्रतीत हुआ। **राष्ट्रीयता के भवन में उनके द्वारा निर्मित अंश अलग से स्पष्ट हैं।**

सन् ५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम के प्रति उनका दृष्टिकोण, उनकी इस इच्छा से स्पष्ट है कि वे लक्ष्मीबाई का जीवन चरित्र लिखना चाहते थे। बंकिम की ऋषि प्रज्ञा ने भारत माता को दुर्गा के रूप में देखा। यही शक्ति पालक और संहार कर्त्री है, यही उनकी मान्यता थी। 'कमलाकान्तेर दफ्तर' मे उन्होंने नायक में अपनी भावना स्थापित की है। राष्ट्र की दुर्गति देख कर उनके मन में उठा विषाद ही शब्द रूप में इस पुस्तक में व्यक्त हुआ है।

'वन्दे मातरम्' महामंत्र के उद्गाता थे बंकिम चन्द्र और उनके मंत्र का भाष्य करने वाले एक आचार्य ने उन्हें अजरामर बनाया। ये भाष्यकार थे—श्री अरविन्द !

भाष्यकार

'बंकिम बाबू ने कितने ही वर्ष पूर्व यह गीत लिखा था। पर तब कुछ ही लोगों ने उसे सुना था। परन्तु दीर्घ अन्धकार से अकस्मात् जागी जनता ने सत्य की शोध के लिए आकाश की ओर देखा तभी किसी दिव्य क्षण में कोई गा उठा 'वन्दे मातरम्'। मन्त्र मिला और एक ही दिन में आम जनता को देशभक्ति धर्म में दीक्षा मिली। माता का आविष्कार हुआ। और एक बार मातृ दर्शन होने पर लोगों को फिर विश्राम नहीं था—शांति नहीं थी—माता का मन्दिर पूर्ण रूप से बन न जाय, उसमें मातृमूर्ति की स्थापना कर के बलिदान दिये बिना उन्हें नींद नहीं थी'—श्री अरविन्द ने (१६०७) वन्दे मातरम् का भाष्य किया।

वाल्मीकि ने श्री राम को, कृष्ण द्वैपायन व्यास ने श्री कृष्ण को, रोमारोलां ने श्री रामकृष्ण को, अबट ने नेपोलियन को, बास्वेल ने जानसन को ख्याति प्रदान की। श्री अरविन्द ने इस शतक के प्रथम दशक मे बड़ी योग्यता से बंकिम चन्द्र के प्रति यही कार्य किया। उन्होंने बंकिम चन्द्र को ऋषि कहा, द्रष्टा कहकर सम्बोधित किया। इस महान गीत में कौन सी सुप्त शक्ति है, भविष्य में इस गीत से क्या चमत्कार होंगे, यह अरविन्द की भविष्य दृष्टि ने स्पष्ट देख लिया था। बंकिम को भारतमाता दुर्गा के **रूप में दिखी थीं और वन्दे मातरम् में श्री दुर्गा के उस दिव्य दर्शन का स्वरूप वर्णित है।**

'बंगाली साहित्याकाश में बंकिम ने ऊषाकाल के सूर्य का दर्शन कराया और उस उदय से बंगभूमि का हृदय कमल खिल गया।'' इन शब्दों में कविवर रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने बंकिम चन्द्र के कार्यो का मूल्यांकन किया है। **'उन्नीसवीं**

सदी में भारत के सबसे बड़े प्रज्ञावान साहित्यिक' ऐसा गौरव प्रदान करते हुए श्री अरविन्द ने कहा—**'बंकिम ने एक नयी भाषा नया साहित्य और नये राष्ट्र का निर्माण किया।'**

क्रान्तिकारी स्फुलिंग

'वन्दे मातरम्' गीत लिखा तो गया १८७५ में, पर देशवासियों पर इसका वास्तविक प्रभाव १९०५ में पड़ा। बंग-भंग विरोध की बेला मे स्वदेशी आन्दोलन के निमित्त यह क्रांतिकारक स्फुलिंग चेत उठा। उस समय यह भारतीय राष्ट्रवाद का पवित्र गीत माना गया, मातृभूमि की देवता रूप में पूजा करने का मंत्र बना। स्वदेश को मातृ-स्वरूप पहचान कर और इसी कल्पना से प्रेरित हो विपिन चंद्र पाल ने 'वन्देमातरम्' दैनिक पत्र निकाला। और स्वतः श्री अरविंद ने उसका पोषण कर उसका यह नाम सार्थक किया।

श्री अरविन्द ने बंकिम चन्द्र को **'भारतीय राष्ट्रवाद का सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व** बताया है। बंकिम चन्द्र की विशेषता यह है कि उन्होने विश्वशक्ति दुर्गा की भक्ति से सनातनी हिन्दुओं को जोड़ दिया, फिर देवता के व्यक्त, दृश्य रूप की सेवा को आधुनिक देशभक्ति से एक रूप बनाया। अतः उनका 'वन्दे मातरम्' शब्द एक साथ ही धार्मिक, राजनीतिक रूढ़िवादी और आधुनिक अर्थो में संदेश देने वाला है। उनकी साहित्यिक कृतियो को जोर्ण हिन्दू मूर्ति पूजा बताने वालों को अपनी दृष्टि दूर कर उनका 'कृष्ण चरित' पढ़ना चाहिए (१८८६) और धर्म तत्व (१८८८) ग्रन्थ का अवलोकन करना चाहिये। बंकिम के कृष्ण प्राचीन पौराणिक देवता नहीं, युग-युगों के पुरुषोत्तम तथा महामानव हैं। उनमे परस्पर भिन्न इकाइयों को संगठित कर एक राष्ट्रीय ढाँचे में ढालने की क्षमता है। बंकिम के कृष्ण राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं। पश्चिमी देशों से आये पदार्थवाद, देशभक्ति और मानव-धर्म के आधुनिक विचार प्रवाह को बंकिम ने आत्म-सात किया था। रूढ़ि से परे, बुद्धि गम्य आधुनिक विचार पोषित बंकिम के मन का काव्यात्मक उद्गार था वन्दे मातरम्! वास्तव में उनकी लेखनी से हिन्दुत्व का पुनर्जन्म हुआ और हिन्दुत्व ने देश को जीवन हेतु नयी प्राण वायु प्रदान की।

'देशभक्ति का व्यावहारिक स्वरूप है—स्वदेशी व्रत। वह राजनीतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक शस्त्र है। वन्दे मातरम् की सक्रिय स्थिति का अर्थ है स्वदेशी व्रत, ऐसा एक ग्रन्थकार ने कहा है और यह सच भी है।' (लीगेसी आफ लोकमान्य थियोडोर शे० पृ० ९६)।

बंकिम की सर्जन-शील कल्पना शक्ति से प्रसूत वन्देमातरम् की हुँकार से स्वदेशी की अभिनव कल्पना जागी। राष्ट्र भक्ति के हित प्रतिष्ठापित देवी मातृभूमि की उपासना के लिए लोगों ने इसे अंगीकार किया। केवल एक राष्ट्रीय गीत के रूप में माना जाने वाला 'वन्दे मातरम्' १९०५ के स्वदेशी आन्दोलन में राजकीय घोषणा के विरुद्ध रणगर्जना में बदला गया, एक अत्यंत अधः पतित राष्ट्र के उत्थान का साधन बन गया। कविता को क्रान्तिकारक अर्थ मिला तो वह शीघ्र ही राष्ट्रगान बन गयी।

सन् १८८५ से पूर्व ऐसा था कि देश के बुद्धिमान लोग ब्रिटिश राज्य को ईश्वरी कृपा का प्रसाद मानते थे। अंग्रेजों जैसे सुधरे और सयाने लोगों के हाथों इस देश का उद्धार होगा, ऐसी उनकी अवधारणा थी। परन्तु कर्जन ने उनकी सद्बुद्धि को ऐसा झटका दिया कि ब्रिटिश सत्ता का स्वागत करने वालों की आँख खुल गयी। अंग्रेजी निष्ठा से धन्यता मानने वाले कुछ महाभाग उनके चरणों पड़ने से होने वाले अरिष्ट की गम्भीरता पूर्वक चिन्ता करने लगे। १८८२ में आनन्द मठ मे गीत प्रकाशित हुआ। और सन् १९०५ में स्वदेशी आन्दोलन आरम्भ हुआ। इस बीच की २५ वर्ष की अवधि में हिन्द-ब्रिटिश सम्बन्धों में जमीन आसमान का फरक आ गया था। अपने अधिकारों की जानकारी होने पर स्वाभिमान जागृत हुआ था और लोगों के मन में अंग्रेज विरोधी भावना घर कर गयी थी। अतः १९०५ में

स्वदेशी आन्दोलन ने जो उग्र रूप धारण किया उसका वातावरण पिछले बीस-बाईस वर्ष में तैयार हुआ था। बंकिम जैसे लेखकों के साहित्य ने असन्तोष की आग सुलगा दी थी। बुद्धिमान नेतृवर्ग और उनके माध्यम से जन साधारण के मन मे नैतिक क्रान्ति की रचना हुई थी और उसे सक्रिय बनाने हेतु 'वन्दे मातरम्' को उच्च स्थान दिया गया था।

प्रथम राष्ट्रीय मुक्ति मन्त्र के रूप में 'वन्दे मातरम्' का सामूहिक उद्घोष ७ अगस्त १९०५ को कलकत्ता के टाऊनहाल में हुआ। इसका मन्त्ररूप में कैसे लाभ लिया जाय और शस्त्र के रूप में समर्थ और यशस्वी ढंग से कैसे इसका प्रयोग किया जाय यह प्रदर्शित करने का काम किया श्री अरविन्द ने अपने 'वन्दे मातरम्' अखबार के द्वारा—

"बंकिम चन्द्र ने हमें एक ऐसा साधन उपलब्ध करा दिया जिससे देश की जनता की आत्मा अभिव्यक्त हो सकी, स्वयं ही अपने को अपना आत्म रूप दिखा सकी। जहाँ उन्होंने हमारी भाषा की आवश्यकता पूर्ति की वहीं उनकी दूर दृष्टि ने राजकीय आवश्यकता भी पहिचानी—'आनन्द मठ' और 'देवी चौधुरानी' में प्रचारित सन्देश से निर्भर शक्ति और जोश का प्रादुर्भाव हुआ। बंकिम के लेखन का प्राण है—देश भक्ति का धर्म राष्ट्र धर्म। 'आनन्द मठ' ग्रन्थ ही उनकी कल्पना के रहस्य को जानने की कुंजी है। इसमें संगठित हिन्दुस्तान का राष्ट्रगीत महान गीत के रूप में, परिपूर्ण स्वरबद्ध आकार में प्रगट हुआ, इसने स्वदेशी बन्धुओं को राष्ट्र धर्म की दीक्षा देकर परतन्त्र से मुक्ति का मार्ग दिखा दिया। राष्ट्र के पुनरुत्थान और स्वतन्त्रता के मार्ग दर्शन से राष्ट्र में जो नव चेतना प्रगट हुई उसके स्फूर्ति दाता और राजनीतिक गुरू थे बंकिम चन्द्र।"

व्यास की भाँति अरविन्द ने 'वन्दे मातरम्' के इस वेदतुल्य वाक्यों की अनेक प्रकार की, अनेक ढंग से व्याख्या की।

"भारत के निर्माण का यथार्थ गौरव का निर्णय करने जब भावी पीढ़ी बैठेगी तो वह स्तुतिगान के पुष्पहार राज सत्ता के आसन पर विराजमान, भाषण बाज सुधारकों के कंठ में नही डालेगी, मन में सत्ता अपद प्राप्त करने के कोई इच्छा रक्खे बिना, सहज कर्तव्य भावना से मौन रहकर कार्य करने वाले, किसी भी प्रकार के प्रतिदान की अपेक्षा न करने वाले उस अत्युकृष्ट और वास्तविक मार्ग दर्शक दयालु बग पुरुष के प्रसन्न के कंठ मे ही अर्पित करेगी।" श्री अरविन्द के शब्द असामान्य अलौकिक सम्पन्न पुरुष के भविष्य की बाबत खरे उतरें। (१८९४)

अग्नि-काण्ड

"हिन्दुस्तान के असन्तोष की प्रचण्ड और बढती शक्ति को बाहर निकालने के लिए 'सेफ्टी वाल्व' के रूप में" सन् १८८५ में कांग्रेस का जन्म हुआ, ऐसा श्री अरविन्द का मत है। इसका अर्थ यह कि सारे हिन्दुस्तान में अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध असन्तोष की आग निरन्तर धधक रही थी, इस ज्वालामुखी को बगाल विवर मिला और 'वन्दे मातरम्' के रूप में उनका सन् १९०५ मे विस्फोट हो गया।

इस विस्फोट से भारत मे ब्रिटिश साम्राज्य का आसन डोल उठा, इसमें सन्देह नही। इसके साथ ही असंख्य भारतीय नागरिक और देशभक्त उसमें झोक दिये गये। बोल-चाल में वन्दे मातरम् युद्ध-घोषणा बन गया और इस युद्ध में उभय पक्ष की न्यूनाधिक हानि होना अपरिहार्य था।

सन् १९०५ में वन्दे मातरम् की प्रगट घोषणा हुई और धीरे-धीरे यह घोषणा युद्धोन्मत आवाहन बन गयी। सबने उसे पहचाना कि वह नवजागृत देशाभिमान का प्रगट रूप है। नवजात राष्ट्रवाद का वह विजय घोष बन गया। कलकत्ता के गली, रास्तों पर ही नही समूचे बंगाल की पगडण्डियों से यही निनाद उठने लगा। 'वन्दे मातरम्' में लोगो के अन्तर मे छिपा नाद उमड़ पडा। 'वन्दे मातरम' से स्फूर्ति पाकर सैकड़ों कवियों ने राष्ट्रीय गीत लिखे और

देशभर मे चेतना का निर्माण किया। सरकार द्वारा निषेध लगाने से पूर्व यह गीत देश के मन-अन्त:करण मे जमकर बैठ चुका था। 'वन्दे मातरम्' के उद्घोष बिना कोई सभा-सम्मेलन हो ही नही सकता था।

यह राष्ट्रीय उर्मि सरकार के लिये भयप्रद हो उठी। वह अपनी सत्ता का प्रदर्शन करे यह सहज ही था। लक्ष-लक्ष कंठ उच्च स्वर मे भारत मा का जयघोष कर उठे तो दमनकारी ब्रिटिश नौकरशाही अपनी समूची शस्त्रास्त्र शक्ति के साथ आगे आयी। संघर्ष आरम्भ हुआ। देश भर मे आग लग गयी। इस दमनशाही के प्रतिकार में हमारी सामर्थ्य का सरकार को दर्शन हुआ।

खुदीराम बोस ने किंगफोर्ड को मारने के उद्देश्य से बम फेका। इस कारण मुकदमा चला और उसे फासी की सजा मिली। ११ अगस्त १९०८ को प्रातःकाल गीता के श्लोक पढ़ते अट्ठारह वर्षीय खुदीराम को फासी दी गयी। दूसरे दिन इस अमर शहीद की प्रचण्ड शवयात्रा निकली। हजारो कंठों से 'वन्दे मातरम्' का जयघोष उठ रहा था। अन्त मे खुदीराम के निर्जीव शरीर को जब चिता पर रक्खा गया तो चिता मे अग्नि लगते ही पुन. असंख्य कंठो ने उच्च स्वर में पुकारा—'वन्दे मातरम्'–'वन्दे मातरम्'। खुदीराम सशस्त्र क्रान्तिकारी थे, जनता देश प्रेमी थी, दोनो ही को 'वन्दे मातरम्' से अपार प्रेम था।

काकोरी कांड में क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल को भी फाँसी की सजा मिली। फाँसी चढने से पूर्व उन्होंने सजल नेत्र से अपनी जन्मदात्री माता के दर्शन किये और १६ दिसम्बर १९२७ को वन्दे मातरम् का उद्घोष करके वे वधस्थल की ओर बढ गये।

चटगाँव शस्त्रागार डकैती की घटना क्रान्ति के इतिहास में अत्यन्त लोमहर्षक प्रसंग है। इसमें पन्द्रह से बीस वर्ष के नव युवक देश भक्तो और ब्रिटिश सरकार की शस्त्रास्त्र सज्जित सेना में एक छोटा सा युद्ध हुआ था। इस घटना के बाद बड़े पैमाने पर धर पकड़ हुई और कितने ही क्रान्तिकारियों से जेल भर गयी। चटगाँव शस्त्रागार पर हमले का नेतृत्व सूर्यसेन और अनन्त सिंह ने किया था। सूर्यसेन का नेतृत्व अलौकिक था। उन्होंने जिस प्रकार ब्रिटिश सेना का मुकाबला किया वह भारतीय क्रांति के इतिहास मे बेजोड़ है। चटगाँव शस्त्रागार लूटने के अभियोग मे कल्पना दत्त, तारकेश्वर और सूर्य सेन को फाँसी की सजा मिली, पर बाद मे कल्पना दत्त की सजा आजीवन कारावास में बदल दी गयी।

१९३४ की १२ फरवरी को चटगाँव कारागार ने एक अपूर्व दृश्य देखा। आधीरात गोरे सिपाही और पुलिस सूर्यसेन को उसकी कोठरी से निकाल कर वधस्थल की ओर ले जा रहे थे। जाते हुए एकाएक सूर्यसेन ने गगनभेदी गर्जना की—वन्दे मातरम्। यह रण गर्जना भारतमाताकी जयजयकार कान में पड़ते ही करागारके समस्त राजबंदियोंने एक स्वर से उनका साथ दिया। 'वन्दे मातरम्' से आकाश गूँज उठा। पुलिस का क्रोध भड़का। फांसी के तख्ते की ओर जाते मरण की सीमा तक पहुँचने से पूर्व वीर पुरुष पर पुलिस की लाठियाँ बरसने लगीं। सूर्य सेन को इतनी मार पडी, पर उसके मुख से 'वन्दे मातरम्' का उद्घोष रुका नहीं। उधर कारागार मे 'वंदे मातरम्' का नारा लगानेवाले राजबंदियों की भी अच्छी तरह पिटाई हुई। किंतु हर प्रहार के जवाब मे 'वंदे मातरम्' की गर्जना और तेज होती गयी। अगली सुबह सूर्यसेन को अचेतावस्था में ही फांसी दे दी गयी।

चौथी मद्रास पोस्टल डिफेन्स बैटरी के एक सेक्शन ब्रिटिश शासित हिंदी सेना की एक टुकड़ी ब्रिटिश के विरुद्ध आक्रमण करने की योजना बना रही थी, पर इस गुप्त योजना की सूचना वरिष्ठ अधिकारियों को मिल गयी। उस समय दूसरा महायुद्ध चालू था। सेना की पुलिस ने दस-बारह विद्रोहियो को १८ अप्रैल १९४३ को गिरफ्तार किया और सैनिक अदालत के सामने पेश किया। छः जुलाई और ५ अगस्त १९४३ को बंगलोर के सेंट एंड्रूज चर्च में इन नौ तरूण बंगाली अभियुक्तों को मृत्युदंड की सजा सुनायी गयी। इनके नाम थे।-'(१) मानकुमार बसु ठाकुर (उम्र २१ वर्ष),

(२) नंद कुमार डे (२५) (३) दुर्गादास राय चौधरी (२५) (४) निरंजन बरुआ (२३) (५) चितरंजन मुखर्जी (२४) (६) फणिभूषण चक्रवर्ती (२३) (७) सुनिल कुमार मुखर्जी (२२)(८)कालिपद ऐंच (२३)(९) बीरेन्द्र मोहन मुखर्जी (२१)। बाकी दो मे एक को उम्र कैद की और दूसरे को सात वर्ष के सख्त कारावास की सजा सुनायी गयी।

ये नौ तरुण फांसी देने के लिये मद्रास जेलमें लाये गये। इन नौ युवा सैनिकों द्वारा फांसी की ओर जाते समय प्रगट किया गया मनोधैर्य अतुलनीय था। फांसी से पूर्व वे एक दूसरे से गले मिले और मुक्त कंठ से मातृभूमि की जय जयकार की—'वन्दे मातरम्'। ये तरुण रणबांकुरे २७ सितंबर १९४३ को शहीद हो गये।

ऐसे सैकड़ों उदाहरण उपलब्ध है।

कलकत्ता में 'वन्देमातरम्' पर मुकदमा चला। न्यायालय में 'वन्देमातरम्' से सहानुभूति रखने वाले हजारो तरुण इकट्ठा होते और 'वन्देमातरम्' की गर्जना करते। वहीं का प्रबंध करने वाली पुलिस बेंत और लाठी चलाती। २६ अगस्त १९०७ को एक तेज तर्रार युवक उठा और पुलिस की ज्यादती सहन न कर सकने के कारण उसने जाकर एक ब्रिटिश सिपाही को जोर का थप्पड़ मारा। इस युवक का नाम था **सुशील कुमार सेन**। उसे पंद्रह कोड़ों की सजा मिली और सजा देने के लिये जब वह लाया गया तो हर कोड़े पर 'वन्दे मातरम्' कहता रहा। 'वन्दे मातरम्' के लिये कोड़े खाने वाले ऐसे युवक सारे देश में हुए। मागानगर मे हिदू महासभा ने निजामशाही के विरुद्ध संघर्ष छेडा तो एक युवक ने 'वन्दे मातरम्' का नारा लगाते प्राण त्याग दिये पर 'वन्दे मातरम् नही छोडा।

क्रांति की आग धधका कर 'वन्दे मातरम्' ने देश को क्या दिया, इसकी मीमांसा करते हुए माष्यकार अरविंद ने स्पष्ट किया है '**उसने हमें श्वान वृत्ति त्याग कर सिंह स्वभाव से लड़ने का तरीका सिखाया,** इस मंत्र के उद्गान से पूर्व **उस समय चालू राजनीतिक आंदोलन की पद्धति खोखली और निरर्थक सिद्ध हो चुकी थी।** 'वन्दे मातरम्' स्तवन में बंकिम चंन्द्र की "**कल्पित माता के कोटि कोटि हाथों ने तलवार धारण की थी, भिक्षा का कटोरा नहीं'**।

तब 'वन्दे मातरम्' के उद्घोष के बाद बंगाल में क्रांतिकारी संघटनों की और उसकी विस्फोटक लडाई के तूफान उठे यह सहज ही था। सेडीशन कमेटी ने लिखा है कि १९०६ से आरंभ कर पाँच वर्षों में समूचे देश में क्रांति की ५७ 'अत्याचारी' घटनाएँ हुई। इस कमेटी ने बंगाल की तत्कालीन परिस्थिति का वर्णन करते हुए जो कुछ लिखा है उससे देशभक्तों की मनः स्थिति कैसी थी इसकी अच्छी झलक मिलती है—**उन्होंने अनुशीलन समिति नामक एक संस्था की स्थापना की थी। इस संस्था का उद्देश्य संस्कृतिवर्द्धन और लोक शिक्षण ही था। इस समिति की एक शाखा कलकत्ता में और दूसरी ढाका में काम करती थी।** अपने कार्य **का विस्तार करने हेतु उन्होंने प्रांतभर में शाखाएँ बनायी। ढाका अनुशीलन समिति की एक समय में ५०० शाखाएँ थीं। इस समिति के अलावा उसी जैसे पर भिन्न प्रकार के संघ स्थापित हो रहे थे। तथापि राजद्रोह का प्रसार इन संघटनों का उद्देश्य था। अपने कार्य के अनुकूल वातावरण निर्माण करने हेतु साधन रूप अखबार, राष्ट्रगीत, पुस्तकें, गुप्तसभा, संस्था मंडल की स्थापना आदि कार्य हो रहे थे। कोने कोने में असंतोष पैदा करना ही इसका ध्येय था। जहाँ भी असंतोष को ऐतिहासिक नाम 'विद्रोह' मिला कि उसके स्वागत की तैयारी होती।"**

जो कुछ बंगाल में हो रहा था कमोबेश उसकी पुनरावृत्ति अन्य प्रांतों मे भी हो रही थी और इसकी प्रेरणा बंगभंग के समय बंगाल में प्रगटी ब्रिटिश विरोध की ज्वाला थी जो 'वन्दे मातरम्' मे सिमटी थी। यह अग्निज्वाला बढ़ी और इसे बुझाने के लिये ब्रिटिश नौकरशाही ने अपनी पूरी ताकत लगा दी' पर वे बुझा नही सके। **"इस अग्नि-ज्वाला में हम स्वयं जल कर राख हो जायेंगे" ऐसा भय राजसत्ता को सहज ही था।**

गीत

सन् १९०५ वाराणसी में कांग्रेस का इक्कीसवाँ अधिवेशन हुआ, नरम दल के नेता गोपालकृष्ण गोखले उसके अध्यक्ष थे। इन्हें सशस्त्र क्रांति का मार्ग ही नही स्वदेशी और बहिष्कार जैसे ब्रिटिश विरोधी कार्यक्रम की बात भी

पसंद नही थी । तो भी कार्यक्रम मे स्वदेशी आंदोलन और विदेशी वहिष्कार का समावेश हो ही गया था। बंगाल के विभाजन का विरोध का प्रस्ताव भी था।

इस अधिवेशन में प्रसिद्ध बंग कवियित्री एवं गायिका श्रीमती सरला देवी चौधुरानी भी उपस्थित थी। उनके मुख से 'वन्दे मातरम्' गीत सुनने की अभिलाषा कुछ प्रतिनिधियों ने प्रगट की। बंगाल मे 'वन्दे मातरम्' पर सरकारी निषेध था, पर संयुक्त-प्रांत में नहीं था और अधिवेशन संयुक्त-प्रांत के वाराणसी नगर में हो रहा था । इस गीत गाने की अनुमति देने का प्रश्न ही नहीं था फिर भी अध्यक्ष ने आज्ञा देने से इनकार कर दिया तो प्रतिनिधि भी अनुरोध से डिगने को तैयार नही हुए।

अन्त में गोखले ने कुछ अंश गाने की अनुमति प्रदान की, पर वह अमर गीत एक बार शुरू हुआ तो बीच में रुकता थोड़े ही। चौधुरानी ने पूरा 'वन्दे मातरम्' गाया और उसके पूरा होते ही 'वन्देमातरम्' का प्रतिनिधियों ने ऐसा प्रचण्ड घोष किया कि लगा कि मंडप उड़ जायेगा।

अधिवेशन में बाबू सुरेन्द्रनाथ का भाषण हुआ, उनके बाद विपिन चन्द्र पाल बोले। उस समय भी प्रतिनिधियों में श्रोताओं के कंठ से 'वन्दे मातरम्' की सतत गर्जना होती रही।

'ब्रिटिश सरकार को नही पसंद आयेगा' इस भय से नरम दल के लोग जनमानस के हृदय-मंदिर में सुप्रतिष्ठित 'वन्दे मातरम्' गीत पर आक्षेप करते रहे। सन् १९३७ में अक्टूबर मास में कलकत्ता में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक हुई। 'वन्दे मातरम्' राष्ट्रगीत बनने का पात्र है या नही इसकी जाँच के लिये कांग्रेस कार्यसमिति ने एक समिति नियुक्त की जिसमें रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मौलाना आजाद, जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस सदस्य थे। इस समिति ने कार्यकारिणी के निर्णय को सहमति प्रदान की।

संगीत

'वन्दे मातरम्' गीत १८९६ में पहली बार कलकत्ता कांग्रेस में कविवर रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने सार्वजनिक रूप से गया। इसकी स्वर रचना उनकी अपनी थी। पं० विष्णु दिगंबर द्वारा काफी राग में निबद्ध रचना को बहुत प्रसिद्धि मिली। काफी के अलावा अन्य कई रागों में यह गीत गाया गया है। इनके अलावा झिंझोटी राग में नये ढंग से इसे बैठा कर प्रस्तुति की थी मास्टर कृष्ण राव फुलंब्रीकर ने।

पं० जवाहर लाल नेहरू के यह कहने पर कि 'वन्देमातरम्' बैंड पर नही बज सकता, मा० कृष्ण राव ने शास्त्रीय ढंग से इस आशंका को जब निर्मूल सिद्ध कर दिया तो वन्दे मातरम् को 'जन-मन मन' के समकक्ष राष्ट्रगान का सम्मान मिला और मास्टर कृष्णराव तो "वन्दे मातरम् कृष्णराव" ही पुकारे जाने लगे।

अक्षयचन्द्र सरकार ने बंकिम बाबू संबंधी लेख में बताया है कि आनन्दमठ की रचना के समय क्षेत्रनाथ मुखोपाध्याय उनके सहयोगी डिप्टी कलेक्टर थे और दोनों ही आस-पास रहते थे। वे शाम को बंकिम बाबू के घर आते थे। क्षेत्र बाबू स्वरज्ञ भी थे। उन्होंने हारमोनियम पर गाकर इसे "मल्हार राग" मे बैठाया था। आनन्दमठ में गीत मल्हार राग में गाने का उल्लेख है।

काफी राग सार्वजनिक गायन प्रथम बार पं० विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी ने लाहौर कांग्रेस में किया था। आजकल आकाशवाणी से प्रसारित होने वाली रचना 'सारंग' राग में है।

मा० कृष्णराव 'वन्दे मातरम्' को केवल राग मे बैठाने का प्रयास नहीं कर रहे थे। एक संगीतज्ञ, स्वरशास्त्रज्ञ के नाते वे 'वन्दे मातरम्' को सबके गाने योग्य बनाना चाहते थे। उनकी चेष्टा थी कि आम आदमी भी इसे आसानी से गा सके। इस हेतु उन्होने कठिन परिश्रम किया और गीत की एक रचना तैयार की। विशिष्ट स्वरों में इस ढंग से यह गीत कोई भी गा सकता है, यह उन्होने सिद्ध कर दिया।

इसका पहला ध्वनि मुद्रण प्रभात फिल्म कंपनी में सन् १९३८ में व्ही० शांताराम ने किया । मा० कृष्णराव उस समय प्रभात में संगीत दिग्दर्शक थे । बैंड पर बैठाने का उद्योग भी मा० कृष्णराव ने बड़े यशस्वी ढंग से किया। उनका प्रयास था कि इस वादन पर पुलिस बराबर मार्च कर सके।

इसी समय दिल्ली मे राष्ट्रीय गीत के बाबत चर्चा चल रही थी । मा० कृष्णराव ने नेहरू जी को तार दिया **'राष्ट्रीय गीत की बाबत एक संगीतज्ञ की दृष्टि से किये विचार भी सुने जाँय'** पं० नेहरू की अनुमति मिलने पर दिल्ली जाकर उन्होंने अपनी रचना और बैंड पर निकाला वादन प्रत्यक्ष किया । साथ ही एक रिकार्डिंग कंपनी द्वारा तैयार की गयी ध्वनिमुद्रिका भी ले गये थे। दिल्ली मे बाबू राजेन्द्र प्रसाद, महावीर त्यागी, पं० नेहरू,वल्लभ भाई पटेल, दादा साहब मावलकर, सत्यनारायण सिह आदि काग्रेस के बड़े नेताओं ने इसे सुना और सराहा । एक बंगाली नेता ने तो कहा कि मा० कृष्ण राव की धुन बंगला धुन से भी ज्यादा अच्छी है ।

इसके बाद तत्कालीन सेनापति जनरल करिअप्पा ने इनके सहयोग से सैनिक बैंड पर इसे बैठाने का उपक्रम किया। इस हेतु गरणपत सिंह बैंड मास्टर ने बताया कि **'बैंड में बहुत अच्छी तरह से बैठता है'** । दिल्ली से वापस लौटने पर बंबई के पुलिस कमिश्नर भरुचा ने इनसे सहयोग किया और बैंड इंस्ट्रक्टर व कंडक्टर सी० आर० गार्डनर ने आठ दिन परिश्रम करके गीत को बैंड मे बैठा दिया । इसी समय गार्डनर इंगलैंड में बजाने गये । दोनों ही स्थानों पर बैंड पर अच्छा बैठा है, इस प्रकार की संस्तुति प्राप्त हुई । स्वयं गार्डनर जैसे इंगलैड के प्रसिद्ध संगीत दिग्दर्शक ने माना कि 'वन्दे मातरम्' गीत में बहुत गहराई (डेप्थ) है ।

मा० कृष्ण राव ने १९४९ में पुनः दिल्ली जाकर संसद भवन मे संविधान सभा के समक्ष अपनी तर्ज और बैंड वादन की अनुमति प्राप्त की । एक मिनिट पाँच सेकेंड मे उत्तम ढंग से बैण्ड पर 'वन्दे मातरम्' बजाया जा सकता है यह मास्टर कृष्ण राव ने सिद्ध कर दिया, प्रत्यक्ष गाकर भी दिखाया **'मास्टर जी आपने अच्छा काम किया'** पंडित नेहरू ने शाबाशी दी । संविधान सभा के मान्य सदस्यों ने करतल ध्वनि कर मा० कृष्णराव को गौरव प्रदान किया ।

सुप्रसिद्ध गायक दिलीप कुमार राय ने भी वन्दे मातरम् गीत की एक तर्ज बनाई। इस बाबत उन्होंने अपनी पुस्तक 'अमंग द ग्रेट' में जानकारी दी है। उन्होंने समूह गायन के लिए एक सरल तर्ज तैयार की थी। गांधी जी की पूर्व अनुमति प्राप्त करके २९ अक्टूबर १९४७ को दिल्ली में गांधी जी की प्रार्थना सभा मे उन्होंने अपनी तर्ज का गायन प्रस्तुत किया। इससे पूर्व सबेरे गांधी जी की राय प्राप्त करने हेतु उन्होंने यह गीत बिरला हाउस में भी गाया था।

तब प्रार्थना सभा में गांधी जी ने श्री राय की प्रशंसा की। उन्होंने कहा, **आज सबेरे श्री राय ने मेरे समक्ष प्रसिद्ध राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' और 'हिन्दोस्तां हमारा' अपनी स्वयं तैयार की हुई तर्ज में गाकर सुनाया। वे हमें अच्छे लगे पर इनमें पहले गीत (वन्दे मातरम्) की धुन बहुत अच्छी बनी है।'**

पंडित नेहरू ने कहा—**"वन्देमातरम् निःसंदेह भारत का प्रधान राष्ट्रगीत है, उसकी भव्य ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है, हमारी स्वतन्त्रता से वह सम्बद्ध है। उसका स्थान अप्रतिम है। दूसरा कोई भी गीत उसका स्थान नहीं ले सकता।"**

अन्त में २४ जवनरी १९५० को रात ११ बजे संविधान सभा की बैठक में अध्यक्ष बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने उठकर घोषणा की **"'जन-गण-मन' शब्दों पर तैयार गीत व संगीत भारत का राष्ट्रगीत है। इस गीत के शब्दों में आवश्यकता पड़ने पर परिवर्तन करने का सरकार को अधिकार होगा। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभाने वाले 'वन्दे मातरम्' को 'जन-गण-मन' के बराबर सम्मान दिया जायगा और इसकी उतनी ही प्रतिष्ठा की जायेगी। मेरा अनुमान है कि इससे सभासदों को सन्तोष होगा।" (डिबेट्स आफ द कांस्टिस्युयेंट असेंबली खंड १२— दिनांक—२४—१२—१९५०)**

वन्दे मातरम् की शताब्दी

—श्री कुमारेन्द्र—

१९२० के असहयोग आन्दोलन के समय यह गाना अत्यन्त लोकप्रिय हो गया। लेकिन इसने एक प्रतिक्रिया को भी जन्म दिया। कुछ लोगों ने कहा कि इसमें दुर्गा शब्द का उल्लेख साम्प्रदायिक है। कुछ ने गाने की एक पंक्ति 'तोमार प्रतिमा गड़ि मंदिरे मंदिरे' में मूर्ति शब्द पर शिकायत की। पर मौलाना रेजौल करीम ने कुरान की आयतें पेश कर यह सिद्ध कर दिया कि इस गाने में इस्लाम के विरुद्ध कुछ भी नहीं है। पर फिर भी कुछ मुसलमानों ने यह आपत्ति की कि गाने में माँ के सम्मुख झुकने की बात कही गयी है जब कि यह बात इस्लाम के विरुद्ध है। इस्लाम में मुसलमान केवल ईश्वर के सम्मुख ही सिर झुका सकते हैं।

इस प्रचार के बावजूद कांग्रेस के काकीनाडा के अधिवेशन के अध्यक्षपद के लिए मौलाना मुहम्मद अली को जब चुना गया था तो उन्होंने कहा कि जब तक कि आयोजक 'वन्दे मातरम्' को स्वीकार नहीं कर लेंगे, वे अध्यक्ष पद ग्रहण नहीं करेंगे। शुरू-शुरू में जिन्ना भी इस गाने के इतने समर्थक थे कि इसके गाते समय कोई खड़ा नहीं होता तो वे क्रुद्ध हो जाते थे।

उन्होंने क्रांतिकारी उपन्यास आनन्द मठ लिखा और उसमें वन्दे मातरम् गीत को शामिल कर लिया। उपन्यास के धारावाहिक प्रकाशित रूप में पृष्ठ भूमि में भी अंग्रेजी साम्राज्य को लिया गया था, पर प्रसिद्ध इतिहासज्ञ मजूमदार के अनुसार अंग्रेजी दबाव पड़ने के कारण इसमें ब्रिटिश शासन के स्थान पर मुसलमान शासन कर दिया।

'बंकिम चन्द्र चैटर्जी ने प्रथम संस्करण में लिखा था—'भवानन्द ने जो आग प्रज्ज्वलित की, वह आसानी से झुकने वाली नहीं है। याद मैं कर सका तो इसे भी बाद में प्रस्तुत करूँगा।' पर अगले संस्करणों में ये लाइनें अंग्रेजों के दबाव पर निकल दी गयीं।

२६ जनवरी ७६ के 'आज' में प्रकाशित एक लेख का अंश।

वही:

'गांधीजी ने १९३८ के हरिजन में लिखा था—' 'आनंदमठ' के माध्यम से मुझे बंकिमचंद्र का परिचय मिला, किंतु यह गीत पहले भी सुनकर मैं पुलकित हो चुका था। इस गीत ने करोड़ों लोगों के हृदय को आनंदित किया है। जबतक राष्ट्र है तबतक यह गीत भी रहेगा।"

बंगाल में एक छोटे से गाँव से उद्गम पानेवाली 'वन्दे मातरम्' की छोटी सी नदी हिन्दुस्तान की विशाल सीमा पार कर उन दिनों इंगलैंड, अमेरिका और कनाडा तक जा पहुँची थी। यह लघु नदी शनैः-शनैः महानद बनकर सागर सी फैल गयी। करोड़ो लोगों के हृदय को इसके जल ने पवित्र किया है। आज भी इस गीत में राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने और देशपुत्र को जागृत करने का सामर्थ्य वर्तमान है।

वन्दे मातरम्

— श्री जगदीश भट्ट —

यह कहानी है 'वन्दे मातरम्' की—जिसे हमारे देश ने 'जन गण मन' के साथ ही राष्ट्रगीत के रूप में 'समान पद' बख्शा है।

सन् १८७५ के किसी सुन्दर दिवस की प्रेरणा भरी एक घड़ी में बंकिम बाबू ने 'वन्दे मातरम्' की रचना की थी। सन् १९७५ में इस घड़ी के सौ वर्ष पूर्ण हो गये।

'वन्दे मातरम्' की शताब्दी के निमित्त प्रस्तुत इस कथा में भारतीय स्वातंत्र्य संग्रामका इतिहास और शहीदों का बलिदान नीहित है।

वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्
धड़ाधड़ पड़ती लाठी-वर्षा के बीच यह अविरल युद्ध घोषणा गरजती जाती थी।

अन्धी लाठी मार से फूटते सिरों और हड्डी पसलियों के बीच बिन दबा बिन रुका घोष गूँजता जाता था।

वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्

चकमक पत्थर पर रगड़ने से जैसे चिनगारियाँ झरती है उसी प्रकार भारत के इन स्वातन्त्र्य सैनिकों पर प्रहार होता था, और उनके अन्तर की गहराई मे से भारत के स्वाधीनता संग्राम की युद्ध हांक गरज उठती थी—वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।

इस युद्ध हांक का ज्वार लाठीमार की या अत्याचार की परवाह किये बिना, उसे डुबोता आगे, और आगे फैलता जाता था।

भारत के पूर्वी छोर पर स्थित बंगाल के बारीसाल ग्राम में ई० सन् १९०६ के अप्रैल की १४वीं तिथि को घटित इस प्रसंग ने 'वन्दे मातरम्' मन्त्र का स्वाधीनता के रणघोष के रूप में राज तिलक कर दिया।

१८७५ के किसी सुन्दर दिन 'वन्दे मातरम्' गीत ने कविवर बंकिम बाबू के अन्तर से प्रगट होकर आकार ग्रहण किया था, उसके बाद उनके क्रांतिकारी उपन्यास 'आनन्द मठ' में भी वह समाविष्ट हुआ था। धरती में पड़ा बीज जैसे अंकुरित, पल्लवित और सुन्दर पुष्प रूप में प्रगट होते हैं उसी प्रकार 'वन्दे मातरम्' गीत भी प्रस्फुटित होकर राष्ट्र की आकांक्षा का प्रतीक, राष्ट्रगीत बन जाने वाला था, यह उसी प्रक्रिया का पहला चरण था।

बंगाल को खंडित, विभाजित किया गया था। उस विभाजन को हटाने, विदेशी दासता और दमन को उखाड़ फेकने के हेतु विचार करने के लिए बंगाल प्रदेश की क्रांग्रेस समिति की बैठक होने वाली थी। इसके स्थान के लिए बारीसाल चुना गया था।

बारीसाल था तो गांव, पर था क्रांति की चिनगारी सा। स्वदेशी आंदोलन और विदेशी चीजों के बहिष्कार में उसने ऐसी हवा बांधी थी कि ब्रिटिश सरकार ने उस छोटे से गाँव में छः सौ गुरखा सैनिक प्रजा को डराने के लिए भेज दिये थे। पर बारीसाल की प्रजा का जोश अशमित था। विभाजन का प्रहार उसने दृढ़ता से झेल लिया था। हर रोज सभा-जुलूसों का आयोजन होता, चतुर्दिक 'वन्दे मातरम्' नाद गूँजता रहा, गोरों के सामने जाकर, पुलिस के सामने होकर 'वन्दे मातरम्' पुकारने की लोगों ने होड़ बदी थी।

अतः, बारीसाल में प्रदेश कांग्रेस का सम्मेलन करने का निश्चय हुआ तो जिला मैजिस्ट्रेट इमर्सन ने हुकुम जारी कर दिया—किसी भी सभा या जुलूस में कोई भी वन्दे मातरम् गाये या बोले नही। इस गीत के पहले दो शब्दों का बोलना भी गुनाह बन गया।

समस्त बंगाल से प्रतिनिधि आ रहे थे। बाबू सुरेन्द्र नाथ बनर्जी सम्मेलन का मार्ग दर्शन करने आने वाले थे।

आरम्भ में ही एक जिच उठ खड़ी हुई।

बारीसाल की गलियों में 'वन्दे मातरम्' नारा लगाना गैर कानूनी करार दिया गया था। सुरेन्द्र बाबू तथा अन्य नेताओं ने इस आदेश का यह अभिप्राय लिया था कि ऐसा प्रतिबन्ध गैर कानूनी है और उन सबका मत था कि ऐसे अपमानजनक प्रतिबन्ध के आधीन होना आत्म सम्मान के विरुद्ध कदम माना जायगा। लेकिन बारीसाल के स्थानीय नेताओं ने सम्मेलन का आयोजन करने की स्वीकृति स्थानीय प्रशासन के साथ एक समझौता करके ली थी कि प्रतिनिधियो के आगमन स्वागत के समय, आम रास्तों पर 'वन्दे मातरम्' का नारा नही लगेगा। फिर भी एक दल तो ऐसे समझौते को उठा फेंकने के पक्ष में ही था।

परन्तु, अन्त में एक सर्वसम्मत समाधान निकल आया, जिच दूर हो गयी। स्थानीय नेताओं द्वारा किया समझौता प्रतिनिधियों के स्वागत तक ही सीमित था, उसके बाद उसका बन्धन नहीं था। अतः प्रतिनिधियों के स्वागत के समय समझौते का पालन करना, पर सम्मेलन के दूसरे सब प्रसंगों में इस सरकारी आदेश की अवहेलना करके 'वन्दे मातरम्' का नारा लगाना, ऐसा निर्णय किया गया।

कलकत्ता से और बंगाल के अन्य स्थानों से आये प्रतिनिधियों ने सुरेन्द्र बाबू के साथ परामर्श करके ऐसी व्यूह रचना की और उसके बाद ही ढाका से स्टीमर द्वारा आये सभी प्रतिनिधियो ने बारीसाल की धरती पर पैर रक्खा।

इस चर्चा के दौरान 'अमृत बाजार पत्रिका' के संपादक श्री मोतीलाल घोष ने कह दिया था—**मैं तो 'वन्दे मातरम्' गाऊँगा ही, अपना सिर गंवाना पड़े तो भी, सिर कोई इतना कीमती नहीं है।'**

अप्रैल की १४हवीं को कार्यक्रम आरम्भ हुआ। पहला कार्यक्रम था जुलूस का। आवास स्थान राजा साहेब की हवेली से सम्मेलन स्थान तक प्रतिनिधियों की 'वन्दे मातरम्' पुकारते जाना था। कन्धे और छाती पर 'वन्दे मातरम्' का बिल्ला लटकाकर, 'वन्दे मातरम्' अंकित झंडा फहराते, 'वन्दे मातरम्' पुकारते शातिपूर्वक कुछ करने की सूचना सबको दे दी गयी थी। सम्मेलन के अध्यक्ष बैरिस्टर रसूल अपनी अंग्रेज पत्नी के साथ जुलूस मे शामिल हुए। जुलूस में साथ थे सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, मोतीलाल घोष, बिपिन चन्द्र पाल, अरविंद घोष।

जुलूस अभी बन ही रहा था, प्रतिनिधि बाहर आकर शामिल होते जा रहे थे, 'वन्दे मातरम्' का नारा अभी लगना था, पर उन्नत मस्तक मस्ती भरे, सीना ताने आगे बढ़ते इन बंग-वीरों को देखकर ही पुलिस का क्रोध एकदम से उबल पड़ा। सामने के पक्ष से कोई भी उसकाने वाली कार्यवाही हुए बिना ही, अपने पक्ष से कोई भी चेतावनी दिये बिना ही, पुलिस ने लाठी चार्ज शुरू कर दिया।

'उनकी सभी कृतियों में से, आश्चर्यजनक राजनीतिक परिणामों की दृष्टि से, सबसे अधिक महत्वपूर्ण था आनन्दमठ जो सन् १८८२ में प्रकाशित हुआ, जिस समय इलबर्ट बिल के कारण उत्पन्न आन्दोलन चल रहा था। इसकी कहानी पूर्णिया, तिरहूत और दीनापुर के क्षेत्र में सन् १७७२ के संन्यासी विद्रोह और विद्रोहियों द्वारा ब्रिटिश तथा मुसलमान सेनाओं की संयुक्तकमान के विरुद्ध कमरतोड़ विजय के चरमोत्कर्षवृतांत से सम्बन्धित है, यद्यपि इस सफलता का अनुसरण एक रहस्यमय चिकित्सक की सलाह के कारण नहीं किया गया। इन्होंने दिव्य प्रेरणायुक्त प्रवक्ता के रूप में माता की संतानों के नेता सत्यानन्द को सलाह दी कि अब विद्रोह को त्याग दें क्योंकि अस्थायी रूप से ब्रिटिश शासन की अधीनता स्वीकार करना आवश्यक है, क्योंकि हिन्दुत्व बहुत अटकलबाज और अव्यवहारिक हो गया है और भारत में अंग्रेजों का मिशन है, हिन्दुओं को सिद्धान्त और अटकल का विज्ञान के तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में समन्वय करना सिखाना। अतः आनन्दमठ की यही बड़ी सीख है कि ब्रिटिश शासन और ब्रिटिश शिक्षा को मुस्लिम प्रताड़ना के एक मात्र विकल्प के रूप में स्वीकार करना और इस नीति वाक्य का बंकिम चन्द्र ने अपने धर्मतत्व में विस्तार से विकास किया, धर्मतत्व उनका बृहद् धार्मिक ग्रन्थ है जिसमें उन्होंने अपने देशवासियों के लिए धार्मिक और नैतिक परिस्थितियों में परिवर्तन की आवश्यकता के बारे में अपने दृष्टिकोण की व्याख्या की है, क्योंकि तभी वे समान स्तर पर ब्रिटिश और मुसलमानों प्रतिद्वन्द्विता करने की आशा कर सकते हैं। यद्यपि 'आनन्द मठ' राजभक्ति सहित ब्रिटिश शासन स्वीकार करने के लिए क्षमायाचना के रूप में है, पर उसके पीछे शीघ्र या कुछ विलम्ब से भारत में हिन्दू राज्य की पुनः स्थापना के आदर्श की प्रेरणा वर्तमान है। यह बात विशेष रूप से पुस्तक में यत्र तत्र दिये गये काव्यांशों से स्वतः सिद्ध है और इनमें भी वन्देमातरम् सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

(इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका खण्ड ११)

छ-छ फुट की लम्बी मजबूत लाठियाँ पुलिस के हाथो से राष्ट्र भक्तो पर प्रहार करने लगीं, और लाठी के एक-एक प्रहार का जबाब एक ही मुकम्मल नारे से दिया जाता रहा—'वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्' लहू टपकते देह वाले बंगाली जवानों ने उस दिन 'वन्दे मातरम्' मन्त्र को स्वाधीनता की युद्ध घोषणा के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।

दमन और प्रतिरोध की पहली टक्कर

'वन्दे मातरम्' का सीधा सादा अर्थ है—'मैं माता की वंदना करता हूँ। भारत माता की उसका पुत्र वंदना करता है और कहता है—'वन्दे मातरम्'

इतने सीधे सादे अर्थवाले इन दो शब्दों में ब्रिटिश सरकार को ऐसा क्या दिखता था कि जिससे डरकर उसने खुले आम नारा लगाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था ?

इन दो शब्दों के साथ जुड़ी थी राष्ट्रभावना की जीवंत ज्योति। इस ज्योति की आग को आँच उन्हें जला दे सकती है, ऐसा ख्याल ब्रिटिश सल्तनत को आ गया था, और इन दो शब्दों के प्रेरणाबल, सामर्थ्य का पूरा एहसास स्वाधीनता संग्राम के योद्धाओ को भी था। इसी से उन्होंने युद्ध की घोषणा के रूप में 'वन्दे मातरम्' मन्त्र को अपना लिया था। इसी कारण 'वन्दे मातरम्' मंत्रोच्चार के निमित्त इन दोनों शक्तियों के बीच सन् १९०६ के बारीसाल सम्मेलन में पहली भिड़न्त हुई थी।

बारीसाल की यह टक्कर दो रूपों में विशिष्ट थी—बारीसाल में जुलूस पर हुआ पूर्वनियोजित पुलिसलाठी चार्ज, भारतीय स्वाधीनता संग्राम का पहला लाठी चार्ज था, और दमन के इस कदम के सामने शांत साथ ही दृढ़ प्रतिरोध करने की एक नयी पद्धति भी इसी घटना से ही पैदा हुई थी। दमन और प्रतिरोध के बीच इस युद्ध की घोषणा थी—'वन्दे मातरम्।'

बारीसाल की यह घटना अचानक तो हुई नहीं थी। इस घटना के निमित्त आग भड़की तब ही थी यह सत्य है, पर वह आग तो पहले ही से धधक रही थी।

× × ×

बंगाल का विभाजन करने के बाद नव निर्मित प्रांत के लेफ्टिनेंट गवर्नर के पद पर एक घमंडी अंग्रेज बुल्मफील्ड फुलर की नियुक्ति हुई थी। 'वन्दे मातरम्' गाने पर प्रतिबन्ध लगाने का हुक्म इसी ने दिया था।

इस हुकुम की तत्काल ही उग्र प्रतिक्रिया हुई। प्रतिबन्ध हुक्म का विरोध करने के वास्ते गाँव-गाँव, तालुका-तालुका में समितियाँ बनी, 'वन्दे मातरम्' का बिल्ला लगाकर लोग सीना ताने प्रतिवन्ध-हुक्म की अवहेलना करने लगे। भगिनी निवेदिता, स्वामी विवेकानन्द के भाई भूपेन्द्र नाथ दत्त और अरविन्द बाबू के भाई बारीन्द्र कुमार घोष जैसे नेताओं ने विरोध का शंखनाद करने की प्रेरणा दी थी। इसी कारण, ऐसी समितियो के प्रतिनिधि बारीसाल सम्मेलन मे खूब बड़ी संख्या में आये थे। वन्दे मातरम् मत्र उनका जीवन मंत्र था, श्वासप्रश्वास था, उसके प्रतिबन्ध को तोड़ने का उन्होने दृढ़ निश्चय किया था। पर उस निश्चय के जोश की हवा से ही भयभीत होकर 'वन्दे मातरम्' का नारा लगे इससे पहले ही, ब्रिटिश साम्राज्यवाद को पुलिस ने अंधाधुंध लाठी प्रहार आरम्भ कर दिया और बारीसाल में एकत्र हुए बंगाली जवानों ने खुले सीने पर लाठियों का प्रहार झेलते-झेलते ललकारा—'वन्दे मातरम्' 'वन्दे मातरम्' 'वन्दे मातरम्'......

लाठी प्रहार करते जंगली हाथ थक गये पर 'वन्दे मातरम्' का रणघोष थमा नही।

इस लाठी प्रहार का सीधा निशाना थे प्रतिरोध समिति के युवक, अतः जुलूस के आगे चलते बुजुर्ग नेताओं को पुलिस ने आगे बढ़ जाने दिया था, परंतु आवास स्थल से निकलकर आम रास्ते पर जुलूस बनाने के लिये युवक वर्ग ज्योंही बाहर निकला कि पुलिस ने उस पर लाठी चार्ज शुरू कर दिया। परन्तु अंधाधुध आचरित इस दमन के पश्चात् तो कोई भेद-भाव रहा नहीं और कितने ही बुजुर्ग नेता भी लाठीचार्ज के शिकार बने।

बंगाल के बेताज के बादशाह माने जाने वाले सुरेन्द्र नाथ बैनर्जी को भी पुलिस ने बख्शा नहीं। वे पकड़े गये। उस दिन छुट्टी के कारण कोर्ट बन्द थी अतः उन्हें मैजिस्ट्रेट के निवास स्थान पर ले जाया गया। उनके साथ 'डाकुओं के साथ जैसा' व्यवहार किया गया। उन्होंने मैजिस्ट्रेट के सामने सरकार की दमन नीति के विरूद्ध सख्त विरोध प्रकट किया। पर मैजिस्ट्रेट इमर्सन पुलिस से भी अधिक निठुर सिद्ध हुआ। सुरेन्द्र बाबू के कड़े शब्द उसे कड़वे लगे। कोर्ट का अपमान करने के लिए उसने सुरेन्द्र बाबू पर दो सौ रुपयों का जुरमाना लगाया और जुलूस में भाग लेने के लिए और दो सौ रुपयों का जुरमाना किया। वकील करने और गवाह पेश करने के लिए जब सुनवाई की मुद्दत मांगी गयी तो इमर्सन ने यह माँग ठुकरा दी। दूसरे नेताओं की माँगो की भी यही दशा हुई।

सम्मेलन पूर्ण रूप से सफल हो यह आवश्यक था और उसमें उपस्थित रहना भी जरूरी था, अतः जुर्माना अदा करके, मुक्त होकर सुरेन्द्र बाबू तुरत सम्मेलन में उपस्थित हुए।

सम्मेलन का मंडप ठसाठस भर गया था। सभी प्रतिनिधि उपस्थित थे, सभी के शरीर पर साम्राज्य शाही की दमन लीला की निशानियाँ थीं, फिर भी 'वन्दे मातरम्' की घोषणा फिर गुजाने का दृढ़ निश्चय उनके चेहरों पर झलक रहा था। वातावरण उत्साह और आक्रोश से धधक रहा था।

इस घटना का वर्णन सुरेन्द्र बाबू के शब्दों में सुने—'अपने साथियों के साथ जब मैने मंडप में प्रवेश किया तो एक अद्भुत दृश्य देखा। समग्र दर्शक समूह ने एक साथ एक व्यक्ति की भाँति खड़े होकर 'वन्दे मातरम्' का गगन भेदी नाद, अनेक बार मुक्त कण्ठ से गुंजाया। चालू कार्यवाही भी थोडी देर के लिए स्थगित रखनी पड़ी। मंच पर हम पहुँचे उसके बाद ही कार्यवाही पुनः शुरू हो सकी।

नया मोड़ आवेगा—हम सरकार को चेतावनी देते हैं कि मनुष्य रूप में विचरते इन राक्षसों को दण्ड देकर उनका मद यदि नहीं उतारा गया तो एक ऐसी आग भड़क उठेगी कि जिसे बुझाने के लिए हजारों लोगों का रक्त उड़ेलना पड़ेगा।"

अरविन्द घोष

सबसे अधिक स्पष्ट, ओजस्वी और तर्कवद्ध प्रतिक्रिया थी अरविन्द घोष की। उन्होंने लिखा—"अत्याचारियों ने अनेक बार चेष्टाएं की हैं—किन्तु मनुष्य में स्वाधीनता के वास्ते वर्तमान स्वभाविक चाह को दबाने में कोई भी अत्याचार आज तक सफल हुआ है क्या? दबाने की कोशिश की जाती है तब तो यह चाह और अधिक बलवती हो उठती है। अत्याचारी की एड़ी के नीचे पिसते हुए वह असंख्य रूप धारण करती है। एक के बाद एक नये अवतार धारण करती है और अवतार की असफलताओं और अनन्त यातनाओं में से यह चाहना नयी शक्ति, नयी प्रेरणा प्राप्त करती रहती है और दमनकर्ता का उन्मूलन करके ही शांत होती है? यह इतिहास का पाठ है—मानव जीवन का यह संदेश है।

'परन्तु शास्त्रों में वर्णित नाग की भांति अत्याचारियों को भी आँखें तो होती है, पर वे देख नही सकते, कान तो होते हैं पर वे सुन नहीं सकते, और इतिहास का यह सत्य-पाठ और मानव-जीवन का शाश्वत-संदेश वे ग्रहण नही कर सकते? और विकास की रथयात्रा को, इस मूर्खता और विकृति के कारण, इस पृथ्वी पर रक्त और विनाश द्वारा रौदें रास्तोंसे ही आगे धंसना पड़ता है।"

बारीसाल सम्मेलन से चार दिन पहले ही एक प्रख्यात वृत पत्र 'इंडियन एम्पायर' में छपा था: 'नेताओं को अब निश्चित कर लेना चाहिए कि भीख मांगने की यह नीति ही जारी रखनी है या सच्ची राष्ट्रीय आंकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए बाँह चढ़ानी है। भीख माँगने पर धिक्कार पूर्ण भरी दया शासकों से शायद मिल जाय, पर इज्जत तो नहीं ही मिलेगी।'

इस सांकेतिक मसले का सच्चा जवाब बारीसाल की घटना द्वारा दिया गया। बारीसाल सम्मेलन के उद्देश्य व्यक्त करते प्रस्ताव उसमें पारित तो नही हुए थे तो भी वहाँ हुई घटनाओं और उसकी प्रतिक्रियाओं ने उसका चौकस जबाब दे दिया। कागज पर अंकित प्रस्ताव के शब्दों द्वारा नहीं, पर बारीसाल की धरती पर बंगाली युवकों के रक्त द्वारा दमन के प्रतिरोध का, स्वाधीनता के संघर्ष का संदेश आलेखित हो गया।

बारीसाल से वापस लौटते ट्रेन में भगिनी निवेदिता ने सुरेन्द्र नाथ बनर्जी से कहा था, 'आपको जेल में बन्द कर देने के हेतु सरकार ने षड्यन्त्र किया था, पर आपने उनकी योजना पर पानी फेर दिया है। अब वे अपने रचे जाल में खुद ही फँस गये हैं। नैतिक विजय आपकी ही है।'

भगिनी निवेदिता की यह बात आगे चलकर सत्य सिद्ध हुई। अनेक अंग्रेजों ने बारीसाल के पुलिस अत्याचार की आलोचना की, वाइसराय लार्डमिन्टो ने कहा कि 'शांतिपूर्ण जुलूस और सभा में दखल न दी गयी होती तो अच्छा होता।' सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने आगे बढ़कर गिरफ्तारी को अपने सिर ले लिया और पुलिस उनकी इस चाल में फँस गयी।'

लार्ड मिन्टो ने यह भी स्वीकार किया कि 'वन्दे मातरम्' के नारे लगने से कोई आफत नही आनी थी, पर उसे रोकने के प्रयत्नों के कारण ही ब्रिटिश शासन को अवश्य हानि हुई है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि 'सुरेन्द्र नाथ बनर्जी की गिरफ्तारी और जुलूस में हस्तक्षेप नियमानुसार थी या नहीं, यह स्पष्ट नहीं है। इसके अलावा 'वन्दे मातरम्' नारे को गैरकानूनी घोषित करना कानून का गलत अर्थ लगाना था।'

बारीसाल की इन घटनाओं का धमाका सारे भारत में हुआ, यही नहीं, सात सागर लाँघ कर वह इंग्लैण्ड की पार्लियामेंट में भी सुनाई पड़ा। भारतके सेक्रेटरी आफ स्टेट से बारीसालमें पुलिस अत्याचारों की बाबत जवाब मांगा गया।

नतीजा यह हुआ कि पुलिस द्वारा शुरू किये गये विविध दमनकारी कदमों को वापस लेने का फरमान निकालने का वाइसराय को आदेश मिला।

वाइसराय ने पूर्वी बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर को लिखकर सूचित किया, **'जिनके नाम काट दिये गये हैं उन तीन सौ में से तीनों सौ विद्यार्थियों के नाम बिल्कुल बिलाशर्त पुनः रजिस्टरमें चढ़ा दें। 'वन्दे मातरम्' नारे के विरुद्ध और जुलूसों पर रोक लगाने वाला अपना हुक्म तत्काल वापस ले लें और न हो तो उन्हें उपरोक्त कदमों के साथ ही रद्द कर डालें।'**

बारोसाल की उग्र प्रतिक्रिया से उत्पन्न यह सयानापन था। किन्तु इस छूटछाट का अर्थ ब्रिटिश सरकार की दुर्बलता है, ऐसा प्रगट करना ब्रिटिश सल्तनत के घमण्ड को अनुकूल लगे ऐसा नही था। ब्रिटिश सरकार की दुर्बलता के साथ ही प्रतिरोध की ज्वाला कहीं अधिक न भडके ऐसा भय भी ब्रिटिश शासन को था। इसी से वाइसराय ने पूर्व बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर को सलाह भी दी कि **'यह भी स्पष्ट करेंगे कि पूर्व बगाल की प्रजा ने आम तौर से जो अच्छा आचरण व्यक्त किया है, उसी के बदले में आपने छूटछाट की राह में यह कदम उठाया है !'**

पर ऐसी दाँव पेंच भरी चाल का कोई विशेष प्रभाव नही पड़ा। 'वन्दे मातरम्' मन्त्र क्रांतिज्वाला की भाँति देशभर में फैल गया और देश की नयी बदलती परिस्थिति के वास्ते वह आधार स्तम्भ सा बन गया।

'वन्दे मातरम्' - कितने ही सवाल - कितनी ही हकीकतें

'वन्दे मातरम्' हमारा राष्ट्रगान है, हमारे देश में इसे और 'जन गन मन' को राष्ट्रगीत के रूप में समान दर्जा (ईक्वल स्टेटस) दिया गया है। 'समान दर्जे' के दो राष्ट्रगीत धारण करने की हमारी विशेषता दुनिया मे अद्वितीय है। परन्तु हमने 'वन्दे मातरम्' को प्रदत्त सम्मान का पूरा आदर नही किया है ? सहस्रों शहीदों के रक्त-सिंचन से विकसित और अकुंरित इस अमर राष्ट्रगीत के स्थान और गौरव को हमने ठीक ढङ्ग से प्रगट नही किया। अपने सार्वजनिक समारोहों में हमने 'वन्दे मातरम्' को जो स्थान देना चाहिए था, वह स्थान नही दिया।

बहुत से लोगो को तो 'वन्दे मातरम्' गीत के सम्पूर्ण पाठ की जानकारी भी नही है। कुछ लोगों को सम्पूर्ण पाठ प्राप्त करने के प्रयत्न करने के बावजूद कही भी उसकी जानकारी नही मिली। वन्दे मातरम् के उद्भव, विकास और प्रसार की क्रमबद्ध प्रमाणिक जानकारी भी बहुतों को प्राप्त नही है।

सम्प्रति 'वन्दे मातरम्' जहाँ तहाँ गाया जाता है, वहाँ बहुधा उसकी आरम्भ की दो पंक्तियाँ ही गायी जाती हैं। 'वन्दे मातरम्' सम्पूर्ण गीत लगभग २६ पंक्तियों का है। लोगों के अनुभव के अनुसार पूरा गीत लम्बा होने के बावजूद उसके सम्पूर्ण पाठ का समूह गान गौरवपूर्ण और प्रेरणाप्रद होता है। कई संस्थाओं में कार्यक्रमों के प्रारम्भ मे 'वन्दे मातरम्' के सम्पूर्ण गीत का सहगान सब लोग नमस्कार की स्थिति में हाथ जोड़े खड़े रहकर करते है।

यह अनुकरणीय है। 'वन्दे मातरम्' का सम्पूर्ण पाठ इस ग्रन्थ में इस आशा के साथ दिया गया है कि हमारी संस्थाएँ, सार्वजनिक कार्यक्रमों के संयोजक सम्पूर्ण पाठ के लयबद्ध समूह गान का आनन्द और प्रेरणा का अनुभव प्रजा को कराने का प्रयास करेंगे।

'वन्दे मातरम्' गीत पहली बार प्रगट हुआ था बंकिम बाबू के क्रांतिकारी उपन्यास 'आनन्द मठ' में। 'आनन्द मठ' उपन्यास मे संन्यासियों द्वारा संचालित विद्रोह की कहानी है। बंकिम बाबू ने ई० सन् १८८० के बीच में यह उपन्यास लिखना आरम्भ किया और १८८०-८२ के बीच के समय में यह 'बंग-दर्शन' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था।

बंकिम बाबू को 'आनन्द मठ' उपन्यास की प्रेरणा समसामयिक साहसिक महाराष्ट्रीय क्रांतिकारी बासुदेव बलवन्त फड़के के जीवन चरित्र से मिली थी ऐसा एक मत है। 'आनन्दमठ' की घटनाओं और फड़के द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े गये युद्ध के बीच घटना साम्य की अनेक लेखकों ने चर्चा की है।

विविध प्रसंगों में विद्रोही संन्यासियो को प्रेरणा देने वाले गीत के रूप में 'आनन्दमठ' में वंदे मातरम् गीत रक्खा गया है। एक संन्यासी 'भवानन्द' दूसरे एक पात्र 'महेन्द्र' को यह गीत और उसका अर्थ दसवें प्रकरण मे विस्तार पूर्वक समझाता है। यह पूरा-प्रकरण अत्यन्त भावभीना है।

परन्तु बहुत से लोग पूछेंगे कि आनन्दमठ उपन्यास १८८२ में प्रकाशित हुआ तो फिर १९७६ मैं उसजी शताब्दी कैसी?

'वन्देमातरम्' गीत छपा १८८०-८२ के बीच सत्य है, पर इस गीत की रचना तो आनन्दमठ लिखने से बरसों पूर्व हो गयी थी।

सन् १८७४ में हमारा देश विदेशी शासन के नीचे पिस रहा था, उसकी आत्मा अवरूद्ध थी, पर साथ ही साथ विदेशी शासन के विरूद्ध विद्रोह भावना की आग भी राख के नीचे दबे अग्नि-पुज की भाँति सुलग रही थी। सन् १८५७ के प्रथम स्वात्ंत्र्य युद्ध की स्मृतियाँ अभी ताजी ही थी। इस देश की पुरातन परम्परा का स्वाधीनता का निर्भय मंत्र हवा में सूक्ष्म रूप से प्रवाहित ही था। और सत्तावन के स्वातंत्र्य संग्राम में प्राणों का बलिदान देने वाले हमारे अनेक सैनिकों की अंतिम इच्छाएं भी देश के वातावरण मे मडरा रही थी। बंकिम बाबू के इस वातावरण से एकतान बने कवि मन ने मातृभूमि के प्रत्यक्ष रूप से साक्षात्कार के एक दिव्य क्षण में 'वन्दे मातरम्' गीत रचना की थी।

१८७५ के किसी एक दिन बंकिम बाबू कलकत्ता की शोर भरी जिन्दगी से छूटने के लिए अपने वतन कांटालपाड़ा जा रहे थे। इसके लिए वे रेलगाड़ी में बैठे। धीमे-धीमे शहर अदृश्य होता गया, सर्वत्र छायी हरियाली नजर आती गयी और बंकिम बाबू का मन आह्ललाद से भर उठा, जल भरी नदियों, फूल फल और बनराजि से सुशोभित मातृभूमि के विचारों ने बंकिम बाबू के मन में मानों एक विद्युत प्रवाह सा उत्पन्न कर दिया। उनके अन्तर की आँखों ने इस अवसर पर जो देखा, चित्त ने जो अनुभव किया वह उन्होंने शब्दबद्ध कर लिया। उस समय शब्दबद्ध हुआ वह गीत ही था 'वन्दे मातरम्'।

और इसी से १९७५ का वर्ष वन्दे मातरम् की रचना के सौ वर्ष पूर्ण होने का शताब्दी वर्ष है।

पुनर्जागरण मंत्र के दृष्टा-बंकिम चन्द्र

एक गौरवशाली बंगाली, जिसने साहित्य द्वारा एक राष्ट्र की रचना की

'वन्दे मातरम्' को श्री अरविन्द ने नवभारत के पुनर्जागरण का मंत्र बताकर इस गीत के रचयिता बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय को इस मंत्र के दृष्टा ऋषि के रूप में परिचय दिया है।

बंकिम चन्द्र का जन्म सन् १८३८ की २६ जून को बंगाल के २४ परगना स्थित कांटालपाडा गाँव में हुआ था। उनके पिता मिदनापुर में सरकारी अधिकारी थे और विद्याभ्यास के बाद बंकिम बाबू शुरू में जेसोर के डिप्टी मैजिस्ट्रेट नियुक्त हुए थे, परन्तु नौकरी करते हुए भी उन्होंने अपना आत्मसम्मान कभी खोया नहीं, न्याय प्रियता और निर्भयता के गुणों के कारण उन्हें बारंबार अंग्रेज अधिकारियों से टकराना पड़ता था, देशबन्धुओं के लिए न्याय प्राप्त करने हेतु और गोरों के जुल्म का विरोध करने मे वे खूब चौकस थे, परिणाम कि बारम्बार उनका स्थानान्तरण होता रहता था।

१८५७ का स्वांतत्र्य युद्ध फैला तब बंकिम चन्द्र १९ वर्ष के कड़ियल जवान थे।

इस युद्ध के दौरान बंगाल पड़ोसी प्रदेशों की अपेक्षा शांत रहा था। अपने निजी मूल्यों को हीन, गिरता हुआ समझकर, लघुता की ग्रंथियों से पीड़ित बंगाली उस समय ब्रिटिश लोगों के अंध-अनुकरण में, दासता में ही गौरवान्वित होते थे।

ब्रिटिश गुलामी को उठा फेंकने के लिए उस स्वातन्त्र्य युद्ध में जोरदार प्रयत्न हुआ था, परन्तु अनुशासन, संगठन और शस्त्र आपूर्ति के अभाव के कारण यह प्रयास निष्फल सिद्ध हुआ। स्वार्थांधता, विश्वासघात और निष्क्रियता का उस समय हमारे देशमें इतना जोर था कि '५७ की जंग के शूरवीरों का यह प्रयास असफल हुआ, अनेक शूर वीरों के बलिदान व्यर्थ गये।

और बाद में अंग्रेजों ने स्वाधीनता प्रेम की बची खुची चिनगारियों को भी अत्यंत क्रूरता पूर्वक बुझा देने के प्रयास आरम्भ कर दिये।

बंकिम बाबूके युवा मनपर इन सब बातोका असर पड़ा। अपने देश और संस्कृति पर बंकिम चन्द्रको गौरव था, परन्तु चतुर्दिकका दृश्य देखकर उनका मन कचोटता था। विदेशी दासत्व के कारण और हाल की पराजय के कारण देश हतोत्साह और बेदम बन गया है यह बात उन्हें समझमें आ गयी थी। अंग्रेजोंने बड़ी तरकीब से हमारे समाजको उसकी परम्परा तथा संस्कृतिसे विमुख और हीन ग्रंथिवाला बना दिया है यह बात भी बंकिम चन्द्रने समझ ली थी। बँकिम बाबू भगवत्‌गीता के निष्ठावान अभ्यासी थे। गीता द्वारा प्रबोधित 'भक्तियोग' और 'कर्मयोग' को उन्होंने समाज के समक्ष नये रूपमें रक्खा, राष्ट्र के उद्धार के वास्ते राष्ट्रप्रेम-राष्ट्र की भक्ति ही 'भक्तियोग' है और राष्ट्र की मुक्ति के हेतु युद्ध ही 'कर्मयोग' है ऐसा बंकिम बाबू का प्रबोधन था, और इस प्रकार देश को मातृभूमि को परमात्मा को परशक्ति का स्वरूप, और धर्म को राष्ट्र का स्वरूप बताकर उन्होंने नये राष्ट्रधर्म का प्रबोधन किया था।

उनके साहित्य मे इस तत्व का कल्पनाशील और प्रेरक चित्र प्रस्तुत होता है। 'कमलाकान्तेर दफ्तर', 'देवी चौधुरानी' आदि उपन्यासों की कथावस्तु और पात्रों में इसकी स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। 'कमलाकान्तेर' दफ्तर' मे कमलकांतके मुखसे कहे गये एक उत्साहवर्धक उद्‌बोधन के अंतमें एक श्लोक दिया गया है ?

जय जय जय जय जय धात्री

नमामिशिरसा देवीम् बंधनोऽस्तु विमोचितः।

(हे मातृभूमि, तेरी जय हो ! हम तुझे प्रणाम करते हैं, तेरे बंधनों का नाश हो)

मातृभूमि के प्रति इस संवेदन और उद्‌बोधन में से जो विचार-बीज प्रगट हुआ वही 'आनन्द मठ' उपन्यास की वस्तु विभावना में और 'वन्दे मातरम्' गीत वाले उसके दसवें प्रकरण में पूर्ण विकसित रूप में प्रगट हुआ है।

बंकिम बाबू के साहित्य ने इस प्रकार देश को पुनर्जागरण और स्वाधीनता का मन्त्र प्रदान किया, नया उत्साहवर्धन किया। इसी से अरविन्द ने लिखा है—**बंकिम बाबू का तीसरा और महानतम अनुदान है उनके द्वारा प्रदत्त 'मातृभूमि' की कल्पना—जिस देश के पास ऐसा दर्शन, ऐसी कल्पना हो वह कभी भी गुलामी स्वीकार नहीं कर सकता।'**

सन् १८९४ में बंकिम चन्द्र का अवसान हुआ। उस समय भावांजलि रूप में श्री अरविन्द ने बम्बई से प्रकाशित 'इन्दुप्रकाश' में एक लेख माला के अन्त में जो शब्द लिखे थे, वे आज भी स्मरण करने योग्य हैं।

"......और भावी पीढ़ी भारत के निर्माताओं को जब प्रशस्ति अर्पित करने हेतु बैठेगी तब उस प्रशंसा की श्रेष्ठ पुष्पमाला किसी पद लोलुप राजनीतिज्ञ के वास्ते नहीं होगी, भाषण गर्जना करते समाज सुधारक के वास्ते भी नहीं होगी, परन्तु सत्ता या पदकी कोई भी लालच बिना, अपने अन्दर जो कुछ भी श्रेष्ठ था, उसे समर्पित करने वाले इस गौरवशाली बंगाली के वास्ते ही होगी जिसने केवल कर्तव्य की भावना से, शांतिपूर्वक, चुपचाप कार्य करते रहकर-सृजन किया था-एक भाषा का–एक साहित्य का—और एक राष्ट्र का।

बंकिम, वन्दे मातरम् और विवेका नन्द

विवेका नन्द ने फूंक मारकर सुषुप्त राष्ट्रीयता की अग्नि को प्रगट किया

राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रशक्ति-इन दोनों के वास्ते 'वन्देमातरम्' गीत मूलस्रोत बन गया था। मातृभूमि की दिव्य, प्रेममय, प्रेरणामय, कल्पना प्रस्तुत करके इस अमर राष्ट्रीय गीत ने देश को स्वत्व की, सच्ची कल्पना प्रदान की, हमारे देश के गौरवमय अतीत के साथ वर्तमान को अमिट रूप से बाध दिया और राष्ट्रभक्ति का एक प्रचण्ड प्रवाह का जन-जन के हृदय में निर्माण किया, इसी प्रकार इस गीत से प्रेरणा प्राप्त कर एक प्रचण्ड राष्ट्र शक्ति देशभर में उठ खड़ी हुई।

भक्ति और शक्ति के इस प्रचण्ड प्रवाह के बीच अनेक अवरोध आये, पर इन अवरोधो को तोड़फोड़ कर यह प्रवाह आगे बढ़ता ही गया।

यह शक्ति-विस्फोट अनेक विभूतियो के कर्तृत्व द्वारा, अनेक प्रवृत्तियों का रूप धारण करके वर्षों तक प्रगट होता रहा—राष्ट्र को स्वाधीनता प्राप्त न हुई तब तक 'वन्दे मातरम्' ऐसी विभूतियो के जीवन में ऐसी प्रवृत्तियों के मर्म में अटूट सूत्र की तरह लिपटा नजर आता है।

रामकृष्ण परमहंस और बंकिम चंन्द्र के बीच १८८४ में आधार चन्द्र सेन के निवास स्थान पर एक मुलाकात आयोजित की गयी थी। इस समय रामकृष्ण परमहंस ने मजाक में पूछा था 'आपको बंकिम किसने बनाया ?' (बंकिम का अर्थ टेढ़ा होता है) और बंकिम बाबू ने जवाब दिया था—'ब्रिटिश बूट की ठोकरों ने।'

इस मुलाकात में दोनों के बीच बहुत सी बातें हुई थी। बंकिम बाबू ने उन्हे अपने घर पधारने का निमंत्रण दिया था। पर वे जा नही सके अतः अपने शिष्य नरेन्द्र नाथ (जो आगे चलकर स्वामी विवेकानन्द बने) को अन्य शिष्यों के साथ भेज दिया था। रामकृष्ण परमहंस के समक्ष बंकिम बाबू के उपन्यास पढ़े जाते थे। नरेन्द्र ने बंकिम बाबू का आनन्दमठ उपन्यास पढ़ा हो और उससे प्रेरणा प्राप्त की हो, इसकी पूरी संभावना है। नरेन्द्र (विवेकानन्द) के अनेक प्रवचनो, यथा प्रवृत्तियों में इसके संकेत मिलते हैं।

देश की आम जनता को पुनः जागृत करके पुनः संगठन और क्रान्ति द्वारा देश को स्वाधीनता प्राप्त करानी चाहिए यह बात स्वामी विवेकानन्द अच्छी तरह समझ चुके थे। अपने परिभ्रमण में उन्होंने राजाओं से जो संपर्क किया था उसमें उन्हें संगठित करने का भी उद्देश्य था। स्वामी विवेकानन्द के भाई भूपेन्द्रनाथ दत्त के अनुसार इंगलैण्ड की यात्रा के दौरान मशीनगन के आविष्कारक सर एच० मैक्सीम से मुलाकात की थी और जरूरत होने पर मदद देने का आग्रह भी किया था। सर मैक्सीम की धर्म और तत्वज्ञान मे रुचि थी, ईसाइयों द्वारा आरम्भ किए गए धर्म परिवर्तन के वे विरोधी थे, यही नहीं भारत के प्रति उनकी बहुत सहानुभूति थी।

स्वदेश और स्वधर्म के संरक्षण के वास्ते बलिदान देने की बात स्वामी जी के मुख से बारंबार निकलती थी। "संन्यासियों को इस धर्म की रक्षा करनी है। वे देश के सैनिक हैं। देखो दीर्घ रात्रि बीत गयी है, प्रभात उदित हो रहा है। हमारा देश भारत युगों लम्बी निद्रा में से जाग रहा है। इसे कौन रोक सकता है ? वह अब पुनः निद्रा में नहीं डूबेगा। उसे कोई कभी रोक नहीं सकेगा, कारण यह कि देखें ! भारत माता के रूप में महाकाली जागृत हो रही हैं।' ऐसे स्पष्ट संकेतमय उच्चारण स्वामी जी के अनेक भाषणों में दिखाई पड़ते हैं।

इस बाबत संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'विवेकानन्द के उपदेशों से अनेक बंगाली क्रान्तिकारियों को प्रेरणा मिली थी। हृदय में विवेकानन्द के उपदेश और होठों पर 'वन्दे मातरम्' रखकर इन क्रान्तिकारियों ने अनेक यंत्रणाओं और मृत्यु का भी हँसते-हँसते आलिंगन किया था।'

स्वामी जी के आवाहन का सम्मान कर भगवावस्त्रधारी संन्यासियो में स्वातंत्र्ययुद्ध के ऐसे कितने ही सैनिक हैं जिनके नाम ब्रिटिश गुप्तचर संस्था की काली किताब में लिखे हैं।

स्वामी जी के इस उपदेश के परिणाम स्वरूप उनकी मृत्यु से पूर्व ही देश भर में शारीरिक, मानसिक प्रशिक्षण द्वारा एक संगठन बनाना जरूरी है ऐसी सबल हवा चल पड़ी थी। सतीश मुखर्जी और पी० मित्रा जैसे 'आध्यात्मिक ध्येय और प्रबल धार्मिक वृत्ति' धारण करने वाले उग्रराष्ट्रवादियो के हाथों १६०२ मे अनुशीलन समिति जैसी सस्थाएँ दूसरे संदर्भ में ही उठ खड़ी हुई थी।

स्वामीजी के व्यक्तित्व के इस पक्ष पर छोटी सी सचोट टिप्पणी रोमा रोला ने इस प्रकार लिखी है, 'राष्ट्रीयता की आग बहुत समय से दबी पड़ी थी, विवेकानन्द ने फूंक मारकर उस राख में दबी अग्नि पुनः प्रगट की—और उनकी मृत्यु के बाद तीन ही वर्ष में एक और दूसरी अनोखी विभूति प्रगट हुई—स्वाधीनता आन्दोलन के तेज से प्रगटी यह विभूति थी उनके मित्र अरविंद घोष जो विवेकानन्द की बुद्धि प्रतिभा के सच्चे वारिस थे।'

इस प्रकार जब अरविन्द बाबू की प्रतिमा अंकुरित हुई तब वन्दे मातरम् मात्र एक गीत, एक सूत्र नहीं रहा था। उसका असर अनेक व्यक्तियों, विभूतियों के जीवन मे ओतप्रोत हो चुका था। उस होड़ में अरविन्द बाबू का नाम सबसे ऊपर था।

'वन्दे मातरम्' की बाबत अरविन्द बाबू के ये शब्द उनके साक्षी है—'बत्तीस साल पहले बंकिम बाबू ने यह गीत लिखा तब से बहुत कम लोगों ने उसे सुना होगा, परन्तु एक लम्बी भ्रांति (तंद्रा) में से जागकर बंगाल की प्रजा ने सत्य के प्रकाश के वास्ते चोतरफ दृष्टि फेरी—और एक भाग्यशाली पल में कोई 'वन्दे मातरम्' गा उठा। मंत्र मिला और समग्र प्रजा को राष्ट्र धर्म की, राष्ट्रभक्ति की दीक्षा प्राप्त हुई। प्रत्यक्ष मातृभूमि उनके समक्ष प्रगट हुई। प्रजा को उनका दर्शन मिला, अतः माता का मंदिर बनाकर जब तक उसमें उनकी मूर्ति प्रतिष्ठित न हो तब तक कोई आराम, कोई शान्ति, कोई तंद्रा प्रजा के वास्ते हो नहीं सकती।'

—गुजराती 'साधना' साप्ताहिक में प्रकाशित लेखमाला से 'भानु' द्वारा अनुदित



राजनीतिक नारे के रूप में वन्दे मातरम् का सबसे पहला उपयोग शायद ७ अगस्त १६०५ को हुआ जब सभी समुदायों के हजारों विद्यार्थियों ने आकाश को वन्दे मातरम् तथा अन्य नारों से गुंजा दिया था। वे जुलूस बनाकर कलकत्ता टाउनहाल की ओर जा रहे थे जहाँ एक विशाल ऐतिहासिक सभा में विदेशी चीजों के बायकाट का प्रसिद्ध प्रस्ताव पास हुआ और स्वदेशी की प्रतिज्ञा ली गयी। यहीं से बंग-भंग विरोधी आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था। इसके बाद बंगाल में जो घटनाएं हुईं उनसे सारा भारत आवेशमय हो गया।

मई १६०७ को लाहौर में नवयुवकों का जुलूस रावलपिंडी में स्वदेशी आन्दोलन के नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में आदेश भंग कर वन्दे मातरम् के नारे लगाता निकला और पुलिस के निर्मम अत्याचार सहन किये।

२७ फरवरी १६०७ को तूती कोरन (तामिलनाडु) की कोरल मिल्स के हजारों मजदूरों ने स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कंपनी जिसे ब्रिटिश जहाजों से व्यापार में गलाघोंटु प्रतिद्वन्द्विता का सामना करना पड़ रहा था कि सहानुभूति में और अधिकारियों द्वारा किये दमन के उपायों के विरोध में हड़ताल कर दी।

मजदूरों ने 'वन्दे मातरम्' का नारा लगाते हुए रात देर गये तक जुलूस निकाले। तिन्नीवल्ली की सड़कों में क्रुद्ध भीड़ ने ब्रिटिश नागरिकों को घेर लिया और उन्हें 'वन्दे मातरम्' का नारा लगाने को बाध्य किया।

जून १६०८ में जब लोकमान्य तिलक पर मुकदमा चल रहा था तो हजारों लोग बम्बई में पुलिस अदालत के सामने आ जुटे और उन्होंने वन्देमातरम् गाया।

वन्दे मातरम्

—महात्मा गांधी—

महात्मा गांधी ने सन् १९०५ में ही लिखा था 'उनके (बंकिम) द्वारा रचित वन्दे मातरम् गीत सारे बंगाल में बहुत ही लोक प्रिय हो गया है। स्वदेशी आन्दोलन के सिलसिले में बंगाल में विशाल सभाएँ हुई है जहाँ लाखों लोग जुटे थे और बंकिम का गीत गाया था। कहते हैं कि यह गीत इतना लोकप्रिय हुआ है कि हमारा राष्ट्रगान बन गया है। अन्य राष्ट्रगीतों की तुलना में यह श्रेष्ट भावनाओं वाला और मधुर है। जहाँ अन्य राष्ट्रगीतों में दूसरों के लिये निन्दाजनक भाव मिलते है वन्दे मातरम् इस प्रकार के दोषों से सर्वथा मुक्त है। इसका एक मात्र लक्ष्य है हमारे अन्दर देश भक्ति की भावना जागृत करना। यह भारत को माँ मानता है और उसकी प्रशंसा के गीत गाता है।

कवि ने भारत माता में वे सभी सद्गुण देखे है जो कोई भी अपनी माँ में देखता है। जैसे हम अपनी माँ की पूजा करते है, उसी प्रकार यह गीत भी भारत की भावभीनी वंदना है। इसमें व्यवहृत अधिकतर शब्द संस्कृत के है पर आसानी से समझे जा सकते है। भाषा यद्यपि बंगला है पर इतनी सरल है कि हर कोई उसे गा सकता है। यह गीत इतना उच्च कोटि का है कि हम उसे नीचे गुजराती में छाप रहे है और हिन्दी स्तम्भ में देवनागरी लिपि में छाप रहे हैं।''

''अच्छा तो ऐसा है कि आप ने वह सुन्दर राष्ट्रीय गीत गाया जिसे सुनकर हम सब उछल पड़े। कवि ने भारत माता का वर्णन करने में सभी संभव विशेषण इस्तेमाल कर डाले हैं। वे भारत माता को सुहासिनी, सुमधुर-भाषिणी, सुगन्धा, बहुबल धारिणी, सुखदा, सत्यवादिनी, दुग्ध और मधुमय धारणी, फुल्ल कुसुमित, सुफला, शस्य श्यामला और महान स्वर्ण युग में रहने वाली हमारी कल्पना की महान जाति के लोगों की भूमि बताते है। वे हमारे समक्ष उस भूमि का चित्रण करते हैं जो अपने अन्दर सारी दुनिया, सारी मानवता को सत्य की शक्ति से अपने अधिकार में आवेष्ठित कर लेगी, किन्तु भौतिक शक्ति से नहीं आत्मिक शक्ति से। क्या हम यह स्तुति गा सकते है ? मैं अपने आप से यह प्रशन करता हूँ ''क्या मै गायन करने का अधिकारी हूँ ?'' ये शब्द सहज ही भविष्य सूचक हैं, यह बोध होने पर हमारी मातृभूमि का वर्णन करते हुए कवि द्वारा उपयुक्त प्रत्येक शब्द को साकार करने का दायित्व ये भारत की भावी आशा, आप पर है। आज तो मुझे लगता है जैसे उनके मातृभूमि के वर्णन में ये विशेषण बहुत कुछ निरर्थक हैं और यह आपका और मेरा दायित्व है कि कवि ने अपनी मातृभूमि के लिए जो दावा किया है उसे सार्थक बनायें।।''—

............इसका स्रोत क्या था और कैसे तथा कब इसकी रचना हुई इससे कोई प्रयोजन नहीं, पर बंग भंग के दिनों में बंगाल के हिन्दू और मुसलमानों के लिए यह सबसे अधिक शक्तिमान युद्ध का नारा बन गया था। यह साम्राज्य-वादियों के विरुद्ध नारा था। जब मै बालक था तब आनन्दमठ या इसके अमर कृतिकार बंकिम के बारे में कुछ भी नहीं जानता था, फिर भी 'वन्दे-मातरम्' ने मुझे मुग्ध कर लिया था और जब मैंने पहले पहल इसे गाये जाते सुना तो सम्मोहित हो गया था। मुझे इसमें विशुद्ध राष्ट्रीय भावना मिली। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि यह हिन्दू गीत है या कि यह सिर्फ हिन्दुओं के लिए है। दुर्भाग्यवश अब हमारे कुदिन आ गये है। पहले जो कुछ शुद्ध सोना था, अब आज पीतल बन गया है। ऐसे समय में शुद्ध स्वर्ण कहकर इसे बाजार में न रखना ही बुद्धिमानी होगी और अच्छा होगा

कि यह पीतल के रूप में बिके। मिश्र समूह में वन्दे मातरम् गायन को लेकर मैं एक भी झगड़े का खतरा मोल नहीं लूंगा। अनुपयोग न होने से इसे कभी हानि नहीं पहुँचेगी। यह तो करोड़ों हृदयों में आसीन है। बंगाल में और उससे बाहर अन्तरतम की गहराई में यह राष्ट्रीय भावना उत्प्रेरित करता है। इसके चुने हुए पद समूचे राष्ट्र को, और अन्य कई चीजों के साथ बंगाल की भेंट है।

(हरिजन, १ जुलाई, सन् १९३९)

"वन्दे मातरम्, यह कोई धार्मिक नारा नहीं था। यह विशुद्ध राजनीतिक नारा था। कांग्रेस को इसका परीक्षण करना पड़ा था। इसकी बावत गुरुदेव की राय मांगी गयी थी और कांग्रेस की कार्यकारिणी के सभी हिन्दू तथा मुसलमान सदस्यों को इस निष्कर्ष पर आना पड़ा था कि इसकी प्रारम्भिक पंक्तियां किसी भी प्रकार की आपत्ति से मुक्त हैं। सभी उचित अवसरों पर सबको मिलकर इसे गाना चाहिये। यह कभी भी मुसलमानों को अपमानित करने या नाराज करने वाला गीत नहीं होना चाहिये। याद रखना चाहिये कि इसी नारे ने राजनीतिक बंगाल को प्रज्ज्वलित किया था। बहुत से बंगालियों ने इस नारे को लगाते हुए राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिये अपने प्राण अर्पित कर दिये। भारतमाता की वन्दना के रूप में वन्देमातरम् के प्रति मेरी भावना गहरी है। राष्ट्रगान वन्देमातरम् और बगाल का राष्ट्रीय नारा जिसने उस समय जब सारा भारत लगभग सुसुप्त था, उसे जीवित रखा और जहाँ तक मुझे ज्ञात है बंगाल के हिन्दू और मुसलमान दोनों ही ने स्वीकार किया था।

कलकत्ता के देशबन्धुपार्क में २२ अगस्त १९४७ को एक भाषण में

वन्दे मातरम् गीत और नारा इस प्रकार पुनर्जागृत होते ही भारतीय राष्ट्रवाद का रणघोष बन गया। अपने पुत्र जवाहर लाल को जो उस समय हैरो (इंगलैण्ड) में अध्ययन कर रहे थे, मोती लाल नेहरू ने १६ नवम्बर १९०५ को लिखा था :

"हम ब्रिटिश भारत के इतिहास की सबसे अधिक संकटपूर्ण अवधि से गुजर रहे हैं..............इलाहाबाद में भी वन्दे मातरम् आम अभिवादन बन गया है..................यदि यह अभियान चलता रहा तो यहाँ लौटने पर भारत को जब तुम गये उससे बिलकुल ही बदला हुआ पाओगे।"

जवाहर लाल नेहरू ने १९३८ में कहा—"वन्दे मातरम् गीत विगत तीस से अधिक वर्षों से भारतीय राष्ट्रवाद से गहराई से सम्बधित रहा है और असंख्य भावनाओं की स्मृतियां और बलिदान इसमें शामिल हो गये हैं। लोकगीत न तो आदेश देकर बनाये जा सकते है न उन्हें लादा जा सकता है। वे जन भावना में विकसित होते है।"

अगस्त १९४८ में नेहरू ने पुनः लोक सभा में एक बयान देते हुए कहा—"वन्दे मातरम् स्पष्टत: और निर्विवाद रूप से भारत का प्रमुख राष्ट्रीय गीत है और महान ऐतिहासिक परम्परा है; हमारे स्वतन्त्रता संग्राम से यह निकट सम्बन्धित रहा है। इसका यह स्थान सदा बना रहेगा और कोई दूसरा गीत इसे विस्थापित कहीं कर सकता। यह संग्राम की भावना अभिव्यक्त करता है.............."

नवम्बर १९०६ में धुलिया (महाराष्ट्र) की एक विशाल जनसभा में वन्दे मातरम् के नारे लगे थे। सन् १९०८ में बेलगाम (अब कर्णाटक में) में जिस दिन लोकमान्य तिलक का बर्मा स्थिति मांडले की ओर निर्वासन हो रहा था, वन्दे मातरम् पुकारने के मौखिक प्रतिबंध भंग करने के अपराध में अनेक लड़कों को पीटा और बहुत से लोगों को गिरफ्तार किया गया था।

भारत सरकार का प्रकाशन

हमारे राष्ट्रगान का उदगम

राष्ट्र का अर्थ है—संविधान झंडा और राष्ट्रगान ! हर गीत राष्ट्रगान नहीं हो सकता, उसकी साहित्यिक श्रेष्ठता कितनी ही अधिक क्यों न हो। सच पूछिये तो बहुत कम राष्ट्रगान विशुद्ध साहित्यिकता के मापदण्ड पर खरे उतरेंगे। तब वह क्या है जो 'राष्ट्रगान' को विशेषता प्रदान करता है ? विशेषज्ञों के अनुसार अन्य उपादानो के साथ ही उसकी 'गेयता', अर्थात् लोग इसे समूह में गा सकें। किन्तु सबको सुलभ न हो तो कैसे पूरा राष्ट्र इसे गा सकता है ?

'गेयता' के अलावा 'राष्ट्रगान' में विशेषताएँ भी होती है। उदाहरण के लिए उसमे स्पष्ट राष्ट्रीय भावना होनी चाहिये।

भारत के दो राष्ट्रीय गीतों में 'राष्ट्रगान' के पद के हेतु स्पर्धा थी। ये हैं—बंकिम चन्द्र चटर्जी का 'वन्दे मातरम्' और रविन्द्रनाथ ठाकुर का 'जन गन मन'। दोनों ही का आभायुक्त इतिहास है। दोनों ही पुरानी स्मृतियां जगाते हैं। दोनों ही भारत के महान लेखकों की कृतियाँ हैं।

वन्दे मातरम्

इन दोनों गीतों में से 'वन्दे मातरम्' अधिक पुराना है। यह बंकिम चन्द्र के सन् १८८२ में प्रकाशित उपन्यास आनन्द मठ में आता है। किन्तु इसकी रचना और भी पहले की है, शायद पिछली शताब्दी के सातवें दशक की। इसका प्रथम राजनीतिक अवसर पर गायन, सन् १८९६ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में हुआ। इसकी स्वर रचना रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की थी। बाद में बंग भंग आंदोलन के तूफानी दिनों में इसका तात्कालिक प्रभाव हुआ। अप्रैल १९०६ में बारीसाल प्रांतीय अधिवेशन मे एक मुसलमान की अध्यक्षता में इसका गायन हुआ। बाद में उसी वर्ष कांग्रेस अधिवेशन के आरंभ के दिन स्वयं रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इसे गाया। शनैः शनैः इस गीत के प्रथम दो शब्द राष्ट्रीय आंदोलन का नारा बन गये, बावजूद इसके कि मुसलमानों ने इस गीत का साम्प्रदायिक अर्थ लगाया और यत्र तत्र विरोध किया। मानव-इतिहास में इन दो शब्दों ने लोगों को महानतम बलिदानों के लिये प्रेरित किया।

सन् १९३७ में कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस और आचार्य नरेन्द्र देव की उपसमिति गठित की जिसे रवीन्द्र नाथ ठाकुर से परामर्श कर 'राष्ट्रगीत' के रूप में इसकी उपयुक्तता पर निर्णय देना था। इससे पूर्व यह प्रस्ताव पारित हुआ था—'अतः सभी बातों पर ध्यान देते हुए, समिति की सिफारिश है कि जब भी राष्ट्रीय सार्वजनिक समाओं में 'वन्दे मातरम्' गाया जाय तो उसके पहले दो पद ही गाये जांय और संयोजकों को दूसरा कोई गीत जो आपत्तिजनक न हो, इसके साथ या इसकी स्थान पर गाने की पूर्ण स्वतंत्रता होगी'।

'वन्दे मातरम्' को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार करने में संभवतः कठिनाई मात्र इतनी थी कि उसका 'हार्मोनाइजेशन नही हो पाता था। विशेषज्ञों के मत से गीत कुछ आकार-हीन और हार्मोनाइजेशन के हेतु बहुत बिखरा हुआ था।

'जन गन मन'

महात्मा गांधी 'जन गन मन' को मात्र एक गीत नहीं बल्कि 'भक्ति स्तवन' बताते है। यह गीत एक राजनीतिक बैठक में पहली बार २७ दिसम्बर १९११ को गाया गया, कांग्रेस अधिवेशन के दूसरे दिन। पहले दिन परम्परानुसार 'वन्दे मातरम्' का गायन हुआ था। आरंभिक विवाद कि 'भारत भाग्य विधाता' 'राजेश्वर', 'चिरसारथी', आदि का संकेत किस ओर है और गीत किसको सम्बोधित है दुर्भाग्य-पूर्ण था, यद्यपि निरर्थक था। यहाँ तक कहा गया कि ये सब विशेषण सम्राट जार्ज पंचम के लिये थे जो उस समय भारत यात्रा पर आये थे। कवि ने स्वयं लोगों को ऐसा अपमानजनक अर्थ लगाने के विरुद्ध चेतावनी दी। उनके अपने शब्दों में 'जो लोग मुझे इतना बड़ा मूर्ख समझते हैं कि मैं जार्ज चतुर्थ या पंचम की युग युग धावित यात्री के चिर सारथी के रूप में स्तुति करूँगा, यदि मैं उन लोगों को उत्तर देने की चिन्ता करूँ तो यह मेरा अपमान करना होगा।'

तत्वबोधिनी पत्रिका के जिसके संपादक रवीन्द्रनाथ ठाकुर थे, जनवरी १९१२ के अंक मे 'भारत-विधाता' शीर्षक से यह गीत पहली बार छपा था। कवि ने स्वयं सन् १९१९ मे 'दी मार्निंग सांग आफ इडिया' शीर्षक से इसका अंग्रेजी अनुवाद किया था। सन् १९३९ मे कवि के अनुवाद की अनुलिपि मद्रास को मदनापाल्ली कालेज मैग्जीन में छपी थी।

सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द सरकार ने गीत का हिन्दी रूपान्तर कर उसे अपना राष्ट्रगीत बनाया। उन्होंने अंकित किया टैगोर का गीत "जय है" हमारा राष्ट्र-गान बन गया है।

(ख) स्वीकृति

सन् १९४७ में संयुक्त राष्ट्र संघ में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल से अवसर विशेष पर बजाने के लिये उनके राष्ट्रगान की मांग की गयी। पर उस समय कोई राष्ट्रगीत नही था। उन्होंने मामला अपनी सरकार के सामने रखा और काम चलाऊ उपाय के रूप में 'जनगनमन' के पक्ष मे निर्णय हुआ। तदनुसार संयुक्त राष्ट्र के आर्केस्ट्रा ने गीत का एक ग्रामोफोन रेकार्ड बजाया। यह तत्काल ही सफल हुआ। इसकी धुन, जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में बहुत पसंद की गयी और अनेक देशों के प्रतिनिधियों ने इस नयी तर्ज की संगीत लिपि की मांग की, जो उन्हें विशिष्ट और सम्मानित प्रतीत हुई।'

'वन्देमातरम्' पर 'जनगनमन' की श्रेष्ठता उसकी 'गेयता' में है। एक विशेषज्ञ के कथनानुसार 'हममें से सबसे बेसुरा व्यक्ति भी 'जनगन मन' के समूह गान में सम्मिलित हो सकता है और वह बुरी तरह पिछड़ेगा नहीं।'

२४ जनवरी १९५० को संविधान सभा ने 'जन गन मन' को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया। इस बाबत एक वक्तव्य देते हुए उसके अध्यक्ष डा० राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था 'जनगनमन' नामक शब्द और संगीत रचना भारत के राष्ट्रगान के रूप में सरकारी तौर पर प्रयुक्त होगी, अवसर की आवश्यकता के अनुरूप सरकार को इसके शब्दों में परिवर्तन करने का अधिकार होगा, और 'वन्दे मातरम्' गीत जिसने भारत के स्वाधीनता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका निभायी है उसे भी 'जनगनमन' के साथ समान रूप से सम्मानित किया जायगा और पद समान होगा।'

राष्ट्रगान पर पं० जवाहरलाल नेहरू का वक्तव्य

अगस्त १५, १९४७ के तुरत बाद आरकेस्ट्रा और बैंड पर राष्ट्रगान बजाने के लिये एक धुन का होना हमारे लिये तात्कालिक अवश्यकता बन गया। हमारी सुरक्षा सेवाओं, विदेश स्थित दूतावासों और प्रतिनिधि मण्डलों की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण था। यह तो स्पष्ट ही था कि 'गाड सेव द किंग', स्वतन्त्रता के परिवर्तन के बाद हमारे सैनिक बैंड के लिये उपयुक्त नही था। बराबर हमसे सवाल पूछा जाता था कि कौन सी धुन बजायी जाय और हम जबाब नहीं दे सकते थे, क्योंकि आखिरी फैसला तो संविधान सभा ही कर सकती थी।

'जनगनमन' की धुन में किंचित परिवर्तन कर उसे राष्ट्रगान के हेतु दक्षिण पूर्व एशिया में इंडियन नेशनल आर्मी ने अपनाया और तदनन्तर भारत में भी यह थोड़ा लोकप्रिय हो गया है।

न्यूयार्क में सन् १९४७ में संयुक्त राष्ट्र संघ की जनरल असेंबली के अवसर पर मामला सिर पर आ गया। अवसर विशेष पर बजाने के हेतु हमारे डेलिगेशन से राष्ट्रगान की मांग की गयी। डेलिगेशन के पास 'जनगनमन' का रेकार्ड था और उन्होंने इसे ही वाद्यवृन्द को अभ्यास हेतु दे दिया। जब उन्होने इसे बृहत् समूह के सामने बजाया तो वह बहुत पसंद किया गया और अनेक देशों के प्रतिनिधियों ने इस नयी धुन की स्वरलिपि की जो उन्हें विशिष्ट और सम्मानित प्रतीत हुई थी, मांग की। 'जनगनमन' का वृन्दवादन रेकार्ड करके भारत भेजा गया। हमारी सेना के बैंड यह धुन बजाने लगे और विदेश स्थित दूतावासों और प्रतिनिधि मण्डलों ने आवश्यकता पड़ने पर इसका उपयोग करना शुरू कर दिया। अनेक देशों ने इस धुन के लिये जो विशेषज्ञों की राय में उनके द्वारा सुने गये अन्य राष्ट्रगानो से श्रेष्ठतर थी, हमें प्रशंसा और बधाई के संदेश भेजे। संगीत विशेषज्ञों, बैंडों और वाद्यवृन्दों ने देश-विदेश में इसका वादन किया, कभी कभी धुन मे कुछ परिवर्तन करके और नतीजा यह हुआ कि आल इंडिया रेडियो बहुत से प्रस्तुतिकरण संग्रह कर सका।

इस धुन को मिली आम प्रशंसा के अलावा, उस समय हमारे पास दूसरी चारा भी नही था क्योंकि विदेश भेजे जा सकने योग्य अन्य किसी राष्ट्रीय गीत का उचित संगीत प्रस्तुतिकरण उपलब्ध नही था। उस स्थिति में, मैंने प्रदेशो के राज्यपालों को लिखा और 'जनगनमन', या अन्य किसी गीत को राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार करने की बाबत राय माँगी। मैंने उनसे कहा कि उत्तर देने से पूर्व वे अपने प्रधान मंत्रियों से परामर्श कर लें। मैंने उनसे एकदम साफ-साफ कह दिया था कि अंतिम निर्णय संविधान सभा को करना है, किन्तु विदेश स्थिति दूतावासों और सुरक्षा सेवाओं को चूँकि तत्काल कोई निर्देश देने की आवश्यकता है अत: मध्यावधि निर्णय लेना आवश्यक हो गया है। इनमें से हर एक गवर्नर ने सिवा एक के (सेंट्रल प्राविंसेज के गवर्नर) 'जन गन मन' को अपनी स्वीकृति प्रदान की थी। इस पर मंत्रिमंडल ने मामले पर विचार किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मध्यावधि के लिए 'जन गन मन' का उस समय तक उपयोग किया जाना चाहिये जब तक संविधान सभा अन्तिम निर्णय पर पहुँच जाय।

इसके अनुसार प्रांतीय गवर्नरों को निदेश दिये गये। यह स्पष्ट था कि 'जनगनमन' के शब्द पूरीतौर पर ठीक नही थे और कुछ परिवर्तन करना आवश्यक था। किन्तु शब्द की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण चीज थी धुन जिसे बैंडो और वाद्यवृंदो द्वारा बजाया जा सके।

बाद में पश्चिमी बंगाल के नये प्रधान मंत्री ने सूचित किया कि वे और उनकी सरकार 'वन्दे मातरम्' पसन्द करते हैं।

इस समय यही स्थिति है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि 'वन्दे मातरम्' और 'जनगनमन' के बीच एक प्रकार का विवाद उत्पन्न हो गया है। 'वन्दे मातरम्' स्पष्ट रूप से और निश्चय ही भारत का प्रमुख राष्ट्रीय गीत है और इसकी महान ऐतिहासिक परंपरा है, यह हमारे स्वतन्त्रता संग्राम से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित था। यह दर्जा कायम रहेगा और कोई दूसरा गीत उसे विस्थापित नही कर सकता। यह उस संघर्ष का भावावेश और मार्मिकता तो व्यक्त करता है, किन्तु शायद इसमें उसकी पराकाष्ठा की उतनी अभिव्यक्ति नही है।'

पार्लियामेंट के समक्ष २५, अगस्त १९४८ को दिये गये एक वक्तव्य से

(पृष्ठ ९८ का शेषांश)

गुप्त आदि ने काशी से एक रुपये में ५०० सुपर रायल सोलह पेजो साइज की सस्ता-साहित्य-पुस्तकमाला का आरम्भ किया और सरकारी कोप से बिना डरे, पहले खण्ड में मेरा 'आनन्द मठ' देवी चौधुरानी तथा लौह रहस्य का अनुवाद छापकर प्रकाशित और प्रचारित किया। इस शुभ अवसर पर मैं उन मित्रों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करता हूँ।

वह स्मरणीय दिन मैंने स्वय देखा जब कि अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद को टिकटी पर बाँध कर १५ बेंत बनारस के सेंट्रल जेल में लगाया गया। उन्होने हर चोट पर 'वन्दे मातरम्' भारत माता की जय का नारा का लगाया। वहाँ उस समय के हम राजनीतिक बन्दियों, सरकारी कर्मचारियों की आँखें भर आयी और सबके मुंह से निकल पड़ा 'शाबाश'।

स्वाधीनता आन्दोलन तीव्रगति से बढ़ता रहा। सरकार भगत सिंह, बटुकेश्वर दत्त, रामप्रसाद बिसमिल, अशफाक उल्लाह, राजेन्द्र लाहिड़ी को फाँसी चढ़ा दिया गया। मुकदमों के दौरान वे लोग अदालत में भी 'वन्दे मातरम्' का घोष करते रहे।

काशी की विभूति देशरत्न दानवीर श्री शिवप्रसाद गुप्त जी ने भारतमाता का मंदिर निर्माण किया। काशी विद्यापीठ की स्थापना की। दोनों का उद्‌घाटन महात्मा गाँधी जी ने किया। यह काशीवासियों के लिए गौरव की बात है कि उसी के प्रांगण में 'वन्दे मातरम्' शताब्दी समारोह मनाया जा रहा है। सब मित्रों, सहयोगियों में जो मातृभूमि की सेवा में निछावर हो गये उनके प्रति श्रद्धांजलि तथा जो अभी तक विभिन्न सामाजिक तथा राष्ट्रीय सेवा में लगे रहकर भारत की स्वाधीनता की रक्षा कर रहे हैं, उनके प्रति सादर कुसुमांजलि अर्पित करता हूँ।

वन्दे मातरम्

—श्री विश्वनाथ शर्मा—

यह अत्यन्त हर्ष का अवसर है जब स्वाधीनता आन्दोलन के केन्द्रों में एक प्रमुख केन्द्र वाराणसी में 'वन्दे मातरम्' शताब्दी समारोह मनाया जा रहा है। मैं इसके संयोजक डा० भानु शंकर मेहता और श्री विश्वनाथ मुखर्जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करता हूँ कि उन्होंने कृपा कर इस पुनीत पर्व पर स्वाधीनता के मंत्र 'वन्दे मातरम्' के सम्बन्ध में अपने संस्मरण लिखने को आमन्त्रित किया।

यह मंत्र है जिसको जपते हुए मातृभूमि के लाड़ले श्रेष्ठता के शिखर पर पहुँचे, सर्वश्री अरविन्द घोष, वारीन्द्र कुमार घोष, खुदीराम बोस, प्रफुलचन्द्र चाकी, रासबिहारी बोस, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, विपिन चन्द्र पाल, लाला लाजपत राय, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, सरदार अजीत सिंह, सरदार किशन सिंह, भाई परमानन्द, भाई बालमुकुन्द जी, मदनलाल धीगरा, विनायक दामोदर सावरकर, नारायण दामोदर सावरकर, गणेश दामोदर सावरकर, चाफेकर बंधु, श्याम जी वर्मा, लाला हर दयाल, राजा महेन्द्र प्रताप सिंह, सूफी अम्बादत्त, डाक्टर पाण्डरंग खानखोजे, लाला पिण्डी-दास, पण्डित परमानन्द, चितम्बरम् पिल्ले, मैडम कामा आदि में कइयो को फाँसी, बहुतों को कालापानी की सजाएँ मिलीं और उन्होंने 'वन्दे मातरम्' का जयघोष करते हुए फाँसी के तख्तों को चूमा, जेल की सख्तियाँ बर्दाश्त कीं, बंगाल, पंजाब, बिहार, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, मद्रास के कोने-कोने में वन्दे मातरम् के नारे के साथ इन शहीदों और वीरों का सम्मान किया गया। जीवित रहने पर फूल मालाओं से लाद दिये गये। मरने पर उनकी चिताओं की भस्मी स्वर्ण पात्रों में सुरक्षित रखी गयीं। देश में सरकारी, ब्रिटिश अफसरों, जजों, मजिस्ट्रेटों को जो स्वाधीनता के पुजारियों को सजाएँ देते थे, बम और पिस्तौल आदि का निशाना बनाया गया। विदेशों में समाचार पत्र निकाल कर पर्चे बाँट कर भारत को ब्रिटिश शासकों के चंगुल से छुड़ाकर स्वाधीनता प्राप्ति के लिए नर, नारियों, अध्यापकों, वकीलों और छोटे-छोटे बच्चों ने भी गोलियाँ और लाठियाँ खायीं; पर वे स्वाधीनता के पथ पर चलते रहे।

महात्मा गाँधीजी का असहयोग आन्दोलन चलने पर देश के कोने-कोने में अध्यापको, विद्यार्थियों, वकीलों, सरकारी कर्मचारियों ने ब्रिटिश सरकार से असहयोग किया, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाएँ शान्तिनिकेतन (बंगाल), काशी विद्यापीठ (वाराणसी), तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ (पूना), आदि की स्थापना सन् १९०५ से लगातार होती रही। पंचायतों का संघटन हुआ। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार हुआ, उनकी होलो जलायी गयी। जनता ने स्वदेशी वस्तुओं के व्यवहार की प्रतिज्ञा की।

हम युवक स्वयं सेवक राष्ट्रीय झण्डों के साथ 'वन्दे मातरम्' का नारा लगाते हुए गलियों और सडकों, शहरों, कस्बों, गाँवों में असहयोग की अलख जगाते थे। जनता बड़े आदर से हमारी बातें सुनती थी। बाजे गाने के साथ 'वन्दे मातरम्' गीत गाया जाता था। उसमें सप्तकोटि के स्थान पर त्रिंशकोटि कर दिया गया था। जब हमारी मण्डली भुजाएँ उठाकर त्रिंश कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले द्वित्रिंश कोटि भुजैधृत-खर-करवाले की ललकार के साथ गाती हुई चलती थी तो बच्च-बच्चा जोश से भर जाता और हमारे साथ भारतमाता की बेड़ियाँ काटने चल पड़ता।

वह दिन मैंने स्वयं देखा जब देशरत्न स्वर्गीय बंकिम चन्द्र चटर्जी ने 'वन्दे मातरम्' गीत की पृष्ठभूमि में आनन्द मठ उपन्यास बंगला भाषा में लिखा जिसमें भारतमाता की अतुलित शक्ति, भक्ति मठ के वासियो द्वारा वैभवों का त्याग करके ब्रिटिश शासकों से अपनी स्वाधीनता छीनने का आह्वान है। इस गीत को सन् १८९६ में रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने ललित स्वरों में सार्वजनिक सभा में गाया था। पुस्तक की रचना सन् १८८२ में हुई। आगे चल कर यह पुस्तक राजाज्ञा से जब्त कर ली गयी।

मैंने अपनी १९२१-२२ की कारावास की अवधि में बंगला भाषा सीखी और किसी प्रकार बंगला में जब्त 'आनन्द मठ' प्राप्त करके राष्ट्रभाषा में अनुवाद किया। श्री दुर्गाप्रसाद खत्री, श्री पन्नालाल गुप्त तथा श्री मुकुन्द दास

(शेष पृष्ठ ९७ पर)

इस्लाम और वन्दे मातरम्

—मौलाना रेजाउल करीम—

(बंगाल हिन्दू-मुसलमानों का प्रदेश है, अकेले हिन्दुओं का नहीं। पर आज कल हिन्दू मुसलमान अलग हैं, आपस में सहृदयता नहीं है। बंगाल की भलाई के लिए यह जरूरी है कि हिन्दू-मुसलमानों में एकता हो। जब तक उच्च वर्ग के मुसलमानों में यह भावना रहेगी कि वे दूसरे मुल्क के है, बंगला उनकी भाषा नहीं है, वे न तो बंगला लिखेंगे और न सीखेंगे, सिर्फ उर्दू-फारसी से काम चलायेंगे तब तक एकता स्थापित नहीं होगी, क्योंकि राष्ट्रीय एकता की जड़ में भाषा की एकता होती है।) बंकिमचन्द्र, बंग दर्शन, पौष १२८० (१८७४ ई०)

यह प्रश्न कई बार उठा है कि क्या 'वन्दे मातरम्' किसी सम्प्रदाय का गीत है? अनेक घटनाओं की स्मृतियों से आप्लावित यह गीत, जिस गीत ने भारतवासियों के हृदय के तंत्र-तंत्र मे मूर्च्छना जगायी है, आज भी जगा रहा है, क्या वह बुतपरस्ती से परिपूर्ण है? क्या वह बुतपरस्तों के लिए देवी-स्तुति का गीत है?

हम लोगों के बीच कुछ ऐसे लोग हैं जो लोग बात-बात में बुतपरस्ती का हौवा खड़ा करके साधारण मुसलमानों की दैनिक जीवन धारा को विषाक्त बनाना पसन्द करते हैं। माता-पिता के चरण हाथ से स्पर्श करते हुए भक्ति दिखाना भी तो बुतपरस्ती है। श्रद्धेय व्यक्तियों के सामने सिर झुकाकर भक्ति दिखायी जाय तो वह भी बुतपरस्ती है। सौन्दर्य वृद्धि के लिए कमरे में तस्वीर रखना भी बुतपरस्ती मानी जानी चाहिए। इस प्रकार लोग बात-बात पर बुतपरस्ती या इस्लाम के विपरीत कार्य के लिए डराते हैं। ऐसे लोगों के लिए कौन सा कार्य इस्लामी है और कौन गैर इस्लामी यह बताना कठिन है। इस प्रकार के फतवो के दबाव से ही मुसलमान उलझ जाते हैं। उनकी आजादी की चिन्ताधारा बन्द दरवाजो के कारण अपना विकास नही कर पा रही है। पग-पग पर साधारण विषय आकर आजादी से सोचने की उनकी शक्ति को नष्ट कर रहे हैं।

इस प्रकृति के व्यक्ति 'वन्दे मातरम्' जैसे निर्दोष और सर्वाङ्ग सुन्दर गीत को भी साम्प्रदायिक कहते हैं पर जिनके पास उदार-दृष्टि है, उन्हे वन्दे मातरम् गीत को समग्र-दृष्टि से देखना चाहिए। वे देखेंगे कि उसमें बुतपरस्ती का दोष कहीं नहीं हैं। हमें यह देखना है कि इस्लाम किसको बुतपरस्ती कहता है और उसकी सीमा कहाँ है?

इतिहास

प्रथम युग में अरब के कौरेश घोर बुतपरस्त थे। उनकी बुतपरस्ती को दूर करने के लिए अनेक प्रकार के कठोर कानून या नियम बनाने की आवश्यकता हुई थी। वह यों था—कोई मूर्ति या प्रतीक बनाकर उसे ईश्वर या खुदा मानकर पूजा करने की प्रथा उन लोगों ने स्वीकार नहीं की। सिर्फ यही नही, किसी सृष्ट-जीव को ईश्वर या खुदा के स्वरूप विशिष्ट मानने की मनाही हो गयी। खुदा के सामने जैसी प्रार्थना की जाती है, सृष्ट-जीव के निकट वैसा नहीं किया जा सकता। वर्तमान स्थिति मे यही है इस्लाम की दृष्टि में बुतपरस्ती। खुदा **सर्वशक्तिमय है**—इस विश्वास को चोट न पहुँचे, तो ऐसा कोई भी काम बुतपरस्ती के अन्तरगत नही है।

मुसलमानों ने विभिन्न देशों को जीता है, वे भिन्न-संस्कृतियो के संस्पर्श में आये हैं, उनमें भाव-आदर्शों का विनिमय हुआ है, मुसलमानों ने न जाने कितने आदर्शों को दूसरो से ग्रहण किया है और कितने आदर्श दूसरों को दिये हैं। इस आदान-प्रदान क्रिया में कुछ ऐसे विषयों भी उसने ग्रहण किया है जिसे शायद प्राचीनकाल के **मुसलमान**

स्वीकार न करते, पर कालक्रम के प्रभाव मे उन सब को उन्होने इस तरह अपने आप मे समाविष्ट कर लिया है कि उससे इस्लाम की पवित्रता तनिक भी नष्ट नही हुई है। बुतपरस्ती को मुसलमानो ने सीमाबद्ध रूप मे स्वीकार किया है वर्ना वे भिन्न-भिन्न संस्कृति और सभ्यता के आक्रमणों को सह न पाते। ग्रीस, रोम, भारतवर्ष आदि आदि सुसभ्य देशों की ज्ञान-गरिमा जब मुसलमानो के घर आने लगी तब उन्होंने एकेश्वरवाद आदर्श के ऊपर खड़े रहते हुए भी बुतपरस्ती के डर से उनके अच्छे आदर्शो को ग्रहण करने मे किसी भी दुविधा का अनुभव नही किया। किसी एक आदर्श के लिए सम्मान प्रदर्शन करना, देश को माता के समान समझना, इन बातों को मुसलमानों ने निषिद्ध कार्य नही समझा।

इसीलिए मुसलमानो ने कभी अर्द्ध चन्द्रांकित पताका के प्रति सम्मान दिखाया। विभिन्न आदर्शों के लिए प्रतिक का का उपयोग किया। बुतपरस्त जातियों की अनेक प्रथाओं को वे अपने मे अंगीभूत कर चुके है। इसके लिए वे कभी मुसलमान- धर्म से बहिष्कृत नहीं हुए।

मुसलमानों के निकट जो लोग आदर के पात्र हैं, मर्यादानुसार उनके सम्मान के लिए कुछ विशेष-विशेष शब्दों के व्यवहार की विधि है। चरमतम भक्ति के पात्र खुदाताला के लिए जिन शब्दों का प्रयोग होता है, सृष्ट-जीवन के प्रति उनका प्रयोग नही हो सकता। आराधना योग्य समस्त भाषा केवल ईश्वर के प्रति प्रयुक्त होती है, अन्य किसी के लिए नही, किसी के निकट प्रार्थना या उपासना नही की जा सकती। जिस हजरत मुहम्मद को मुसलमान अंतिम-उद्धारक मानते है, उनके प्रति भी ऐसे शब्दों का प्रयोग नही किया जाता।

आम तौर पर हिन्दू महापुरुषों को ईश्वर का अवतार मानते है, भले ही वह महापुरुष किसी भी देश या सम्प्रदाय का क्यों न हो। इसलिए वे सर्वशक्तिमान ईश्वर और महापुरुषोंके प्रति समान शब्दों का प्रयोग करने मे नही हिचकते। लेकिन मुसलमान सर्वशक्तिमान खुदा के लिए जिन शब्दों का प्रयोग करता है, वह शब्द किसी भी दूसरे के लिए प्रयोग नही करता।

विश्व के मुसलमान अगर सर्वत्र केवल अरबी भाषा का प्रयोग करते तो शब्दों के चुनाव में इतनी कठिनाई न होती। पर विभिन्न देशों मे जाकर उन्होंने वहाँ की भाषा अपनाई, अब ऐसी हालत मे इतना विचार करने से कैसे चल सकता है? उन देशो की भाषा मे विभिन्न शब्दो के प्रयोग की विधि उस देश की प्रथा के अनुसार ही तो होगी। उदाहरण स्वरूप एक शब्द को लीजिये 'पूजा'। यह शब्द नाना अर्थों मे प्रयोग होता है। जैसे ईश्वर की पूजा की जाती है, उसी प्रकार काली पूजा, दुर्गा पूजा, शिव पूजा- इन सब में पूजा शब्द व्यवहृत होता है। पिता-माता और गुरुजन के प्रति भक्ति प्रदर्शन का अर्थ भी पूजा होता है। अंग्रेजी में वर्शिप शब्द भी इसी प्रकार का है, ईश्वर के अलावा अन्यत्र भी इसका प्रयोग किया जाता है। लेकिन अरबी भाषा में ईश्वर या खुदाताला की पूजा करने के बारे में एक विशेष शब्द है जो अन्य किसी के लिए प्रयोग नही किया जाता। वह शब्द है—'इबादत'। किसी मनुष्य की इबादत नही की जाती। इबादत सिर्फ खुदा के लिए है। प्रत्येक हिन्दू यह जानता है कि ईश्वर पूजा, दुर्गा-पूजा, देश पूजा, और पितृ-पूजा एक ही वस्तु नही है या एक ही अर्थ मे व्यवहृत शब्द भी नहीं है। यहाँ एक ही शब्द विभिन्न अर्थो मे व्यवहृत होता है प्रत्येक अंग्रेज जानता है कि ईश्वर की वर्शिप और राजा की वर्शिप करना एक ही बात नही है। फारसी भाषा में 'वन्दगी' शब्द भी इसी तरह का है।

अत: सवाल भाषा का है मजहब का नहीं। जब मुसलमान बंगला-अंग्रेजी आदि भाषाओं को मातृभाषा के रूप में ग्रहण कर चुके है तब उन्हे उन भाषाओं के विधि-निषेध और दोष-गुणों को भी मानना चाहिए। उनकी रचना और कथोपकथन की भाषा, मातृभाषा के व्याकरण की अनुयायी होनी चाहिए। इसके अलावा अन्य कोई उपाय नहीँ है। लिहाजा पूजा शब्द को विभिन्न अर्थों में ग्रहण करना ही पड़ेगा। माता-पिता और गुरुजनों की पूजा करो यह बात जिस प्रकार प्रयोग में लाते हैं, उसी तरह ईश्वर या खुदाताला की पूजा करो, यह भी कहना पड़ेगा। ऐसा कहने से इस्लाम की दृष्टि में पापी बनने का कोई सवाल ही नही उठता। क्योंकि पूजा शब्द का विभिन्न क्षेत्रों में, विभिन्न

अर्थों में प्रयोग होता है। कहने का मतलब यह कि "खुदा को पुकारो", यह बात जैसे कहता हूँ, उसी तरह अमुक को पुकारो, यह भी तो कहते है। पूजा शब्द का प्रयोग इसी रूप मे करना पड़ेगा।

भारतीय भाषा मे एक शब्द है—वन्दना। पूजा शब्द की तरह वन्दना शब्द भी विभिन्न रूपो मे प्रयुक्त होता है। खुदा की वन्दना, महापुरुषों की वन्दना, देश की वन्दना, शरद्काल की वन्दना, ये सब वन्दना के प्रयोग है। अगर हम यह कहें कि हे शरद् काल, मै तुम्हारी वन्दना करता हूँ, या देशमाता मैं तुम्हारी वन्दना करता हूँ, तो इस्लामी मजहब का ऐसा कोई शास्त्रज्ञ है जो मुझे ऐसा कहने के कारण काफिर कह सके? बंगला भाषाके अनेक मुसलमान कवि और लेखको ने इन्सान के बारे मे वन्दना शब्द का प्रयोग किया है। उनकी रचनाओ मे इसके प्रमाण है। तो क्या इसके लिए वे काफिर बन गये है? बंगला भाषा मे जो शब्द प्राचीन काल से चला आ रहा है, वह उसी तरह चलेगा।

माँ

इसके बाद एक प्रश्न और उठता है—देश को 'माँ' कहकर सम्बोधन किया जा सकता है या नही? माननीय मौलाना अकरम खाँ साहब ने "वन्दे मातरम्" गीत का विरोध किया है, लेकिन उनकी मुख्य कृति 'मोस्तापाचरित' में पृष्ठ १५७५ पर जहाँ अरब देश का भौगोलिक वर्णन है वहाँ पहले ही लिखा है।

धरियाछे वक्षे मा गो, कार पदलेखा,
हे अरब मानवेर आदि मातृभूमि।

अर्थात कवि ने अरब को "माँ" कह कर सम्बोधन किया है।

उक्त कविता के लेखक मुसलमान हैं और जिन्होंने उद्धृत किया है, वे भी एक विख्यात मौलाना है। देश को "माँ" कहना अगर आपत्ति जनक होता तो वे लोग ऐसा कभी भी नही लिखते या मौलाना साहब उद्धृत न करते। देश को जब हम 'माँ' कहते हैं तब रूपक अर्थ मे ही कहते है। देश को माँ के रूप में सम्बोधन करने का मूल उद्देश्य है—समूचे देशवासियो की दृष्टि आकर्षित करना। यहाँ हम देश को खुदा नही कहते। अगर हमारी माँ को माँ कहकर पुकारने में कोई दोष नही होता तो रूपक भाव से देश को माँ कहने में भी कोई दोष नहीं हो सकता। देश भक्ति, देश-पूजा, देश-वन्दना, देश-मातृका एक ही प्रकार के विभिन्न शब्द है जो इस्लाम की दृष्टि में पूर्णतय: मर्यादित है। लिहाजा 'वन्दे मातरम्' गीत गाना किसी भी प्रकार न बुतपरस्ती है और न इस्लाम विगर्हित कार्य।

देश को माँ कहकर सम्बोधन करने की प्रथा अरबी और फारसी के अनेक कवि तथा लेखकों की रचनाओं में प्राप्य है। अगर इन सभी शब्दों का प्रयोग आपत्तिजनक होता तो बंगला ही क्यों, विश्व की किसी भी भाषा की काव्य-कला अचल हो जाती। अरबी और फारसी साहित्य के अनेक मुसलमान लेखकों ने बुतपरस्ती के भाववाली अनेक कविताएँ लिखी हैं। इकबाल, हाफिज, रूमी, उमर खैयाम भी बाकी नही बचे हैं। 'उम्मुलकोरा' (ग्राम्य जननी) 'उम्मुल मोमेनीन' (विश्वासियो की जननी) और 'उम्मुल केताब' (ग्रन्थ जननी) आदि शब्द उल्लेखनीय है। 'वन्दे मातरम्' भी वैसा ही एक शब्द है।

बुतपरस्ती समझ कर जो 'वन्दे मातरम्' जैसे सर्वांग सुन्दर संगीत को नापसंद करते है, मेरे विचार से उनका उद्देश्य पवित्र नही है। वन्दे मातरम् की भाषा तो बहाना मात्र है। असली कारण राजनीतिक है। प्रकृतिस्थ होकर किसी ने भी मामले में गौर नहीं किया क्योंकि इसके लिए उदार-दृष्टि, संस्कार-मुक्त--हृदय और अन्य के प्रभाव से मुक्त स्वाधीन चिन्तन-शक्ति की आवश्यकता है।

इस्लाम के किसी आदर्श की दोहाई देकर वे कहते हैं कि 'वन्दे मातरम्' बुतपरस्त के भाव से परिपूर्ण है। मैं यह पहले ही कह चुका हूँ कि इस देश मे रहते हुए इस देश की भाषा में कहने पर शब्दों को साधारण देशी अर्थो में ग्रहण करना पड़ेगा। प्रचलित अर्थ स्वीकार करने पर 'वन्दे मातरम्' गीत किसी भी एकैश्वरवादी की दृष्टि मे आपत्तिजनक नही हो सकता।

विश्लेषण

सबसे पहले 'वन्दे मातरम्' ध्वनि पर विचार किया जाय। इसका अर्थ स्पष्ट है—'हे देश माता, मैं तुम्हारी वंदना करता हूँ।' उर्दू के लोगों ने इसका अनुवाद यों किया है—'ऐ मादर, तुझे सलाम करता हूँ।' अर्थात् हे माता, तुझे सलाम करता हूँ। इसमें आपत्ति करने लायक

तो कुछ भी नहीं है। मुल्क को आजाद करना हमारा लक्ष्य है। इस लक्ष्य के लिए पहला काम है कि देश के प्रति आम लोगों के मन मे प्यार उत्पन्न किया जाय। देश को प्यार करने पर उसका सौन्दर्य, महिमा और श्रेष्ठता क्या-क्या है, इसे ध्यान मे लाना होगा। बार बार देश की वंदना करना, उसका अभिवादन करना या सलाम करने को खुद ही मन करने लगेगा। 'वन्दे मातरम्'--'इबादत' या ईश-पूजा का गीत नहीं है। इसमे यह नही कहा गया है कि देश, तुम्हें साष्टांग प्रणिपात (सिजदा) करता हूँ अथवा ईश्वर के निकट जो प्रार्थना की जाती है, देश-माता के निकट उस प्रकार की कोई प्रार्थना भी नही की गयी है। वन्दे मातरम् हृदय मे ऐसी भावना का उद्रेक करता है जो सभी सम्प्रदायों के हृदय में गहराई तक स्पर्श करती है।

सुजलां सुफलां से आरम्भ कर परवर्ती कई छन्दों के प्रति दृष्टिपात करने पर क्या ज्ञात होता है ? 'वन्दे मातरम्' कहते हुए जिस देश का अभिवादन किया गया, जिस देश की वंदना की गयी है, जिस देश को याद किया गया, इन शब्दों में उसके वाह्य रूपों का वर्णन किया गया है। यही है मेरा देश, जो देश सुजलां सुफलां है, जिस देश का प्रत्येक प्रान्तर मलयानील से सुशीतल है, जिस देश का आकाश मधुर है, बतास मधुर है, जिस देश की भूमि दलदलो से सुशोधित है, हम अपनी उसी भूमि को सलाम करते है, अभिवादन करते हैं, उसकी वंदना करते है। हमारा यह पुण्य देश इस तरह सुरक्षित है कि वह दुश्मनो का मुकाबला कर सकता है। वह इस देश की स्वाधीनता को हमेशा अक्षुण्ण रखेगा।

इस प्रकार देश की शक्ति, सौन्दर्य और महिमा के वर्णन में कौन सा दोष देखा जा सकता है, यह मेरी समझ में अभी तक नही आयी। नदी-पानी, पेड़ों के फल, जमीन में उगी घास, चिड़ियों के कलरव आदि में कहाँ बुतपरस्ती की गंध हैं ? वस्तुत: 'वन्दे मातरम्' गीत के प्रथम दो छन्दों में केवल मातृभूमि की वंदना है। प्रत्येक पंक्ति स्वदेश-प्रेम, उद्दीपन और जीवनी-शक्ति वृद्धि करने लायक उपयोगी शब्दो द्वारा ग्रथित हुई है। इसकी झंकार, अपूर्व शब्द निर्वाचन और अनवद्य सुर किसी भी श्रोता को मुग्ध करेंगे, धमनियों मे उत्साह और प्रेरणा की अनल उत्पन्न करेंगे।

अगला छन्द

अब हम अंतिम छन्दो पर विचार करें। 'त्वं हि दुर्गा दश प्रहरणधारिणी' को भ्रमवश हिन्दू देवियों दुर्गा, लक्ष्मी सरस्वती देवियों की स्तुति समझ लिया गया है। पर उसमें ऐसी बाते नहीं है। यह हिन्दू-देवी-देवताओं की स्तुति नही है बल्कि प्रकारान्तर से बुतपरस्ती के प्रति वक्रोक्ति है—हिन्दू-देवी-देवता के प्रति व्यंग है। इस गीत में देश-माता को देव-देवी से ऊँचा स्थान दिया गया है। हिन्दू जिन देवी देवताओ दुर्गा, कमला, सरस्वती, देवी आदि की पूजा करते हैं, इस गीत मे कहा गया है कि इन सबसे कही अधिक बडी है देश-माता। देवी-देवताओं की अपेक्षा हमारे निकट देश माता बडी है। देश ही मेरी दुर्गा है। देश ही मेरी लक्ष्मी है, देश ही मेरी सरस्वती है। साफ-साफ शब्दो में सप्तकोटि कण्ठ से घोषणा की गयी है कि यह देवी-देवता मेरे निकट कुछ भी नहीं है, देश ही मेरे निकट सब कुछ है, संपूर्ण-साधना का श्रेष्ठ-धन है।

'वन्दे मातरम्' के प्रति मुसलमानों की आपत्ति पूर्णत: अयौक्तिक है। बुतपरस्ती में विश्वास रखने वाले, तैंतीस करोड़ देवी देवताओं की पूजा करने वाले हिन्दू अगर इस गीत के प्रति आपत्ति करते तो बात होती। वे कह सकते थे कि क्या हमारे देवी-देवता कुछ नहीं हैं ? दुर्गा कुछ नहीं हैं ? देश ही सब कुछ है ? नही ऐसा नही हो सकता। देश दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती से अधिक नहीं हो सकता। लेकिन हिन्दुओं ने आपत्ति नही की। इस गीत मे वे देश-माता को दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती से ऊँचे सिंहासन पर बैठाकर उसकी वंदना करते है। यह बात 'आनन्दमठ' उपन्यास के नायक महेन्द्र के आचरण से भी समझ में आ जाती है। महेन्द्र के सामने जब इस माँ का वर्णन किया गया तब वह चकित रह गया। कहा—यह तो देश है, माँ नही।

हिन्दुओं के ज्ञान, विश्वास, संस्कार और धार्मिक मतानुसार महेन्द्र ने ठीक प्रश्न किया था। उत्तर मे भवानन्द ने कहा—'हाँ, यही मेरी माँ है, जन्म भूमि ही मेरी माँ है, अन्य देव-देवी, अन्य माँ को हम नहीं मानते, हम लोगों का अन्य धर्म नही है, जाति नही है, एक मात्र जननी जन्म भूमि ही हम लोगों के लिए सब कुछ है। वास्तव मे जो लोग आजादी के लिए सर्वस्व निछावर करते हैं, उनके निकट देश

ही सब कुछ है। देश के लिए वे माँ मौत को भी चुनौती दे सकते हैं।

'वन्दे मातरम्' का मूल उद्देश्य बुतपरस्ती की जय कहना नही है, बल्कि बुतपरस्तों की देवियों दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की अपेक्षा देश माता बड़ी हैं, इस गीत मे यही बताया गया है।

दुर्गा, कमला और सरस्वती शब्दों से चौकने से कही काम चलता है? हमें यह देखना होगा कि ये शब्द - समूह पूजा के आस्पद भाव मे वर्णित है या नही। शब्द प्रयोग के इतिहास का अध्ययन करने पर ज्ञात होगा कि संसार की प्रत्येक भाषा में इस तरह के बुतपरस्ती वाले शब्दों का प्रयोग होता है। यहाँ तक कि मुसलमान साहित्यिकों ने भी किया है। क्यूपिड को प्रेम का देवता, जौहरा को संगीत की देवी, अजराइल को मौत के फरिश्ते तथा मिकाइल को वर्षा के फरिश्तेके रूप में मुसलमान लेखकोंने स्वीकार किया। क्यूपिड जौहरा, अजराइल, मिकाइल शब्दों के प्रयोग से अगर कोई बुतपरस्त नहीं होता तो दुर्गा, कमला, वाणी शब्दों का उपमा के रूप मे प्रयोग करने से बुतपरस्ती नही झलकती।

'वन्दे मातरम्' गीत को समग्र रूप से पढ़ने पर साफ समझ में आ जाता है कि देश-धर्म की श्रेष्ठता को प्रतिपन्न करने के लिए ही उसकी रचना हुई थी। उसका मुख्य उद्देश्य है—आमलोगो में देश-प्रेम जाग्रत करना। वन्दे मातरम् का यह उद्देश्य काफी हद तक सफल हुआ यह बात हम अनायास कह सकते हैं। भवानन्द की तरह आज भारत के हिन्दू मुसलमान, करोड़ों नर-नारी दहाड़ कर कहना सीख गये है—'हम लोग अन्य माँ को नहीं मानते हैं, हम मानते हैं—देश-माता को, देश माता ही हमारे लिए सब है, इनसे बढ़कर अन्य कोई देवता मेरे निकट नही है। जब तक मुल्क आजाद नही होगा तबतक देश ही मेरा धर्म, देश-सेवा ही मेरी सबसे बड़ी साधना होगी। इसके अलावा अन्य किसी साधना को हम नही जानते, नही समझते और न मानते हैं। अन्य किसी साधना को हम न मानते हैं, न जानते हैं, और न समझते हैं। 'वन्दे मातरम्' गीत यही कहता है, यही कहा है और वह भी स्पष्ट तथा द्विधाहीन भाषा में।

वन्दे मातरम् के विरुद्ध फतवा इस्लाम-धर्म के अभिज्ञ और कुरान-विशेषज्ञ आलिम फाजिलों ने नहीं कोट-पेण्ट पहननेवाले साहबी ढंग के बैरिस्टरों तथा राजनीतिकों ने दिया है। इन लोगों को अपने जीवन में कभी मस्जिद के प्रांगण को चरण-रज देने की फुर्सत नहीं मिली है। इस्लाम के साथ जिन लोगों का साक्षात् या परोक्ष रूप से भी कोई सम्बन्ध नही है, ऐसे ही लोगों ने 'वन्दे मातरम्' को बुतपरस्ती कहा है।

खिलाफत युग मे मौलाना अकरम खाँ ने जब मुसल-मानो से कांग्रेस का साथ देने को कहा था तब उन्होंने कुरान-शहीद को आधार बनाकर ही कहा होगा। उन दिनों 'वन्दे मातरम्' गीत गाया जाता रहा, 'वन्दे मातरम्' ध्वनि से आकाश-बतास विदीर्ण होता रहा। उन्हें कुरान-हदीस में उसके विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं मिला था। १९०६-१९११ वर्षों के दौरान स्वदेशी आन्दोलन के युग में वे स्वयं 'वन्दे मातरम्' के भक्त थे। लेकिन मुस्लिम लोग के उद्भव के साथ वे कुरान-हदीस को सामने रखकर 'वन्दे मातरम्' के विरुद्ध हो गये। इसके पूर्व भारत की प्रत्येक सभा में यह गीत गाया जाता था और वन्दे मातरम् ध्वनि भी सर्वत्र की जाती थी। अगर यह गीत इस्लाम - विरोधी होता तो खिलाफत-युग में मौलाना आजाद, मौलाना मुहम्मद अली, शौकत अली, जाफर अली, हसरत मोहानी आदि नेता इसके विपरीत जरूर बोलते। जिन सभाओं में यह गीत गाया जाता रहा या 'वन्दे मातरम्' का नारा लगता रहा, ऐसी सभाओं में ये लोग मौजूद रहते थे और भाषण देते थे तथा बिना प्रति-वाद किये उक्त संगीत के सम्मानार्थ खड़े होते थे। मुसलमान परिपूर्ण ईमान लेकर अल्लाहताला में प्रगाढ विश्वास रखते हुए 'वन्दे मातरम्' संगीत गाते थे। ऐसा करने से उनके ईमान में जरा भी ठेस नहीं पहुँचती।

फारस के अमर कवि हाफिज ने जब अपने अमर ग्रंथ में आरम्भ की एक पंक्ति पापात्मा एजिद की कविता से ग्रहण की तो उनके विरुद्ध लोग काफी नाराज हो गये। प्रत्युत्तर में कवि ने कहा था—'मोती उठाते समय स्थान का विचार नही करना चाहिए।' हम लोग भी 'वन्दे मातरम्' के संगीत के बारे में यही बात कह सकते हैं। इस गीत मे अन्तर्निहित माधुर्य के कारण ही उसने राष्ट्रीय-संगीत का स्थान ग्रहण किया।

("बंकिम चन्द्र ओ मुसलमान समाज" नामक पुस्तक के आठवें अध्याय का संक्षेप में अनुवाद पृष्ठ ९० से १०२ तक। प्रकाशक—श्री रामगति चटर्जी, ९१ बी सिमला स्ट्रीट, कलकत्ता। मूल्य दो रुपया। पुस्तकाकार रूप में प्रकाशन १८ मई१९४४ ।

वन्दे मातरम्

न्यायमूर्ति श्री जी० एन० वैद्य

ईस्वी सन् १८८२ में बंकिम चन्द्र चैटर्जी ने अपना सुख्यात सामाजिक बंगला उपन्यास आनन्दमठ लिखा। इस उपन्यास में एक गीत था वन्दे मातरम्। इस गीत की प्रथम चार पंक्तियाँ भारत में राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का रण-घोष बन गयीं। मानो भारत भूमि से ब्रिटिश साम्राज्य के मूलोच्छेदन हेतु वन्दे मातरम् ने परमाणु शक्ति अर्जित की।

विगत ९३ वर्षों मे हमारी जनता गीत के जिस अंश को गाती रही है, उसका अनुवाद श्री अरविन्द घोष ने (अंग्रेजी) मे इस प्रकार किया है—

मदर, आइ बाउ टु दी ! रिच विथ दाइ हरींइंग स्ट्रीम्स,
ब्राइट विथ दाई आर्चड ग्लीम्स, कूल विथ दाई विंड्स ऑफ डिलाइट,
डार्क फील्ड्स वेविंग, मदर ऑफ माइट, मदर फ्री।
ग्लोरी आफ मून लाइट ड्रीम्स, ओवर दाई ब्रांचेज ऐण्ड लार्डली स्ट्रीम्स,
क्लैड इन दाइ ब्लासमिंग ट्रीज, मदर, गिव़र आफ ईज,
लाफिंग लो ऐण्ड स्वीट, मदर आई किस दाई फीट, स्पीकर स्वीट एण्ड लो, मदर टु दी आइ बाउ।

वन्दे मातरम् की भाँति किसी भी अन्य शब्द-द्वय ने भारतीय मन-मस्तिष्क को इस प्रकार नही जोड़ा। ये शब्द बहुत पुराने थे। किन्तु इनका मनोभाव एकदम नया था। यह भारतीय राष्ट्रीयता की भावना थी। इनमें हमारी जनता के अंदर सुलगती आग और विश्वास प्रतिबिम्बित था। इन दो शब्दों के लिये बड़े-छोटे हजारों लोगों ने अपने घर परि-वार, जीवन और अपनी मुक्ति का भी बलिदान कर दिया।

अनेक प्रश्न

भारत में हर महत्वपूर्ण आयोजन में, धूप में, वर्षा में, समूचे देश में करोड़ों लोग वन्दे मातरम् गायेंगे। बड़े गर्व और अनन्त आशाओं से भरे बच्चे या बूढ़े भारतवासी 'वन्दे मातरम्' कहेंगे।

क्या हमारी भारत माता की वन्दना निष्कपट है ? क्या हम अपने देश से प्यार करते हैं ? भ्रष्टाचारी कौन है ? तस्कर कौन है ? किन्हें विदेशी शक्तियाँ और जासूस खरीद सकते है ? चोर बाजारिये कौन है ? आज ये प्रश्न हमारे मन मे मुखर है।

हमे बताया जाता है कि विदेशी आक्रांताओं द्वारा बारंबार भारत जीता जाता रहा है। क्या देश के कुछ स्वार्थी लोगों की सहायता और निर्लज्जतापूर्ण सक्रिय सहयोग के बिना वे जीत सकते थे ? क्या हम अपने जातिगत दर्प और पूर्वाग्रहों से उत्पन्न द्वन्द्वों के कारण सदा ही विभाजित और दुर्बल बने रहेगे ? क्या हमारी अनेक भाषाएँ और सम्प्र-दाय राष्ट्र की प्रगति में अवरोध बने रहेंगे ?

हाल में जो आपात्-स्थिति की घोषणा हुई है, कुछ संवैधानिक अधिकारों और उपचारों का स्थगन हुआ है, यह सब सरकार में शासन की बागडोर सम्भालने वाले लोगों की कार्यवाही है। शताब्दियों पुरानी आदतों, धारणाओं भावनाओं के कारण, शासन में भले लोगों के यथा-शक्ति उत्तम प्रयासों के बावजूद, राष्ट्र विरोधी कुशासन और श्रमिकों तथा किसानो के शोषण को रोकने में क्या यह समर्थ होगी ? हम बडी उम्मीद से महानतम अखिल भारतीय प्रयोग का निरीक्षण और अवलोकन कर रहे है।

केवल अवलोकन और निरीक्षण पर्याप्त नही है। हम सबको, जहाँ भी हम है कुशासन को रोकने और जनता के दु:खों को दूर करने के लिये, कार्य करना चाहिये। यदि हम में से हर व्यक्ति ईमानदारी और निष्ठापूर्वक अपना कर्तव्य पालन करे और जैसे महात्मा गान्धी या जवाहरलाल नेहरू या सुभाष चन्द्र बोस हमें प्यार करते थे, उसी प्रकार अपने भारतीय राष्ट्र को प्यार करे तो हम भारत राष्ट्र को अपनी 'बहुबल धारिणी' 'मलयज शीतला' माता बना सकेंगे।

(शेष पृष्ठ १०६ पर)

वन्दे मातरम्

(योगिराज मोतीलाल जी महाराज ने बताया है कि 'वन्दे मातरम्' के संपुट मंत्र का सुन्दर वन अघोरी जप करते थे और दूसरे यह कि यह अघोम्नाय का मंत्र है। इस संदर्भ में ज्ञातव्य है कि बंकिम बाबू के यहाँ एक अघोरी के आने को चर्चा मिलती है, दूसरे उनके उपन्यास 'कपाल कुण्डला' में भी अघोर-सम्प्रदाय का जिक्र है जिससे यह अनुभव होता है कि उन्हें इस सम्प्रदाय के बारे में अवश्य ही जानकारी रही होगी।

पुनः अधाम्नाय की नायिका 'तारा' हैं जो दश महाविद्या में से एक हैं। इन महाविद्याओं में 'काली' का समय मध्य रात्रि से प्रभात ६ तक और 'तारा' का समय प्रभात है। यह तारा हिरण्य गर्भ की शक्ति है। अब तांत्रिक विद्वान ही बता सकते है कि अरुणोदय के इस मन्त्र का जागरण और स्वाधीनता संग्राम से क्या सम्बन्ध रहा है (तांत्रिक दृष्टि से), 'वन्दे मातरम्' के जप ने क्या भूमिका अदा की ? यदि हमारी अज्ञ कल्पना सही हो तो इस तारा की साधना ने ही देश में नूतन प्रभात की सृष्टि की अतः मन्त्र का अभिवादन—'वन्देमातरम्'—सम्पादक)

'तन्त्र में महाकाल शंकर ने जिस युग-धर्म का उपदेश किया है वह और कुछ नही गणतन्त्र भारत का यही 'वन्दे मातरम्' है और यही विश्वधर्म है।'

—आद्याप्रसाद नारायण सिंह

रहस्योद्घाटन : ब्रह्मीभूत योगिराज बाबा श्री मोतीलाल जी महाराज

अधाम्नाय में षोडशी महाविद्या के नाम से ज्ञात एक अपूर्व मन्त्र बंगाल के सुन्दर वन मे अघोर साधकों द्वारा सफलतापूर्वक व्यवहृत होता था। उस मन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वन्दे हि मातरम् क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ' अघोर साधना में तत्वीकरण पर अधिकार पाना नितान्त आवश्यक है। सुन्दरवन में अघोर-साधक इसीलिये अपनी साधना के प्रारम्भ में इस मन्त्र का जाप किया करते थे। बिना इस महामन्त्र को सिद्ध किये अघोर साधना में सफलता पाने की आशा ही नही रहती थी। इसी कारण इसका एक नाम अघोरांग षोडशी भी प्रसिद्ध हैं।

षोडशी महाविद्या का मन्त्र त्रिकूटात्मक है (१) ॐ ऐं ह्रीं श्री—यह वाक्कूट है। इसमें वाग्बीज 'ऐं' की प्रधानता है। (२) क्ली वन्दे ही मातरम्—इस कामकूट में कामबीज 'क्ली' का प्राधान्य है। (३) क्लीं श्री ह्रीं ऐ ॐ—विलोमात्मक यह कूट, शक्ति कूट है।

१६ अक्षरों के इस महामन्त्र का भाव अत्यंत गूढार्थ से भरा हुआ है। 'वन्दे हि मातरम्' की व्युत्पत्ति इस प्रकार होगी—'वं देहि मातरम्'। इसमे 'वं' वरुणबीज है। इस बीज से जलतत्व-सागर-तदुद्भूता लक्ष्मी या प्रवाहात्मक 'श्री' का लक्ष्य प्रगट होता है। लक्ष्मी अर्थात् श्रेयत्व। 'देहि' का अर्थ प्रदान करो स्पष्ट ही है, और 'मातरम्' का शब्दार्थ है माता को। इस प्रकार 'वं देहि मातरम्' का यह विलक्षण भाव उद्भासित होता है कि—'हे विश्व की श्री, तुम मुझे विश्व की माता के चरणों में ले जाओ।

परम महिमामयी विश्व माँ के इस महामन्त्र का प्रयोग ब्रह्मर्षि चट्टोपाध्याय ने मातृभूमि के अर्थ में किया, जिससे लोग मातृभूमि से प्रेम करना सीखें।

षोडशी महामन्त्र का प्रथम वाक्कूट 'क ए ई ल ह्रीं है। इसमे 'क' चित् चैतन्य, ब्रह्म 'ए'—वाणी ई—शक्ति, ल—अणु पृथ्वी और ह्री—माया वाचक है। इतने भावो का सम्मिलन इस विश्व का उत्पन्न करने वाला है। उपर्युक्त आद्योरांग षोडशी के वाक्कूट मे भी वाणी (ऐं), माया (ह्री) और श्रेयत्व (श्रीं) इन सब भावो का समन्वय हुआ है। 'क्लीं' बीज काम कामना परक ही है। 'क्लीं वन्दे हि मातरम्' अर्थात् हे विश्वेश्वर (वं = विश्व का श्रेयत्व विश्वेश्वर) सम्पूर्ण कामनाओं का रूप जो 'माँ' उसमे मुझे मिला दो। तृतीय शक्ति कूट भगवती षोडशी का है। इसका भाव यह है कि माया सहित यह जितनी कलात्मक विश्वशक्ति है, यही विश्व को उत्पन्न करने वाली है। इस प्रकार का त्रिकूटात्मक एवं विश्वमातृत्व के वन्दन-भाव से परिपूर्ण यह 'वन्दे मातरम्' महामन्त्र है।

पूज्य श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज

'सत्य ही जीवन है और उसका आधार भी वही है। उसकी सत्ता ही महाशक्ति के रूप में जगत का नियंत्रण कर रही है। उस सत्ता महामाया जगज्जननी की अनुकम्पा प्राप्त करना जीवन प्रसाद एवं पुष्टि के लिए अत्यावश्यक है। इसका हमारे राष्ट्रीय गान 'वन्दे मातरम्' से घनिष्ठ सम्बन्ध है। यह वह नाद है, जिससे आत्मा अनुप्राणित होती है तथा शक्ति-सम्पन्न होकर अपना कार्य सम्पादन करती है।

माता से तात्पर्य है जगत् की जननी का, जो आद्या शक्ति सृष्टि (सिरजन), पालन और संहार रूपी विलास नित्य निरन्तर करती रहती है।

हमारा देश मातृभूमि के नाम से प्रसिद्ध है न कि पितृभूमि के नाम से, जैसा कि ससार में अन्यत्र दीख पड़ता है। उस चैतन्य तत्व की सत्ता ही शक्ति रूप से सर्वत्र व्याप रही है, और जो कुछ भी इन्द्रिगोचर अथवा बुद्धिगम्य हो रहा है, सबकी वही जननी है। अतः उसे जाग्रत करना, उसकी आराधना करना, प्रत्येक कल्याण कामी सभ्य प्राणी का मुख्य कर्तव्य है।

(पृष्ठ १०४ का शेषांश)

यदि हर आदमी अन्यायपूर्ण और धन प्राप्ति को विष समझे तो हम वन्दे मातरम् गीत की अन्तिम पंक्तियों को गा सकेंगे :—

श्यामलां सरला सुस्मितां भूषितां
धरणीं भरणीं मातरम् ॥
('लवलियेस्ट आफ आल अर्थली लैंड्स, शाइ-रिंग वेल्थ फ्राम वेल स्टोर्ड हैंड्स मदर, मदर माइन ! मदर स्वीट, आइ वाउ टु दी ग्रेट ऐण्ड फ्री।......)

—अरविन्द

हमें भी याद रखना है कि समस्त भारती जन ने १५ अगस्त १९४७ के बाद विगत २८ वर्षो में विश्व के अधिकतर गणतन्त्रवादी देशों की भाँति गणतन्त्री ढंग से कार्य करते हुए किसी अन्य देश या भारत के अपने इतिहास के किसी भी युग की अपेक्षा अधिक विकास और प्रगति की है।

हमें आगे बढ़ना है और हमारे सामने खड़ी अनेक समस्याओं का हल करने के लिए कठिन परिश्रम करना है। इसी बीच आइए प्रार्थना करें कि ये दो ऐतिहासिक शब्द 'वन्दे मातरम्' हमें भारत माँ के प्रति समर्पण की भावना से प्रेरित करते रहें। और यह भारत माँ और कोई नहीं 'हम भारत के लोग हैं जो अपने बीच न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व की स्थापना के लिए प्रतीक्षा और कार्यरत है।

(सोशलिस्ट इण्डिया—सितम्बर २७, १९७५ से साभार अनु०—भानु)

वन्दे मातरम् के सौ वर्ष

—श्रीनिवास बालाजी हार्डीकर—

क्रांतिकारी संन्यासी देश की एक माता के रूप में उपासना करते हैं। उनकी माता निर्धन अथवा असहाय नहीं है—यह माता केवल जन्मदात्री नहीं थी, वरन् पालन करने वाली तथा शत्रुओं का विनाश करने वाली भी थी। इस प्रकार इस माता ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश त्रिमूर्ति की सृजन, पालन तथा संहारकारी संयुक्त शक्ति के प्रतीक का रूप धारण कर लिया था। इसमें आध्यात्मिकता और व्यावहारिकता का अनुपम मिश्रण था।

विगत सौ वर्षों में जितने कंठों ने जैसी तल्लीनता से इस गीत को गाया है उतने कंठों और वैसी तल्लीनता से उतने लम्बे काल तक गाये जाने का गौरव संसार के शायद किसी भी राष्ट्रगीत को प्राप्त नहीं हुआ है।

सौ वर्ष हो जाने पर भी इस गीत में आज भी—मिट्टी के पुतलों में प्राण संचार करने की शक्ति है।'

'कादंबरी' जनवरी ७६ में प्रकाशित लेख के अंश।

राष्ट्रीय गान का मानव जीवन से अत्यन्त घनिष्ट संबंध है। राष्ट्र के अनन्त संस्कारों का राष्ट्रीय संगीत एक परम उज्ज्वल तथा प्रभावशाली प्रतीक है। नाद पर राष्ट्र के प्राणी राष्ट्र रक्षा के लिए पतिंगो की तरह सहर्ष आत्म बलिदान कर देते हैं। राष्ट्रीय संगीत वन्दे मातरम् किसी परम स्वदेश-भक्त के हृदय-कुहर से परम विकट परिस्थिति में निकला है। इसका अमित प्रभाव प्रत्यक्ष ही है। इसने क्या नहीं किया। कौन जानता और मानता था कि भारत इतना शीघ्र स्वतंत्र होगा, परन्तु ऐसा ही हुआ। यही है हमारा महामन्त्र गायत्री वन्दे मातरम्। इस सत्य के आश्रय में सकलार्थ सिद्धि है। इस महान सत्य एवं हित की बात को प्रत्येक भारतवासी को हृदयगम करना चाहिए। माँ प्रेम की मूर्ति है, सहायता की खान है। उसका आश्रय लिये बिना व्यक्तिगत का राष्ट्रगत जीवन-बेड़ा पार नहीं लग सकता।

श्री रमादत्त शुक्ल

'क्रान्तिकारियों को इस प्राणवन्त मन्त्र की अनुभूति क्या हुई, उनमें भारत माता के प्रति अटूट निष्ठा जाग्रत हो गयी। प्राणों का मोह उनमें से सर्वथा जाता रहा, हंसते-हंसते छाती पर गोलियों की बौछार को झेल लेना उनके लिये एक अभिलाषित खेल हो गया। कितने ही 'आजादों' और 'सिंहों' ने 'वन्देमातरम्' की देशभर में गूँज मचाकर देशभक्त किन्तु पद-दलित हताश भारतीयों के हृदय में आशा और उत्साह की किरणें चमका दीं—प्रत्येक भारतीय का यह प्रिय स्वप्न हो गया—फांसी के तख्ते पर खड़े किये जांए तब एक ओर मृत्यु का फन्दा हमारे कण्ठ को जकड़ रहा हो दूसरी ओर हमारे कम्पित होठों से निकले यह पुण्य पुकार—'वन्दे मातरम्'। यह कोरा स्वप्न ही नही रहा—न मालूम कितने अज्ञात देशभक्तों ने स्वतन्त्रा की बलिवेदी पर—'वन्दे मातरम्' कहते हुए अपनी अन्तिम सांस तोड़ी है। इस प्रकार अमर शहीदों के रक्त से सिंचित इस महामन्त्र को यदि अहिंसक सत्याग्रहियों ने भी अपना मूलमन्त्र स्वीकार किया तो क्या आश्चर्य। भारत को जो यह गौरव प्राप्त हो सका है, उसका सारा श्रेय उनके महामन्त्र 'वन्दे मातरम्' को ही है।

राष्ट्रीय गान कहीं का हो, उसकी श्रेष्ठता का प्रमाण यही होता है कि उसके सुरों की झंकार मात्र से उस राष्ट्र के नागरिकों की हृद्तन्त्री के तार झंकृत हो उठें, गीत के शब्द उनमें उमंग और उत्साह भर देने की क्षमता रखतें हों और सारा गान उन्हें उनके राष्ट्र के व्यापक स्वरूप की अनुभूति करा दे। 'वन्दे मातरम्' राष्ट्रीय गान में ये सभी तत्व वर्तमान है।—राष्ट्रमाता के मातृत्व की गरिमा का अनुभव करके भारतीय नागरिक अपने अनुरूप ही वन्दना कर उठता है कि —'**हे माँ। तुम्हीं विद्या हो, तुम्हीं धर्म, शक्ति, भक्ति और मर्म हो, तुम्हीं शरीर, हृदय और प्राण हो—तुम्हारा ही स्वरूप सर्वत्र व्याप्त है।**' —यह इस राष्ट्रगान की ओजस्विता का ही प्रत्यक्ष प्रमाण है कि राष्ट्रगान गाते-गाते—

राष्ट्रमाता की वन्दना करते-करते राष्ट्रीय नागरिक उत्साह और उमंग से भर जाता है और पुकार उठता है—**'के बले, मा ! तुमि अबले !'** इसी पुकार के द्वारा वह बडे से बडे शासकों और सत्ताधीशों को ललकारता है और याद दिलाता है कि तीस करोड कण्ठो मे उसकी माता की जय-जय कार गुंजित होती रहती है।—वन्दे मातरम् राष्ट्रगान में न केवल भारत-भूमि के स्थूल स्वरूप का चित्र अंकित है, न केवल भारत राष्ट्र के वैभव और सामर्थ्य की व्यंजना उसमे व्यंजित होती है, किंतु भारतीय आत्मा का परम पुनीत सन्देश भी प्रसृत होता दिखाई देता है—'वसुधैव कुटुम्बकम्' और इस संदेश का आधार रहा है मातृशक्ति की वन्दना-वन्दे मातरम्।

प्राणी किस महामंत्र को लेकर इस जगतीतल पर अवतरित होता है ? निश्चय ही उत्तर मिलेगा-'माँ' ! माँ-माँ-जपता हुआ शिशु सभी बाधाओ को पार करता हुआ पुरुष बन जाता है तथा पुरुष बन कर माता के आशीर्वाद से महा-पुरुष तक की पदवी प्राप्त कर लेता है। माँ नाम के सहारे वह अपने दुःखों, पीड़ाओ और असफलताओं को भी झेल जाता है। 'माता' को समझ कर ही विश्व-मा की ओर व्यक्ति का ध्यान आकृष्ट होता है, उन विश्व मा की ओर जिसके स्मरण मात्र से द्वैतत्व और वैषम्य का तिरोभाव हो जाता है—समता, एक दृष्टि एवं तत्व ज्ञान पर अधिकार मिल जाता है और यही अलौकिक सुख की सीमा है। वन्दे मातरम् उभय सुख, भौतिक एवम् आध्यात्मिक, की कुंजी है।

धर्म वह साधन है, जिसके सहारे कल्याण की प्राप्ति सम्भव होती है और कल्याण कौन नहीं चाहता। विश्व धर्म को जानने और समझने के लिये 'वन्दे मातरम्' से उद्भासित प्रकाश का ध्यान भर करने की आवश्यकता है और अभीष्ट ज्ञान की तुरन्त उपलब्धि हो जायेगी। 'वन्दे मातरम्' का मूल तत्व, प्रकाश-स्रोत मातृतत्व है, जो उसके उच्चारण करते ही सम्मुख प्रकट हो जाता है और यही विश्व धर्म की आधार भूमिका है।

हे विश्व के संत्रस्त, दुखी एवम् विपन्न मनुष्यो ! क्यों भटककर विनाश के मार्ग को अपना रहे हो। संभलो और समझो। जैसे एक परिवार में कई व्यक्ति हिल-मिल कर रहते हैं, वैसे ही वसुधा मे तुम्हारे ये सब राष्ट्र है—क्यों नही एक कुटुम्ब का भाव ग्रहण कर परस्पर सहयोग करते ? आखिर तुममे से सबने जन्म पाया है। विचार करो, तुम्हारी इस पृथ्वी ने भी तो जन्म पाया होगा। अपनी जन्मदात्री को तुम कितने प्यार से 'माँ-अम्मा-मदर' कहकर पुकारते हो, फिर जगत की माँ की ओर तुम्हारा ध्यान क्यो नही जाता ? विश्वास करो, जैसे तुम्हारी माँ तुम्हें वात्सल्य के द्वारा सन्तोष और धीरज प्रदान करती है वैसे हो विश्वमाता तुम्हारो एक पुकार पर सहाय्य होने को प्रस्तुत है। न भी पुकारोगे, तब भी वह तुम्हें अपनी कृपा को छाया प्रदान करती रहेगी। निश्चय ही तुम्हारी आंखें खुलेंगी, अविद्या के घने अंधकार का भेदन करेंगी और विश्व धर्म का पुण्य दर्शन उन्हे प्राप्त होगा।" विश्व धर्म के अनवरत सन्देश का स्फूर्ति स्रोत है—वन्दे मातरम् ! (सार संक्षेप. भानु)

(कल्याण मंदिर, प्रयाग द्वारा प्रकाशित 'वन्दे मातरम्' से सामार)

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं
पारमेष्ठ्यंराज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं
समन्त पर्यायो स्यात् सार्वभौम: अन्तादापरार्धात्
सार्वायुष पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तामा एक राडिति।

[भोज्य, स्वराज्य, वैराज्य, (दूसरो का राज्य), पारमेष्ठ्य, महाराज्यअधिपत्य, समन्तपर्यायी (खण्ड राज्य) और सार्वभौम, सार्वायुष, अन्त, अपरार्ध, समुद्रपर्यंत पृथ्वी का एक राज्य आदि विभिन्न प्रकार के राज्य हमारे लिये कल्याण कारी हों !]



वन्दे मातरम् और भारतीय राष्ट्रीयता

— सर्वश्री हरिदास मुखर्जी और उमा मुखर्जी —

(प्राध्यापक)

बंकिम चन्द्र को मातृ दर्शन (१८८२)

'वन्दे मातरम्' का अर्थ है 'मा की वन्दना'। यह बंकिम चन्द्र चटर्जी (१८३८-१८९४) रचित अमर गीत का नाम है जिसे उन्होने किसी काव्य समाधि के अनूठे क्षण में रचा था और जो प्रथम बार 'आनन्द मठ' में (१८८२) प्रकाशित हुआ था। इस कविता को समूचे उपन्यास में निहित आदर्शवाद का जो गीता के सुस्पष्ट निदेश और कामटे के प्रत्यक्षवाद का समन्वय है, सारतत्व माना जा सकता है। सामान्य पारिभाषिक अर्थ में यह कोई धार्मिक गीत नही है। इसकी सामग्री न तो हिन्दू है, न मुस्लिम। कविता की श्वास प्रश्वास तीव्रतम राष्ट्र प्रेम से ओत प्रोत है। इसमें जिस मां का ध्यान किया गया है, वह कोई प्रथागत धार्मिक देवी नही है, बल्कि एक नयी हस्ती है—वह मातृभूमि जिसमें हम रहते हैं, गतिशील है और जिसमें हमारा अस्तित्व है। यह मातृभूमि केवल एक भूखण्ड मात्र नही है, बल्कि जीवंत इकाई है जो अपनी सन्तान के माध्यम से अपना लक्ष्य प्राप्त करती है। बंकिम ने देशभक्ति के धर्म का आविष्कार किया और उसे वन्दे मातरम् मे अमरवाणी प्रदान की।

श्री विजय कुमार सरकार कहते है 'चटर्जी की देश को पूजनीय वस्तु मानने की देश भक्ति पूर्ण व्याख्या उनके कामटिस्ट धर्म से गहराई से सम्बन्धित है जिसमे मानवता (देवत्व नहीं) को पूज्य माना गया है। वन्दे मातरम् कोमटिस्ट स्तुति है, तर्क संगतता का धर्म-विरोधी काव्य है, क्योकि यह देववाद से मुक्त है' (विलेजेस ऐण्ड टाउन्स ऐज सोशल पैटर्नस कलकत्ता—१९४१-पृ० ३५७)

शायद बहुत कम लोग जानते हैं कि बंकिम के नैतिक और बौद्धिक निर्माण मे कौमटिस्ट प्रभाव का गहरा हाथ था। हमारे देश में विगत सदी में प्रत्यक्षवादी विचारों और आदर्शों के वे सर्वप्रथम और सर्वाधिक वाचाल व्याख्याता थे। बंग दर्शन (१८७२) की स्थापना उन्होंने इस नयी भावना के प्रबल संवाहन के उद्देश्य से ही की थी। बग दर्शन के बाद प्रकाशित 'प्रचार' मे भी बंकिम ने 'प्रत्यक्षवाद' पर अनेक लेख लिखे। **'कृष्ण चरित'** (१८८६) और **'धर्मतत्व'** (१८८८) भी इसी 'प्रत्यक्षवाद' की भावना से अनुप्राणित है। इन दोनों मार्गीय ग्रन्थों मे उन्होंने जिस धर्म का प्रचार किया है, वह परम्परागत हिन्दू धर्म से एकदम भिन्न है। बंकिम के कृष्ण उनकी अपनी सर्जना है—वे ईश्वर नही बल्कि आदर्श पुरुष हैं। एक ऐसे महापुरुष हैं जिसके झण्डे के नीचे अखिल भारतीय लोक संयुक्त और एकीकृत होकर राष्ट्र बन सकता है। बंकिम की दृष्टि में कृष्ण राष्ट्रीय एकता के प्रतीक थे। कृष्ण चरित उनकी भारतीय राष्ट्रवाद को समर्पित कृति है। पुनः धर्मतत्व में उन्होंने एक नये धर्म की व्याख्या की है। उनके कृतित्व की रूप रेखा और मूल तत्व की दृष्टि से आगस्ते कामटे के **'कैटेकिस्म ऐण्ड पाजिटिविज्म'** (१८५२) (इसमें ईसाई पादरी और उसकी भक्ति महिला के बीच १३ संवाद आलेखित हैं) के आधार पर रचित है।

मानवता की सेवा का धर्म बंकिम के धर्मतत्व का मूलाधार और सारतत्व है तथा कामटे का उन पर प्रभाव इतना स्पष्ट है कि उसे नकारा नहीं जा सकता।

बौद्धिक क्रांति (१८८२-१६०५)

'वन्दे मातरम्' के प्रथम प्रकाशन (१८८२) और स्वदेशी आन्दोलन की शुरूआत (१६०५) के बीच का समय देश के इतिहास में महत्वपूर्ण परिवर्तनों का युग था। राष्ट्रवाद की भावना, जिसके बंकिम, तिलक, विवेकानन्द, सुरेन्द्र नाथ विश्वसनीय और मान्य संस्थापक थे, निरन्तर संवर्द्धित और प्रभावकारी होती जा रही थी। शताब्दी के मोड़ पर बंगाल जो बौद्धिक पुनर्जागरण का अग्रगामी था, क्रान्तिकारी उत्साह और युद्ध प्रिय राष्ट्रवाद का मंच बन गया। स्वदेशी आन्दोलन जो सन् १६०५ में छिड़ा—इस युद्ध प्रिय राष्ट्रवाद की प्रथम विराट- अभिव्यक्ति और भारती स्वातंत्र्य सग्राम का प्रथम चरण था। १६वी सदो मे भारतोय नेताओ ने देश में ब्रिटिश शासन को दैवी इच्छा मानकर स्वीकार कर लिया था—और उसे शान्ति तथा स्थिरता प्रदायक शासन मानकर मानसिक रूप से उससे समझौता कर लिया था और उन्होने ब्रिटिश शासन के बुनियादी ढाँचे में रह कर विशेष कष्टों को दूर कराने की चेष्टा आरम्भ की थी। 'हिन्दू पेट्रियाट' के सम्पादकीय **'इंग्लैण्ड के प्रति भारत का कर्तव्य'**मे लिखा गया—**'हमारे शासक आश्वस्त रहें कि असन्तोष के जो लक्षण भारत के राजाओं और आम लोगों में दिखायी पड़ रहे हैं, वे राजनीतिक क्रान्ति की इच्छा के लक्षण नहीं है, बल्कि इसके विपरीत देश के राजा और आम लोग दोनों ही अंग्रेजों द्वारा प्रस्तुत शासन व्यवस्था, उनके द्वारा प्रदत्त संरक्षण और सुरक्षा भावना की और जीवन में प्रगति के सिद्धांतों की प्रशंसा करते हैं।'** बंगला में लिखित संपादकीय (जुलाई ८, १६००) (श्री सतीश चन्द्र मुखर्जी संपादक डॉन) **'इंग्लैण्ड की महानता और भारत का लाभ'**—इसी विचार का अनुमोदन करता है। अर्थात् १६वी सदी के राजनीतिक नेता और बुद्धिवादियों द्वारा ब्रिटिश शासन के नैतिक आधार मे गहरी आस्था, उनके विचारक्रम में पहला मुद्दा होता था। स्वदेशी आंदोलन ने इस पुराने दृष्टिकोण को आमूल बदल दिया, ब्रिटिश शासन की नैतिकता में विश्वास की आधार-शिला ही हिला दी और जनता को स्वशासन या स्वराज्य माँगने या उसके लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी। नयी पीढ़ी की दृष्टि में, जिसका अंदाजे नज़रिया बिपिन चन्द्र पाल, ब्रह्मबाधव उपाध्याय और अरविंद घोष ने निर्मित किया था, अंग्रेज शासकों ने एक शताब्दी के कुशासन के कारण भारतीय राजभक्ति और सहयोग का अधिकार खो दिया था। **'ब्रिटिश शासन के सौ वर्ष के शासन का परिणाम हैं—राजनीतिक दृष्टि से विसंघटित, नैतिक दृष्टि से भ्रष्ट, बौद्धिक रूप से दिवालिया और भौतिक रूप से खण्डित और अवरूद्ध राष्ट्र। और जो विश्वास ईश्वर ने इंग्लैण्ड को सौंपा था, उसका उत्तर वह उन्हीं के सामने दे सकता है।'** (वन्दे मातरम् अप्रैल ७, १६०८)। भारत मे ब्रिटिश शासन की इससे अधिक कठोर आलोचना क्या कोई और हो सकती है।

वन्दे मातरम् १६०५ से पूर्व राष्ट्रगान नहीं था!

वन्दे मातरम् जो दीर्घकाल तक कवि का स्वप्न बना रहा, सन् १६०५ में प्रबल पतन से पुनः जागते राष्ट्र का राजनीतिक नारा और युद्ध घोष बन गया। निर्दोष गीत के क्रांतिकारी नारे में परिवर्तित होने का चमत्कार १६०५ के युवा बंगाल की कृति थी। कलकत्ता में सन् १८८३ मे सुरेन्द्र नाथ पर चले मानहानि के मुकदमे में और उन्हे कैद की सजा के बाद जो छात्र प्रदर्शन हुआ था उसमे वन्दे मातरम् का नारा नहीं लगा था। एक समसामयिक निरीक्षक ने इस स्थिति की बाबत लिखा था—**'सन् १८८३ में इलबर्ट बिल आन्दोलन और सुरेन्द्र नाथ बनर्जी को जेल की सजा के बावजूद वन्दे मातरम् को लेकर कोई झमेला नहीं हुआ। मै उन दिनों कलकत्ता में था और मुझे ठीक याद है कि मिस्टर बनर्जी के मुकदमे के दौरान हजारों विद्यार्थी कलकत्ता** हाईकोर्ट के इर्द-गिर्द जमा होते पर उन्होंने वन्दे मातरम् नहीं गाया था '(एस० एम० मित्रा इंडियन प्राबलेम, लन्दन १६०८, पृ० ६७)

यही बात रमेश चन्द्र दत्त ने भी लिखी है :—'बंकिम चन्द्र चटर्जी के जीवन काल में किसी दल के रण-घोष के रूप में इसका इस्तेमाल नहीं हुआ। यद्यपि इसकी खतरनाक प्रवृत्ति पहिचानी जा चुकी थी, उदाहरण के लिए इलबर्ट बिल आन्दोलन में या सन् १८८३ में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के मुकदमे के दौरान जुटे छात्रो द्वारा यह नारा नहीं

लगाया गया। इसे बंगाल के विभाजन के बाद होने वाले आन्दोलनों में कुख्याति मिली। उतनी कि बंकिम चन्द्र ने कभी इसकी कल्पना भी की थी या वे इसका ऐसा उपयोग चाहते थे, यह विश्वास करना असम्भव है। (**इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिया ११वाँ संस्करण खण्ड ६ पृ० १० में आर सी दत्त का बंकिम चन्द्र चटर्जी पर लेख**)

पुन: सन् १८८५ मे जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई, वन्दे मातरम् को कोई महत्व नही दिया गया। सही है कि सन् १८८६ मे कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन के समय कविवर हेमचन्द्र रचित 'राखी बन्धन' बंगला कविता में इस गीत की कुछ पंक्तियां सम्मिलित कर ली गयी। ('कांग्रेस ओ बांगला'—एच पी घोष कलकत्ता १९३६ पृ० १३५-१३६) कलकत्ता मंच पर प्रथम बार यह गीत सन् १८९६ में गाया गया और गायक थे महान कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर। परन्तु तब भी वन्दे मातरम् को अन्य राष्ट्रीय गीतों **'आमरा मिलेछि आज मायेर डाके'** (१८८६) और **'अयी भुवन मोहिनी'** (१८९६) आदि से अलग कोई स्थान नहीं दिया गया था। यह तो सन् १९०५ में जब बंगाल की राजनीतिक आत्मा जग उठी तो राष्ट्र अपनी अभिव्यक्ति के किसी माध्यम का शोध करने लगा। तब वन्दे मातरम् एक जीवन्त नारा बन गया, राष्ट्रवाद की भावनाओं और उभरती आशाओं का मूर्त-स्वरूप बन गया। क्रांतिकारी गीत के रूप में वन्दे मातरम् का सृजन युवा बंगाल ने किया था। सन् १८८२ में बंकिम चन्द्र के मानस में जो एक कल्पना थी, स्वदेशी के दिनों में गतिमान यथार्थ बन गयी। (**नया बांगलार गोडापत्तन खण्ड १ ले० बी० के० सरकार—कलकत्ता १९३२ पृ० १९०–१९१**)

वन्दे मातरम् रण-घोष बना (१९०५)

सन् १९०५ में वन्दे मातरम् की आत्मा और चरित्र का परिवर्तन समसामयिक दृष्टि से अलाक्षित नही रहा। डॉन और डॉन सोसाइटी के सतीश चन्द्र मुखर्जी प्रभृति मौन और गम्भीर निरीक्षक ने १९०५ में लिखा :

'वन्दे मातरम्, माँ तुम्हारी वन्दना। इन दो जादुई शब्दों को सुनकर कौन-सा बंगला हृदय ज्यादा जोर से धड़कने नहीं लगता ? जब स्वर्गीय बंकिम चन्द्र चैटर्जी ने अपनी अमर कृति आनन्दमठ में पहली बार हृदय आलोड़ित और आत्मोत्थान करने वाला यह गीत गाया था जिसके आरंभिक शब्दों ने आधुनिक बंगाल को रणघोष और दिव्य प्रेरणा प्रदान की है, तब क्या उन्होंने इस परिवर्तन की कल्पना भी की थी कि इन दो सुमधुर शब्दों की नियति है उनके पतित देशवासियों की शाखाओं और आकांक्षाओं में अद्भुत और चमत्कारी परिवर्तन लाना। आकाश अब वन्दे मातरम् से गूंजता है। कलकत्ता की सड़कें और गलियाँ और बाकी समूचा प्रान्त इस गम्भीर जागरण घोष से प्रतिध्वनित है। वन्देमातरम् ने लोगों के हृदय का अन्तरतम मथ दिया है।' (नवम्बर १९०५—डान और डान सोसायटीज मैगजीन)

सतीशचन्द्र—आशुतोष मुखर्जी और नरेन्द्र नाथ दत्त (स्वामी विवेकानन्द) के सहपाठी थे, इन्होंने १८८३ के छात्र प्रदर्शन में भाग लिया था और वे व्यक्तियों तथा प्रसंगों के सजग निरीक्षक थे। सन् १९०५ के स्वदेशी आन्दोलन के वे भी एक जनक थे (व्यापक अर्थ मे) और इस दृष्टि से वन्दे मातरम् की विकास कथा में उनके वक्तव्य का बहुत महत्व है। अरविन्द घोष इस मुद्दे पर दूसरे अधिकारी वक्ता हैं। सन् १८९३–९४ से ही वे बंकिम के भक्त प्रशंसक थे। सन् १९०७ में श्री अरविन्द ने लिखा—**३२ वर्ष पूर्व बंकिम ने यह महान गीत लिखा था पर तब कुछ ही लोगों ने इसे सुना था, किन्तु दीर्घकालीन मोहनिद्रा के बाद जागरण के उस आकस्मिक क्षण में बंगाल के लोगों ने सत्य की तलाश में इधर उधर देखा और उस भाग्यशाली क्षण में सहसा कोई वन्देमातरम् गा उठा।** (अरविन्द कृत—बंकिम-तिलक-दयानन्द कलकत्ता २ रा संस्करण पृ० १३)

७ अगस्त को वन्दे मातरम् का पहला नारा लगा

राष्ट्रवाद के मन्त्र के रूप में वन्दे मातरम् हजारों कण्ठों से पहली बार ७ अगस्त सन् **१९०५** के भाग्यशाली दिन, ऐतिहासिक टाउनहाल की मीटिंग में जिसमें बायकाट का प्रस्ताव और स्वदेशी की शपथ ली गयी थी—उद्घोषित हुआ था। सरकार बंगाल का विभाजन करने के लिए कृत संकल्प थी और इस निर्णय के विरुद्ध सर्वव्यापी विरोध और आक्रोश का उस पर कोई असर नहीं था। राष्ट्र अपमानित, अवमानित और छला हुआ अनुभव कर रहा था और कष्ट

सह कर भी ब्रिटिश सामानों के बायकाट के निष्ठुर मार्ग का सहारा लेने के अलावा उसके सामने कोई और उपाय भी नहीं था। यह निशस्त्र और शस्त्रहीन राष्ट्र का विदेशी सरकार की तानाशाही को उचित एवं प्रभावपूर्ण उत्तर था। सरकार ने विभाजन के प्रश्न पर संयुक्त बंगाल के मत का उपेक्षा सहित बायकाट किया था। सतीशचन्द्र लिखते हैं—**अतः एक प्रकार के बायकाट का सामना दूसरे प्रकार के बायकाट से करने की चेष्टा की गयी।** (डान और डान सोसायटी मैग्जीन भाग १ मई १६०६ ट्रू कैरेक्टर ग्राफ बायकाट लेख मे) यह असहाय लोगो का राष्ट्र के आत्म सम्मान की भावना पर की गयी चोट से उत्पन्न विक्षोभ को प्रदर्शित करने का एक मात्र संवैधानिक उपाय था।

७ अगस्त का भाग्यशाली दिन जिसमे छात्र प्रदर्शिनो का उत्साह देखते ही बनता था, रेकर्ड पर शायद पहला दिन है जब वन्दे मातरम् का राजनैतिक नारे के रूप मे घोप किया गया था। (**प्रफुल्ल कुमार सरकार जातीय आन्दोलने रवीन्द्र नाथ–कलकत्ता दूसरा संस्करण १६४७—पृ० ६५**) श्रीयुन हेमेन्द्र प्रसाद घोष अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर सूचित करते है कि ७ अगस्त को टाउनहाल की मीटिंग में हजारों लोगों ने वन्दे मातरम् का नारा लगाया था। तत्कालीन आलेखो से पता चलता है कि सभी समुदायो के हजारों विद्यार्थी उस दिन दोपहर को कालेज स्क्वायर मे जुटे थे। और टाउनहाल की ओर चलते जुलूस मे उन्होने वन्दे मातरम् के नारे लगाकर आकाश हिला दिया था। [**द इंगलिश मैन (अगस्त ८, १६०५), द बंगाली (६ अगस्त १६०५) और संजीवनी (१० अगस्त १६०५)**]

इस ऐतिहासिक क्षण से वन्दे मातरम् पराधीन राष्ट्र का सबल रणघोष बन गया। यह राष्ट्र की आत्मा की वाणी या रवीन्द्र नाथ के शब्दों मे स्वदेशी आत्मा की अभिव्यक्ति माना गया। शायद ही कोई दिन ऐसा जाता था जब वन्दे मातरम् के नारों से आकाश नही गूंजता था। राष्ट्रीय मंत्र के प्रति अपनी भक्ति और देश भक्ति की वृत्ति व्यक्त करने में नगर-ग्राम होड लेने लगे। मुफस्सिल नगरो में भी बारीसाल सबके आगे आ खडा हुआ और अरविन्द के शब्दों में **'राष्ट्रीय भावना का पवित्र पीठ-स्थान'** बन गया। बारीसाल तथा अन्य मुफस्सिल नगरों में केवल इतना ही अन्तर था कि उस समय के बंगाल मे केवल एक ही अश्विनी कुमार दत्त थे और उनका जन्म स्थान तथा कर्मभूमि बारीसाल थी। (**बंगाली २७ जून १६०६, अरविन्द का भाषण**)।

उन दिनों अनेक अवसर आते थे जब हिन्दू और मुसलमान दोनों ही वन्दे मातरम् मत्र का उच्चारण करते थे। २० मई १६०६ को बारीसाल मे **'हिन्दू मुसलमानों का जिनकी संख्या दस हजार थी, एक अभूतपूर्व वन्दे मातरम् जुलूस बाबू दीनबंधु सेन के घर से दोपहर को निकला—नगर के मुख्य मार्गो से गुजरा, राष्ट्रीय गीत गाते, वन्दे मातरम् और और अल्लाहो अकबर का नारा लगाते। हिन्दू मुसलमान दोनों ही वन्दे मातरम् झण्डे लिए थे'** (द बंगाली-मई २३, १६०६)। इस जुलूस का नेतृत्व अश्विनी कुमार दत्त, मोहम्मद श्राफ, मितहर हुसैन तथा अन्य लोग कर रहे थे। मुफस्सिल में जो दृश्य देखा गया वह राजधानी में भी हुआ।

वन्दे मातरम् सम्प्रदाय, अक्टूबर १६०५

स्वदेशी के दिनों में वन्दे मातरम् के प्रभाव की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति थी, उत्तर कलकत्ता में अक्टूबर १६०५ में वन्दे मातरम् सम्प्रदाय का संघटन। आरंभ मे इसका संघटन कुछ संभ्रान्त और बुजुर्ग लोगों ने किया था किन्तु शीघ्र ही संप्रदाय ने वन्दे मातरम् की भावना को देश के लोगो में प्रचारित करने के उद्देश्य से बडी संख्या में युवा देश भक्तो को आकर्षित किया। इस संस्था के अध्यक्ष कुमार मन्मथनाथ मित्रा, मंत्री श्री सुरेशचन्द्र समाजपति और कोषाध्यक्ष राय अमृतलाल मित्रा बहादुर थे। हर रविवार को संस्था के सदस्य जुलूस बनाकर गलियो में वन्दे मातरम् गाते फिरते थे और लोगों से स्वैच्छिक दान प्राप्त करते थे, यद्यपि किसी कोश के लिए दान संग्रह करना उनका प्रत्यक्ष या प्रकल्पित लक्ष्य नहीं था। श्रीयुक्त हेमेन्द्र प्रसाद घोष हमें सूचित करते हैं कि एक बार तो स्वयं रवीन्द्रनाथ भी जुलूस में शामिल हुए थे। इस प्रकार वन्दे मातरम् सम्प्रदाय ने देश की उपासना को जीवन लक्ष्य बनाकर उसका धार्मिक उत्साह से प्रचार करने का भार उठा लिया। स्वदेशी के दिनों में काटालपाडा, बंकिम का जन्मस्थान, राष्ट्रवादियों के लिए पवित्र तीर्थस्थान बन गया था।

(उमा मुखर्जी का लेख—बंगश्री (अप्रैल १६६३) में प्रकाशित—'वन्दे मातरम् ओ युवक बांग्ला')

'भवानी मन्दिर'—अरविन्द की कल्पना

किन्तु वन्दे मातरम् का सर्वाधिक प्रभाव बंगाल मे राजनीति की नयी विचारधारा के नेताओं और निर्माताओं अर्थात् उन दिनों के उग्र पंथियों और राष्ट्रवादियों पर पड़ा। जब स्वदेशी आन्दोलन देश में तीव्र गति से प्रगति कर रहा था तभी उग्र पंथ इसके दायरे में विकसित हुआ और युगान्तर और 'वन्दे मातरम्' जैसे समाचार पत्रों के माध्यम से अपने लिए आवश्यक साहित्य का सृजन किया। 'वन्दे मातरम्' दैनिक जैसा इसके नाम से ही स्पष्ट है बंकिम के अमरगीत से प्रेरित था और राष्ट्र वादमें उत्साह पूर्ण तथा संपूर्ण विश्वास सम्बर्द्धन हेतु कृतसंकल्प था। अरविन्दकी 'भवानी मंदिर की कल्पना, जिसमें **'माँ शक्ति के प्रतीक रूप में विराजमान है, हमसे हमारे जीवन में से बहुत कुछ माँग रही हैं'** भी आनन्द मठ की आत्मा वन्दे मातरम् द्वारा प्रेरित था। अरविन्द लिखित **'भवानी मंदिर'** परचा उनके द्वारा १९०५-०६ में प्रचारित कराया गया था। (देखे श्री अरविन्द मंदिर एनुवल, जयन्ती अंक संख्या-१५, १५ अगस्त १९५६ पृ० १४-२७)

'विश्व के सतत चलते चक्र में जब अनन्त के चक्के अपने मार्ग पर अग्रसर होते हैं तो शाश्वत शक्ति जो अनन्त से निःसृत होती है, इन चक्कों को चलाती है तथा मानव की दृष्टि में विभिन्न ढंगों से अनन्त रूपों में अस्पष्ट रूप से प्रगट होती है। वर्तमान युग में माँ शक्ति के रूप में व्यक्त हुई हैं। वे विशुद्ध शक्ति हैं। 'उनकी दृष्टि में शक्ति में ही भारतीय पुनरुत्थान संभव है, इसी आदर्श का स्वामी विवेकानन्द आजीवन उपदेश देते रहे, और **'हमारे जीवन में कुछ भी उत्कृष्ट है, यहाँ तक कि प्राण भी माँ की बलिवेदी पर चढ़ा दें'** समूची परिकल्पना वन्दे मातरम् की भावना से अनुप्राणित थी।

वन्दे मातरम् और बंगाल का उग्रपन्थ, १९०६

वन्दे मातरम् की पराकाष्ठा थी सशक्त अंग्रेजी दैनिक 'वन्दे मातरम्' जो स्वदेशी के दिनों में भारतीय पुनरुत्थान और राष्ट्रवाद का सबसे सशक्त मुख-पत्र था ! कांग्रेस के भीतर ही सन् १९०६ के आरम्भ से ही उग्रपन्थ पनप रहा था। उग्रवादी सम्प्रदायके समर्थकों ने एक अखिल भारतीय मुखपत्र की आवश्यकता अनुभवकी, जो नवोदित चेतनाको मुखर एवम् प्रभावशाली अभिव्यक्ति दे सके। इस चेतनासे समाहित 'युगान्तर' मार्च १९०६के मध्यसे बांगला साप्ताहिकके रूपमें प्रकाशित होने लगा था पर इसका प्रभाव केवल भाषी जनता तक ही सीमित था। इसके बाद ही बारीसाल काण्ड हुआ, जहाँ १४-१५ अप्रैल १९०६ को होने वाले प्रांतीय अधिवेशन को पुलिस द्वारा बरजोरी भंग कर दिया गया। नौकरशाही से सहयोग की आशा तेजीसे लुप्त होती जा रही थी। अधिक प्रेरक और समग्र राजनीतिके सशक्त प्रचारकी आवश्यकता और अधिक प्रखर हो उठी थी। इस पृष्ठभूमि में प्रसिद्ध 'वन्दे मातरम्' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। अपने उद्‌भवके लिए यह बिपि चन्द्रपाल के आदर्शवाद का ऋणी था जिन्होने पाँच सौ रूपये से कम की पूंजी लगाकर देशभक्तिके इस कठिन कार्यका बीड़ा उठाया। वन्दे मातरम् का पहला अंक अगस्त ६, १९०६ को प्रकाशित हुआ **(देखें अरबिंदो द प्राफेट आफ पेट्रियाटिज्म-कलकत्ता १९४९ पृ० १२ यह कि पहला अंक छठीं अगस्त १९०६ को निकला यह बात बिपिन चन्द्रपाल के जामाता स्व० सुरेश चन्द्र दे के इस दैनिक के उद्‌भव पर प्रकाश डालते हुए एक अप्रकाशित लेख में साधिकार कही गयी है)** शीघ्र ही श्री अरविन्द उसमें शामिल हो गये। संयुक्त संपादकत्व में 'वन्दे मातरम्' दिसम्बर १९०६ के मध्य तक निकलता रहा, तब विचारों में मतभेद पैदा हुए और बिपिन चन्द्र ने इस मुख पत्र के सम्पादकीय से नाता तोड़ लिया। १७ दिसम्बर १९०६ को 'वन्दे मातरम्' में एक नोटिस छपी थी कि **बिपिन चन्द्र का संपादकीय से सम्बन्ध शेष हो गया है (देखें व्योमकेश चक्रवर्ती का वन्दे मातरम् सेडीशन ट्रायल में भाषण जैसा वन्दे मातरम् के साप्ताहिक संस्करण में २९ सितम्बर १९२७ को पृष्ठ ७ पर प्रकाशित हुआ)।**

तदन्तर अरविंद 'वन्दे मातरम्' की निदेश चेतना और नियंत्रक शक्ति बन गये और उनकी योग्यता की सहायता कर रही थी लेखकों की एक छोटी टोली जिसमें श्याम सुन्दर चक्रवर्ती, हेमेन्द्र प्रसाद घोष और विजय चन्द्र

चैटर्जी शामिल थे। २ मई, १९०८ को अपनी गिरफ्तारी के दिन तक अरविन्द 'वन्दे मातरम्' के गुमनाम सम्पादक बने रहे और इसके बाद बिपिन चन्द्र पाल को पुनः दैनिक के सम्पादन का भार ग्रहण करने को आमन्त्रित किया गया।

कांग्रेस का लोकतन्त्रीकरण

भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में वन्दे मातरम् ने एक नया युग आरम्भ किया। इसने कांग्रेस में नरम नीति के अध्याय का निर्णयात्मक अन्त कर, उसके सामने स्वराज्य का चित्र रखकर उसे अनुप्राणित किया और कानून के दायरे में रह कर उसे प्राप्त करने के कुछ सुनिश्चित उपाय भी प्रस्तुत किए। "वन्दे मातरम्" दैनिक ने अपने प्रारम्भिक अंकों में भी राजनीतिक स्वतन्त्रता के आदर्श स्पष्ट शब्दों मे व्यक्त किये। २२ अगस्त १९०६ के अंक में 'वन्दे मातरम् ने लिखा" **"यदि भारत कभी राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करेगा तो वह अपने निजी प्रयास से ही।"** इसके आरम्भ से ही लोकतन्त्रीय प्रणाली पर कांग्रेस के पुनर्गठन की माग उठाई और **"अपने लोकतांत्रिक नेताओं के तरीकों"** की आलोचना की। १९०६ में वन्दे मातरम् ने लिखा **"कांग्रेस के जन्मकाल से ही जो इस महान राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे हैं, उन लोगों ने सामान्य जनता के इस निर्णयाधिकार की कि उनकी ओर से या उनके नाम से क्या कहा और किया अथवा क्या नहीं कहा या किया जायगा की निरन्तर उपेक्षा की है। देश के सभी हिस्सों से प्रतिनिधि जुटाये गये है पर जनता के मामलों पर विचार विनियम के हेतु नहीं बल्कि आधा दर्जन लोगों द्वारा गुप्त बैठकों में लिए गए निर्णयों को सिर्फ अपना समर्थन देने के उद्देश्य से।"** (देखें संपादकीय लेख "कांग्रेस एण्ड डेमोक्रेसी" और १७ सितम्बर १९०६ के वन्दे मातरम् में प्रकाशित लेख "द शेल ऐण्ड द सीड") ! 'वन्दे मातरम्' ने लिखा—**लोकतन्त्र में विश्वास रखने वाले लोगों के संगठित प्रयास द्वारा कांग्रेस को मजबूत किया जायगा।** पुनः एक दूसरे सम्पादकीय में वन्दे मातरम् ने यही भावना व्यक्त की **"विगत चौथाई शताब्दी के राजनीतिक आन्दोलनों और सक्रियताओं ने हमारे बीच सारे देश में अनेक गुट बना दिए हैं। शायद ही कोई जिला ऐसा हो जहाँ ये गुट न हो जिसमें सामान्यतः दो-तीन सफल अभिवक्ता होते हैं जिन्होंने इन विगत वर्षों में अपने नगर या जिले की राय और जन-जीवन का प्रतिनिधित्व एवम् नियन्त्रण करने का ठीका ले रक्खा है। ये गुट उन आवरणों से है जिन्होंने विकास के प्रारम्भिक चरण में लोकतन्त्र के बीज को सुरक्षित रक्खा, किन्तु वह समय भी आता है जब बीज अंकुरण के लिए इन आवरणों को तोड़ना और नष्ट करना होता है नहीं तो अपने आवरण में बंधा बीज सूखकर नष्ट हो जाता है। हमारे लिए समय आ गया है कि पुराने वकीलों का यह गुट तोड़ें और आवरण से लोकतन्त्र के बीच को बाहर निकाल कर दिन के प्रकाश तथा खुली हवा में रक्खें जिससे वह अंकुरित हो, उसमें शाखा पल्लव निकलें, वह बढ़कर पादप या वृक्ष बने, उसमें उसके अपने फूल खिलें और ईश्वर के यशस्वरूप फल आयें तथा लोक कल्याण हो। वर्तमान आन्दोलन का अर्थ है पुराने आवरणों का टूटना। इसका अर्थ है अपने अधिकार में लोगों की प्रगति। राष्ट्र की यह माँग थी कि जो उसके न्यासघर बनते हैं, उन्हें अपने न्यास का, अपने स्वामियों को हिसाब देना होगा और उनके द्वारा नियन्त्रित एवम् निर्देशित होना होगा।"** (वन्दे मातरम् सितम्बर १७, १९०६, तथा देखे लेख "द शेल एण्ड द सीड)।"

राष्ट्रीय पुनरूत्थान के लिए पहली शर्त राजनीतिक स्वतन्त्रता

आरम्भ से ही वन्दे मातरम् के कार्य की दूसरी शृंखला थी शस्त्रबल से स्थापित परदेशी सरकार की नौकरशाही के असली चेहरे का उद्घाटन। उसने **'प्रार्थना प्रतिवेदन और प्रतिवाद'** की पुरानी नीति को समाप्त करने की माँग की और लोगों से कहा कि नरम दल वालों से चीख कर कहें

'प्रतिवेदन, प्रार्थना और प्रतिवाद
न कहो मातमी स्वरों में मुझसे
कि तीनों 'प' केवल स्वप्न थोथे

क्योंकि सोती है अब ब्रिटिश आत्मा
और चीजें हैं नहीं जैसी वे होती प्रतीत'

(१० जनवरी १९०७ के वन्दे मातरम् में **'साम ऑफ पीज'** ! ऐसा अनुमान किया जाता है कि यह पैरोडी श्री श्याम सुन्दर चक्रवर्ती ने लिखी थी)

वन्दे मातरम् ने उच्च स्वर में शिकायत की कि विगत सदी में हमारे देश का राजनीतिक आन्दोलन 'पूर्णतः लघु और संकीर्ण उद्देश्यों तक सीमित था। हमारे बुद्धिमान लोगो और राजनीतिक ऋषियों ने हमारे कदम अधूरी मंजिल तक निदेशित किये और इन सीमित आदर्शो से उन्होंने जनता के प्रबल पतनोत्तर पुनः जागरण को उभरती आशाओं और कल्पनाओं को बाँध रक्खा। उनकी राजनीतिक अनुभवहीनता ने उन्हें यह समझने ही नही दिया कि इन उपायों पर हमने निष्फल प्रयासों की अर्धशताब्दी फिजूल खर्च कर दी और ये प्रयास अपने प्रयोजन मे अधूरे और तुच्छ ही नहीं बल्कि अपनी प्रकृति में भी प्रभावहीन थे।' (देखें अरविन्द की 'द डॉक्ट्रिन आफ पैसिव रेजिसटेस' कलकत्ता १९४८, पृ० १२-१३) यह पुस्तक अप्रैल १९०७ में वन्दे मातरम् में अरविन्द द्वारा लिखे गये 'सत्याग्रह' सम्बन्धी लेखों का संकलन है।

उसका तर्क था कि 'फजूल खर्च सरकार इस्तमरारी बन्दोबस्त के लाभो को बिना उसकी धाराओ का प्रत्यक्ष उल्लंघन किये नेस्तनाबूद कर दे सकती है, और यह कि केवल न्यायिक कार्यों की छीनाझपटी मात्र से कार्यपालिका की दमनशाही निरस्त नहीं होगी, न समकालिक परीक्षाएँ और सेवाओं में भारतोयों को उदारता पूर्वक नौकरी देने से ही स्थिति सुधरेगी।' अरविन्द ने वन्दे मातरम् में लिखा—निकृष्ट और दमनकारी आर्थिक नीति का एक मात्र वास्तविक उपचार यही है कि सरकार को आवश्यकताओं को पूर्ति के हित जिस जनता का धन लिया जाता है, उस कर-निर्धारण के नियंत्रण का अधिकार जनता को सौपा जाय। शासन की दमननीति का अंत करने का एक ही प्रभावी तरीका है कि लोगों को न कि गैर जिम्मेदार सरकारको न्यायपालिका और कार्यपालिकाका नियंत्रक और वेतनाधिकारी बनाया जाय—यह है उद्देश्य-जो **नयी राजनीति-बीसवीं सदी की राजनीति—भारत की जनता के समक्ष वर्तमान शासन प्रणाली से उनके संघर्ष में प्रस्तुत करती है, थिगड़े लगाना और उपशमन करना नहीं बल्कि वर्तमान कुशासन के लिए जिम्मेदार तानाशाह नौकरशाही के बदले एक मुक्त, संवैधानिक और लोकतांत्रिक प्रणाली की सरकार की स्थापना और विदेशी नियंत्रण का पूर्णरूपेण खातमा जिसे पूर्ण राष्ट्रीय स्वतंत्रता के हेतु मार्ग बन सके।'** (देखे—द डाक्ट्रिन आफ पैसिव रेजिस्टेंस पृ० १५-१६) वन्दे मातरम् का विश्वास था कि **'प्रत्येक राष्ट्र को अपने ढंग से जीने का अधिकार है और भारतीय पुनरुत्थान का पहला चरण है राजशक्ति की प्राप्ति अर्थात् जनता की सरकार'** और इस हेतु उसने **'राष्ट्र की सारी शक्ति इस आदर्श की संप्राप्ति हेतु लगा देने का'** सुझाव दिया और कहा कि **'जाति की नैतिक उन्नति या औद्योगिक एवं सामाजिक पुनर्गठन के प्रश्न बाद में हल किये जा सकते हैं।'** (हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड अक्टूबर ११, १९५३ को प्रकाशित प्रो० हरिदास मुखर्जी तथा प्रो० उमा मुखर्जी का लेख 'द आइडियोलाजी ऑफ द स्वदेशी मूवमेंट)'

वन्दे मातरम् ने देश धर्म का सफल प्रचार किया और राष्ट्रवाद को धर्म के समकक्ष आसन पर बिठा दिया, एवम् बंकिम चन्द्र को देशभक्ति का कवि और मसीहा घोषित किया क्योकि वे राष्ट्र को स्वतंत्रता के प्रथम प्रयास का संबल देने वाली नयी चेतना के **'प्रेरक और राजनीतिक गुरू'** थे। उसकी राय में **'स्वराज्य या पूर्ण स्वशासन के कम कुछ भी राष्ट्र की आत्मा को तुष्ट नहीं कर सकेगा और यह उद्देश्य ऐसा था जिस पर जिया या मरा जा सकता था।'** इस नये नवस्फूर्तिदायक आदर्श की शोध और उसे राष्ट्रीय कार्यक्रम में सबसे आगे रखना, वन्दे मातरम् की अनूठी सेवा थी। दिसम्बर १९०६ में हुए कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन के परिणामों की आम तौर पर अभिशंसा करते हुए वन्दे मातरम् ने एक विशेष मुद्दे पर अपनो निराशा व्यक्त को और यह मुद्दा था अध्यक्ष द्वारा **'सीमित स्वराज्य की माँग'** का।

१६०६ के कांग्रेस अधिवेशन को समाप्ति के बाद वन्दे मातरम् ने लिखा 'बुजुर्गों का काम था ऐसी पीढ़ी को तैयार करना जो इस महान आदर्श (अर्थात् स्वराज्य) से कम और कुछ भी न स्वीकार करने का व्रत ले और आदर्श को यथार्थ बनाने का जिम्मा अब हमारे ऊपर है। हम मिस्टर नौरोजी के आवाहन को स्वीकार करते हैं और उनके समादेश का पालन करने में जान की बाजी लगा देंगे और जरूरत हुई तो उसे अर्पित भी कर देंगे' (वन्दे मातरम् ३१ दिसम्बर १६०६ का सपादकीय 'द रिजल्ट ऑफ कांग्रेस')

नरमपंथियो के नेता के रूप मे दादाभाई नौरोजी ने चरमपंथियों के स्वतंत्रता के अर्थ मूल शब्द 'स्वराज्य' का सरल औपनिवेशिक स्वशासन के अर्थ मे उपयोग करने की चेष्टा की। उग्रपंथियो को पूर्णराजनीतिक स्वाधीनता से कम कुछ भी स्वीकार नही था और उन्होंने 'स्वराज्य' शब्द को बलिदान का मंत्र बना डाला। वन्दे मातरम् ने घोषित किया कि स्वतंत्रता का संग्राम एक बार आरम्भ होने के बाद उसके अंत तक चालू रखना चाहिए—लोगों ने जो अत्याचार सहे है वे स्वतंत्रता की पूजा की दीक्षा थे। उत्पीड़नों से विश्वास टूटते नहीं दृढ़ होते थे और संसार की कोई भी शक्ति स्वतंत्रता के बीज को जहां वह सच्चे एवम् उत्साही लोगों के रक्त में अंकुरित हुआ निःशेष नहीं कर सकती—कार्यप्रणाली यह है कि जन समुदाय से मिलो और संगठित करो और सम्प्रति बिखरे और छितरे विचारों और आकांक्षाओं को समेट कर एक पद्धति बना डालो। वे (राष्ट्रवादी) राष्ट्र में अपना विश्वास स्थापित करेंगे और जब तक भारत भूमि मुक्त नहीं हो जाती वे सभी प्रकार के समझौते असंभव बना देंगे।' (वन्दे मातरम् साप्ताहिक संस्करण १, दिसम्बर १६०७, लेख—'द न्यू फेथ')।

देशवासियो के समक्ष 'सम्पूर्णस्वराज्य' का आदर्श, संघर्ष करने और मरने के योग्य एक मात्र प्रेरक आदर्श के रूप में रक्खा गया। किन्तु यह स्वराज्य मात्र राजनीतिक मुक्ति की आकांक्षा मात्र न था। 'स्वराज्य माने आधुनिक स्थितियों में प्राचीन भारत के जीवन की परिपूर्ति, राष्ट्रीय महानता के सतयुग की वापसी, महान अध्यापक और गुरू की महान भूमिका का पुनर्ग्रहण, राजनीति में वेदांत के आदर्शरूप लोगों की चरम पूर्णता हेतु आत्म-मुक्ति, यही है भारत के लिए सच्चा स्वराज्य—वह (भारत) अपने निजी जीवन की व्यवस्था अपने हाथों में लिए बिना यह सब नहीं कर सकता। उसे अपना जीवन जीना है न कि विदेशी साम्राज्य का अंश या दास बनने का जीवन।'

(वन्दे मातरम् साप्ताहिक संस्करण—मई ३,१६०८, लेख—'आईडियल्स फेस टु फेस')।

सत्याग्रह का सिद्धान्त

वन्दे मातरम् ने केवल स्वराज्य का आदर्श प्रचारित करने का ही कार्य नहीं किया बल्कि उसे प्राप्त करने के हेतु सत्याग्रह और प्रतिरक्षात्मक प्रतिरोध करने की वकालत की। 'सत्याग्रह का प्रथम सिद्धान्त है, जिसे नये स्कूल ने अपने कार्यक्रम में सबसे आगे रक्खा है, कि ब्रिटिश व्यापार द्वारा देश के शोषण में या ब्रिटिश अधिकारी वर्ग को शासन में सहायता करे ऐसा कोई भी कार्य करने में संगठित अस्वीकृति द्वारा वर्तमान परिस्थिति में शासन को असम्भव बना दें। जब तक कि जनता की माँगों के अनुरूप और परिमाण में परिस्थितियाँ बदले नहीं। इस विचार धारा को एक शब्द में व्यक्त करे तो वह शब्द है बायकाट। (श्री अरविन्द की 'द डाक्ट्रिन आफ पैसिव रेजिस्टेंस पृ० ३५–३६)—मूलरूप।

आर्थिक शस्त्र के रूप में विकसित युक्ति 'बायकाट' को शीघ्र ही वन्दे मातरम् ने असीमित क्षेत्र और महत्व प्रदान किया। सरकार के सहयोग मे यह चार प्रकार के अस्वीकार के रूप में अभिव्यक्त हुआ—आर्थिक बायकाट, शैक्षणिक बायकाट, न्यायिक बायकाट और साथ ही अधिशासी शासन का बायकाट। सहयोग से पूर्ण इनकार को कानून के दायरे में रखना था जब तक कि ऐसा करना असंभव न हो जाय। विपिन चन्द्र भारतीय विचार के पहले नेता थे जिन्होंने संगठित सत्याग्रह के सिद्धान्त को अभिव्यक्ति प्रदान की और अरविन्द ने वन्दे मातरम् दैनिक में लिखे सम्पादकीय लेखों में इसमें

से सुसंगत राजनीतिक पन्थ निर्मित किया। इस प्रकार महात्मा गान्धी के अहिंसात्मक असहयोग का भारतीय राष्ट्रवाद के दो अग्रणी प्रतिपादकों ने स्वदेशी के दिनों में ही वास्तविक ढंग से पूर्वानुमान कर दिया था। वन्दे मातरम् गीत को साधुवाद जिसने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन की तकनीक और आदर्शों को राष्ट्र की आत्मा के प्रति सम्पूर्ण निष्ठा के साथ रूप रेखा तैयार की थी।

वन्दे मातरम् का प्रभाव

भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में 'वन्दे मातरम्' पत्रकारिता का अनूठा करिश्मा था। लेखनी तलवार से अधिक शक्तिशाली है। इस कहावत की सचाई हमारे देश में कभी इतने सशक्त और प्रभावशाली ढग से व्यक्त नही हुई जितनी इस दैनिक द्वारा। अरविन्द लिखते हैं 'वन्दे मातरम् पत्रकारिता के इतिहास में लोगो के मत परिवर्त्तन या उन्हें क्राति के लिए तैयार करने हेतु डाले गये मानसिक प्रभाव की दृष्टि से अनूठा था।' (देखें श्री अरविन्दौ आन हिमसेल्फ पृ० ५८) केवल दो वर्षो की अविश्वसनीय अल्प अवधि में (अगस्त १६०६ से अक्टूबर १६०८) वह हमारे देशवासियों की सम्पूर्ण मनोवृत्ति में क्रांतिकारी परिवर्तन करने में सफल रहा था। उसने बिना हिचक के सिखाया कि—'सभी राजनीतिक संघर्ष शक्ति परीक्षण होते हैं और हमें अपनी शक्ति और दृढ़ निश्चय से नौकरशाही के हाथों से स्वतन्त्रता छीन लेनी चाहिए।' उसने घोषित किया कि 'स्वतन्त्रता का वरदान सस्ते बाजार में नही खरीदा जा सकता।' उसने निर्मम स्पष्टवादिता मे नरमदल वालों की समझौतावादी नीति की निरर्थकता और थोथेपन को पोल खोली।

उसने जनता से कहा कि—'विदेशी सरकार से प्रार्थना और अर्जी करके राष्ट्रीय मुक्ति खरीदी नहीं जा सकती। उसके लिए नौकर शाही से भयावह युद्ध और शहीदों के रक्त बहाने की आवश्यकता होती है।' 'स्वराज्य की बात से स्वराज्य नहीं आयेगा, बल्कि हममें से प्रत्येक आदमी जब स्वराज्य में जियेगा तब स्वराज्य आने को बाध्य होगा।' (वन्दे मातरम् साप्ताहिक संस्करण अप्रैल १२, १६०८) 'उस संपूर्ण स्वराज्य की नींव गाँवों में डाली जानी चाहिए और जनता को आगे की और बढ़ाना चाहिए।' उसकी घोषणा थी 'देश का भविष्य जेल में लियाकत हुसेन और चिदम्बरम पिल्लई के साथ है, इलाहाबाद में गोपाल कृष्ण गोखले और फिरोजशाह मेहता के साथ नहीं। राष्ट्र की आशा समितियों के युवकों में है, उन बूढ़े नेताओं में नहीं जो अपनी सुरक्षित प्रतिष्ठा और घटती लोकप्रियता को स्वराज्य के पथ में अवरोध बनाकर रखने की चेष्टा करते है। भारत का भविष्य उस जनता में निहीत है जो तूतीकोरन में चिदंबरम के पीछे उमड़ पड़ी थी, जिसने पंढरपुर में तिलक के सम्मान में भीड़ की थी, जो पूर्व बंगाल में बिपिन चन्द्र के ओठों की ओर तकती है, न कि मुट्ठीभर स्नातकों के हाथ जो अब तक अपने आपको राष्ट्र कहते रहे हैं। मिथ्या-पन्थों के सम्मेलनों में नहीं, लोगों के जीवन में ईश्वर की शक्ति है और वह उसके भविष्य का स्वामी है।' (वन्दे मातरम् अप्रैल १४, १६०८)

शीघ्र ही देश मे इस प्रकार के प्रवचनो का प्रभाव अनुभव होने लगा और वह वन्दे मातरम् के नारो से जाग उठा। नौकरशाही भयाक्रांत हो उठी और राष्ट्रवाद की पुकार के जवाब मे उसने सरकार के लिए संभव सभी प्रकार के दमन एवं बल प्रयोग के तरीके अख्तियार किये। स्वदेशी मुकदमे चलाये गये। राजद्रोह के अभियोग में लोग दण्डित किये गये। पुलिस के आक्रमणों को प्रोत्साहित किया गया। राष्ट्र विरोधी उपद्रव भड़काये गये और अतीत के सभी रेकर्ड तोड़ने वाली सख्ती और वहशीपन से स्कूली छात्रों की प्रताड़ना की गयी। संपादकीय लेख पर नहीं बल्कि पत्र में छपे साधारण गौण प्रसंगों तथा विदेशी मामलों को लेकर राष्ट्रीयता के अभियान के कारण क्रोध से पागल नौकरशाही ने सन् १६०७ मे वन्दे मातरम् के विरुद्ध अयुक्तियुक्त राजद्रोह का मुकदमा दायर किया।

सरकार अरविन्द घोष का मुँह बन्द करना चाहती थी परन्तु प्रमाण के अभावमें उसे छोड़ दिया गया। परन्तु पत्र का अभागा मुद्रक जो अंग्रेजी जानता तक नही था 'कुछ मास के लिए जेल भेज दिया गया जिससे सर्वशक्तिमान

नौकरशाही की शान को लगी गहरी चोट का कुछ प्रतिकार हो सके।' (वन्दे मातरम् साप्ताहिक संस्करण सितम्बर २६, १६०७ में वन्दे मातरम् प्रासीक्यूशन लेख से) सुयोग्य संपादन को धन्यवाद है कि उसने वन्दे मातरम् में 'सुरक्षित निन्दा' की कला को चरम पूर्णता के स्तर पर पहुँचा दिया और संपादकीय लेखो के लिए उसे कभी मुकदमे का सामना नहीं करना पड़ा। स्टेट्समैन ने शिकायत की 'अखबार में हर लाइन के बीच भरपूर राजद्रोह स्पष्ट दिखता है, किन्तु वह इतनी दक्षता से लिखा होता है कि उस पर कानूनी कार्यवाही नहीं की जा सकती।' और ठीक यही तर्क लेकर सरकार ने तत्कालीन प्रेस कानूनों को सशोधित किया और उन्हें पहले से अधिक कठोर बनाया। अत: दमन के अधिकाधिक कठोर उपाय अपनाये गये, लेकिन इस पर भी वे नये आन्दोलन के उत्साह को भग कर नहीं सके। अपने प्रति इमानदार, अपनी नियति के प्रति चेतन, नौकरशाही की मुस्कान और तेवर की परवाह किये बिना, उत्तेजन में शांत और प्रतिष्ठावान रह कर 'वन्दे मातरम्' अग्नि निर्मित हृदय और ज्वालामयी जिह्वा लिये देश के लिए 'दृढ़ता, सहनशील, विशद सेवा और आत्म बलिदान के उच्च आदर्शों का प्रचार करता रहा।'

देशभक्ति पर प्रहार

राजद्रोहात्मक प्रकाशन रोकने के इरादे से प्रेस ऐक्ट के प्रस्तावित सुधार पर टीका करते हुए वन्दे मातरम् ने २४ फरवरी १६०८ के अंक में यह मत व्यक्त किया 'इन दमन पीड़ित अखबारों, मुद्रकों और प्रकाशकों की साहित्यिक योग्यता भले ही कुछ भी क्यों न हो, पर वे अपना मिशन अच्छी तरह समझते हैं, और वर्जन के बावजूद त्याग हेतु स्वेच्छा से समर्पित है जिससे देश में इस प्रकार का देश भक्तिपूर्ण साहित्य जिन्दा रक्खा जा सके। वे प्रबल देशभक्ति की भावना से आगे आये है और अपने विचारों और आदेशों के अनुसार अपने वीरत्व के आवरण में वे प्रचार कार्य जारी रखने में समर्थ है। जिन विचारों को रोकने की चेष्टा की जा रही है, उनके प्रसारण की नैतिक और कानूनी जिम्मेदारी मुद्रकों और प्रकाशकों की है। ये लोग सच्चे मसीहा और शहीद हैं और जिनके रक्त के लिए एंग्लो इण्डियन प्रेस और नौकरशाही प्यासी है। वे तो केवल उनके विचारों के संवारने वाले मात्र हैं। मुद्रकों और प्रकाशकों का जो नया समूह एक के बाद एक करके जेल की ओर दौड़ रहा है, वह केवल भाड़े का टट्टू नहीं है बल्कि देश के हेतु दिव्य उत्साह और वीरतापूर्ण भक्ति से उफनते युवकों का समूह हैं। जो लोग हल्की भाषा में इन तथाकथित राजद्रोही अखबारों के मुद्रकों और प्रकाशकों की उपेक्षा के भाव से चर्चा करते है उन्हें एक तथ्य समझ लेना चाहिए ओर तब निर्णय करना चाहिए कि क्या प्रेस एक्ट की कोई भी कठोरता कभी भी इस प्रकार के साहित्य को नि:शेष कर सकती है ?''

नौकरशाही की दमननीति के कारण लोगो द्वारा सहे जा रहे कष्ट और दु:ख की चर्चा करते हुए वन्दे मातरम् लिखता है—नि:संदेह संघर्ष का बोझ उठा रहे उत्पीड़ित देश वासियों के लिए हम बड़ी तीव्रता से समवेदना अनुभव करते हैं। पर उन्हें सिवा इसके और कोई परितोष नहीं दे सकते कि दु:ख ही उनका भाग्य, उनकी परीक्षा और उनका विशेषाधिकार होता है।.दु:ख से सुख की ओर, अंधेरे से उजाले की ओर, दुर्बलता से शक्ति और शर्म से कीर्ति की ओर जाने के लिए कोई राजपथ नहीं है, कोई सुरक्षित मार्ग नहीं है। बिना बलिदान के हमारा उत्थान नहीं हो सकता, संसार में कुछ भी करने की उम्मीद नहीं की जा सकती। लगता है बंगाल ने इस बलिदान की महिमा समझी है, और देश के हित कष्ट सहने को आमंत्रित लोगों की उज्ज्वल कथा आशा और विश्वास जगाती है। (वन्दे मातरम् जनवरी १४,१६०८)

पुन: १६०८ के इलाहाबाद अधिवेशन में व्यक्त बंगाल के नरमपंथियों और उनकी पंजाबी समर्थकों की क्षीण देशभक्ति और दुलमुल संकल्प पर शोक प्रगट करते हुए वन्दे मातरम् ने कहा कि 'नरमपंथी छद्म वेष में जनता को धोखा देने और गुमराह करने वाले विदेशी नौकरशाही के गुलाम है। वे राष्ट्र के दुश्मन हैं, भारतीय स्वतंत्रता के शत्रु

हैं जो मुक्ति संग्राम के खतरों के बदले विदेशी सत्ता की गुलामी ज्यादा पसंद करते हैं।' उसने आगे लिखा 'समझौते के दिन बीत गये। निष्कपट, सुनिश्चित और सुस्पष्ट रूप में इस महान प्रश्न को देश के समक्ष रखा जाय कि वह स्वतंत्रता प्रेमियों और दासता प्रेमियों, माता की हार्दिक सेवा की माँग पर टालमटोल करने वालों और उसके चरणों पर सब कुछ वारने वालों, राजनीतिज्ञों और शहीदों, विरोधभास के अभिव्यक्ताओं और अवलंकृत सत्य के पुजारियों के बीच फैसला करे। एक ओर का नारा है 'भारत और स्वतंत्रता के लिए' और दूसरी ओर है 'भारत और नौकरशाही।' उसी वाणी में वन्दे मातरम् ने घोषित किया कि ईश्वर की सच्ची सेवा निरुत्साही सेवकों द्वारा नहीं हो सकती, राष्ट्र वादियों के सम्मुख भविष्य का कार्य और भी अधिक कठोर होगा।' नायक, शहीद, लौह संकल्प और लौह हृदय का व्यक्ति निर्मम योद्धा जिसके सख्त स्नायुओं को पराजय थका नहीं सकती, न खतरा ढीला कर सकता है, कर्मक्षेत्रमें जन्मजात नेता, वह आदमी जबतक देश गुलाम है न सो सकता है न विश्राम ले सकता है। माँ काली का पुजारी जो अपने शरीर से हृदय काढ़कर मां की बलिवेदी पर रक्तमीना चढ़ावा भेंट कर सकता है, अग्नि निर्मित हृदय और ज्वाला मयी जिह्वा वाला व्यक्ति जिसका हल्का सा शब्द भी आत्म त्याग या कर्मरत हो जाने का प्रेरक है, इन लोगों के लिए वक्त आ रहा है, शीघ्र ही आवाहन होगा—क्योंकि युद्ध सन्निकट है और संकेत के लिए रण सिंघा तत्पर है।" (अरविंद का अद्भुत संपादकीय "द ह्वीट एण्ड दी चैफ" अप्रैल २३, १९०८ के वन्दे मातरम् में)।

क्रान्ति आ रही है

२९ अप्रैल १९०८ के वन्दे मातरम् में अरविन्द द्वारा यही भावना पुनः प्रतिध्वनित हुई, **न्यू कण्डिशन्स** शीर्षक एक और अद्भुत सम्पादकीय में, जो राष्ट्रवादी मुख पत्र के सम्पादक की हैसियत से राष्ट्र के नाम उनकी अन्तिम वसीयत और नवविधान था। सरकारी दमन ज्यों-ज्यों बढ़ता जा रहा था, अरविन्द अधिकाधिक तीव्रता से और सुनिश्चित भविष्य दृष्टि से अनुभव कर रहे थे कि विश्वकम्पी हलचल और शक्तियों के संघर्ष के दिन निकट आ रहे हैं। 'स्वशासन के क्रमबद्ध और शांतिपूर्ण विकास की सदाशाएं जिन्हें नये आन्दोलन की प्रथम शक्तियों ने सँजोया था, सर्वदा के लिए विलीन हो गयी है। विराटपतन और प्रबल नवसृजन की सामग्री जुटाने और नये ब्रह्मांड का विकास करने वाले व्यवस्था केन्द्रों को खनकर निर्मम और कठोर क्रांति अपनी संग्राम भूमि तैयार कर रही है। हम चाहते तो नहीं थे कि ऐसा हो, पर हरीच्छाबलीयसी। एक प्रचण्ड और अपरिमित क्रांति सन्निकट है और इसके अस्त्र वे ही होंगे जिनमें अपार आकांक्षाएँ हैं और जो आत्म बलिदान का मोल नहीं लगाते। पुरातन के बृहत्तम यज्ञ तुलना में क्षीण और दूरस्थ छाया मात्र लगे ऐसा बलिदान यज्ञ आरम्भ करना है और उसमें हम स्वयं हमारा जीवन, हमारी सम्पत्ति, हमारी आशाएँ हमारी महत्वाकाक्षाएँ जो कुछ भी ईश्वरी नहीं व्यक्तिगत है जो कुछ भी हमारी अपनी सेवा में अर्पित है और देश सेवा से लिया गया है सब कुछ होमा जायगा। बलिदान का देवता सन्तुष्ट हो सके, इससे पूर्व महानतम को अपनी बलि देनी होगी। (२९ अप्रैल १९०८ को दैनिक वन्दे मातरम् में अग्रलेख के रूप में प्रकाशित और बाद में ३ मई १९०८ के साप्ताहिक संस्करण में भी प्रकाशित।

वन्दे मातरम् के माध्यम से देश के नाम दिया अरविन्द का यह अंतिम संदेश था, क्योंकि तत्काल इसके बाद ही वे गिरफ्तार कर लिये गये और अलीपुर बम केस में फंस गये (२ मई १९०८) जो एक वर्ष बाद उनके मुक्त होने तक घिस घिस करके चलता रहा (जून १९०९)। इसी बीच सन् १९०८ में प्रेस ऐक्ट पास हो गया और वन्दे मातरम् भयातंकित नौकरशाही के क्रोध का भोग बन गया। इस युग प्रवर्तक अखबार का अंतिम अंक २९ अक्टूबर १९०८ को श्याम सुन्दर चक्रवर्ती, हेमेन्द्र प्रसाद घोष और विजय चन्द्र चैटर्जी के संपादकत्व में प्रकाशित हुआ। इस तिथि के बाद वन्दे मातरम् की वाणी मौन हो गयी, पर उसकी आत्मा का हनन नही किया जा सका। माता का दर्शन उद्‌भासित हो चुका था और 'एक महान राष्ट्र जिसने यह दर्शन किया है कभी भी विजेता के जुए में डालने के लिये अपना सिर नहीं झुका सकता।'

अंतिम संदेश

२७ अक्टूबर के वन्दे मातरम् ने 'अवर सेल्वस' शीर्षक सशक्त सम्पादकीय में लिखा—'वन्देमातरम् की मूल प्रतिभा की निष्फल शोध में क्रोध से पागल नौकरशाही ने इसका व्यवहारिक उन्मूलन करने के अन्य उपायों से काम लेने का निर्णय किया है। वन्देमातरम् ने मुक्ति का स्तवपाठ किया है और जो भी सत्ताएँ हैं उनको नाराज किया है—वन्देमातरम् दिव्य प्रकाश है, भारत को आलोड़ित करने वाला प्रकम्पन है, अपने माध्यम के रूप में हमें चुनने से कहीं पहले उसने भारत के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में प्रबल क्रान्तियाँ उत्प्रेरित कर उसे पुनः आत्माभिव्यक्ति के लिए तैयार किया है। हमारे टाइपों और छपाई मशीनों द्वारा वितरित होने से कहीं पहले वह पवन में विद्यमान था, क्रियाशील था, उसने शक्तियों को गतिशील कर दिया था। विश्व के व्यापार में ऐसे मोड़ आते हैं जब नये आदमी पैदा होते हैं—उस क्षण के आदमी, उस अवसर के आदमी, भाग्यविधाता पुरुष जिनका उत्साह आकर्षित करता है, संयुक्त करता है और प्रेरणा देता है, जिनकी क्षमता संकट के अनुकूल होती है, जिनकी शक्ति आन्दोलन के बराबर होती है जो तूफान के बेटे होते है। हमारे देशवासी जानते हैं कि वन्देमातरम् ने उन्हें हत्याएँ करने को उकसाया या उन्हें विशुद्ध और पवित्र भावनाओं से भर दिया। यह हरा पन्ना भविष्य में उनके आगे फरफराये या न फरफराये पर इसने प्रेरणा के सच्चे स्रोत की और इङ्गित कर दिया है—उनकी प्यारी मातृभूमि और उसकी अतुलनीय सरसब्ज सम्पत्ति की ओर। वे हर घास की पत्ती से प्रेरणा ग्रहण करेंगे, भारत का प्रखर सूर्य, जिसे जब्त करना किसी भी आदेश की सीमा से बाहर है, उनके जीवन रक्त को ऊष्णता प्रदान करता रहेगा। हमें चिन्ता नहीं कि हमारा क्या होगा पर हमारे देश में दुःख, आक्रोश, घृणा, विद्वेष और दासता के नाम पर जो कुछ किया जा रहा है उससे मुक्त हो यही हमारी कामना है।

'भारतीय राष्ट्रीयता और वन्दे मातरम्' नामक अंग्रेजी ग्रन्थ का पहला अध्याय

साभार अनु—भानु

विदेश में भारतीय क्रांतिकारियों पर प्रभाव

जुलाई १९०९ में मदन लाल धींगरा को एक ब्रिटिश को गोली मारने के अपराध में फाँसी दी गयी, धींगरा के शब्दों में यह 'भारतीय युवकों के अमानवीय प्राण दण्डों और निर्वासनों के विरुद्ध विनम्र विरोध मात्र था।' अपने दंड से पूर्व धींगरा के अन्तिम शब्द थे 'ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि मैं इसी माता के अंक में पुनः जन्म लूँ और इसी पवित्र कार्य के लिये पुनः मरूँ जब तक कि कार्य सफल न हो जाय और मानवता के कल्याण एवम् ईश्वर की कीर्ति के लिये वह मुक्त न हो जाय।' फाँसी चढ़ते समय उसके अन्तिम शब्द थे—'वन्दे मातरम्'!

सन् १९०९ में पेरिस में भारतीय देशभक्तों ने जिनेवा से एक पत्रिका 'वन्दे मातरम्' का प्रकाशन आरम्भ किया। अपने प्रथम अंक में पत्रिका ने कहा 'विदेशी अत्याचार के विरुद्ध हमारे बहादुर और बुद्धिमान नेताओं ने बंगाल में जो यशस्वी अभियान आरम्भ किया है, वन्दे मातरम् के माध्यम से हम उसे पूर्ण शक्ति और दृढ़ता से चलायेंगे।''

जब २२ अक्टूबर १९२२ को गोपाल कृष्ण गोखले दक्षिणी अफ्रीका में केपटाउन पहुँचे तो 'वन्दे मातरम् के नारे लगाते एक विशाल जुलूस ने उनका स्वागत किया।

भारतीय आतंकवाद में एक सती महिला

—श्री चन्द्रशेखर जी शास्त्री—

भारतीय आतंकवाद के इतिहास में जिसे पिछली सरकार ने जब्त किया था और सरदार पटेल ने मुक्त कर दिया था, अनेक ऐसी महिलाओं का वर्णन है, जिन्होंने न केवल अपने भाई वीर आतंकवादियों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया बल्कि कई बार तो उनसे आगे बढ़कर भी काम किया।

अभी तो अपने इस इतिहास में एक ऐसी महिला का चरित्र दिया जा रहा है, जो एक आतंकवादी की पत्नी थी तथा जो गौना होने से पूर्व ही पति को फांसी हो जाने के कारण सती हो गयी।

सन् १९११ में दिल्ली-दरबार के समय सम्राट जार्ज पंचम ने कलकत्ते के स्थान में दिल्ली को भारत की राजधानी बनाने की घोषणा की। दिल्ली में नयी राजधानी बनाने के लिए एक और नगर 'नयी दिल्ली' की आधारशिला रक्खी गयी। यह भी तय किया गया कि वायसराय लार्ड हार्डिंग २३ दिसम्बर १९१२ को राजधानी में पहले पहल समारोह पूर्वक प्रवेश करें। अस्तु नियत दिन पर वायसराय ने अत्यन्त समारोहपूर्वक दिल्ली मे प्रवेश किया। जिस समय उनकी सवारी चांदनी चौक मे आयी तो एक अज्ञात दिशा की ओर से एक भयानक बम उनके ऊपर फेंका गया, किन्तु निशाना ठीक नही बैठा। बम वायसराय को न लगकर उनके पीछे बैठे हुए उनके अंगरक्षक को लगा, जिससे वह घटना स्थल पर ही मर गया। वायसराय के भी सिर के पीछे के भाग में कुछ चोट लगी, जिससे वे उसी समय मूर्छित हो गये। पुलिस ने उसी समय सारे चांदनी चौक को घेर लिया, किन्तु बम फेंकनेवाले की परछांई तक कोई न पा सका।

अनेक यत्न करने पर भी सरकार इस भेद का पता न लगा सकी और अन्त मे हारकर उसने दिल्ली में आतंकवादी संगठन करने के अपराध में मार्च १९१४ में तेरह व्यक्तियों पर मुकदमा चलाया। इस मुकदमे में सर्वश्री अमीर चन्द्र, अवध बिहारी, भाई बालमुकुन्द और बसन्त कुमार विश्वास को फांसी दी गयी। प्रस्तुत लेख में इनमें से भाई बालमुकुन्द की पत्नी सती रामरखी का वर्णन किया जायगा।

फांसी के समय उपर्युक्त चारो वीरों ने स्वयं कूदकर गले में रस्सी डाल ली और 'वन्दे मातरम्' की ध्वनि के साथ हँसते हँसते विदा हुए। इनमें भाई बालमुकुन्द को तो इस बातका विशेष हर्ष था कि जिस स्थान पर उसके पूर्व पुरूष भाई मतिराम जी को औरंगजेब की आज्ञा से सिक्खों के गुरू तेग बहादुर के साथ आरे से चीरा गया था उसी स्थान पर वह भी अपने को बलिवेदी पर उत्सर्ग कर रहा है। भाई बालमुकुन्द का विवाह इस घटना से एक वर्ष पूर्व ही श्रीमती रामरखी के साथ हुआ था। गौना न होने के कारण उन दोनों ने एक साथ चारपायी पर पांव भी नहीं रक्खा था। रामरखी ऐसी पतिव्रता थी कि उसने जिस दिन से अपने पति के पकड़े जाने का हाल सुना, सब भोग-विलास त्याग दिये। एक दिन वह जेल में भाई बालमुकुन्द से मिलने गयी। उसने पूछा 'क्या खाते हो ?' बालमुकुन्द ने रोटी का एक टुकड़ा उसे दे दिया। उसने पूछा—'कहाँ सोते हो ?' बालमुकुन्द ने मच्छरों से भरी हुई अपनी काल कोठरी दिखला दी। रामरखी ने उसी दिन से वैसी रोटी बनाकर खाना शुरू किया। उसने भूमि को हाथ भर खोद कर उसमें पुवाल डालकर अपने सोने के स्थान को भी वैसा ही मच्छरों वाला तथा वायु रहित बना लिया।

(शेष पृष्ठ १२३ पर)

के बोले मां तुमि अबले ?

— श्री बालकवि बैरागी —

श्री प्रकाशवीर शास्त्री का एक महत्वपूर्ण लेख महर्षि दयानन्द पर निकला है। इस लेख में शास्त्री जी ने अनायास एक ऐसी बात लिख दी है जिसने मुझे यह सत्र लिखने को प्रेरित किया है। शास्त्री जी ने लिखा है कि हमारे राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' की रचना काल सन् १८७२ ई० है। बंकिम बाबू ने इस गीत को भारत मां की वन्दना करते हुए सन् १८७२ ई० मे लिखा था। उसका एक एक उद्धरण भी दिया है जिससे उस समय भारत की जनसंख्या का आभास होता है।

द्विंत्रिश कोटि भुजैधृत खर करवाले

के बोले मां तुमि अबले

मां, तेरे बत्तीस करोड़ बेटे अपने हाथों में पैनी तलवारें लेकर खड़े होंगे तब किसकी हिम्मत होगी कि तुझे अबला कहे, आदि।[1]

यह एक संयोग है कि आगामी वर्ष १९७२ में इस गीत की रचना को एक शताब्दी पूरी हो जायगी। हमारी आजादी को एक चौथाई शताब्दी यानी २५ साल पूरे होंगे। अभी-अभी शिमला कांग्रेस में एक प्रस्ताव द्वारा आगामी वर्ष को आजादी की रजत जयन्ती वर्ष के रूप में मनाने का आह्वान किया गया है। ९ अगस्त की महान जन रैली में हमारी प्रधान मन्त्री ने दिल्ली में भी इस आह्वान का उच्चारण किया था।

बांगला देश की पृष्ठभूमि पर यदि हम इस संयोग को देखेंगे तो हमें लगेगा कि जितना महत्व आजादी की रजत जयन्ती का है, उससे कम महत्व वन्दे मातरम् गीत की शताब्दी का नहीं है। यदि यह संदर्भ न भी होता तो भी हमको यह शताब्दी मनानेका आयोजन करना तर्क संगत लगता है। दो युद्ध हम लड़ चुके और तीसरा हमारे सिर पर मंडरा रहा है। कभी भी बारूद में आग लग सकती है, मेरा तो साफ चिंतन है कि भारत को अपने खाले-बाले तैयार करना ही होगा।' वैसे भी हर स्वाभिमानी देश को अपने पैरों पर खड़ा होना आवश्यक है। जिसकी लाठी उसकी भैंस वाला जमाना चल रहा है। आगामी वर्ष क्यों नहीं आप हम सब बैठकर देश के सम्पूर्ण युद्ध साहित्य पर विचार करें।

कहते हैं कि युद्धकाल किसी भी देश और साहित्य के लिए सबसे अधिक संवेदनशीलता का काल होता है। हम अपने दिलों पर हाथ रखकर विचार करें। हां, मैं हिन्दीवालों से खास तौर से कह रहा हूँ कि समय-समय पर हमारे नौजवानों ने शहादत देकर हमारा सिर ऊँचा किया, पर क्या हम ईमानदारी पूर्वक इन पच्चीस सालों में हिन्दी का एक भी युद्ध गीत भारत माता को दे पाये? क्या हमारी पीढ़ियों की भूख नहीं थी? मुझे कहने में कोई संकोच

---

१. श्री बैरागी जी ने इस पद का गलत अर्थ समझा है। बंकिम बाबू के मूल गीत में सप्त कोटि का जिक्र था जिसे १९३८ ई० में त्रिंश कोटि बनाया गया। उन दिनों भारत की आबादी तीस करोड़ के लगभग थी। द्विंत्रिश कोटि भुजैधृत कर वाले अर्थ यह होगा कि साठ करोड़ हाथ। बत्तीस करोड़ हाथ नहीं।

— संपादक

नहीं है कि हमने युद्ध लड़े, पर बिना युद्ध गीतों के। युद्ध-साहित्य के नाम पर हिन्दी के पास कितना क्या है, इसका मूल्यांकन करना होगा। बांगला देश के पक्ष में हम हिन्दीवाले जितना भी लिख रहे है, उसको पढ कर मुझे यही लगता है कि हम लोग विनम्रता के साथ बंकिम बाबू का कर्ज चुकाने का प्रयत्न कर रहे हैं। जितना वन्दे मातरम् आपके हमारे बच्चे पाठशालाओं में पढते या गाते है, वह मात्र एक वन्दना का बोल है। हम अपनी माँ की वन्दना करते हैं। उसमें कहीं भी युद्ध का उन्माद नही है। एक निष्कलंक-वन्दना। एक निर्मल-प्रार्थना है वह। पर यदि वह गीत नहीं होता तो हमारी आजादी के युद्ध का कोई लय पूर्ण जीवन था भी ? इस प्रश्न का सपाट उत्तर यही है कि नहीं था।

अंग्रेजों ने इस गीत पर पाबंदी लगायी। यानी माँ की वन्दना का गीत गाना भी मना कर दिया। इस गीत में से उनको युद्ध की गंध आने लगी। वन्दे मातरम् गीत नहीं, एक नारा बन गया। मेरा अनुमान है कि नारों के इतिहास में यही एक शतायु नारा होगा जोकि अबाध रूप से सौ साल तक सादर उच्चारा जा रहा है। सरकारें कुछ करें या न करें, हम साहित्यकारों को यह शताब्दी किसी न किसी रूप मे मनानी चाहिए। मैं जानता हूँ कि आजादी की रजत-जयन्ती जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम मे यह छोटा सा आपको लग सकता है। पचपन करोड़ की भारी भीड़ में मेरा यह सुझाव या प्रस्ताव आसानी से उड़ भी सकता है, पर मुझे लगता है कि हम लोग इस दिशा मे कुछ कर सकेंगे और 'वन्दे मातरम्' के महान गीतकार को एक पूरी शताब्दी की भावांजलि अर्पित करने का पहला प्रयत्न करेंगे। यह और भी गौरव की बात है कि भारत का यह एक मात्र वन्दनीय गीत एक अहिन्दी भाषी द्वारा रचा गया है। सारा देश आज इसे समवेत स्वर में एक ही भावना से गाता है। क्यों नही हम आजादी के इन पच्चीस सालों को इस गीत को अर्पित कर दें। करोड़ों लोग इस देश में अभी ऐसे हैं जिनको इस पूरे गीत का कुछ भी अता-पता नहीं है। गाँव-गाँव इस पूरे गीत का दर्शन और पठन पाठन आयोजित हो सकता है। इस पर टेब्लो और दूसरे कलात्मक संयोजन हो सकते हैं। हम गालिब साहब की शताब्दी मना चुके, राम चरित मानस की चतुश्शती हम मना ही रहे हैं। न जाने कौन-कौन सा दिन हम आये दिन मनाते है, पर सन् १९७२ का महत्वपूर्ण साल हम किसी निश्चय दिन, तिथि या मास में इस पृष्ठभूमि पर मना सकें तो एक नवचेतना का दर्शन तो होगा ही।

(धर्मयुग साप्ताहिक, ७ नवम्बर, १९७१)

(पृष्ठ १२१ का शेषांश)

रामरखी की इच्छा अपने पति के साथ सती होने की थी, किन्तु लाश न मिलने के कारण उसकी योजना मन की मन में ही रह गयी। बालमुकुन्द को फाँसी होने के बाद उसने अन्न तथा जल दोनों का त्याग करके एकदम निर्जल उपवास आरम्भ कर दिया। अठारहवें दिन उसने हाथ से लाये हुए जल से स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहने, फिर उसने भूमि को गोबर से लीपा। इसके पश्चात् उसने भूमि पर लेटकर कहा—'प्यारे, बहुत दिन तक परीक्षा ले चुके। आज तो दामन नही छोड़ूँगी, अब जुदा न हो सकूँगी।

रामरखी ने यह कह कर एकदम प्राण छोड़ दिये।

लोगों ने कहा—'बालमुकुन्द की पत्नी सती हो गयी, किन्तु एक कवि ने कहा—'गुल पर बुलबुल निसार हो गयी।''

ऐसी थी भाई बालमुकुन्द की पत्नी सती रामरखी।

नहीं है कि हमने युद्ध लड़े, पर बिना युद्ध गीतों के। युद्ध-साहित्य के नाम पर हिन्दी के पास कितना क्या है, इसका मूल्यांकन करना होगा। बांगला देश के पक्ष में हम हिन्दीवाले जितना भी लिख रहे हैं, उसको पढ कर मुझे यही लगता है कि हम लोग विनम्रता के साथ बंकिम बाबू का कर्ज चुकाने का प्रयत्न कर रहे है। जितना वन्दे मातरम् आपके हमारे बच्चे पाठशालाओं में पढते या गाते हैं, वह मात्र एक वन्दना का बोल है। हम अपनी माँ की वन्दना करते हैं। उसमें कहीं भी युद्ध का उन्माद नही है। एक निष्कलंक-वन्दना। एक निर्मल-प्रार्थना है वह। पर यदि वह गीत नहीं होता तो हमारी आजादी के युद्ध का कोई लय पूर्ण जीवन था भी ? इस प्रश्न का सपाट उत्तर यही है कि नही था।

अंग्रेजों ने इस गीत पर पाबंदी लगायी। यानी माँ की वन्दना का गीत गाना भी मना कर दिया। इस गीत में से उनको युद्ध की गंध आने लगी। वन्दे मातरम् गीत नहीं, एक नारा बन गया। मेरा अनुमान है कि नारों के इतिहास में यही एक शतायु नारा होगा जोकि अबाध रूप से सौ साल तक सादर उच्चारा जा रहा है। सरकारें कुछ करें या न करें, हम साहित्यकारों को यह शताब्दी किसी न किसी रूप मे मनानी चाहिए। मैं जानता हूँ कि आजादी की रजत-जयन्ती जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम में यह छोटा सा आपको लग सकता है। पचपन करोड़ की भारी भीड़ में मेरा यह सुझाव या प्रस्ताव आसानी से उड़ भी सकता है, पर मुझे लगता है कि हम लोग इस दिशा में कुछ कर सकेंगे और 'वन्दे मातरम्' के महान गीतकार को एक पूरी शताब्दी की भावांजलि अर्पित करने का पहला प्रयत्न करेंगे। यह और भी गौरव की बात है कि भारत का यह एक मात्र वन्दनीय गीत एक अहिन्दी भाषी द्वारा रचा गया है। सारा देश आज इसे समवेत स्वर में एक ही भावना से गाता है। क्यो नहीं हम आजादी के इन पच्चीस सालों को इस गीत को अर्पित कर दें। करोड़ो लोग इस देश में अभी ऐसे हैं जिनको इस पूरे गीत का कुछ भी अता-पता नहीं है। गाँव-गाँव इस पूरे गीत का दर्शन और पठन पाठन आयोजित हो सकता है। इस पर टेब्लो और दूसरे कलात्मक संयोजन हो सकते हैं। हम गालिब साहब की शताब्दी मना चुके, राम चरित मानस की चतुश्शती हम मना ही रहे हैं। न जाने कौन-कौन सा दिन हम आये दिन मनाते हैं, पर सन् १९७२ का महत्वपूर्ण साल हम किसी निश्चय दिन, तिथि या मास में इस पृष्ठभूमि पर मना सकें तो एक नवचेतना का दर्शन तो होगा ही।

(धर्मयुग साप्ताहिक, ७ नवम्बर, १९७१)

(पृष्ठ १२१ का शेषांश)

रामरखी की इच्छा अपने पति के साथ सती होने की थी, किन्तु लाश न मिलने के कारण उसकी योजना मन की मन मे ही रह गयी। बालमुकुन्द को फाँसी होने के बाद उसने अन्न तथा जल दोनों का त्याग करके एकदम निर्जल उपवास आरम्भ कर दिया। अठारहवें दिन उसने हाथ से लाये हुए जल से स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहने, फिर उसने भूमि को गोबर से लीपा। इसके पश्चात् उसने भूमि पर लेटकर कहा—'प्यारे, बहुत दिन तक परीक्षा ले चुके। आज तो दामन नहीं छोड़ूँगी, अब जुदा न हो सकूँगी।

रामरखी ने यह कह कर एकदम प्राण छोड़ दिये।

लोगों ने कहा—'बालमुकुन्द की पत्नी सती हो गयी, किन्तु एक कवि ने कहा—'गुल पर बुलबुल निसार हो गयी।''

ऐसी थी भाई बालमुकुन्द की पत्नी सती रामरखी।

हमारा राष्ट्रीय ध्वज

—विश्वनाथ मुखर्जी—

हमारे राष्ट्रीय ध्वज के सम्बन्ध मे विभिन्न लेखको ने भिन्न-भिन्न बातो की चर्चा की है। यहाँ तक कि मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित 'हमारा राष्ट्रीय ध्वज' नामक पुस्तिका में भी अनेक बातें 'कहा जाता है' जैसी बातों पर आधारित है जैसा कि प्रस्तुत स्मारिका में मैंने एक अफवाह को अपने लेख मे पृष्ठ २१ मे स्थान दिया है। ठीक उसी प्रकार जैसे सर्व श्री अमरेन्द्र गाडगिल तथा जगदीश भट्ट के लेखो में भी वन्दे मातरम् गीत के जन्म के बारे में यह कहा गया है कि एक बार कलकत्ता से रेल द्वारा सफर करते समय बंकिम बाबू ने अपने प्रदेश की हरियाली को देख कर यह गीत लिखा। बंकिम बाबू को स्वप्न मे यह कविता लिखने की प्रेरणा मिली। बंकिम बाबू ने बड़ी लड़की ने एक बार अपने पिता से पूछा-कैसा है हमारा देश पिता जी। बस, उसके अनुरोध पर यह गीत लिखा गया। ये सारी बातें कपोल कल्पित हैं। जिस प्रकार प्रसिद्ध उपन्यासकार शरत्चन्द्र चटर्जी के बारे में अनेक कल्पित कहानियाँ प्रचलित हैं, ठीक उसी प्रकार वन्दे मातरम् गीत के जन्म सम्बन्धी ये कथाएं गलत हैं, क्योंकि महर्षि अरविन्द से लेकर पद्मश्री प्रेमेन्द्र मित्र तक की रचनाओं मे कही भी इन घटनाओं का उल्लेख नहीं है। वन्दे मातरम् सम्बन्धी जितनी पुस्तकें पढ़ने में आयी, उनमे इन अफवाहो का कही उल्लेख नही है। पता नहीं, किस लेखक की कल्पना से ये गलत तथ्य प्रचारित हुए। फलस्वरूप गुजरात और महाराष्ट्र के लेखकों ने भी इस भ्रामक तथ्य को अपनी रचना में स्थान दिया।

ठीक इसी प्रकार हमारे राष्ट्रीय ध्वज के बारे में सिस्टर निवेदिता का भी उल्लेख है। सरकारी पुस्तक में कहा गया है—'हमारे राष्ट्रीय ध्वज की कल्पना सर्व प्रथम फ्रांस और इंगलैण्ड में बसे भारतीयों के मस्तिष्क में आयी।'

यद्यपि सरकारी सूत्रो ने नाम नहीं लिखा है, पर इतिहासकारों ने उनका नाम बताया है—श्री हेमचन्द्र कानूनगो। श्री कानूनगो उन दिनो फ्रास मे ही रहते थे।

इस सम्बन्ध में हैदराबाद स्थित हिन्दी समाचार पत्र संग्रहालय के मन्त्री श्री बेंकटलाल ओझा ने एक पत्र में सूचित किया है कि १७ अगस्त, १९०६ में कलकत्ता में राष्ट्रीय झण्डे की रचना हुई। ओझाजी को यह तथ्य कहाँ से प्राप्त हुआ, पता नही। अगर कलकत्ते में इसकी रचना हुई होती तो बंगाल के लेखक इसका उल्लेख अवश्य करते। उन सभी ने यह स्वीकार किया है कि श्री हेमचन्द्र कानूनगो ने इसकी रचना की है। महाराष्ट्र के चलते-फिरते विश्वकोश यानी श्रद्धेय श्री गजानन विश्वनाथ केतकर ने भी यही कहा है, पर उनके कथन में एक अन्तर यह है कि उन्होंने हेमचन्द्र कानूनगो के स्थान पर हेमचन्द्र दास बताया है।

ओझाजी ने लिखा है—सबसे ऊपर हिन्दुओं का लाल रंग जिसमें आठ कमल, बीच में पीले रंग पर वन्दे मातरम् और नीचे मुसलमानो का हरा रंग जिसमें सूरज-चाँद तारे थे।

सरकारी सूत्र के अनुसार—इस कल्पना को मूर्त रूप दिया श्रीमती भीकाबाई कामा ने। उन दिनों वे फ्रांस में अपना निर्वासित जीवनयापन कर रही थी। उनकी योजनानुसार ध्वज में तीन रङ्गों को स्थान दिया गया था। आरम्भ में केसरिया मध्य में श्वेत तथा अन्त में हरे रङ्ग की व्यवस्था की गयी थी। केसरिया भाग में आठ तारे,

श्वेत में नागरी लिपि में वन्दे मातरम् और हरे भाग में चाँद-सूरज अंकित थे। ये रङ्ग हिन्दू-मुस्लिम तथा शेष वर्गों और जातियों के प्रतीक थे। यह ध्वज सर्व प्रथम स्टुटगार्ट में फहराया गया था। कुछ लोगों का विचार है कि तारों की जगह कमल थे।"

मैडम कामा का मूल ध्वज लिए एक चित्र जो कि प्रसिद्ध क्रातिकारी श्री श्याम कृष्ण वर्मा के पेरिस स्थित दफ्तर में था, वह श्री इन्दुलाल याज्ञिक को प्राप्त हुआ। वे सन् १९३० में भारत ले आये और मराठी साहित्य के विद्वान श्री गजानन विश्वनाथ केतकर को दिया। केतकर जी ने उसका तैलचित्र बनवाकर शिवाजी के मंदिर में बहाँ वन्दे मातरम् गीत खुदा हुआ है, लगाया। मूल चित्र केसरी कार्यालय, पूना में सुरक्षित है जिसकी प्रतिलिपि इस स्मारिका के ३९ वे पृष्ठ पर प्रकाशित है।

मैडम कामा के मूल चित्र में सफेद रङ्ग नहीं था। सबसे ऊपर हरा रंग है जिसमें सात तारे (या कमल भी माना जा सकता है) अंकित है। बीच में पीले रंग पर 'वन्दे मातरं' (वन्दे मातरम् नहीं) शब्द अंकित है। सबसे नीचे लाल रंग पर एक ओर सूरज दूसरी ओर चाँद बनाया गया है।

इन तीनों आलेखों से स्वभावतः भ्रम हो जाता है कि वास्तव में हमारे राष्ट्रीय ध्वज का ऐतिहासिक रूप क्या था। इस स्मारिका में पृष्ठ ४० पर प्रकाशित दो झण्डों की अनुकृति प्रकाशित है। एक में आठ कमल है और दूसरे में एक कमल सात तारे हैं। आठ कमलवाले के बारे में बताया गया है कि १७ अगस्त १९०६ में बनाया गया था और सात तारे तथा एक कमल वाले को १८ अक्टूबर १९०७ में बनाया गया था, जिक्र है।

किन्तु मैडम कामा के झण्डे में आठ नही, सात तारे हैं। मेरी राय में यह भ्रम सरकारी सूत्रों के आधार पर ही हुआ है। कारण इन झण्डों में 'वन्दे मातरम्' शब्द देवनागरी लिपि मे शुद्ध ढंग से लिखा गया है जबकि मैडम कामा के मूल झण्डे में 'वन्दे मातरं' हाथ से लिखा गया है। इससे स्पष्ट है कि ओझा जी द्वारा प्रेषित झण्डे बाद में बनाये गये हैं असली ध्वज केसरी कार्यालय वाला ही है। बाद में झण्डे में परिवर्तन किये गये हैं। यह मेरा निश्चित मत है। वह इसलिए कि झण्डे की कल्पना एक बंगाली ने की और मूर्त रूप पारसी महिला ने दिया और वह भी हाथ से लिखकर। लिहाजा उनके हिज्जे में गलती होना सम्भव था। जब यह समाचार भारत आया होगा तब वहाँ के लोगों ने अपनी कल्पना के अनुसार बनाया जिसमें वन्दे मातरम् शुद्ध रूप मे और बढ़िया लिपि में लिखा गया। ओझा जी के कथनानुसार मैडम कामा ने १८ अक्टूबर १९०७ को झण्डा फहराया था जबकि इतिहासकारों के मत से १८ अगस्त १९०७ का उल्लेख प्राप्य है। श्री नगेन्द्रनाथ गुप्त और श्री आर० के प्रभु की पुस्तक 'वन्दे मातरम्' में भी हमें यही प्रमाण मिलता है। इससे स्पष्ट है कि हमारे राष्ट्रीय ध्वज की कल्पना श्री हेमचन्द्र कानूनगो की रही जिसे मूर्त रूप दिया था—मैडम भीकाबाई कामा ने। बाद में कई बार परिवर्तन होने के कारण यह भ्रम उत्पन्न हो गया।

सरकारी सूत्रों के अनुसार—सन् १९१६ मे होमरूल आन्दोलन ने एक नये राष्ट्र ध्वज को जन्म दिया। तीन रंग के स्थान पर दो रंग तथा चौड़ी पट्टियो के स्थान पर सकरी पट्टियाँ बनायी गयीं। पांच लाल तथा चार हरी पट्टियाँ क्रम से रखी गयी। बायीं ओर ऊपर एक किनारे छोटा सा यूनियन जैक तथा नीचे सप्तऋषि मण्डल के सात तारे अंकित थे। यूनियन जैक सहित यह ध्वज ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल से भविष्य मे सम्बन्ध बनाये रखने का द्योतक था। होमरूल आन्दोलन के साथ ही यह झण्डा समाप्त हो गया।

१९२० ई० में गांधीजी के नेतृत्व में कांग्रेस के सिद्धान्तों और भावनाओं में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। उस समय राष्ट्रीय झण्डे की आवश्यकता महसूस होने पर अनेक डिजाइनें बनी। पंजाब के वयोवृद्ध कांग्रेसी नेता रायजादा

(शेष पृष्ठ १२८ पर)

बंगभंग आन्दोलन के माहौल में

—श्रीमती पुण्यलता चक्रवर्त्ती—

अचानक जैसे सूखी नदी में बाढ आ गयी।

संपूर्ण देश वासियों की इच्छा के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार ने बंगाल को दो भागो में बांटने का निश्चय कर लिया। अवसादग्रस्त बंगाली जैसे चाबुक की मार से सचेतन हो उठा। पूरे प्रदेश में भीषण विक्षोभ और तुमुल उत्तेजना बिजली की तरह फैल गयी। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में रक्त का उबाल आ गया। धनी, दरिद्र, प्रत्येक जाति के लोगों ने यह निश्चय किया कि मानचित्र में भले ही बंगाल के दो टुकड़े हो जायँ, पर वे मन और हृदय से एक बने रहेंगे।

देश के नेताओ ने ज्वालामयी भाषा में जनता को उद्‌बुद्ध करना प्रारंभ किया। राष्ट्रीय गीतों से कलकत्ता का कण-कण गूंजने लगा। ये गीत शहर से गाँवो तक फैलने लगे। कोटि कोटि कण्ठो से ये गीत गली-गली, पनघट, नदी के किनारे और अमराई तक मुखरित हो उठे।

राष्ट्रीयता की यह वन्या अन्तःपुर तक जा पहुँची। प्रत्येक मुहल्ले मे महिलाओं की गोष्ठी होने लगी। जो महिलाएँ कभी घर से बाहर कदम नहीं रखती थीं, वह घर के बाहर का हालचाल नही जानती थी, टोले-मुहल्लेवालों से अपरिचित रहीं, ऐसी महिलाएँ भी बंग भंग आन्दोलन के तूफानी कार्यक्रमों मे भाग लेने के लिए सभाओं में आने लगी। वे आर्थिक सहायता तो नहीं कर पा रही थीं, पर अपने बदन के तमाम जेवर खोलकर दान देने लगी।

हम लोगों के मुहल्ले में ग्रीयर पार्क में (बाद में महिला पार्क नाम हुआ) जन सभाएँ होती। पास ही ब्राह्म बालिका शिक्षालय में सैकड़ो पर्दानशीन महिलाओं की भीड़ होती—सुरेन्द्रनाथ और विपिनचन्द्र पाल के भाषण सुनने के लिए।

आश्विन का महीना।

बंग-भंग का दिन और वह दिन बंगालियो के निकट एकता और मिलन का दिन था। सबेरा होते ही घर-घर से लोग निकले 'राखी बन्धन' मनाने के लिए चल दिये। वन्दे मातरम् की ध्वनि से सारा आकाश कम्पायमान हो उठा। कलकत्ते की गलियो में लोग गाने लगे—

बांगलार माटि
बांगलार जल
सोनार बांगला

इस अवसर पर रवि बाबू ने एक दो नही, कई गीत जनता को दिये।

डान हाते तोर खड्ग ज्वले,
बां हाथे करे शंका हरण।
दुई नयने स्नेहेर हासी,
ललाट - नेत्र आगुन वरण॥

आपका दूसरा गीत—

ओदेर बाँधन यतइ शक्त हबे
ततइ बाँधन टुटबे
मोदेर ततई बाँधन टुटबे
ओदेर यतइ आँखि रक्त हबे
मोदेर आँखि फुटबे
ततई मोदेर आँखि फूटबे।

× × ×

आमरा मिलेछि आज मायेर डाके
घरेर हये परेर मतन।
भाई छेड़े भाई क दिन थाके।

इन प्रार्थनाओं को लेकर बंगाल के सभी बहनें भाइयों को राखी बाँधने लगी। उस दिन अरँधन व्रत था—लोग उपवास करते रहे। तीसरे पहर अपर सरकूलर रोड पर एक विराट जनसभा हुई जहाँ अखण्ड बंग भवन का शिलान्यास हुआ। यही लोगों ने शपथ ली कि देश के लिए मंगल-साधना

करेंगे और विदेशी सामग्रियों का वहिष्कार करेंगे। मनोनीत सभापति श्री आनन्द मोहन बसु के अचानक अस्वस्थ हो गये, फिर भी वे सभा में भाग लेने के लिए व्याकुल हो उठे तब उन्हें आराम कुर्सी पर लेटाकर सभास्थल में ले आया गया। उनके लिखित भाषण को अन्य एक सज्जन ने पढकर सुनाया। पास ही ब्राह्म बालिका विद्यालय मे महिलाओं के लिए बैठने का इन्तजाम किया गया था। वहाँ की छत, बरामदा, कमरा, आंगन आदि इस तरह भर गये थे कि तिल रखने का स्थान नहीं था। हर श्रेणी की महिलाएँ आयी थी।

इसके बाद प्रारम्भ हुआ—स्वदेशी आन्दोलन। इस आन्दोलन में महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। पुनः चरखों पर वही 'बिन-बिन-बिन' स्वर सुनाई देने लगे—

चरका आमार भातार पूत
चरका आमार नाति
चरकार दौलते आमार
दुआरे बाँधी हाथी।

धर-घर में औरतें चरखे पर तागा तैयार करने लगी। इस तागे से बने कपड़ों को सिर्फ वही नही, घर के पुरुष भी पहनने लगे।

विलायती कपड़ों का मोह छोड़कर 'माँ के दिये वस्त्र' पहनने लगे। घर में प्रयोग आने वाली उन तमाम चीजों का वहिष्कार किया गया जो विदेशी थी। अधिकांश महिलाएँ खाली समय में अधिक सूत तैयारकर बाजार में बेचने लगी और उससे जो आमदनी हुई, उसका उपयोग देश-कार्य में लगाने लगी।

मैं व्यक्तिगत रूप से एक ऐसी महिला को अच्छी तरह जानती हूँ जो पूर्वी बंगाल के एक जमीदार की पत्नी थी। वे अपने यहाँ से इस्पात की छूरी, कैंची, हंसुआ और साड़ी मँगवाकर बाकायदा दुकान खोलकर बेचती रही। उससे उन्हे जो लाभ हुआ, उक्त रकम उन्होंने देश कार्य के लिए दान में दे दिया था। मेरा निजो विश्वास है कि इस आन्दोलन में महिलाएँ सहयोग न देती तो यह आन्दोलन इतना सफल न होता।

अगले वर्ष (सन् १९०६) कलकत्ता में कांग्रेस अधिवेशन हुआ। इस उपलक्ष्य में बड़ोदा महारानी के नेतृत्व में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। बेथुन कालेज मे यह सम्मेलन हुआ था।

उन दिनों मैं इस सम्मेलन की वालेण्टियर थी। भारत के प्रतेक प्रान्त से महिलाएं इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए आयी थी। विचित्र थी उनकी वेष भूषा और अद्भुत भाषा। लेकिन सभी भारतीय नारी थी। इनके बीच काम करने मे मुझे अपार आनन्द मिलता रहा। लेकिन भाषा की कठिनाई के कारण काफी मुसीबत उठानी पड़ रही थी। जो महिलाएं अंग्रेजी जानती थीं या जो हिन्दी जानती थीं, उनसे टूटे-फूटे शब्दों मे मतलब की बात कर लेती रही। परन्तु जो महिलएं सुदूर पश्चिम या दक्षिण से आयी थीं, उनसे केवल इशारे से बातचीत कर पाती थी।

इस सम्मेलन से एक लाभ यह हुआ कि महिलाओं में तेजी से देशी वस्त्रों को प्रयोग बढ़ा और उनके मानस में बसी छुई-मुई भाव दूर हो गया। वे शान से चारों ओर पुरुषों की तरह इन्तजाम देखती रहीं। इस आन्दोलन में महिलाओं की प्रगति देखकर यह समझते देर नही लगी कि बहुत जल्द बंगालियों में पर्दा प्रथा का अन्त हो जायगा।

उन दिनों हम बंगाली महिलाओं की पोशाक में विदेशी छाप थी। इस आन्दोलन के कारण हम लोगों ने एक साथ तिलांजलि दे दी। विलायती ढंग के जेवरों का यह कह कर परित्याग कर दिया कि 'प्राचीन ढंग' के हैं। यहाँ तक कि हम लोगों की ईसाई सखियाँ भी हम लोगों का अनुकरण करने लगी। गाउन आदि गायब हो गये।

हम गरीब तथा निराश्रित महिलाओं को काम सिखाकर स्वावलम्बी बनाने का प्रयत्न करने लगे। जो महिलाएँ डाक्टर थीं, वे शिशु और महिलाओं की चिकित्सा मुफ्त में करने लगीं। जो महिलाएँ वकील थी, वे महिलाओं को कानूनी-सेवा देने लगीं। इस मौके का लाभ अनेक बदमाशों ने उठाया। न जाने कितनी महिलाएँ ठगी का शिकार हुईं।

प्रथम महिला बैरिस्टर कुमारी कर्नेलिया सोहराब जी प्रदर्शनी के स्टाल मे जलपान गृह के पास आयीं। वहाँ तरह-तरह के बंगाली जलपान सजाकर रखे गये थे। मैं

अपनी भाभी के साथ वही खड़ी थी कुमारी मोहरावजी ने मुझसे कहा- कृपया आप लोग अगर इस स्टाल की देखभाल करें तो अच्छा हो।

सन् १८८५ ई० मे जब कांग्रेस की स्थापना हुई, उसके चार वर्ष बाद से महिलाओं की सेवा ली जाने लगी। इन महिलाओ में बंगाल की दो स्वनामधन्य महिलाएँ सक्रिय रूप से सहयोग देती रहीं। श्रीमती स्वर्ण कुमारी देवी तथा कादम्बिनी गंगोपाध्याय। ये दोनो महिलाएँ कांग्रेस में रहकर महिलाओं के हित के लिए बराबर संघर्ष करती रही। स्वर्ण कुमारी देवी की पुत्री श्रीमती सरला देवी भी एक सशक्त कार्यकर्ता थीं। वे कांग्रेस के अधिकांश अधिवेशनों में राष्ट्रीय कविताओं का गायन करती रही।

बंग भंग आन्दोलन हमारे देश के लिए एक वरदान के रूप मे उभरकर आया। अगर यह आन्दोलन प्रारंभ न होता तो भारत के कोने-कोने मे राष्ट्रीयता की चेतना उत्पन्न न होती और न वन्दे मातरम् गीत के पीछे हमारे श्रद्धेय क्रान्तिकारी भाई अपना जीवन होम करते।

छात्र जीवन समाप्त करने के बाद विवाह हुआ और फिर मैं बिहार चली आयी, पर बंग-भंग आन्दोलन की स्मृतियाँ आज भी ताजी हैं।



(पृष्ठ १२५ का शेषांश)

श्री हंसराज ने सुझाव दिया कि राष्ट्रीय ध्वज में चर्खा अंकित किया जाय। यह प्रस्ताव गांधी को प्रिय लगा। बेजवाड़ा कांग्रेस के अवसर पर बापू ने मछलीपट्टम के श्री वैंकय्या से एक डिजाइन बनाने को कहा। जिसमें लाल-हरे के बगल में चर्खा अंकित हो। पर इस ध्वज में सफेद रंग न होने से वह कांग्रेस में मान्य नही हुआ। आगे चलकर सन् १९२१ में सफेद रंग को झण्डे में स्थान दिया गया जो अहमदाबाद कांग्रेस में फहराया गया। इस कांग्रेस में सिक्खों ने प्रस्तुत झण्डे का विरोध किया। उनका कहना था कि झण्डे में काला रंग भी होना चाहिए। महात्मा गांधी ने उन्हें समुचित उत्तर देकर शान्त किया। सन् १९३१ तक झण्डे का यही रूप रहा।

सन् १९३१ में कांग्रेस में सिक्खों ने पुनः अपनी मांग दुहरायी। स्मरण रहे कि सन् १९३१ का वर्ष राष्ट्रीय झण्डे के इतिहास में विशेष महत्व रखता है। इस समय लाल रंग के स्थान पर केसरिया रंग को स्थान दिया गया। बीच में सफेद रखकर चर्खे का आकार छोटा कर दिया गया।

सन् १९३३ में अखिल भारतीय कांग्रेस जो कि बम्बई में हुआ था, उसमें इस आशय का प्रस्ताव पास किया—राष्ट्रीय ध्वज में पूर्व की भांति तीन रंग रहेंगे। आरंभ में केसरिया, मध्य में श्वेत और अन्त में हरा। श्वेत रंग के मध्य में नीले रंग का चर्खा अंकित रहेगा। केसरिया साहस तथा त्याग, श्वेत रंग शान्ति और सत्य, हरा रंग विश्वास एवं शौर्य, चर्खा जनता की आशा का प्रतीक है। ध्वज का अनुपात ३:२ होगा।

२२ जुलाई १९४७ ई० के प्रस्ताव के अनुसार वर्त्तमान ध्वज में रंग क्रम सब वही रहेगा, पर चर्खे के स्थान पर चक्र रहेगा। चक्र की २४ तीलियाँ दिन रात के २४ घण्टे का सक्रिय प्रतीक है। अब चर्खे वाला ध्वज मान्य नही होगा।

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम् स्मारिका

खण्ड—२



वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम् ।
सुजलां सुफला मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलां मातरम् ।
शुभ्रज्योत्स्नां पुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम् ।
त्रिंशकोटि कंठ कलकल निनाद कराले
द्विंत्रिंशकोटि भुजैर्धृतखरकरवाले
के बोले मा तुमि अबले
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणी मातरम् ।
तुमि विद्या तुमि धर्म
तुमि हृदि, तुमि मर्म
त्वं हि प्राणाः शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति
हृदये तुमि मा भक्ति
तोमारई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे ।

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणीं
कमला कमलदलविहारिणीं
वाणीविद्यादायिनी नमामि त्वां
नमामि कमलां अमलां अतुलां
सुजलां सुफलां मातरम्
वन्दे मातरम् ।

श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम
धरणीं भरणी मातरम् ।

वन्दे मातरम् ।

[सन् १९३७ में संशोधित रूप]



अमर गीत के रचयिता

बंकिम चन्द्र चटर्जी

(१८३८—१८९४)

— श्री अ० ल० गाडगिल —

बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय का जन्म कलकत्ता से पचीस मील दूर स्थित चौबीस परगना के 'काटाल पाडा' ग्राम में हुआ था। इनके पूर्वज हुगली जिले के निवासी थे पर नाना की सम्पत्ति प्राप्त कर बंकिम का परिवार काँटाल पाड़ा आ-या था।

बंकिम चन्द्र का जन्म २६ जून १८३८ को हुआ, उनके पिता मेदिनीपुर (पश्चिम बंगाल) जिले के डिप्टी कलेक्टर थे। वे जिस वर्ष नौकरी से निवृत्त हुए उसी साल बंकिम का जन्म हुआ। वह समय वंगभूमि के लिए बडा सौभाग्यशाली था। परमहंस श्री रामकृष्ण का जन्म इससे दो वर्ष पूर्व हुआ था, और केशव चन्द्र ने इसी वर्ष जन्म लिया था।

बंकिम चन्द्र की आरम्भिक शिक्षा कांटाल पाडा मे ही हुई। शिक्षा का श्रीगणेश पाँच वर्ष की अवस्था मे हुआ और कुछ ही दिनों मे कुशाग्र बुद्धि बालक ने बंगला के सभी वर्णाक्षर याद कर लिये। पिता अंग्रेजी शिक्षा के समर्थक थे अतः कुछ बडे होने पर उनकी अंग्रेजी शिक्षा शुरू हुई, साथ ही उसी समय वे संस्कृत भी पढ़ने लगे। ईश्वर गुप्त उनके साहित्य शिक्षक थे। बंकिमने इनकी चर्चा 'विशुद्ध बंग चित्त' कह कर की है। ये तत्कालीन बंग भाषा के प्रसिद्ध कवि और साहित्यिक थे। बंकिमने इनकी कविताएँ कंठस्थ कर ली थी। जिस समय पश्चिमी सुधारों की बाढ़ में देश डूब रहा था उस समय ईश्वर गुप्तने बंगालमें प्रखर राष्ट्रवादी विचारधारा की स्थापना की। स्वयं बंकिम चन्द्र ने ईश्वर गुप्त का ऋण स्वीकार किया है। १८४९ से १८५७ तक हुगली कालेज से बंकिम ने उच्च श्रेणी मे पास होकर कालेज की शिक्षा पूर्ण की। प्रथम स्वातन्त्र्य सग्राम के वर्ष बंकिम ने कलकत्ता के हिंदू कालेज (प्रेसिडेंसी कालेज) मे प्रवेश लिया। इसी वर्ष कलकत्ता विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। वे इसी वर्ष 'बी. ए.' पास हो गये और शिक्षा की यह अल्प अवधि उनकी कुशाग्रबुद्धि का प्रमाण है।

एक वर्ष के अन्दर ही उन्हे सरकारी नौकरी मिली और वे डिप्टी मैजिस्ट्रेट नियुक्त हुए। जैसोर मे उन्होने कार्यभार सँभाला। इसके बाद उन्होने डिप्टी कलेक्टर तथा अन्य बड़े पदोंपर काम किया। काम मे कुशल वे निस्पृह सरकारी अधिकारी थे। उनके बाबत एक घटना सुनने लायक है।

एक बार एक अग्रेज मिलमालिक बहुत उन्मत होकर दुष्टाचरण करने लगा। पुलिस मे उसे पकडने का साहस नही था, क्यों कि वह सदा भरी हुई पिस्तौल लिये घूमता था। बंकिमचन्द्र ने स्थिति को समझा। डिप्टी मैजिस्ट्रेट के अधिकार का उप-योग करते हुए उन्होंने उस अंग्रेज को बन्दी किया। उस युग मे नील कारखाने के मालिक अंग्रेज गरीब मजदूरो के लिए भगवान सदृश थे। वे कैसा भी अत्याचार करें पर मजदूरों की भक्ति अडिग थी। परन्तु बंकिम चन्द्र के इस दृढ़ कदम से उन्हे भय

लगने लगा। सुन्दरवन के लुटेरों और ठगों पर भी उन्होने कठोर कारवाई करके धाक जमा ली। यह कठोर अधिकारी काम के मामलेमें शेर था! इस कारण उसका भययुक्त आदर था। उनके वरिष्ठ अधिकारी भी उनसे डरते थे।

उनके पारिवारिक और निजी जीवन की बाबत विशेष जानकारी उपलब्ध नही है। लेकिन बालपन के कुछ संस्मरण सुने जाते है जिनसे किशोरावस्था के स्वभाव का पता चलता है। सीढी चढने से वे डरते थे। घुडसवारी या तैराकी की तो बात ही क्या, बैल को देखकर वे भय से काँप उठते थे। पर यह तरुण सशस्त्र सैनिको का सामना करने को हरदम तत्पर रहता था। बाढ मे नौका-यात्रा उनको प्रिय थी।

आधुनिक बंगला भाषा के आद्यशिल्पी के रूप मे बकिम का नाम लिया जाता है। बगला साहित्य मे 'दत्त-बंकिम युग' को एक अलग साहित्यिक युग माना जाता है। 'दत्त' थे बंगला के श्रेष्ठ कवि माइकेल मधुसूदन दत्त। बंकिम चन्द्र ने अपना लेखन अंग्रेजी भाषा में आरम्भ किया। "राजमोहन्स वाइफ" और "एडवेचर्स ऑफ ए यंग हिन्दू" उनकी दो प्रारम्भिक पुस्तके हैं। किन्तु शीघ्र ही उन्होने अंग्रेजी त्यागकर अपनी मातृभाषा बंगाली मे लिखना आरम्भ किया। इसे ही बंगला साहित्य का प्रभातकाल माना जाता है। बकिम ने अपने साहित्यिक जीवन का आरम्भ काव्य लेखन से किया पर उन्हे ख्याति मिली गद्य लेखन से। श्री अरविन्द ने बकिम बाबू के गद्य का हृदयग्राही वर्णन करते हुए उसे 'गद्य मे प्रगट अभूतपूर्व मधुर वाणी' कहा है।

उनकी भाषा सहज, सुबोध, हृदयस्पर्शी और सहज है! कल्पनाचातुर्य के साथ ही मार्मिक और गहरा विनोद भी उनके लेखन मे भरपूर मिलता है। असम्भव की कल्पना के बदले व्यावहारिक चरित्र चित्रण के कारण पाठक पात्रो से समरसता अनुभव करता है। विवेकपूर्ण स्वाभिमान जागृत करने वाली वाणी उनकी लेखनी का प्रसाद है।

संस्कृत भाषा मे उनकी पैठ, प्रौढ़ता और सहज सौदर्य तथा बगाली देशी भाषा के जोश और हृदयस्पर्शी गुणोका बकिम के साहित्य मे सुन्दर समन्वय है। श्री अरविन्द कहते है उनकी "कपाल कुण्डला" "विषवृक्ष" और "कमलाकातेर दफ्तर" प्रभृति उनके उपन्यासों को आगे चलकर आलोचक 'अभिजात कलाकृति' कहकर उसे मान्यता प्रदान करेंगे किन्तु 'देवी चौधुरानी', 'आनन्दमठ', 'कृष्ण चरित' और 'धर्मतत्व' की प्रशसा करते आलोचको की लेखनी कभी-कभी थकेगी नही। सच कहे तो 'आधुनिक भारत के निर्माता' का स्थान बकिम चन्द्र को उनके इन्ही बाद के ग्रन्थो को दिलाया है। आरंभ मे बकिम ने सृजनशील उत्कृष्ट साहित्य का निर्माण एक कवि और शैलीदार साहित्यिक के रूप में किया, परंतु इसके बाद बकिम द्रष्टा और राष्ट्र निर्माता के रूप मे जाने जाते हैं... ।'

'दुर्गेश नन्दिनी' बकिम चन्द्र का पहला उपन्यास था, उसके बाद 'कपाल कुडला', 'मृणालिनी' और 'विपवृक्ष' उपन्यास लिखे। इनके अलावा उनके सात और उपन्यास प्रसिद्ध हैं—रजना, चन्द्रशेखर, देवी चौधुरानी, राजसिह, सीता राम, कमालाकान्तेर दफ्तर और आनन्द मठ। इनमे से अनेक उप-

न्यास बंग दर्शन में धारावाहिक रूप मे प्रकाशित हुए।

'बंग दर्शन' मासिक (१८७२) मे बकिम ने बहुत लिखा है। इसमें उनके सामाजिक, राजनीतिक वाङ्मयी लेख और आलोचनाएं प्रकाशित हुई है। साथ ही इतिहास, तत्व ज्ञान, सगीत जैसे विषयों की भी उन्होंने इस मासिक में चर्चा की है।

साहित्य क्षेत्र में बंकिम के दो घनिष्ट और प्रिय साथियों के नाम लेना आवश्यक है। वे है दीनबन्धु मित्र और भूदेवचन्द्र मुखोपाध्याय। इनमें दीनबन्धु हास्य लेखक और नाटककार थे, और भूदेवचन्द्र निबन्धकार और उपन्यासकार के रूप मे प्रसिद्ध हैं। दीनबन्धु का नाटक 'नील दर्पण' तत्कालीन अग्रेजों के नील के कारखानो के अत्याचारों की कहानी प्रकाश में लाता है, भूदेवजी के सामाजिक सुधार प्रेरक जागृतिकारक 'सामाजिक प्रबन्ध' बहुत प्रसिद्ध हुए।

'कृष्ण चरित' और 'धर्म तत्व' बंकिम बाबू की दो अन्तिम कृतियाँ है। इनमें 'कृष्ण चरित' में उन्होने जिस कृष्ण का चित्रण किया है वे देवता नही है बल्कि महा मानव हैं। 'धर्म तत्व' मे कर्मयोग के तत्वो और 'कृष्ण चरित' मे 'कर्मयोग' के आचरण का सर्वांगीण दर्शन है।

बंगाल उनके बंग साहित्य के प्रति कृतज्ञ है इसमें आश्चर्य क्या है। उनकी बंग भाषा की भक्ति और साहित्य साधना को मान्यता प्रदान करते हुए कलकत्ता विश्वविद्यालय ने सिनेट गृह के सामने उनकी प्रतिमा स्थापित की है। हिन्दुस्तान के अन्य प्रातो मे भी उनकी याद मे स्मारक स्थापित हुए है। २६ जून १९३८ को इन राष्ट्रीय मन्त्र प्रणेता की जन्म शताब्दी देशभर में बड़े उत्साह से मनायी गयी थी।

सन् १८९४ की ८ अप्रैल को इस महान् मन्त्रद्रष्टा का निधन हो गया।

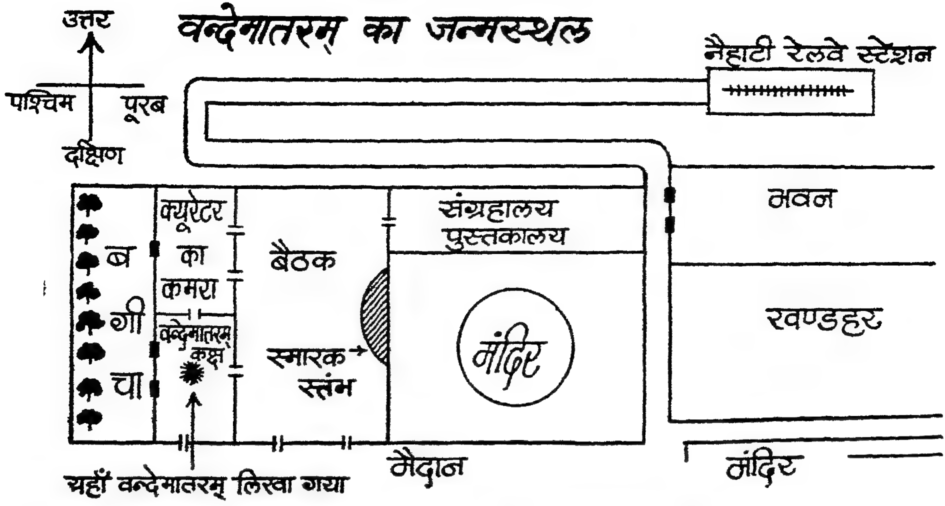
(अनु–श्री भानु मेहता)



वरदायिनी माँ

जीवन के लिये सर्वाधिक आवश्यक चीजे है वायु, जल, आहार, फल, फूल, शाक-सब्जी और अन्न, माँ हमें यह सब प्रदान करती हैं— सुजलां (जल) सुफलां (फल), मलयज शीतलां (हवा), शस्य श्यामलां (अन्न), फुल्ल कुसमित (मन प्रसन्न करने वाले फूल)—द्रुमदल शोभिनीम (हरी साग सब्जी), इन सबको प्राप्त कर संतान तुष्ट होती है और तुष्ट संतान को देखकर माँ विहँसती है—(सुहासिनीं); वह बच्चों से प्यार की बातें कहती है—(सुमधुर भाषिणीम्); वह अपने बच्चों को अपने अंक में लेकर दुलारती है जिससे वे सुखी होते हैं—(सुखदां), अंक में सुख से खेलते शिशु को माँ हजार-हजार आशीश देती है—(वरदां), ऐसी स्नेहमयी जननी को प्रणाम—वन्देमातरम्।

—: ● :—



वन्दे मातरम् की जन्मभूमि

— श्री बिश्वनाथ मुखर्जी —

कलकत्ता के सियालदह स्टेशन से ३८ किलोमीटर दूर है नैहाटी जंकशन ! स्टेशन के उस पार कांटाल पाड़ा ग्राम है। स्टेशन से उतरकर कुछ दूर आगे बढ़ने पर बायें हाथ रेलवे पुल पार करते ही सामने ऋषि बंकिम चन्द्र जी की वाडी (घर) दिखाई देती है। रेलवे लाइन के समीप वाले भाग



मे वंकिम वावू के परिवार के लोग रहते है। भीतर पूरा भवन खण्डहर हो गया है। आज से दो सौ वर्ष पूर्व यह भवन राजमहल की तरह बृहद् था। आज कल इस भवन के बड़े हाल मे एक स्कूल चलता है।

सन् १९२८ ई० मे वंकिम चन्द्र की जन्म शताव्दी के अवसर पर वग दर्शन प्रेस और वन्दे-मातरम् प्रसूतिगृह को राष्ट्रीय स्मारक बनाने का प्रस्ताव हुआ था, पर एक लम्वे अर्से तक वह यों ही उपेक्षित पडा रहा। सन् १९५४ मे डा० विधान-चन्द्र राय के प्रयत्न से उक्त कक्ष को 'बकिम स्मृति मदिर' का रूप दिया गया। इस कक्ष मे बकिम वावू से सम्वन्धित कुछ सामग्रियाँ संग्रहीत है।

इस भवन के पश्चिमी कक्ष में वैठकर महान् राष्ट्रीय गीत लिखा गया था। वाहर वाली वैठक मे वकिम वावू तथा उनके परिवार के कुछ लोगों के चित्र टँगे है। आलमारी में उनकी पगडी, शाल, लैंप कुछ पाण्डुलिपियाँ तथा निजी पुस्तकें रखी हैं।,

इसी वैठक के पूर्व भाग में एक सगमरमर के शिला स्तम्भ पर मध्य भाग मे ताम्रपट्ट पर 'वन्दे-मातरम्' गीत अंकित है। इस स्तम्भ पर दो शिल्प है। एक ताम्र पट्टिका के ऊपर है जो वन्दे मातरम् से आंदोलित राष्ट्र का प्रतीक है, असंख्य जल लह-रियो के रूप में, नीचे के शिल्प में देश भक्तो का समूह राष्ट्रगान गा रहा है। इन लोगों के हाथ मे तूती, शंख आदि परम्परागत भारतीय वाद्य है। यह राष्ट्र का पवित्रतम स्मारक है जिसे भारत सरकार ने इस कक्ष को बंकिम स्मृति मदिर का रूप देते समय लगवाया था।



वन्देमातरम् स्मारक स्तम्भ



अमर गीत का संवाहक ग्रंथ

आनन्द मठ की कहानी

— श्री अ० ल० गाडगिल —

नाम—आनन्द मठ।

लेखक—बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय।

भाषा—बगाली।

लेखनकाल—सन् १८८०।

प्रकाशन—बंग दर्शन मासिक में सन् १८८० मे आरम्भ करके सन् १८८२ के ज्येष्ठ मास तक धारावाहिक रूप में छपा।

आवृत्ति—पुस्तक रूप मे पहला सस्करण सन् १८८२ मे छपा। इसके बाद १८९४ तक लेखक के जीवनकाल में इसके पाँच संस्करण हुए। लेखक द्वारा संशोधित पाँचवा संस्करण ही अतिम है। यह उल्लेख करने का कारण यह कि प्रत्येक आवृत्ति मे उन्होंने कुछ न कुछ फेर बदल अवश्य किया। इस समय पाँचवा सस्करण ही उपलब्ध है। पहले सस्करण की उपक्रमणिका का एक, प्रथम खंडके पच्चीस और दूसरे खण्ड के बीस, इस प्रकार ४६ परिच्छेद १९१ पृष्ठों मे पूरे हुए थे। पाँचवी आवृत्ति की उपक्रमणिका का एक, प्रथम खण्ड के अट्ठारह, द्वितीय खण्ड के बारह तृतीय खण्ड के आठ, चतुर्थ खण्ड के आठ इस प्रकार ४७ परिच्छेद २०० पृष्ठों में पूर्ण हुए है।

बग भंग के विरुद्ध हुए राष्ट्रीय सघर्ष काल मे आनन्दमठ के अनेक संस्करण निकले पर ब्रिटिश सरकारने इसे जब्त कर लिया था। इस कारण प्रगट संस्करण निकलने बन्द रहे और गुप्त रूप से प्रकाशन होना रहा। बग भंग के विरुद्ध हो रहे आदोलन की समाप्ति के कुछ समय बाद जब्ती का आदेश उठाया गया। परन्तु १९३० में कानून तोडो आदोलन के दौरान सरकार ने इसे पुन: जब्त कर लिया। इसके बाद सन् १९३७ मे जब स्वदेशी मन्त्रि मण्डल बने तो बन्दी उठा ली गयी।

अनुवाद—वन्दे मातरम् के मराठी भाषा मे अनेक अनुवाद हो चुके है। १८९७-९८ में बड़ौदा शिवराम गोविन्द फालके ने अनुवाद किया जो शायद प्रथम था। वाई से प्रकाशित 'कादम्बरी कल्पद्रुम' मासिक मे बंकिम चन्द्र के अनेक ग्रन्थों के मराठी अनुवाद क्रमश: प्रकाशित हुए और इनमे आनन्दमठ भी था। यह कार्य भावे और चितले ने किया। सन् १९२३ मे वासुदेव आप्टे ने 'भारत गौरव ग्रन्थमाला' में अनुवाद प्रस्तुत किया। 'सम्पूर्ण बंकिम चन्द्र' के तीन खण्डों मे से दूसरे मे कपाल कुंडला आदि उपन्यासों के साथ ही 'आनन्द मठ' भी है। इसी बीच

कुलकर्णी ने भी एक अनुवाद किया था। संक्षिप्त अनुवाद का पहला संस्करण मई १९५५ मे मामा वरेरकर ने किया था। इस समय किसी भी अनुवाद की प्रति उपलब्ध नही है।

अंग्रेजी अनुवाद—सन् १९०६ मे 'एवे आफब्लिस' के नाम से श्री नरेशचन्द्र सेन गुप्ता ने अंग्रेजी मे रूपान्तर किया।

अन्य भारती भाषाओं मे अनुवाद हुए है। आनन्द मठ में वर्णित 'वन्देमातरम्' गीत के अंग्रेजी गद्य तथा पद्य अनुवाद श्री अरविन्द ने उसी काल मे किये थे। तामिष भाषा राष्ट्र कवि श्री सुभ्रमण्यम भारती (१८८२-१९२१) ने वन्दे मातरम् नाम से जो काव्य लिखा उसका प्रथम चरण इस प्रकार है "वन्दे मातरम् एनपों एंगला मानीय ताये वणगुतु एनपो।" इस जीत का मराठी पद्यानुवाद वाषिम के श्री ज. ग. करंदीकर ने किया है—'तुला वन्दु माते, तुझे गीत जाऊं।' यह "भारतीय राष्ट्र गीते" संग्रह (१९५२) में छपा है।

(अनु—श्री शंकर डोहकर)



त्रिमूर्ति वन्देमातरम्

मेरी माँ सृजन (ब्रह्मा), पालन (विष्णु), संहार (महेश) की त्रयी है। स्रष्ट्रा के रूप मे वह हमें जल, फल, वायु, आहार, विश्राम दायिनी ज्योत्सना भरी रातें और आनंद वर्धक पुष्प तथा हरितमा प्रदान करती हैं, नानाविध सुख देती है, वर देती है।

पालन कर्ती माँ ने हमे विद्या प्रदान की है, धर्म पथ दिखाया है, प्यार भरा हृदय दिया है, सुख-दुख के मर्म समझाये है, यही माँ सर्वदा हमारे शरीर मे प्राण बनकर हमें जीवनी शक्ति, प्रभु की भक्ति प्रदान करती है। जहाँ देखते है सर्वत्र माँ की ही छवि दिखाई देती है, वही दुर्गा बनकर दुर्गति से रक्षा करती है, वही कमला बनकर धन सम्पत्ति प्रदान करती है, वही वाणी रूप धारण कर ज्ञान विज्ञान सिखाती हैं; माँ की तुलना किससे करें, उसी से हमें आधार प्राप्त होता है वही धरणी है, वही भरणी है, उसी के सरल स्मित से सारे सुफल प्राप्त होते हैं।

माँ का एक संहारक रूप भी है। अपनी संतति पर जब-जब विपत्ति आती है तो माँ अपने कोटि-कोटि कंठ से हुंकारती, कोटि-कोटि हाथों में शस्त्र धारण कर, बहुबल वाली बनकर, रिपुदल का विनाश कर, विपत्ति सागर से तार देती है। ऐसी त्रिमूर्ति रूपिणी माँ की वंदना—वन्देमातरम्।

—:●:—

आनन्दमठ की पृष्ठ भूमि

—: श्री अमरेन्द्र लक्ष्मण गाडगिल :—

आनन्दमठ में जिस संघर्ष का वर्णन है वह ऐतिहासिक है और उसकी पृष्ठभूमि की जानकारी आवश्यक है।

इतिहास में 'सन्यासी विद्रोह' (सन् १७६२ से १७७४) प्रसिद्ध है और इसका क्षेत्र पूर्वी भारत था। ये सन्यासी कौन थे इस बाबत इतिहास मे पूरा वितरण उपलब्ध नही है। परन्तु वारेन हेस्टिंग्स् के पत्रों से ज्ञात होता है कि ये हिन्दू सन्यासी और मुस्लिम फकीर थे—'ये हिन्दुस्तान के यायावर लोग थे और हमले मे इनका उत्साह अतुलनीय था' (हेस्टिंग्स्)! 'हिन्दुस्तान मे सबसे अधिक दुर्दम्य और सबसे ज्यादा तेज लोग' कहकर सन्यासियो का वर्णन किया गया है। सरकारी कागजो मे इन लोगो के स्थान की बाबत उल्लेख करते हुए कहा है—'तिब्बत के दक्षिण भाग से काबुल तक, चीन तक फैला हुआ डोगरा प्रदेश इनका निवास स्थान था जो वास्तव मे बियाबान क्षेत्र है।'

इन सन्यासियों ने सन् १७६३ में संगठित होकर बंगाल स्थित बाकरगंजके आस-पास के क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था और ढाका की ईस्ट इण्डिया कोठी पर हमला किया। सन् १८६८ मे इन्होने बिहार मे सारन जिले मे अंग्रेजो से मोर्चा लिया। सन् १७७० में ये दिनाजपुर जिले मे घुस आये और ढाका तथा राजशाही जिलो को रौद डाला। अपना प्रभाव सर्वव्यापी बनाने के लिए उन्होने मारो और भाग जाओ की नीति अपनाई थी। सन् १७७२ में वे पूर्णियाँ, तिरहुत और दिनाजपुर मे लड रहे थे। रंगपुर में इन लोगो ने अंग्रेजी और नबाबी फौज को गहरी शिकस्त दी थी। सच तो यह है कि सन्यासी क्रांतिका अग्रणी कोई योग्य नेता नही था नही तो क्या देशमे ब्रिटिश शासन हो सकता था? पर उनका संघटन टिकाऊ नही था।

इसी सन्यासी विद्रोह की घटना का बंकिमचन्द्र ने अपने उपन्यास आनन्दमठ मे बडे उत्तम ढंग से सहारा लिया है। उनके आनन्दमठ मे 'सन्तान' ही वारेन हेस्टिंग्स् के उपद्रवी 'सन्यासी' थे। आनन्दमठ के विद्रोही और हेस्टिंग्स् के वर्णन में काफी समानता है। (देखे हेस्टिंग्स् का वक्तव्य)।

ये सन्यासी कौन थे इसकी विवेचना मामा वरेरकर ने अपने मराठी अनुवाद की प्रस्तावना मे की है। वे कहते हैं 'वास्तविक सन्यासी तो शैव होते हैं वैष्णव नही। बंगाल मे सर्वत्र वैरागी या गोसाई को सन्यासी या फकीर कहने की शुरूआत अंग्रेजों ने की और उनके सरकारी कागजो मे इसी शब्द का प्रयोग हुआ है और बंकिम बाबू ने इसी अर्थ मे सन्यासी शब्द का प्रयोग किया है। केवल व्यक्तिगत उल्लेखो मे उन्होने 'गोस्वामी' शब्द का प्रयोग किया है। आनन्दमठ के सन्यासी 'वैष्णव' है और इन वैष्णव गोसाईयो का वेष और आचार-विचार कुछ भी सन्यासी जैसा नही है।' (प्रस्तावना पृ. ६)।

१७६२ से १७७४ 'सन्यासी विद्रोह' काल का इतिहास की दृष्टिसे भी अवलोकन करना चाहिये। १७६२ मे कलकत्ता मे नवाब मीर कासिम और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बीच व्यापारिक समझौता होता है। १७६३ मे अंग्रेज मीर कासिम को गद्दी से उतार कर उसके स्थान पर मीर जाफर को बैठाते है। इसी वर्ष बक्सर की लडाई होती है, शाह आलम को 'पेंशन' दे दी जाती है और बंगाल अंग्रेजों के हाथ आ जाता है। १७६५ मे कलकत्ता के नबाब ने अंग्रेजों के आगे आत्मसमर्पण कर दिया (१२ अगस्त १७६५) और क्लाइव ने बादशाही फर्मान निकाल कर दीवानी प्राप्त

कर ली। अंग्रेजो को बगाल, बिहार और उडीसा प्रांत मे कर वसूली का सब अधिकार प्राप्त हुआ और इन प्रातो मे विदेशी सत्ता काबिज हो गयी। परिस्थिति यह था कि कर वसूली का अधिकार अंग्रेजो को पर प्रजा के सरक्षण की जिम्मेदारी नवाब की। इसका परिणाम यह हुआ कि अग्रेजो को कर चुकाने हेतु मुसलमान शासक अपनी हिन्दू प्रजा का शोषण करने लगे।

इस परिस्थिति का प्रतिकार करने के लिए 'सन्यासी विद्रोह' हुआ। इसमे सिर्फ हिन्दु सन्यासी ही थे, मुसलमान फकीर नही थे, यह कहना सही नही है। इस सम्बन्ध मे वारेन हेस्टिंग्स और सरकारी कागजातो के हवालो के प्रमाण मानने लायक नही है। आनन्द मठमे बकिम द्वारा चित्रित विद्रोही हिदु सन्तान है और वे अग्रेज तथा मुसलमान शासक से लड़ते है, यह ऐतिहासिक सत्य है भी। 'हरे मुरारे मधु कैटाभारे' सतानो की युद्ध घोषणा है, उनके निवासस्थान देव मन्दिर हैं। स्वत. बकिम बाबू ने उपन्यास की घटना को काल्पनिक कहा है और क्यों कहा है इसका विवरण अन्यत्र दिया गया है। तत्कालीन अग्रेज शासको से खुले आम दुश्मनी हो या पुस्तक पर प्रतिबध लगे यह बकिम की इच्छा नही थी और वरिष्ठ अधिकारियो को प्रसन्न रखने के लिए उन्होने ऐसा लिखा है। आनन्द मठ के अन्त मे तो अग्रेज राज का स्वागत और प्रशसा भी की गयी है।

उपन्यास मे पाँच मुख्य पात्र है। ये मातृ भूमि के लिए अपना सर्वस्व और अपने प्राण तक अर्पण करने को तैयार हैं। हरेक की भूमिका अलग है। सत्यानन्द कुशल संघटक हैं, सावधानी से समय को पहिचानने वाले, संतानों की खोज खबर रखने वाले। उनके दाहिने हाथ है भवानन्द, महेन्द्र और जीवानंद जो महा पराक्रमी है। पर सत्यानन्द भावुक नही है, जब प्रेम, वात्सल्य, राग, लोग या अन्य भावनाए उद्वेलित होती है उस समय वे दिशा निदेश करते है। उनकी व्यक्तिगत भावना पर देश प्रेम हावी है और वे संतान धर्म का पालन करके यश प्राप्त करते हैं।

उपन्यास के विविध प्रसगों से हरिभाऊ आप्टे के ऐतिहासिक उपन्यासों की याद आती है। आप्टे के 'ऊषाकाल', 'सूर्योदय', 'गढ आला पण सिंह गेला' इसके प्रमाण है। इनमें भी मुस्लिम सत्ता के विरुद्ध झगड़ा दिखता है। विद्रोहियो के गुप्त अड्डे है जहाँ योजनाएं तैयार होती है। आप्टे के इष्टदेव है हनुमान और आनन्द मठ की 'जगन्माता देवी।' आनन्द मठ पुरानी रचना है, उसकी भाषा ओजस्वी है। जिस समय वह लिखा गया उस समय लोगो को ऐसी ही आदर्शवादी रचना की जरूरत थी और इसका सदेश था नि स्वार्थ भाव से समाज सेवा, राष्ट्र की सेवा। उपन्यासमे युद्ध के रोमाचकारी वर्णन है। आरम्भ मे सन्तान की हार और बाद मे विजय होती है। सत्यानन्द का काम पूरा होता है। अन्त मे एक अनाम दूत की वाणी है मानो रामावतार के अन्त मे राम से महाकाल का दूत सदेश देता हो। सत्यानन्द साधना हेतु हिमालय चले जाते है और सन्यासी विद्रोह शांत हो जाता है।

हरे मुरारे' सन्तानो का रणघोष था। अनेक पृष्ठ युद्ध वर्णन से भरे है। लड़ाई मुसलमान शासक के विरुद्ध होती है, उनके सहायक होते है अंग्रेज! इन अग्रेजों की खूब पिटाई की गयी है। दिखाया है कि मुसलमान शासक डरकर भाग जाते है पर अग्रेज बहादुरी से लडते है, उनके गुणो की प्रशसा की गयी है, उनकी कर्तव्य निष्ठा सराही गयी है और उपन्यास के अंत मे अग्रेज राज्य का स्वागत किया गया है। इसका कारण है तत्कालीन परिस्थिति।

इस उपन्यास मे चार भाग है, पहले मे १६ प्रकरण है। 'वन्देमातरम्' गीत पहले भाग के नौवे प्रकरण से दूसरे भाग के आठवें, तीसरे भाग के बारहवे और चौथे के आठवे प्रकरण मे है। अनेक स्थलो पर 'जय जगदीश हरे' गीत का उपयोग हुआ है। ये सन्तान विष्णु पूजक वैष्णव है। उपन्यास पूर्ण रूपेण ऐतिहासिक नही है न पूर्णतः सामाजिक ही है, दोनों का मिश्रण है। आदर्श और व्यवहार का उत्तम समन्वय हुआ है। गीता के कर्म-योगी और तत्व ज्ञानी इस उपन्यास की बैठक मे है पर अन्त मे मात्र आध्यात्मक ही रह गया है।

(अनु० श्री शकर डोहकर)



'आनन्द मठ' में वन्देमातरम्

(१)

उस ज्योत्स्नामयी रजनी मे दोनों ही जंगल पार करते हुए चले जा रहे थे। महेन्द्र चुप, शांत और कौतूहल मे भी थे।

सहसा भवानन्द ने भिन्न रूप धारण कर लिया। अभी जिस गर्वित भाव से वह महेद्र का तिरस्कार कर रहे थे, अब वह भवानन्द नही थे। मानो ज्योत्स्नामयी, शातिशालिनी, पृथिवी की तरु-कानन, नद-नदीमय शोभा निरख कर उनमे विशेष परिवर्तन हो गया हो! समुद्र मानों चन्द्रोदय होने पर हँस उठा। भवानन्द बातचीत के लिए अतीव व्यग्र हा उठे। उन्होने बातचीत करने के अनेक उपाय रचे, लेकिन महेद्र चुप ही रहे। तब निरुपाय होकर भवानन्द ने गाना शुरू किया—

"वन्दे मातरम्!
सुजला सुफला मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलां मातरम्।"

महेद्र गाना सुनकर कुछ आश्चर्य चकित हो गये। वह कुछ समझ न सके। सुजला, सुफला, मलयजशीतला, शस्यश्यामला माता कौन है? उन्होने पूछा—"माता कौन है?" कोई उत्तर न देकर भवानन्द गाने लगे—

"शुभ्रज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्;
सुहासिनी सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्!!"

महेद्र बोले—"यह तो देश है, यह तो माँ नहीं है।"

भवानन्द ने कहा—"हम लोग दूसरी माँ को नही मानते। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी,' हमारी माता, जन्मभूमि ही जननी है, हमारे न माँ है, न भाई है, कुछ नही है, स्त्री भी नही, घर भी नहीं, मकान भी नही। हमारी अगर कोई है, तो वही सुजला, सुफला, मलयज-शीतला, शस्य-श्यामला—"

अब महेद्र ने समझ कर कहा—"तो फिर गाओ।"

भवानन्द फिर गाने लगे।

"वन्दे मातरम्।
सुजला सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामला मातरम्।
शुभ्र जेयत्स्ना-पुलकित यामिनीम्,
फुल्लकुसुमित-द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनी सुमधुरभाषिणीम्
सुखदा, वरदा मातरम्॥
सप्तकोटिकण्ठ-कलकल निनादकराले,
द्विसप्तकोटि भजैर्धृत खरकरवाले,
अवला केनो माँ! एतो वले!
वहुबलधारिणीम् नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीम् मातरम्॥
तुमी विद्या, तुमी धर्म,
तुमी हृदि, तुमी मर्म,

त्वं हि प्राण: शरीरे।
बाहुते तुमी माँ शक्ति,
हृदये तुमी माँ भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गढ़ी मन्दिरे मन्दिरे।
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरण धारिणीम्,
कमला कमल-दल-विहारिणी,
वाणी विद्यादायिनि नमामि त्वां,
नमामि कमलां अमलां अतुलाम,
सुजलां सुफलां मातरम्
वन्दे मातरम्॥
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणीं भरणीं मातरम्॥'

(२)

भवानन्द—"जो राजा राज्यचालन न करे, जनता-जनार्दन की सेवा न करे, वह राजा कैसे हुआ?"

महेन्द्र—"देखता हूं, तुम लोग किसी दिन फौज की तोप के मुंह पर उड़ाये जाओगे।"

भवानन्द—"सब देख चुका हूं, एक बार से दो बार तो मनुष्य मर नही सकता।"

महेंद्र—"जान-बूझ कर मरने की क्या जरूरत है?"

भवानन्द—"महेद्र सिंह! मेरा ख्याल था कि तुम मनुष्यों के समान मनुष्य होगे। लेकिन देखा, जैसे सब वैसे तुम भी हो, घी-दूध खाकर भी दम नही। देखो, साँप मिट्टी मे अपने पेट को घसीटता हुआ चलता है, उससे बढ कर तो शायद नीच कोई न होगा, लेकिन उसके शरीर पर भी पैर रख देने से फन निकाल लेता है। तुम लोगों का धैर्य क्या किसी तरह भी नष्ट नही होता? देखो, कितने शहर हैं, मगध, मिथिला, काशी, कराची, दिल्ली, काश्मीर; उनकी कैसी दुर्दशा है? किसी देश के मनुष्य भोजन के अभाव में घास खा रहे है! किसी देश की जनता काँटे खाती है, लता-पत्ता खाती है! किसी देश के मनुष्य स्यार, कुत्ते और मुर्दे खाते हैं! आदमी सन्दूक में धन रख कर निश्चिन्त नही है! सिंहासन पर शालिग्राम बैठाकर निश्चिन्त नही है! घर मे बहू-नौकर-मजदूरनी रखकर निश्चिन्त नही है! हर देश का राजा प्रजा की दशा का, भरण-पोषण का ख्याल रखता है, हमारे देश का राजा क्या हमारी रक्षा कर रहा है? धर्म गया, जाति गयी, मान गया, अब तो प्राणो पर बाजी आ गयी है। इन्हे बिना भगाये हम क्या रह जायेंगे?"

महेद्र—"कैसे भगाओगे?"

भवानन्द—"मार कर।"

महेद्र—"तुम अकेले भगाओगे? एक थप्पड मार कर क्या?"

भवानंद ने फिर गाया—

"सप्तकोटि कण्ठ कलकल--निनादकराले,
द्विसप्तकोटिभुजैर्धृत खरकरवाले,
अवला केनो मा एतो बले।"

महेद्र—"किंतु देखता हू, तुम अकेले हो।"

भवानंद— "क्यों, अभी तो दो सौ आदमियो को देख चुके हो।"

महेद्र—"क्या वह सब संतान है?"

भवानद—"सब संतान हैं?"

महेद्र--"और कितने लोग है?"

भवानद—"इसी तरह हजार-हजार हैं, धीरे-धीरे और बढ़ेंगे।"

महेद्र—"बहुत होगा, दस-बीस हजार हो जाओगे, लेकिन इतने से ही शत्रु भाग जायेंगे?"

भवानंद—"पलासी में अंगरेजो की फौज कितनी थी?"

महेद्र—"अंगरेज और बंगाली बराबर है?"

भवानंद—"न कैसे बराबर होगे? शरीर मे अधिक बल होने से क्या गोला ज्यादा तेज चलता है?"

"एक गोला एक ही जगह जाकर गिरेगा, दस जगह नही, अतः एक गोले को देख कर दस आदमियों के

भागने की क्या जरूरत है? सैकड़ों गोले देख कर भी एक अंगरेज तो नहीं भागता? तुम सतान बनोगे?"

(३)

ब्रह्मचारी आगे-आगे और महेद्र उनके पीछे देवालय के अन्दर घुसे। प्रवेश कर महेद्र ने देखा, बड़ा ही प्रशस्त और ऊचा कमरा है। इस घर के अंदर क्या है, पहले तो महेद्र यह देख न सके, किंतु कुछ देर बाद देखते-देखते उन्हे दिखाई दिया कि एक प्रकाण्ड चतुर्भुज मूर्ति है, शङ्ख-चक्र गदा-पद्मधारी, कौस्तुभशोभित हृदय, सामने घूमने की दशा से सुदर्शनचक्र स्थापित है। मधुकैटभ जैसी दो प्रकाण्ड छिन्नमस्तक मूर्तियाँ रुधिरप्लावितवत चित्रित सामने पडी है। बाएँ लक्ष्मी आलुलायित-कुंतला शतदल-मालामण्डिता, भयत्रस्त की तरह खडी हैं। दाहिने सरस्वती पुस्तक, वाद्ययंत्र, मूर्तिमयी रागरागिनी आदि से घिरी हुई स्तवन कर रही है। विष्णु के अङ्क पर एक मोहिनी मूर्ति—लक्ष्मी और सरस्वती से अधिक सुन्दरी, उनसे भी अधिक ऐश्वर्यान्वित---अङ्कित है। ब्रह्मचारी ने अतीव गम्भीर, स्वर मे महेंद्र से पूछा—"सब कुछ देख रहे हो?" महेद्र ने उत्तर दिया—"देख रहा हूं।"

ब्रह्मचारी—"विष्णु की गोद मे कौन हैं, देखते हो?"

महेंद्र—"देखा, कौन है वह?"

ब्रह्मचारी—"माँ!"

महेद्र—"माँ कौन है?"

ब्रह्मचारी ने उत्तर दिया—"हम जिनकी संतान है।"

महेंद्र—"कौन है वह?"

ब्रह्मचारी—"समय पर पहचान जाओगे, बोलो, वन्देमातरम्! अब चलो।'

अब ब्रह्मचारी महेद्र को एक दूसरे कमरे में ले गये। वहां जाकर महेद्र ने देखा, एक अपरूप सर्वाङ्ग-सम्पन्न, सर्वाभरण भूषिता जगद्धात्री की मूर्ति विराजमान है। महेद्र ने पूछा—"यह कौन है?"

ब्रह्मचारी—"माँ जो वहाँ थी।"

महेंद्र—"यह कौन है?"

ब्रह्मचारी—"यह बाल सूर्यप्रभा आदि ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री है। इन्हें प्रणाम करो।"

महेंद्र के भक्तिभाव से जगद्धात्री रूपिणी मातृभूमि को प्रणाम करने के बाद ब्रह्मचारी ने उन्हे एक अँधेरी सुरङ्ग दिखा कर कहा—"इस राह से आओ।" ब्रह्मचारी स्वयं आगे-आगे चले। महेंद्र भयभीत चित्त से पीछे-पीछे चल रहे थे। भूगर्भ की अँधेरी कोठरी मे न जाने कहाँ से हलका उजेला आ रहा था। उस क्षीण आलोक मे उन्हें एक काली मूर्ति दिखाई दी।

ब्रह्मचारी ने कहा—"देखो, अब माँ का जो स्वरूप है।"

महेद्र ने कहा—"काली।"

ब्रह्मचारी—"काली नग्न है। आज देश चारो तरफ श्मशान हो रहा है, इसलिए माँ कंकालमालिनी है। अपने शिव को अपने ही पैरो तले रौंद रही हाय माँ!" ब्रह्मचारी की आँख से आँसू की धारा बहने लगी।

महेंद्र ने पूछा—"हाथ में खड्ग, खप्पर क्यो है?"

ब्रह्मचारी—"हम लोग संतान हैं। माँ के हाथों में अभी अस्त्र-मात्र दिया है; बोलो—बंदेमातरम्!"

'बंदेमातरम्'—कह कर महेद्र ने काली को प्रणाम किया। अब ब्रह्मचारी ने कहा—"इस राह से आओ!" यह कह कर वह दूसरी सुरङ्ग मे चले। सहसा उन लोगों के सामने प्रात सूर्य की रश्मिराशि प्रभासित हुई। चारो तरफ मधुरकण्ठ से पक्षी कूज उठे। देखा एक मर्मरप्रस्तर निर्मित प्रशस्त मदिर के बीच सुवर्णनिर्मित दशभुजप्रतिमा नव अरुण-किरणों से ज्योतिर्मयी होकर हँस रही हैं। ब्रह्मचारी ने प्रणाम कर कहा—"यह है माँ, जो भविष्यत् मे उनका रूप होगा। दशभुज दसों दिशाओं मे प्रसारित

हैं, उसमें नाना आयुधरूप में नाना शक्तियाँ शोभित हैं। दिक्भुजा'—कहते-कहते सत्यानद गद्-गद् कण्ठ हो रोने लगे। 'दिक्भुजा—नानाप्रहरण-धारिणी, शत्रु-विमर्दिनी, वीरेन्द्रपृष्ठविहारिणी, दाहिने लक्ष्मी भाग्यरूपिणी; बाये वाणी विद्याविज्ञानदायिनी—साथ मे शक्ति के आधार कार्तिकेय, कार्यसिद्धिरूपी गणेश, आओ, हम दोनों माँ को प्रणाम करे।" इस पर दोनों ही हाथ जोड़ कर माता का रूप निहारते हुए प्रार्थना करने लगे—

"सर्वमङ्गलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणिनमोऽस्तुते ॥"

दोनो के भक्ति-भाव से प्रणाम कर चुकने के बाद भरे हुए गले से महेद्र ने पूछा—"माँ की ऐसी मूर्ति कब देखने को मिलेगी ?"

ब्रह्मचारी ने कहा—"जिस दिन माँ की सारी संतानें एक साथ माँ को बुलायेगी, उसी दिन माँ प्रसन्न होंगी।"

(४)

कल्याणी ने कहा—"मुझे बडी विपदों का सामना करना पडा, बहुत तकलीफ उठाई। तुम उन्हे सुनकर क्या करोगे ? इतने दुःखों पर भी मुझे कैसे नीद आई थी कह नही सकती, कल आखिरी रात भी मैं सोई थी। नीद मे मैंने एक स्वप्न देखा। नही कह सकती, किस पुण्यबल से मैं एक अपूर्व स्थान मे गयी हू। वहाँ मिट्टी नहीं है। केवल प्रकाश ही प्रकाश! वहाँ मनुष्य नही थे, केवल प्रकाशमय मूर्तियाँ थी, वहाँ शब्द नही होता था, केवल दूर अपूर्व संगीत जैसा नाद सुनाई पडता था। वहाँ सबसे ऊँचे दर्शनीय स्थान पर कोई बैठा था, मानों आग मे तपा हुआ नील-भक्त धधकता हुआ बैठा हो। उसके माथे पर सूर्य के जैसा प्रकाश मुकुट था। उसके चार हाथ थे। उसके दोनो बाजू कौन था, मैं पहचान न सकी; लेकिन कोई स्त्री-मूर्ति थी। लेकिन उनमे इतनी ज्योति, इतना रूप, इतना सौरभ था कि मै उधर देखते ही विह्वल हो गयी। उधर ताक न सकी, देख न सकी कि वह कौन है। उन्ही चतुर्भुज के सामने एक स्त्री और खडी है, वह भी ज्योतिर्मयी थी। लेकिन चारो तरफ मेघ जैसा था, आभा पूरी तरह दिखाई नहीं देती थी। अस्पष्ट रूप मे जान पडता कि वह नारी मूर्ति अति दुर्बल, मर्म पीडित अनन्यरूपा, लेकिन रो रही हैं। वहाँ के मंद-सुगध पवन ने मानो मुझे घुमाते-फिराते वहाँ चतुर्भुज मूर्ति के सामने ला खड़ा किया। उस मेघ-मण्डिता शीर्णा स्त्री ने मुझे देखकर कहा,—"यही है, इसी के कारण महेद्र मेरी गोद मे आता नहीं है।"

इसके बाद ही एक अपूर्व वशी जैसा शब्द सुनाई पड़ा। वह शब्द उन चतुर्भुज का था, उन्होने मुझसे कहा—"तुम अपने पति को छोड कर मेरे पास चली आओ। यह तुम लोगो की माँ है, महेद्र इसकी सेवा करेगा। तुम यदि पति के पास रहोगी, तो वह इनकी सेवा कर न सकेगा। तुम चली जाओ।" मैंने रो कर कहा—"पति को छोडकर कैसे चली आऊँ ?" इसके बाद ही फिर उसी अपूर्व स्वर मे उन्होने कहा—"मै ही स्वामी, मैं ही पुत्र, मैं ही माता, मैं ही पिता, मैं ही कन्या हू, मेरे पास आओ !" मैंने क्या उत्तर दिया, मुझे याद नही; लेकिन इसके बाद ही नीद खुल गयी।" यह कहकर कल्याणी चुप हो रही।



[श्री किरन बन्दोपाध्याय के बंगला नाटक "भारत माता" का श्री भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र कृत अनुवाद ?, सन् १८७७ में प्रकाशित]

—: भारत जननी :—

आपेरा

(सूत्रधार आता है)

(भैरव ताल इकताला)

सू०— जगत पिता जग जीवन जागो मङ्गल मुख दरसाओ।
तुव सोए सबही मनु सोए तिन कहं जागि जगाओ॥
अब बिनु जागे काज सरत नहि आलस दूरि बहाओ।
हे भारत भुवनाथ भूमि निज बूड़त आनि बचाओ॥

भारत भूमि और भारत संतान की दुर्दशा दिखाना ही इस भारत जननी की इति कर्तव्यता है और आज जो यह आर्य्य वंशका समाज इस खेल देखने को प्रस्तुत है उससे से एक मनुष्य भी यदि इस भारत भूमि के सुधारने मे एक दिन भी यत्न करै तो हमारा परिश्रम सफल है।

(जाता है)

स्थान—बड़ा भारी खण्डहर

(एक टूटे देवालय की सहन में एक मैली साड़ी पहिने बाल खोले भारत जननी निद्रित सी बैठी है, भारत संतान इधर उधर सो रहे है।) (भारत सरस्वती आती है, सफेद चंद्रजोत छोड़ी जाय)

(गाती हुई ठुमरी)

भा० स०—क्यों माता मुख मलिन होय रही जिय मैं कहा उदासी।
क्यों घर छोड़ि त्यागी आभूषन बैठी है बनबासी॥
कहाँ गई वह मुख की सोभा कित वह तेज गवायो।
कित वह श्री बल बुधि उछाह सब कछु नहि आज लखाओ॥
कहाँ गयो वह राजभवन कित धवल धाम बिनसाए।
कह वह ओज प्रताप नसानो वैभव कितहि दुराए॥

सदा प्रसन्न तेजजुत मुख तुव बालअरक छबि छाजै।
सो दिन ससि सम पीत बरन ह्वै आजु तेज विन राजै।।
धूरि भरी तुव अलक देखि मेरो चित अकुलाई।
छत्र चंवर नित ढुरत जौन मुख तहं मनु छुटत हवाई।।
कित सब वेद पुरान शास्त्र उपवेद अंग सह भागे।
दरसन दुरै कितै जिन के बल तुव प्रताप जग जागे।।
आजु न कोऊ संग अकेली दीन होई बिलखाई।
बैठी क्यो हत जननि कहौ क्यों बुधि गुन ज्ञान नसाई।।

(भारत माता के पास जाकर कई बेर जगाकर)

(परज कलिंगड़ा)

क्यों बोलत नहि मुख माय वचन
जिय व्याकुल बिन तुव अमृत वयन।
क्यों रूसि रही अपराध बिना
नहि खोलत क्यो जुगल नयन।।

विनती न सुनत हित जिय न गुनत
भई मौन किया जागत ही सयन।
मुख खोलौ बोलौ बलि बलि गई
दिन हो मे काहे करत रयन।।
बिछुरत अब फिर कठिन मिलन
लै जात यवन मोहि करि कै जयन।।

(अंत का तुक गाते गाते और रोते रोते भारत सरस्वती जाती है)

(भारत दुर्गा आती है, लाल चंद्रजीत छूटै)

(राग बसंत)

भा० दु०—भारत जननी जिय क्यों उदास।
बैठी इकली कोउ नाहिं पास।।
किन देखहु यह रितुपति प्रकास।
फूली सरसों बन करि उजास।।

खेतन मैं पकि रहे लखहु धान।
पियरान लगे भरि स्वाद पान॥
रितु बदलि चली देखहुं सुजान।
अबहूं तौ चेतौ धारि ज्ञान॥
भयो सुखद सिसिर को माय अंत।
लखि सबहिन मिली गायो बसत॥
तब क्यों न बांधि कंकन समंत।
साजत केसरिया भूमि कंत॥

(होली)

भारत मैं मची है होरी॥
इक ओर भाग अभाग एक दिसि होय रही झकझोरी।
अपनी अपनी जय सब चाहत होड़ परी दुहुं ओरी॥
दुन्द सखि बहुत बढो री॥ १ ॥

धूर उड़त सोइ अबिर उडावत सबको नयन भरी री।
दीन दसा अंसुवन पिचकारिन सव खिलार भिजयो री॥
भीजि रहे भूमि लटो री॥ २ ॥

भइ पतझार तत्व कहुं नाही सोइ वसंत प्रगटो री।
पीरे मुख भई प्रजा दीन ह्वै सोइ फूली सरसों री॥
सिसिर को अंत भयो री॥ ३ ॥

बौराने सब लोग न सूझत आम सोई बौर्‌यौ री।
कुहू कहत कोकिल ताही ते महा अंधार छयो री॥
रूप नहिं काहु लख्यो री॥ ४ ॥

हार्‌यौ भाग अभाग जीत लखि विजय निसान हयो री।
तब उछाह श्रीवन बुधिबल सब फगुआ माहिं लयो री॥
सेस कछु रहि न गयो री॥ ५ ॥

* गारी बकत कुफार जीति दल तासुन सोच लयो री।
मूरख कारो काफिर आधो सिच्छित सबहि भयो री॥
उत्तर काहू न दयो री॥ ६ ॥

उठौ उठौ भैया क्यों हारौ अपुन रूप सुमिरो री।
राम युधिष्ठिर विक्रम की तुम झटपट सुरत करो री॥
दीनता दूर धरो री॥ ७ ॥

कहाँ गये क्षत्री किन उनके पुरुषारथहिं हरो री।
चूड़ी पहिरि स्वाँग बनि आए धिक धिक सबन कह्यो री॥
भेस यह क्यो पकरो री॥ ८॥

धिक वह मात पिता जिन तुम सों कायर पुत्र जन्यो री।
धिक वह घरी जनम भयो जामैं यह कलंक प्रगटो री॥
जनमतहि क्यो न मरो री॥ ९॥ *

खान पियन अरु लिखन पढन सों काम न कछू चलो री।
आलस छोड़ि एक मत है कै साँची वृद्धि करो री॥
समय नहि नेकु बचो री॥ १०॥

उठौ उठौ सब कमरन बाँधौ शस्त्रन सान धरो री।
विजय निसान बजाइ बावरे आगेइ पांव धरो री॥
छबीलिन रंग रगो री॥ ११॥

आलस मैं कछु काम न चलिहै सब कछु तो बिनसो री।
कित गयो धन बल कल विवेक अब कोरो नाम बचो री॥
तऊ नहि सुरत करो री॥ १२॥

कोकिल एहि विधि वहुबकि हारचौ काहू नाहि सुनो री।
मेटो सकल कुमेटी थोथी पोथी पढत मरो री॥
काज नहि तनिक सरो री॥ १३॥

चालिस दिन इमि खेलत बीते खेल नही निपटो री।
भयो पंक अति रग को तामैं गज को जूथ फंसो री॥
न कोउ बिधि निकसि सको री॥ १४॥

कंकन बाँधौ कर मे सबरे चूरी डारहु तोरी।
एक मतो करि दृढ़ ह्वै सबरे आगेहि चरन धरो री॥
मजा बहु गहिरी होरी॥ १५॥

अबलन सों जनि डरहु धाइ दृढ़ करिकै करन गहो री।
निपट निलज करिके झकझोरहु अरुन रंग में बोरी॥
छबीलिन रंग रंगो री॥ १६॥[1]

---

* भारत जीवन प्रेस की प्रति में इतना अंश नहीं है। सं०

१ मूल संस्करण में नहीं। सं०

खेलत खेलत पूनम आई भारी खेल मचो री।
चलत कुमकुमा रग पिचकारी अरु गुलाल की भोरी ॥
बजत डफ राग जमो री ॥ १७ ॥ *

होरी सब ठांवन लै राखी पूजत लै लै रोरी।
घर के काठ डारि सब दीने गावत गीतन गोरी ॥
झूमको झूमि रहो री ॥ १८ ॥

तेज बुद्धि बल घन अरु साहस उद्यम सूरपनो री।
होरी में सब स्वाहा कीनी पूजन होत भलो री ॥
करत फेरी तब को री ॥ १९ ॥

फेर धुरहरी भई दूसरे दिन जब अगिन बुझो री।
सब कछु जरि गयो होरी में तब धूरहि धूर बचो री ॥
नाम जमघण्ट परो री ॥ २० ॥

फूक्यौ सब कछु भारत नै कछु हाथ न हाय रहो री।
तब रोअन मिस चैती गाई भली भई यह होरी ॥
भलो तेवहार भयो री ॥ २१ ॥

(रोती हुई भारत जननी की ठोढ़ी पर हाथ रख कर)

(राग चैती)

अब हम जात हो परदेसवाँ कठिन फिर होइहै मिलनवाँ हो राम।
अरे मुखहू न कोई बोलै कोई न आदर देय मोरे रामा।
अरे सपनेहु न मोर पियरवा रे मुज भर मोहि लेय ॥
अरे अबहू न सोचत लोगेवा मति सब गई बौराय हो रामा।
हमरे बिन जरि जरिहैं करि करि कै हाय।
हम रूसि चली परदेसवाँ फिर नहि आवन होय हो रामा।
अरे बिन आदर तनिकौ पाए जात विदेस हम रोय ॥

(रोते रोते हाथ की तलवार को दो टुकड़े तोड़कर भारत दुर्गा जाती है)

(भारत लक्ष्मी आती है) (हरी चन्दर जोत छूटै)

(सोरठ गाकर)

---

* इतना अश भारत जीवन संस्करण में नहीं है।

भा० ल०—मलिन मुख भारत माता तेरो।

बारि भरत दिन रैन नैन सो लखि दुख होत घनेरो।
तुव मुख ससि देखत मन जलनिधि बढ़त रह्यो चहुंफेरो।
सोइ मुख आज बिलोकत दुख सो फट्यौ जात हिय मेरो॥

मलार।

लखौ किन भारत वासिन की गति।
मदिरा मत्त भए से सोअत ह्वै अचेत तजि सब मति॥
घन गरजै जल बरसै इन पर बिपति परै किन आई।
ये बजमारे तनिक न चौंकत ऐसी जडता छाई॥
भयो घोर अन्धियार चहुंदिसि ता महँ वदन छिपाए।
निरजल परे खोइ आपुनपौ जागतहू न जगाए॥
कहा करै इत रहि कै अब जिय तासो यहै विचारा।
छोडि मूढ इन कहे अचेत हम जात जलधि के पारा॥

(अन्त का तुक गाते गाते और रोते रोते भारत लक्ष्मी का प्रस्थान)

भारत माता.—(आँखे खोल कर) हाय क्या हुआ ? क्या लक्ष्मी अन्तर्धान हो गई ? हाँ ! मै ऐसी पापिनी हू कि नेत्रो के सामने आने पर भी उसे आँख भर न देखा भली भाति उसे पहचान भी न सकी। (चिन्ता से) नही नहीं अन्तर्धान नहीं हुई अभी तो वह हमको बहुत कुछ कह रही थी बहुत उरहना देती थी और बहुत प्रबोध करती थी फिर क्यो कुछ कहते कहते और रोते रोते दूर चली गई ? क्या कहा (सोच के) 'जाउ जलधि के पार' हाय (रोने लगी) फिर हमारी और हमारे सन्तति की लक्ष्मी बिना क्या गति होगी ? (सोच से) तो क्या इन लड़कों को जगा दे ? क्या सब वृतान्त उनसे कह दे ? नही जगाने का काम नही ये सब चिरकाल से गाढ़ निद्रा मे सो रहे है। इन्हे सोने ही दें। (सोचकर) नही नही भला यह कुछ सोते थोड़े ही है इन्हे तो अज्ञानान्धकार में पड़ने के कारण दिग् भ्रम हो रहा है और इसी हेतु नेत्र निमीलित कर इस दशा मे पड़े हैं। हाय मेरे बेटे अन्न जल न मिलने के कारण पिपासाकुलित सर्प की भाति बार बार दीर्घ श्वास ले रहे है। हाय मैं कैसी पापिनी क्रूरकर्मा नृशंसहृदया हूँ कि अपने सन्तति की ऐसी दशा देख कर भी जीती हूँ। हा विधाता मेरे प्राण शतधा होकर अभी क्यो नही विदीर्ण हो जाते, माता का हृदय तो ऐसा कठोर स्वप्न मे भी नही होता।

जान पडता है कि अभी कुछ और भी शेष है जिसके हेतु ईश्वर मेरे प्राण का शीघ्र ही अन्त नही कर देता (आसू पोछ कर एक का हाथ पकड़ के) बेटा उठो इस प्रकार सोने से कुछ काम न चलेगा, यह पूर्वकाल का समय नही, तुम्हारा वह दिन गया, अब शीघ्र उठो और इस रोग के निवृत्त करने को सब मिल कर ऐक्यावलम्बन कर स्वस्थचित्त हो कोई उपाय सोचो, नही तो रोग बढ़ जाने पर फिर कुछ न बन पड़ेगा। (एक को उठाती है तो दूसरा सोता है और दूसरे को उठाती है तो पहिला सो जाता है, इसी भाति सबको भारतमाता ने उठाया किंतु सब के सब फिर पूर्ववत् सो गए) हाय ! यह क्या है ? ये किस दशा में पड़े हैं ? वत्स ! तुम लोगों की क्या गति हो रही है, इतने काल से मैं सोचती हूं किन्तु कुछ ध्यान में नही आता, कितना प्रबोधन किया परंतु सब निष्फल हुआ (कुछ सोच के) हा अब मैंने समझा अभी इनके

चेतने का समय नहीं आया, अभी जो कुछ प्रयत्न किया जायगा सब निष्फल होगा, देखो एक को उठाओ तो एक सोता है और इसको उठाओ तो वह सोता है। तो फिर क्या हताश होकर इनको ऐसे ही रहने दें ? पर इससे तो सबोधन नहीं होता, अच्छा तो एक बार और उद्योग करें।

पृथ्वीराज जैचंद कलह करि जवन बुलाओ।
तिमिरलंग चगेज आदि बहु नरन कटायो ॥
अलादीन औरंगजेब मिलि धरम नसायो ॥
विषय बासना दुसह मुहम्मद शह फैलायो ॥

तब लौं सोए वत्स तुम, जागे नहिं कोऊ जतन।
अब तौ रानी विक्टोरिया, जागहु सुत भय छाडि मन ॥

जहां बिसेसर सोमनाथ माधव के मंदर।
तह महजिद बन गई होत अब अल्ला अकबर ॥
जह भूसी उज्जैन अवध कन्नौज रहे वर।
तहं अब रोअत सिवा चहूदिशि लखियत खडहर ॥
जह धन विद्या बरसत रही सदा अबै, वाही ठहर।
बरसत सब ही विधि बेबसी अब तो चेतौ बीर वर ॥

पहिला।—[आंख मल कर] माँ क्यौ बुलाती है ?

दूसरा।– बडी गाढी नीद मे थे क्यो वृथा जगाया मां !

तीसरा।– हमको सोने दो माँ, बड़ी नीद आती है क्यों नाहक दिक् करती हो ?

भारतमाता।—वत्स ! कब तक इस प्रकार से तुम सब निद्रित रहोगे, अब सोने का समय नही, एक बेर आँखै खोल भली भाँति पृथ्वी की दशा को तो देखो, तुम्हे कुछ नही मालूम कि तुम्हारे चारो ओर क्या हो रहा है, यह तो तुम लोग देखौ कि तुम्हारी अब क्या अवस्था हो रही है, क्या थे और क्या हो गए, एक बेर तो भला अपने मन में बिचारो, निरवलबा शोकसागरमग्ना, अभागिनी अपनी जननी की दुरावस्था को एक बार तो आंखे खोल के देखो। बेटा हमारा धन, आभूषण वसन इत्यादि सब लुटेरे बलात्कार हर ले गये, अब हम निराधार हो रही है, तेल भी नही मिलता कि केशों में लगावै। यह मलिन शतग्रथि वस्त्र मैं कब तक पहिरूं हाय ! जो अंगरेजों का राज्य न होता तो अब तक तो मेरे प्राण न बचते। बेटा तुम लोग अब उठो और अपने इस दुखिया माता कौ घोर दुःख से उद्धार करो।

पहिला।—मा फिर अब हम क्या करैं ?

दूसरा।—हम अपने माता के कष्ट को कैसे दूर करैं !

तीसरा।—मां तुम किस्से कहती हो ! हम लोग तो अब मनुष्य नहीं, हम लोग तो अब आलसी हो गए हैं. हमारी गणना तो अब अज्ञान तिमिरावृत, कूपनिवासी पिशाचगणों मे हैं; तो फिर हम क्या करैं ?

भारतज०।—हाय ! हाय। क्या सचमुच हमारे पुत्रों की अब ऐसी दीन दशा हो गई है कि ये लोग कुछ भी नहीं कर सकते। अरे मेरे इसी अंक में आगे कैसे कैसे महात्मागण हुए हैं जिनके यशः सौरभ से सारी पृथ्वी आमोदित थी। इसी हमारे अंक आलबाल में कैसे पुण्य कल्पतरु हुए हैं जिनकी कीर्त्तिशाखा दशो दिशा मे

भी नही समा सकी। इसी हमारे अंक में कैसे कैसे लोग लालित पालित हुए हैं जिनका आज दिन समस्त समस्त ससार आदरपूर्वक नाम ग्रहण करता है, जिन्होने अपने बुद्धि बल से मुझको सब देश ललनाओ का का शिरोमणि कर रक्खा था।

"जावाली जैमिनि गरग पातञ्जलि शुकदेव।
रहे हमारेहि अक मे कबहिं सबै भुवदेव ।।
याही मेरे अंक मे रहे कृष्ण मुनि ब्यास।
जिन के भारत गान सो भारत बदन प्रकास ।।
याही मेरे अंक मे कपिल सूत दुर्वास।
याही मेरे अंक मे शाक्य सिह सन्यास ।।
याही मेरे अंक में मनु भृगु आदिक होय।
तव तौ तिन कौ करत हो आदर जग सब कोय ।।"

सो उसी भारतभूमि में अब सब हतज्ञान हो रहे है और कोई इनको सम्भालने वाला नही। कोई काल ऐसा था कि इस भूमि की स्त्रियां भी विद्या सभ्रम, शौर्य्य, औदार्य्य मे जगत विख्यात थी वहा के पुरुष अब उद्यमशून्य हो केवल सूद या नौकरी पर सन्तोष कर के बैठे है, उद्योग किस चिड़िया का नाम है इस को मानो स्वप्न मे भी नही जानते।

हाय ! जगत् बिख्यात हमारे पूर्व समय के पुत्रगण किधर गये। क्या उनकी आत्मा भी यहा नही है जो इस अभागिनि दुखिया माता को इस समय सम्बोधन दे।

कहं गये बिक्रम भोज राम बलि कर्ण युधिष्ठिर।
चन्द्रगुप्त चाणक्य कहां नासे करि कै थिर ।।
कहं छत्री सब मरे बिनसि सब गए कितै गिर।
कहा राज को तौन साज जेहि जानत हे चिर ।।
कहं दुर्ग सैन जन बल गयो, धूरहि धूर दिखात जग।
उठि अजौं न मेरे वत्सगन, रक्षहि अपुनी आर्य्य मग ।।"

पहिला।—माता बडी भूख लगी है।

दूसरा।–क्षुधा से उदर फटा जाता है।

तीसरा। मां कुछ खाने को दो।

भारतमाता।–(स्वगत) काल तू बड़ा प्रबल है, तुझको कोई कार्य्य दुर्घट नही, तू सब कर सकता है, तेरा विश्वास कभी नहीं करना (प्रकाश) बेटा मेरे पास क्या है जो तुम लोगों को खाने को दू।

सब।—माता दूध दो वही पियें।

भारतमाता।—वत्स ! तुम्हारी माँ के पास क्या अब दूध रक्खा है जो तुम लोगों को दे, बेटा इतर पदार्थो की क्या गणना है मेरे शरीर का तो अब रक्त भी शेष नहीं, यवन सब चूस ले गए। बेटा तुम लोग कब तक ऐसे पड़े रहोगे अब अपना अपना काम देखने के लिये तुम लोग शीघ्र प्रयत्न करो।

पहिला।—मां हम लोग क्या करैं कैसे इस क्षुधित उदर को पूर्ण कर आत्मा को सुख दे।

दूसरा।—मां हम लोगों की तो यहां तक इच्छा होती है कि सेना विभाग में जा कर महारानी की ओर से उनके शत्रुओं से प्रथम ही युद्ध करैं और इससे अपने को प्रतिपालित करैं, परंतु वह भी तो नही करने पाते।

भारतमाता।—बेटा तुम लोग क्या कह रहे हो? हाय मैं ऐसी बज्रहृदया हूँ कि यह सब सुन कर भी सुखपूर्बक अपना प्राण धारण किये हूँ अब तो यह दुसह दुख सहा नही जाता (दीर्घ श्वास लेकर) बेटा तुम लोग अब क्या कर सकते हो, तुम्हारे पास अब है क्या? तुम लोग अब एक बेर जगत्‌विख्याता, ललनाकुलकमल कलिकाप्रकाशिका, राजनिचयपूजितपादपीठा, सरल हृदया, आर्द्र चित्ता, प्रजारञ्जनकारिणी, एवम् दयाशीला आर्य्य स्वामिनी राजराजेश्वरी महारानी विक्टोरिया के चरण कमलो मे अपने इस दुख का निवेदन करो वह अतीव कारुण्यमयी दयाशालिनी और प्रजाशोकनाशिनी हैं, निस्सन्देह तुम लोगो की ओर कृपाकटाक्ष से देखैंगी और अगस्त की भाँति झटिति ही तुम लोगो के शोकसागर का शोषण कर लेंगी।

पहिला।—मां हम लोगो ने कई बेर पुकारा इतना मुक्त कण्ठ होकर गोहार किया कि हम लोगों का कंठ अद्यापि स्तब्ध हो रहा है किन्तु हम लोगों का रुदन इतने समुद्र पार महारानी के कान तक पहुंचता ही नहीं। मां इस मे उन का क्या दोष हम लोगों के भाग्य का सब दोष है, महारानी यदि सुनै तो अपनी दयामयी प्रकृति से अवश्य कुछ करैं।

भारतमाता।—बेटा तुम लोग क्या करोगे तुम्हारे दिन ही ऐसे हैं। हा बिधाता हमारे भाग्य में इतना कष्ट! जननी हो के अपनी सन्तति की यह दशा इन्हीं जिन नेत्रों से देखनी पड़ती है। हाय! वे नेत्र भी नही फूट जाते! इसमे बिधाता का दोष नही हमारे कपाल का दोष है! (स्वगत) एक समय मे मैं इन्हीं भुजाओं से अपने प्रसिद्ध यशस्वी पुत्रों को गोद मे लेकर उनका स्नेह चुम्बन करती, अहङ्कार मद से उन्मत्त होती थी और अपने को रमणी-सरसरोजिनी, रमणीकुलगर्व, रमणीधुरि कीर्त्तनीया, रमणी ललाटतिलक, रमणी-शिरोभूषण, रमणी-मौक्तिकमणि, समझ अपने भाग्य को सराहती थी, हाय अब तो वैसा ही जगदीश्वर हमारे उस पूर्वकाल के गर्वो को खर्ब कर रहा है। शास्त्रकारों ने वृथा लिखा है कि पाप पुण्य का फल स्वर्ग मे होता है. मैं जानती हूँ कि पाप कर्म का फल इसी काल और इसी संसार मे भोगना पड़ता है। (प्रकाश) बेटा तुम लोग हमारे कहने से एक बेर और महान् उच्चस्वर से कृपाशीला महारानी को पुकारो, वह चाहै तो सब सुन सकती हैं और निःसन्देह दत्तचित्त हो सब सुनैंगी और शोकसमूह को शीघ्र ही दूर करैंगी।

पहिला।—अच्छा तो एक बार और पुकारैं, जान पड़ता है कि विधाता ने हम लोगों को केवल रोने ही के हेतु इस संसार मे भेजा है तो फिर इसको कौन मेट सकता है। अच्छा एक बार फिर पुकारै तो सही (उच्चस्वर से) कहां सम्मार्गरक्षिणी, लण्डननिवासिनी, राजाधिराजनी, इङ्गलैण्डेश्वरी माता विक्टोरिया! माता! ये भारत सन्तानगण आप से सविनय प्रार्थना करते हैं एक बार आप दया कर इन अनाथ भारत सन्तानों के प्रति अपना कृपाकटाक्ष निक्षेपण कीजिये। माता! हम लोगों ने सुना है कि आप दयाशीला और परम कारुणिका हैं, आप प्रसन्न भेष से दरिद्रों का दुख दूर करती हुई समस्त नगर में विचरण करती हैं। यदि एक बार भी आप अपने शील युक्त नैनों की कोर से हम भारतसन्तानों की ओर देखै तो हम लोगों का सब क्लेश पल भर मे दूर हो जाय और हम लोगों का सुख और आप का औदार्य्य दिग्देशान्तर में फैल जाय, अब विलम्ब करना उचित नही! माता इन भारतसन्तानों को अब शीघ्र ही दया दान दीजिये। हम लोग जिस रोगापत्ति से पीड़ित हो रहे हैं उस को आप के अतिरिक्त दूसरे की सामर्थ्य नही कि दूर कर सके।

(एक साहिब का प्रवेश)

साहिब ।—(तर्जन गर्जन पूर्वक) रे दुराशय ! दुर्वृत्तिगण ! क्या इसी हेतु हमने तुम लोगों को ज्ञान चक्षु दिया है ? रे नराधम ! राजविद्रोही महारानी के पुकारने मे तुम लोगो को तनिक भी भय का सञ्चार नही होता । उह ! यदि ऐसा जानते तो क्या हम तुम लोगों को लिखना पढ़ना सिखाते । सब अब चुप रहो, खबरदार जो आगे कुछ भी कोलाहल किया ।

पहिला ।—मा फिर भी तुम पुकारने को कहोगी ?

दूसरा ।—मां इसी से तो हम लोग कुछ भी नही बोलते ।

भारतमाता ।—(रो कर) ईश्वर तू कहां है ! मेरे पुत्र अब पुकारने और रोने भी नही पाते ।

(दूसरे साहिब का प्रवेश)

दू० सा० ।—अरे इङ्गलैण्डचन्द्रलाच्छन ! तू यहां से दूर हो ।

(पहिले को निकाल देता है)

दू० सा० ।—(भारतमाता के समीप जाकर) माता ! अब और रोदन न करो तुम्हारा दुःख देखने से पाषाण भी द्रवीभूत हो जाता है ! तुम्हारे निरन्तर धारावाही अश्रुप्रवाह के अवलोकन से कौन ऐसा कठोर चित्त मनुष्य है जो फिर भी स्थिर रहेगा । अलुलायित-केशव-लम्बित ये तुम्हारे क्षीण गण्डस्थल एवम् विगतकान्ति तथा सस्कार-रहित इस तुम्हारे कृशशरीर को देखकर कौन दुःखसागर में मग्न नहीं होता । तिस पर ऐसे लोग तुम्हारे इस शोक को अधिकतर बर्द्धित करते हैं । किन्तु हे माता ! अंगरेज सब कदापि भी ऐसे नहीं । तुम्हारा अश्रुपात देखने से जिनका स्वयम् अश्रुपात नही होता ऐसे अगरेज बहुत थोड़े है । उनकी दयालुता, न्यायशीलता, निष्पक्षपातिता और प्रजापालित्व तो संसार मे प्रसिद्ध हैं । मां ऐसे भी कितने असभ्य है किन्तु वे परमहीन और वेही हमारी जाति के कलङ्क हो रहे हैं । माता ! हम लोगों की महारानी परम कारुणिका और अति दयाशीला हैं । वह अपनी प्रजा के अनुरञ्जन के हेतु प्राणप्रिय आत्मपुत्रो का भी त्याग कर सकती हैं और इतर वस्तुओं की कौन गणना । उनके गुण अनन्त हैं । उनके समान सच्चरित्रा, साध्वी, पतिव्रता ओर धर्म्मपरायणा स्त्री कुल में उत्पन्न होनी अति दुर्लभ है । वह रामचन्द्र से भी अधिक प्रजापालन मे सदैव तत्पर रहती हैं । माता ! कुछ दुःख मत करो तुम्हारी यह शोकरात्रि अब शीघ्र ही प्रभात होगी और सुखरूपी मार्तण्ड तुम्हारे इस मुकुलित मुखकमल को शीघ्र ही प्रफुलित करैगा । माता ! तुम ने क्या ग्लैडस्टन फासेट मानियर विलियम्स इत्यादि महात्माओं का नाम नहीं सुना ! ये लोग तो अभागे भारतसन्तानो के शोक निवारण के हेतु तन मन सब अर्पण कर चुके है और रात दिन उसी का प्रयत्न किया करते है । (सन्तानों के प्रति) भ्रातृगण ! सचमुच तुम लोगों की अब तक अत्यन्त दुर्दशा हुई है और तुम लोगों ने अनेक आपत्तियों को झेली है और अनेक दुःख उठाये हैं, भाई इसमे कोई क्या कर सकता है सब उस सृष्टिकारक परमेश्वर के आधीन हैं, उसी को पुकारो, वही समस्त जगत् और सब दीन दुखियों का रक्षक है । जगदीश्वर तुम लोगों को इस विषदजाल से शीघ्र ही मुक्त करैं ।

(दूसरे साहिब का प्रस्थान)

(धैर्य्य का प्रवेश)

धैर्य्य जननी क्यों रोदन करती हो धैर्य्य को धारण करो और शोकवेग को दूर करो । देखो मैं धैर्य्य तुम्हारा आश्वासन करता हूं । यद्यपि मैं धैर्य्य हूं और विपद काल में लोगों को धीरज देने के हेतु मैंने जन्म लिया है

किन्तु तुम्हारे इस शोकावस्था को देख मेरे भी धीरज छूटे जाते हैं और अतःपरं उसके धारण करने को असमर्थ हूं। मैं कैसे तुम्हारा दु:ख दूर करूँ ? (सन्तानो से) हे भ्रातृगन अब उठो और जननी के दुःखानल के निर्व्वाण का प्रयत्न करो। अभिमान लोभ अपमान आत्मसमाज प्रशंसा परजातनिन्दा इन सब का सावधान पूर्वक परित्याग करो धैर्य्य का अवलम्बन करो सब कोई धैर्य्य को धारण करो भाई अवश्य तुम लोगो की कांक्षा पूरी होगी धीरज धरो धीरज धरो।

(धैर्य्य का प्रस्थान)

भारतमाता—हे मेरे प्यारे बत्सगण ! अब भी उठो और धैर्य्य के उत्साह और ऐक्य के उपदेशों को मन मे रख इस दुखिया के दुःख दूर करने में तन मन से तत्पर हो, अब तक हमने उसका सहन किया अब तो ऐसा उपाय करो जिसमे मेरा यह शोकनद बढने न पावै (हाथ जोडकर) हे जगदीश्वर तूं सर्वशक्तिमान है तुझको कोई बात दुर्घट नही अब मुझ अबला पर दया करके मेरा दुःख निवारण कर और मेरी इस प्रार्थना को अंगीकार कर।

बल कला कौशल अमित विद्या वत्स मेरे नित लहैं।
पुनि हृदय ज्ञान प्रकाश तें अज्ञान तम तुरतहि दहै॥
तजि द्वेष इर्ष्या द्रोह निन्दा देस उन्नति सब चहैं।
अभिलाख यह जिय पूर्बवत धन धन्य मोहि सबही कहैं॥

सब जाते हैं।

जवनिका पतन।



* आनंदमय वन्देमातरम् *

यह जीवन सत्-चित-आनंद की प्राप्ति के हेतु है। शरीर का पोषण जब सुजल, सुफल, मलयज शीतल से, सद्-श्यामलशस्य से होता है तब वह पुष्प की भाँति कुसुमित होता है, द्रुमदल सी शोभा पाता है। ऐसे तन में प्राण सुहास करते हैं चित्त में सुमधुरवाणी, सत्य का उदघोष करते हैं और सुखद वरदायक आनंद की सृष्टि होती है। अतः हे मन सच्चिदानंद प्राप्ति का साधन है माता की शरण में जाओ, माँ की साधना, अर्चना करो, अहर्निश कहो—वन्देमातरम्।

—:●:—

—: वन्देमातरम् अवतरणम् :—

(रूपक)

—: *श्री भानु मेहता* :—

वाचक १—आज से दो सौ वर्ष पूर्व, पराधीन भारत में नयी चेतना जागृत हो रही थी। विघटित सेना के सिपाही, असंतुष्ट किसान और बीतराग सन्यासी सभी मातृभूमि के लिए सघर्ष करने को तत्पर हो रहे थे। 'ॐ वंदेमातरम्' कह कर उसने विदेशी शासक पर हमला किया और विजय श्री लाभ की।

वाचक २—किन्तु देश सो रहा था—मुट्ठी भर आदमी विजय लेकर ही क्या करते? पराजय से काले मुंह लिए, अत्याचार अन्याय से रक्त सने लाल हाथ लिए, गोरे अग्रेज निद्रामग्न भारत को दोनों हाथ लूटते रहे। विद्रोह की चिनगारियां उस अंधेरी रात मे भी बार-बार चमक जाती थी, नीद बेचैन थी।

वाचक ३—नागरिक विद्रोह कर रहे थे, आदिवासी, किसान, मजदूर, कारीगर सभी विद्रोह कर रहे थे, राजे रजवाड़े विद्रोह कर रहे थे, सैनिक विद्रोह कर रहे और लुटेरे अग्रेज विद्रोहों को दबाते हुए भारत की धन-सम्पदा का दोनों हाथों से अपहरण कर रहे थे। सर्वत्र शोषण देश को रक्तहीन बना रहा था।

वाचक ४—फिर सन् सत्तावन में यह चिनगारी आग बनी, सारा उत्तर भारत सुलग उठा। इस विद्रोह में मुगल साम्राज्य का अंतिम अवशेष भी भस्म हो गया—सिपाहियों, देश भक्तों और राजपुरुषों की शहादत से प्रथम स्वातंत्र्य समर का अभिषेक हुआ। देश ने करवट बदली—काली मध्यरात बीत गयी, नये प्रभात के आगमन की सूचनाएं आने लगी।

वाचक ५—सन् १८३८ मे बगाल में बंकिम बाबू का जन्म हुआ। सन् १८५८ मे अध्ययन पूरा करके वे सरकारी अधिकारी बने। सन् १८६१ मे ***जातीय गौरव संपादिनी सभा*** की स्थापना हुई। सन् १८६६ मे ओड़ीसा में भीषण अकाल पडा और बीस लाख लोग उसका भोग बन गये। उसी वर्ष बंकिम के गुरू ***श्री ईश्वरचन्द्र गुप्त*** ने नीद से जागे बालक की भाति मां को पुकारा—'***जननी-भारत भूमि***'। इसी वर्ष ***हिन्दू मेला*** आरम्भ हुआ और उस मेले मे देश का जयगान '***गाओ भारतेर जय***' मुखर हुआ—(गीत)

वाचक ६—बंकिम ने लिखना आरम्भ कर दिया और उनके लेखन में पराधीनता की पीड़ा के स्वर जागने लगे थे किन्तु विवश और विकल।

वाचक १—सन् १८७० की एक शाम।

वाचक २—चुचड़ा में गंगा तट पर।

बंकिम—"एक दिन वर्षाकाल मे गंगा के तटवर्ती एक भवन में बैठा था। प्रदोषकाल में प्रस्फुटित चन्द्रलोक से विशाल विस्तीर्ण भागीरथी लक्ष बीची विक्षेपशालिनी मृदुपवन हिल्लोल से तरंग भंग चंचल चन्द्र कर माला लक्ष तारकों की भांति प्रस्फुटित हो रही थी, बुझ रही थी। मैं बरामदे में बैठा था और नीचे वर्षा की तीव्रगामी वारि-राशि मृदु रव के साथ दौड़ रही थी। आकाश मे नक्षत्र और नदी वक्ष पर नौकाओं मे प्रकाश, तरंगो पर चन्द्रराशि, वाणी का राज्य समुपस्थित हुआ। सोचा कविता पाठ करते हुए मन को तृप्त करूं, अंग्रेजी कविता

से काम नहीं चला, उसमें भागीरथी की बाबत कुछ भी नही मिलता। कालिदास भवभूति भी दूर रहे। मधुसूदन, हेमचन्द्र और नवीन चन्द्र से भी तृप्ति नही मिली अत: चुपचाप सोचता बैठा रहा—इसी समय गगा के वक्ष मे एक मधुर संगीत की लहर उठी, मछुए गा रहे थे—

(गीत)

मछुए—साधो आछे मा मने।
दुर्गाबले प्राण त्यजिब जाह्नवी जीवने ॥

बंकिम—प्राण तृप्त हो गये, मन को सुर मिला, बंगला भाषा मे वगमन की आशा सुन पाया–जाह्नवी जीवन दुर्गा कहकर त्यागने लायक है, यह समझ गया, शोभामयी जाह्नवी, और वह सौन्दर्यमय जगत अपने लगने लगे।

वाचक—सन् १८७२ मे बंकिम 'बंगदर्शन' मासिक पत्रिका के संपादक बने। यहाँ वे 'भारतीय एकता' की बात कहने लगे। राजनारायण बसु ने कहा था—

काव्यपाठ—मिलै सब भारत संतान
एक तान, मन प्रान
भारत भूमिर तुल्य आछे कौन स्थान
कौन आद्रि हिमाद्रि समान।
फलवती, वसुमती स्रोतवती पुण्यवती,
शतखनि रतनेर विधान
होक भारतेर जय
जय भारतेर जय—

वाचक—बंकिम यह गीत सुनकर कह उठे—

बंकिम—पदाक्रांत हिन्दू जाति निद्रा से जाग उठी है, उसका वीर कुण्डल स्पंदन कर रहा है, दैवक्रम मे वह उन्नति की ओर बढ रही है। मै स्पष्ट रूप से देख रहा हूँ कि यह जाति पुनः नवयौवन प्राप्त कर ज्ञान, धर्म और सभ्यता से उज्जवल होकर पृथ्वी को सुशोभित कर रही है। 'जय भारतेर जय'—राजनारायण बाबू की लेखनी पर पुष्पचन्दन की दृष्टि हो। यह महागीत सम्पूर्ण भारत के लिए राष्ट्रगीत बने। हिमालय की कन्दराएं गूंज उठें। गंगा-यमुना, सिन्धु, नर्मदा और गोदावरी के तटों पर स्थित प्रत्येक वृक्ष मर्मरित हो उठे। पूर्व पश्चिम के सागर के गम्भीर गर्जन से मन्द्रीभूत हो विंशतिकोटि भारतवासियो का हृदय तंत्र उसके साथ बजता रहे—"जय भारतेर जय"

वाचक—सन् १८७४ मे बंगाल में भीषण अकाल पडा और देशभक्त कवि का मन जननी की पीड़ा से मर्माहत हो उठा। आगे सन् १८७५ मे दुर्गा पूजा का उत्सव आरम्भ हुआ, अष्टमी की रात माता के समक्ष कीर्तन हो रहा था।

[कीर्तन सुन पडता है— ***"एसो एसो बन्धु, आध आंचरे बसो"***]

वाचक—और यह कीर्तन सुनते-सुनते बंकिम भाव राज्य मे खो गये।

उन्होंने देखा—

—दुर्गा की मूर्ति की पूजा हो रही है, ढाक ढोल बज रहे हैं, पुरोहित मंत्र पढ रहे है।

—एक खम्भे से टेक लगाये बंकिम खड़े एक टक मूर्ति की ओर देख रहे हैं। सामने एक विलायती चित्र है—

बंकिम—एसो एसो बंधु आध आंचरे बसौ—ऐसा लगता है कि मानों नील आकाश के नीचे नन्ही चिड़िया बन कर इस गीत को गाता रहूँ—उस विचित्र सृष्टि कुशल कवि की सृष्टि से देववंशी लेकर, मेघों से ऊपर शब्दहीन व्योम मे अकेला बैठकर गीत गाता रहूँ।

बंकिम—आह इस कविता के प्रत्येक अक्षर प्रत्येक पद में देश प्रेम की अभिव्यंजना है–प्रेम है–प्रेम का आधार है–देश जननी–माँ। लेकिन यह क्या हो रहा है–मै नाव मे बैठा वह कहाँ बहता जा रहा हूँ। अरे यहाँ तो कोई नही है–माँ माँ–आओ माँ–मेरी रक्षा करो–मै अकेला–भयभीत हो रहा हूँ–कहाँ हो माँ–किधर हो–(दुर्गा माता की प्रतिमा तीव्र आलोक से नहा उठती है। दूसरे ही क्षण प्रकाश मे चक्र नाचने लगते हैं और दुर्गा माता की प्रतिमा के स्थान पर भारत माता की प्रतिमा प्रगट होती है जो जल से आवृत है।)

बंकिम—पहचान गया—यही माँ है—यही मेरी जननी है—जन्म भूमि है। यही मृण्यमयी मृत्तिकारूपिणी अनन्त रत्न भूषिता है—दश भुजा—दस दिशा मे प्रसारित—नानाआयुध सम्पन्न—पदतल में शत्रु का मर्दन करने को वीरजन केसरी हुंकारता है—माँ आज तुम्हें नही देखूगा—कल भी नही देखूगा—काल स्रोत पार न होने पर नही देखूगा—देखूगा एक दिन दिगभुजा नाना प्रहरण प्रहारिणी—माँ को—सुवर्णमयी माँ। माँ यह पुष्पाजलि स्वीकार करो और—सर्वमगल मंगल्ये शिवे, मेरी सर्वार्थ साधिके, असख्य संतान कुल पालिके, धर्म अर्थ काम मोक्षदायिके—यह पुष्पाजलि ग्रहण करो, माँ—माँ यह अनन्त जल मण्डल त्याग करो—विश्वविमोहन रूप को एक बार जगत के समक्ष प्रगट करो। आओ मा घर में आओ, कोटि-कोटि सतान तुम्हारे चरण कमलो की पूजा करेंगे। माँ संतानो को शक्ति दो। आओ माँ घर मे आओ—तुम्हारी करोड़ो सतान है—तुम्हे चिन्ता किस बात की है ?

(भारत माता की मूर्ति लुप्त हो जाती है—और केवल जलराशि लहराती है)

बंकिम—किन्तु यह क्या हुआ—अनन्त कालसमुद्र मे प्रतिमा फिर डूब गयी—उठो माँ—अब हम सुसतान बनेंगे—सत्यपथ पर चलेगे—तुम्हारी प्रतिष्ठा स्थिर रक्खेगे—उठो माँ—देवी देवानुगृहीते।

—अब भूल नही होगी—हम मातृवत्सल होगे—दूसरो का मगल करेंगे। अधर्म, आलस्य, इन्द्रिय—भक्ति त्याग देगे—उठो मा—अकेला रो रहा हूँ—रोते रोते अंधा हो जा रहा हू—उठो—उठो माँ।

(विह्वल होकर चुप हो जाते हैं)

(कुछ क्षणों बाद)

बंकिम—माँ—नहीं उठतीं—अब क्या कभी नही उठोगी। आओ—मेरे भाइयो आओ—आज हम इस अंधकार रूपी कालस्रोत में कूद पड़ें—आओ अपने द्वादश करोड़ हाथों से माँ को उठायें—मस्तक पर लाद कर घर लायें—डरते हो—अरे अंधेरे से क्या डरना—वहाँ तो मां है—तब डर क्या ? तारा मण्डल हमारा पथ निदेश करेगा—चलो चलें—असंख्य हाथों से काल समुद्र को हटा कर, मथ कर, उसका सन्तरण करें—स्वर्ण प्रतिमा को सिर पर उठा लायें। डर किस बात का है ? बहुत होगा तो डूब जायेंगे। मातृहीन के लिए जीवन मे काम ही क्या है—आओ माँ की प्रतिमा उठा लायें—पूजा की धूम मचायें—***द्वेष के छाग की सत्कीर्ति के खड्ग से माँ के समक्ष बलि चढायें***। ढोल नगाड़े बजाकर आकाश को कंपा दो। ढोल, काडा, झाझ, मृदग पर मा की जयकार गूजाओ—शहनाइयो को 'कत नाचगो' गाने दो—धूम मचाओ वह देखो कितने ही देशी विदेशी भद्रलोग माँ के चरणो मे भेंट चढा रहे है—मगलगान जगे है—भक्त माँ, माँ, पुकार रहे हैं।

(नेपथ्य से—समवेत स्वर मे गान आरम्भ होता है—

"जय जय जय जय जगद्धात्री"

और मच पर से वदेमातरम् ध्वज लिए एक जलूस गुजरता है—विमल प्रकाश मे पुनः दुर्गा विग्रह प्रगट होता है।)

वाचक—दुर्गाष्टमी की रात्रि मे यह मातृदर्शन कर बंकिम विकल हो गये। वे मां की शोध करते रहे—फिर एक दिन——

बंकिम—माँ यह क्या हो रहा है—गाढ़त्तर अधकार से चारों दिशाएं भर गयी हैं—आकाश—धरती—नगर—मंदिर—पथ सब अंधकार मे डूब गये है। मैं अपनी आखों से सब कुछ देख रहा हूं, आसमान मे मेघ गरज रहे है—सोपान उतरती राजलक्ष्मी पानी में उतर रही है अंधकार में निर्वाणान्मुख आलोक—बिन्दुवत पानी में क्रमशः वह तेज पुंज विलीन हो रहा है—माँ—माँ—गंगा के अतल जल में तुम डूब गयी क्या—माँ—मेरी देश लक्ष्मी, तुम कहाँ गयी ?

(सहसा बिजली चमकती है और भारत माता आशीर्वाद मुद्रा में प्रगट होती हैं। बंकिम घुटने के बल बैठकर उन्हें प्रणाम करते हैं और मंत्रोच्चार होता है—

पीछे श्वेत पट पर देश की सुजला सुफला छबियां प्रगट होती हैं।)

काव्यपाठ— वन्देमातरम्

सुजला–सुफला–मलयज शीतला–शस्य श्यामलां–मातरम्
शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम्
फुल्लकुसुमित–द्रुम दल शोभिनीम्
सुहासिनी सुमधुर भाषणीम्
सुखदां–वरदां–मातरम्

(हजारों उठे हुए हाथ दिखते हैं)

सप्तकोटि कण्ठ कल कल निनाद कराले
द्विसप्त कोटि मुजै धृत खरकर वाले
अवला कैन मा एत् बले
वहुबल धारिणीं नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणी मातरम्
तुमि विद्या, तुमि धर्म्म, तुमि हृदि, तुमि मर्म्म,
त्वहि प्राणाः शरीरे,
वाहुते तुमि माँ शक्ति, हृदये तुमि माँ भक्ति
तोमारइ प्रतिमा गड़ि मन्दिरे मन्दिरे।
त्वंहि दुर्गादश प्रहरण–धारिणी,
कमला कमल–दल–विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी, नमामित्वां
नमामि कमलां अमला अतुलां
सुजलां सुफलां मातरम्–वन्देमातरम्
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणी भरणीं मातरम्॥

(आलोक तीव्र होकर लुप्त हो जाता है)

वाचक 9—मत्र का जन्म हुआ, मातृस्तवन हुआ और देश में देशभक्ति की, स्वातत्र्य की ज्योति जगी–शत वर्षपरे आज हम देख रहे हैं–मत्र का प्रभाव–माँ पुनः स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान हैं–किन्तु सन्तान तंद्रालस मे पूजा अर्चना भूलती जा रही है—अब वन्देमातरम् का जय घोष नही होता, माँ पुनः काल सागर मे डूबने को विकल प्रतीत होती है।

वाचक २—नही, जागो मेरे भाई–आबाल वृद्ध वनिता सब एक स्वर से 'वन्देमातरम्' कहो, कानन–ग्राम–नगर को 'वन्देमातरम्' से प्रतिध्वनित करो, नदी–सागर की लहरों और गिरिश्रृंगों से एक ही नाद मुखरित हो–'वन्देमातरम्'

शब्दगुणमय अन्तरिक्ष को 'वन्देमातरम्' नाद से विकंपित करो–देश माँ का–मातृभूमि जननी जन्मभूमि का स्तवन करो–'वन्देमातरम्'।

(भारत माता आशीर्वाद मुद्रा में प्रकट होती हैं और फिर तीव्र प्रकाश क्रमशः क्षीण होकर लुप्त हो जाता है। इस बीच निरन्तर वन्देमातरम् का घोष होता रहता है।)

---

* विज्ञानमय वन्देमातरम् *

पंचभूत विनिर्मित—सुजलां (जल) सुफला (क्षिति) मलयज शीतलां (समीर), शस्यश्यामलां (प्राण, पावक) शुभ्रज्योतन्ना पुलकित यामिनीम् (गगन) शरीर—[फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्]—जीवन मे साधना के पुष्पों से श्रृंगार, [सुहासिनी]—विहँस उठता है, फिर [सुमधुर भाषिणीम्]—वाक्शक्ति प्राप्त कर वह [सुखदा]—आनंद और [वरदां]—मनोवांछित वर प्राप्त करता है। यह सब माँ की कृपा से प्राप्त होता है अतः माँ को प्रणाम, वन्देमातरम्।

—:●:—

श्री भारतमाता – मन्दिर

— स्व0 बाबू शिवप्रसाद गुप्त —

ओ३म्

वन्दे मातरम्

भारतमाता के उठावदार मानचित्र की कल्पना सयोगवश हृदय में उत्पन्न हुई। संवत् १९७० वैक्रम के जाड़े मे कराची कांग्रेस से लौटते हुए मुंबई जाने का अवसर मिला। वहाँ से पूना जाना हुआ। वहाँ श्रीमान् धोंडो केशव करवे का विधवाश्रम देखने गया। आश्रम मे जमीन पर भारत का एक मानचित्र बना हुआ देखा। था तो वह मिट्टी का ही पर उसमे पहाड़ और नदियाँ ऊँची नीची बनी थी। बड़ा सुन्दर लगा। इच्छा हुई कि ऐसा ही एक मानचित काशी मे भी बनाया जाय। यह केवल एक सस्कार था जो सम्भवत. कुछ दिन मे मिट जाता। पर संयोगवश इसके बाद विदेशयात्रा करनी पड़ी। लदिन के ब्रिटिश म्युजियम में इस प्रकार के अनेक छोटे वड़े मानचित्र देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह भी एक संयोग था पर इससे पूर्व का संस्कार और भी गम्भीर हो गया। इसे लेकर घर लौटा। भारत का सुन्दर उठावदार मानचित्र बनाने की इच्छा प्रबल हो रही थी। गुरुजनों और मित्रों से परामर्श किया। परामर्श और विचार के बाद यह बात चित्त में बैठ गयी कि मानचित्र संगमरमर का हो तो उत्तम, क्योकि वह अधिक टिकाऊ और अधिक सुन्दर और जननी जन्मभूमि के लिये अधिक उपयुक्त भी होगा। इस निश्चय के बाद कलाकार और शिल्पी की खोज होने लगी। वहुत यत्न के बाद काशी-निवासी श्री दुर्गाप्रसाद जी ने यह भार उठाया और बड़े परिश्रम तथा बड़ी योग्यता से निबाहा। इसके बाद संवत् १९७५ में कार्यारम्भ हुआ और ५–६ वर्ष के परिश्रम में समाप्त भी हो गया। पर अनेक बाधा विघ्नों के कारण, जिन पर मनुष्यों का कुछ बस नही, अब तक सर्वसाधारण के लिये मातृमूर्ति का दर्शन सम्भव न हो सका।

भारतमाता का यह सुन्दर भू-चित्र मगमरमर का बना है। इसका परिमाण अर्थात् लम्बाई और चौडाई ३१ फुट २ इन्च और ३० फुट २ इन्च है। इसे बनाने मे ११×११ इन्च के सात सौ बासठ टुकड़े और कुछ और छोटे मोटे टुकड़े काम मे लाये गये हैं। भारत-भूमि की प्राकृतिक ऊँचाई और नीचाई आदि पर दृष्टि रखते हुए ये टुकडे बडी सावधानता और शुद्धता से काट-छाँट कर प्रस्तुत किये गये हैं। इस मानचित्र मे उत्तर में पामीर पर्वत शिखरों से लेकर दक्षिण में लङ्का वा सिंहलद्वीप के दक्षिणी छोर डुवुन्डुर तुडुव (डन्ड्रा) तक और पूर्व मे मौलमीन तथा चीन की प्रसिद्ध प्राचीन दीवार कहकहा से लेकर पश्चिम मे हेरात तक का समस्त भूभाग दिखाया गया है। भारतवर्ष के साथ ही इसके समीपवर्त्ती प्रदेश—अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान, भोट (तिब्बत), ब्रह्मदेश (वर्मा) लङ्का (सिंहल) और मलाया प्रायद्वीप का अधिकांश भी दिखाया गया है।

इस मानचित्र में धरातल भूमि एक इन्च में ६·४ मील दिखाई गयी है। इसका अर्थ यह हुआ कि मानचित्र की एक इन्च की लम्बाई प्रकृत भूमि कि ६ मील ७ सौ ४ गज (१ गज=३ फुट) के बराबर समझनी चाहिये। भिन्न भिन्न स्थलों की ऊँचाई दिखाने के लिये यह मान

लगभग सत्रहगुना बढ़ा कर लिया गया है अर्थात् पहाड़ आदि की ऊँचाई एक इञ्च मे दो हजार फुट दिखाई गयी है। हिमालय पर्वत का सर्वोच्च शिखर एवरेस्ट (गौरीशंकर) संगमरमर के एक ही टुकड़े को काटकर पौने पन्द्रह इञ्च ऊँचा बनाया गया है। इसकी वास्तविक ऊँचाई, नवीन वैज्ञानिक गणना के अनुसार, उनतीस हजार फुट से कुछ अधिक यानी लगभग साढ़े पांच मोल है।

इस मानचित्र के वर्ग से हमारी मातृभूमि वस्तुतः ४ चार लाख पाँच हजार पाँच सौ गुना बड़ी। इतने विस्तृत और वैचित्र्यपूर्ण भूभाग का अत्यन्त शुद्ध मानचित्र बनाना कितना कठिन और श्रमसाध्य कार्य है, इसका अनुमान प्रत्येक विद्वान् और कलाविद् दर्शक कर सकता है। फिर भी इस बात का प्रयत्न करने मे कोई बात उठा नही रखी गयी है कि भारतखण्ड के पर्वतीय भागो पहाड़ियो और ऊँचे मैदानों की समुद्र-पृष्ठ से ऊँचाई बिलकुल ठीक हो। दर्शकों की सुविधा के लिये समुद्र-पृष्ठ से पाँच सौ, एक हजार, दो हजार, तीन हजार, छ हजार, दस हजार, पन्द्रह हजार, बीस हजार, पचीस हजार और उनतीस हजार पाँच सौ फुट की ऊँचाइयाँ, शीघ्र ध्यान आकृष्ट करने वाली रेखाओं द्वारा, स्पष्ट कर दी गयी हैं। इनकी सहायता से किसी स्थान की समुद्र-पृष्ठ से ऊँचाई का अनुमान करना सहज हो गया है।

इस मानचित्र में समस्त गिरि-पर्वत उनके विचित्र प्रकार के ऊँचे नीचे शिखरों के साथ दिखाये गये हैं। पहाड़ी दर्रे और घाटियाँ भी अपनी सच्ची गहराई इस चित्र मे दिखा रही हैं। सुविशाल हिमालय के चार सौ अधिक शिखर उनके ठीक स्थानों पर इस तरह दिखाये गये है कि देखते ही उनकी ऊँचाई का भी ज्ञान हो जाता है। प्राचीन और अर्वाचीन भारतीय आख्यायिकाओं में सुप्रसिद्ध कैलास पर्वत—जो प्रायः तीन सौ मील लम्बी और डेढ सौ मील चौड़ी, सदा बर्फ से ढकी संसार की सबसे बड़ी पर्वत-श्रेणी है—अपने भव्य शिखरो और हिमानियों (ग्लेसियरों) के साथ दिखाया गया है। सारांश यह कि मानचित्र को भारतभूमि को सच्ची मूर्ति बनाने में कलाकार और शिल्पी ने अपनी ओर से कोई बात उठा नही रखी है।

भूखण्डों की ऊँचाई की तरह भारत वर्ष की सब प्रधान और सहायक नदियो के टेढ़े मेढ़े सर्पगतिसम मार्गो को भी बडी सावधानी से यथासम्भव ठीक ठीक दिखाने का पूर्ण यत्न किया गया है। केवल मार्ग ही नही, वरंच नदियों की चौड़ाई और गहराई भी दर्शकों पर अनायास प्रकट करने में कोई आयास उठा नहीं रखा गया है। इसे देखने से समस्त प्रधान नदियों के उद्गम-स्थलो का—स्रोतो का ज्ञान भी सहज हो जाता है। नदियो की भाँति मुख्य मुख्य भीलों का प्रदर्शन भी, उनके ठीक ठीक स्थानों पर, किया गया है। ऐसा करते समय उनके आकार और गहराई का भी ध्यान पूर्णतया रखा गया है। कारीगर ने जो कुशलता गिरि-पर्वतो का दैर्घ्य और आरोह दिखाने मे दिखायी है वही नद-नदियों और भील सरोवरों की गति, गम्भीरता और चौड़ाई प्रकट करने में भी दिखायी है।

भूमापन (पैमाइश) करने वाले भारतीय विभाग ने अपनी भूमिति (माप) के आधार पर भारतभूमि का जो नया नक्शा बनाया है, उसी के आधार पर इस मानचित्र मे विविध स्थल ऊँचे नीचे काटे गये है और ऊँचाई प्रकट करने के लिये, इसी नक्शे के आधार पर, एक इञ्च को दो हजार फुट के बराबर मान लिया गया है। भूमिति करने वाले वे पुरुष धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने अति परिश्रम से भारत का ऐसा पूर्ण और विशुद्ध भौगोलिक चित्र प्रस्तुत किया जो इस पूर्णाङ्ग और नयनाभिराम प्रस्तरमूर्तिका आधार बना।

इस प्रस्तर-निर्मित भव्य भूचित्र में प्रख्यात नगरों, इतिहास-प्रसिद्ध स्थानों, तीर्थों, नदियो, पर्वतों एवं गिरिवर्त्मों के नाम, उनकी लम्बाई, चौचाई, ऊँचाई, गहराई आदि अभिव्यक्त करते हुए खोदे गये है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की विश्वसभा (कोर्ट) और शिष्ट-समिति (कौंसिल) के समय श्री दुर्गाप्रसाद जी बी० ए० विज्ञानकला-विशारदने—जो कलाप्रेमी और मुद्राभिज्ञान-शास्त्र मे निष्णात पुरुष है—अपने निरीक्षण

में काशी के ही पटु शिल्पियों से यह मानचित्र बनवाया है। सङ्गतराशों को इस विषय मे दक्ष और अभ्यस्त करने मे भी आपको विशेष परिश्रम करना पड़ा है। भारतवर्ष के विविध भूखण्डो की बिलकुल ठीक उँचाई प्रकट करने के लिये पहले उनके छोटे छोटे चित्र बनाने पड़े और वाद मे, उन चित्रों के आधार पर, सगमरमर के वर्गाकार सात सौ बासठ टुकड़े ठीक अनुपात में काटे और गढ़े गये। ये ही प्रस्तरखण्ड इस मानचित्र के अंग-प्रत्यङ्ग हैं। इन खण्डों को काटने, गढने और जोड़ने में बीस कारीगर सतत पाँच वर्ष तक कार्य करते रहे।

भारतमाता की इस मूर्ति के लिये एक सुरम्य उद्यान मे विशाल मन्दिर बनाया गया है—जो अभी पूर्ण नही हुआ है—जहां भारतोपान्तवर्ती सागर भी, उसकी अल्पाधिक गम्भीरता या गहराई के साथ, दिखाया गया है।

भावनामय मनुष्य किसी भावना से प्रेरित होकर कोई कार्य कर जाता है। उसकी उपयोगिता का अनुभव आने वाली पीढ़ियाँ ही करती है। फिर भी कहा जा सकता है कि लोक-शिक्षण की दृष्टि से यह भू-चित्र विद्यार्थियो और अध्यापकों तथा भारतीय संस्कृति के क्षेत्र में गवेपणा करने वाले विद्वानों के लिये उपयोगी होगा।

इसकी सहायता से भारत के भूगोल, भूतल-निर्माण, भूगर्भशास्त्र तथा और अनेक विषयो पर सर्वसाधारण के लिये उपयोगी सरल व्याख्यानों एवं शिक्षासंस्थाओ के विद्यार्थियों के लिये विशेष लाभप्रद सुवोध व्याख्यानों का आयोजन सरलता से किया जा सकेगा।

भारत के वायु-विज्ञान के सम्बन्ध मे भी इससे वहुत कुछ सहायता मिल सकती है और इसके आधार पर भारतीय मीटिरियालौजी वा अन्तरिक्ष-विज्ञान की शिक्षा देना भी सम्भवत सहज होगा।

भारतीय संस्कृति के कारण और विकास तथा उसके विशेष-विशेष तत्वों का रहस्य समझने समझाने मे भी यह सहायक होगा, ऐसी आशा की जा सकती है।

सम्भव यह भी है कि यह सब कल्पना ही कल्पना हो— अपनी कृति के प्रति मनुष्य का जो सहज स्नेह होता है उसी का द्योतक हो। मूर्ति कैसी हुई है और उसकी उपयोगिता क्या है, इसका निर्णय तो विद्वान् कलाकार और मर्मज्ञ पुरुषों पर ही छोड़ना उचित होगा। एक दुर्बल पर भावुक हृदय की यह एक कल्पना है जो आज आपके सम्मुख है। आशा यही है कि कुछ सम-स्वभाव और सहधर्मी हृदय इसे देख देखकर प्रसन्न होते ही रहेंगे।

अन्त में निवेदन केवल यह करना है कि जिस मन्दिर मे माता की मूर्ति स्थापित है उसका शिलान्यास २४ लक्ष गायत्री पुरश्चरण के उपरान्त वासन्ती नवरात्रि के प्रथम दिन—चैत्रशुक्ला प्रतिपत् रविवार संवत् १९८४ वि० चाद्र, और २० चैत्र संवत् १९८३ वि० को— श्री भगवान्दास जी के करकमलो द्वारा हुआ था। प्रथम दर्शन के उपलक्ष्य मे चारो वेदो के चार-चार पाठ होकर पूर्णाहुति महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गान्धी के करपात्र से महानवमी (आश्विनशुक्ला ९) सं० १९९३ को हुई। सर्वसाधारण के दर्शनार्थ पाटोद्घाटन संवत् १९९३ की विजयादशमी के शुभ दिन उन्ही के पुनीत हस्तों से हुआ।

ॐ तत् सत् ब्रह्मार्पणमस्तु।



वैदिक राष्ट्र गान

आब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्
आराष्ट्रे राजनय: शूर इषव्योऽतिव्याधीमहारथो जायताम् ।
दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशु सप्ति:पुरन्धिर्योषा
जिष्णूरथेष्ठा सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् ।
निकामे निकामेनः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् ।
योगक्षेमोन कल्पताम् ॥

(यजुः सं० २२।२२)

(राष्ट्र मे विश्वभावन ब्राह्मण ब्रह्मतेज से सम्पन्न हो, क्षत्रिय शूर वीर धनुर्धर हों, रोगमुक्त महारथी हों। गौयें मधुर दुग्ध धार बहाये, वृषभ बलवान हो भारी बोझ उठायें, अश्व आशुगामी हो। स्त्रियाँ सती सुन्दरी सयानी शोभामयी हो, रथी विजयशील हो। युवक सम्य, सुशिक्षित, सौम्य, सरल, सुविचारी निर्भय वीर हो। घन समय से रस बरसायें, अन्न, औषधि, फल स्वयं पक जायें, हमारा योगक्षेम स्वतः सिद्ध हो)

मातृ भू वंदना

— राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त —

क्षमामयी तू दयामयी है, क्षेममयी है
सुधामयी, वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है
विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुखहर्त्री है
भय निवारिणी, शांतिकारिणी, सुखकर्त्री है

हे शरणदायिनी देवि, तू करती सबका त्राण है,
हे मातृभूमि। संतान हम तू जननी, तू प्राण है।

—वंदेमातरम्—

हे प्राचीन भारत भूमि। हे मानवजाति की पालन करने वाली। हे पूजनीया। हे पौषण दात्री। तुझे नमस्कार है। शताब्दियों से चलने वाले पाशविक अत्याचार आजतक तुझे नष्ट नही कर सके। तेरा स्वागत है। हे श्रद्धा, प्रेम, कला और विज्ञान की जन्मदात्री तुझे नमस्कार है।

—एम० लुई० जेक्रोलियट



भारतभूमातृस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नम. ॥ वन्दे मातरमव्यक्तां व्यक्तां च जननी पराम् ॥ दीनोऽहं बालकः काक्षे सेवां जन्मनि ॥१॥ सागरालिगितां लक्ष्मीं जगज्जनककन्यकाम् ॥ स्थितां हिमनगस्याके पार्वतीमपरां भजे ॥२॥ शुभ्रं धर्मध्वजं मातुः किवा राशीकृत यशः ॥ रौप्यंवा मुकुटं दिव्यं वन्देऽहं तं हिमालयम् ॥३॥ जाह्नवीयमुनासिधु ब्रह्मपुत्राशतद्रुभिः ॥ मू देवी पञ्चधाराभि' सतत साऽभिषिचति ॥४॥ नगाधिप धारयंती मस्तके रत्नमद्वयम् ॥ काश्मीरं च ललाटे भ्रूमध्ये नेपालिकां शुभाम् ॥५॥ नर्मदातापती विंध्यसप्तपीठकमेखलाम् ॥ पूर्वापराचलोरू च मलयं पादपीठके ॥ मध्यदेशोदरे गुप्तानक्षयान् धनसञ्चयान् ॥६॥ असुराणां पुरी लंका दासी यच्चरणयो. कृता ॥ तां देवी भारती व्रन्देमातर विश्वपूजिताम् ॥७॥ द्रष्टारश्चोपनिषदां गीताशास्त्रप्रवर्ततकः ॥ षडदर्शनप्रवक्ता च भगवान्पाणिनिर्मुनि. ॥८॥ वाल्मीकिश्च तथा व्यास. कालिदासो महाकवि' ॥ आर्यभट्टश्च भरत शकरोऽद्वैतकेसरी ॥९॥ भीष्मरामार्जुना वीरा नृपौ रामयुधिष्ठिरौ ॥ सावित्री द्रौपदी सीता दमयती च तारका ॥१०॥ महार्घान्यद्वितीयानि रत्नान्येतानि भूतले ॥ जननी भारती तेषां रत्नगर्भा कथं न सा ॥११॥ वसुन्धरारत्नगर्भा रसा विश्वंभराक्षमा ॥ सर्वसहा स्थिरा चैव भारती मसुकन्यका ॥१२॥ रत्नाकरः स्वय भक्त्या मुक्तोपायनपूर्वकम् ॥ चरणान्क्षालयत्यस्या अतद्रश्च दिवानिशम् ॥१३॥ कैलासद्वारकाधीशौ रामेश्वरपुरीश्वरौ ॥ द्वारपाला बभूवुश्च सौभाग्यं मातुरद्भूतम् ॥१४॥ पोषयन्ति सदा मातु पर्वतस्तनमडलात् ॥ निःसृताश्च पयोधाराः संततीना परंपराः ॥१५॥ पुत्रवत्सलता मातुरगाधा हरिणा स्वयम् ॥ अवतीर्योदरे सोढ गर्भदुःखं पुन पुन. ॥१६॥ मरणे जन्मकाले च मुमूर्षुर्नवबालकः ॥ त्वदंके चैव सशेते अहो वत्सलता तव ॥१७॥ पद्मालया त्वमेवासि त्वमेव च सरस्वती ॥ अन्नपूर्णा त्वमेवासि त्वमेव च शिवा सती ॥१८॥ त्वद्वृक्षाः कल्पवृक्षाश्च चिन्तामणिशिलाः शिला ॥ त्वद्वनं नंदन साक्षात्साक्षात्त्वं स्वर्गदेवता ॥१९॥ प्रतिजन्मनि मे चित्त वित्त देहश्च सतति ॥ त्वत्सेवानिरता भूयुर्मातः त्व करुणामयी ॥२०॥ न मे वांछाऽस्ति यशसि विद्वत्त्वे न च वा सुखे ॥ प्रभुत्वे नैव वा स्वर्गे मोक्षेऽप्यानंददायके ॥२१॥ पर च भारते जन्म मानवस्य च वा पशो ॥ विहगस्य च वा जन्तोवृक्षपाषाणयोरपि ॥२२॥ निरन्तरं भवतु मे मातृसेवांशभाग्यभाक् ॥ एषैव वांछा हृदय साक्षी सर्वात्मकः प्रभुः ॥२३॥

(बृहत्स्तोत्र रत्नाकर से)



वन्देमातरम् अनुवाद

हैल टू दी मदर

मदर आई बाउ टु दी !
रिच विथ दाइ हरीइंग स्ट्रीम्स
ब्राइट विथ दाइ ऑःचड ग्लीम्स्
कूल विथ दाइ विंडस् ऑफ डिलाइट
डार्क फील्डस वेविंग, मदर ऑफ माइट
मदर फ्री,
ग्लोरी ऑफ मूनलाइट ड्रीम्स
ओवर दाइ ब्राचेज् ऐंड लार्डली स्ट्रीम्स,
क्लैड इन दाइ ब्लासिमिग ट्रीज
मदर गिवर आफ ईज,
लाफिंग लो एण्ड स्वीट
मदर आइ किस दाइ फीट,
स्पीक्स् स्वीट ऐण्ड लो।
मदर टु दी आइ बाउ
हू हैथ सेड दाउ आर्ट वीक इन दाई लैंडस्
व्हेन द सोर्डस फ्लैश आउट इन ट्वाइस सेवेन्टी मिलियन हैंडस्
ऐण्ड सेवेंटी मिलियन वायसेज रोर
दाइ ड्रेडफुल नेम, फ्राम शोर टु शोर
विथ मेनी स्ट्रेंथस हू आर माइटी ऐण्ड स्टोर्ड,
टु दी आइ काल, मदर ऐण्ड लार्ड
दाउ हू सेवेस्ट एराइज ऐण्ड सेव
टु हर आइ क्राइ हू एवर हर फौरमैन ड्रेव
बैक फ्राम प्लेन ऐण्ड सी
ऐण्ड शूक हर सेल्फ फ्री
दाउ आर्ट विसडम, दाउ आर्ट लॉ
दाउ अवर हार्ट, अवर सोल, अवरब्रेथ
दाउ द लव डिवाइन, द ऑ
इन अवर हार्ट दैट क्वांकर्स डेथ
दाइन द स्ट्रैंथ दैट नर्वस् द आर्म
दाइन द ब्यूटी, दाइन द चार्म
एवरी इमेज मेड डिवाइन

इन अवर टेम्पल इज़ बट दाइन
दाउ आर्ट दुर्गा, लेडी ऐंड क्वीन
विथ हर हैंड्स, दैट स्ट्राइक ऐंड हर सोर्ड्स ऑफ़ शीन
दाउ आर्ट लक्ष्मी लोटस-थ्रोन्ड
ऐंड द म्यूज़ ए हंड्रेड टोन्ड
प्योर ऐंड पर्फ़ेक्ट विथाउट पीयर
मदर, लेंड दाईन ईयर
रिच विथ दाइ हरीइंग स्ट्रीम्स्
ब्राइट विथ दाइ ऑर्चड ग्लीम्स
डार्क ऑफ़ हर, ओ कैंडिड फेयर
इन दाइ सोल, विथ ज्युवेल्ड हेयर
ऐंड दाइ ग्लोरियस स्माइल डिवाइन
लवलियेस्ट आफ आल अर्थली लैंड्स
शावरिंग वेल्थ फ्राम वेल स्टोर्ड हैंड्स
मदर, मदर माइन
मदर स्वीट, आइ बाउ टु दी
मदर ग्रेट ऐंड फ्री

— श्री अरविन्द —



ओबेसन्स टु दी मदर,
स्वीट इज दाइ वाटर, स्वीट आर दाई फ्रूट्स,
कूल इज द सैंडल सेंटेड ब्रीज फ्राम द साउथ,
ग्रीन आर द कार्न फील्ड्स् मदर
ग्लैडेण्ड आर दाइ नाइट्स बाई द ह्वाइट मूनलाइट
डेक्ड आर्ट दाउ बाई द ट्रीज विथ फ्लावर्स
स्वीट स्माईलिंग, स्वीट स्पोकेन
बिस्टोवर आफ हैपिनेस ऐंड बून्स, मदर
टेरिबुल विथ द शाउट्स, राईजिंग फ्राम सेविन्टी मिलीयन थ्रोट्स
ट्वाइस सेविन्टी मिलीयन हैंड्स आमर्ड ऐंड विथ एज्ड मोऽडस्
ह्वाई डू दे काल दी फीबल, मदर
पजेस्ड आफ माइटी स्ट्रैंथ सेवियार, आइ बाउ टु दी

— एन० एन० दत्ता —

मदर टु दी आइ बाउ
रिच विथ फाइन स्ट्रीम्स ऐंड फ्रूटस् आर्ट दाउ
कूल ब्रीजेज, कार्न फील्डस ग्रीन आर दाइन
मदर माइन

— राम शर्मा —

माई मदर लैंड आई सिंग
हर स्प्लेंडिड स्ट्रीम्स् हर ग्लोरियस ट्रीज़्
द जेफिर फ्राम द फार ऑफ विध्यन हाइट्स
हर फील्ड आफ वेविंग कार्न
द रैप्चरस रेडियैंस ऑफ हर मून लिट नाइट्स
द ट्रीज ऐंड फ्लावर्स दैट फ्लेम ए फार
द स्माइलिंग डेज दैट स्वीटली वोकल आर
द हैपी ब्लेसेड मदर लैण्ड

— डबल्यू० एच० ली०, आई० सी० एस० —

हैल मदर
स्वीट दाइ वाटर, स्वीट दाइ फ्रूट
कूल ब्लोज द सेंटेड साउथ विंड
ग्रीनवेव्स दाइ कार्न - मदर

— स्टेट्समैन, (अक्टूबर २६, १६०५) —

दाउ विथ स्वीट स्प्रिम्स फ्लोइंग
दाउ फेयर फ्रूट्स बेस्टोइंग
कूल विथ जेफिर्स ब्लोइंग
ग्रीन विथ कार्न टाप्स ग्रोइंग
मदर हैल

— इंडियन रिव्यू, (जनवरी १६०६) —

मदर, ओ ! दाइ ग्लोरी सिंगिंग
वाटर्स फ्लोइंग, क्राप्स एबाउंडिंग
फार फ्राम हिल्स कूल जेफिर ब्लोइंग
वेवी फील्ड्स विथ ग्रीन कार्न राइपेनिंग
मदर ।

— हिंदू पेट्रियाट, (मार्च १६०६) —

मादरेवतन, हम तुझे सलाम करते हैं

— सीमाव अकवराबादी —

"वंदेमातरम् एनपों एंगला मानिन तायै वणङ्गुतु एनपो"

—सुब्रह्यण्यम् भारती (तमिल भाषा में)

"तुला वंदु माते
तुझे गीत गाऊँ"

— ज० गं० करंदीकर (मराठी भाषा में)

सलाम, ऐ मादरेवतन सलाम,
ओ पुरअवेहयात, पुरसमर, तरोताज: संदली हवावाली, फस्ले अख्जर,
खुशगवार पुरनूरच्वेमाह, पुरबहार सरसब्ज, खंदहजन, शीरी गुफ्तार,
पुरसुकून, नेमतबख्श मां तुझे सलाम !

ओ माँ, तेरे करोडों बेटे बलंदी से आवाज देते हैं, उनके करोडो हाथो मे
शम्शीरे आवदार हैं, तब कौन कहता है कि तूं नाचार है ? आ पुरताकत
नाखुदा, ओ दुश्मनों को नेस्तोनाबूद करने वाली, माँ तुझे सलाम !

ओ माँ, तूही इल्म है, तूंही मजहब है, तूही दिल है, तूही गैबदां है, तूही
बदन मे रूह है, बाजुओं में तू कुव्वत है, दिल में तू परस्तारी है,
हर सनमखाने मे तेरे ही बुत पैवस्त हैं;

तूंही दस हाथों से हिफाजत करने वाली दुर्गा है, तूही गुलेकमल पर
बैठी दौलत की देवी कमला है, तूही इल्मो महारत की देवी वानी है
तुझे हम सलाम पेश करते हैं।

सलाम ओ बेऐब, बेमिसाल दौलत की देवी, तुझे सलाम
पुरआव, पुरसमर, ऐ मादरेवतन सलाम।

सरसब्ज मुस्तकीम खंदलब मुरस्सानिगार जीनते बज्म
ओ सरजमी पर्वरिशगाह, ऐ मादरे वतन सलाम।

— भानु —

वन्दौ मात तुम्हैं ।
स्वच्छ मधुर जल भरे जलाशय, हरियाली लहलहात ।
चाँद उजास छिटिक चहुँओरा, कुसुमित कानन अधिक सोहात ॥

हिन्दी प्रदीप (१६०६)



पानी की कुछ कमी नही है, हरियाली लहराती है ।
फल औ फूल बहुत होते हैं, रात रात छवि छाती है ॥
मलयानिल मृदु मृदु बहती है, शीतलता अधिकाती है ।
सुखदायिनी, वरदायिनी तेरी, मूर्ति मुझे अति भाती है ॥

वन्देमातरम् !

तीस कोटि लोगों की कल कल सुनी जहाँ पर जाती है ।
उसकी दुगुन खड्गधारा की द्युति विकाश जहँ पाती है ॥
तिस पर भी 'तू अबला है', यह बात व्यथा उपजाती है ।
हे तारिनि ! हे बहुबलधारिनि ! रिपु तू काट गिराती है ॥

वन्देमातरम् !

तू ही धर्म, कर्म भी तूही, तूही विद्यावानी है ।
तूही हृदय, प्राण भी तूही, तूही गुण गण खानी है ॥
बाहुशक्ति तूही मम, तेरी भक्ति महामन मानी है ।
प्रति घट, प्रति मन्दिर के भीतर तूही सदा समानी है ॥

वन्देमातरम् !

हे दुर्गे ! दस भुजा तुम्हारी दुर्गति नाश निशानी है ।
हे कमले ! हे अमले ! अचले ! तू सब सुख की खानी है ॥
नहीं एक भी भारत खण्ड में ऐसा पापी प्रानी है ।
कहै न जो नित 'यही हमारी महामहिम महरानी है' ॥

वन्देमातरम् !

—: *आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी* :—

मातृ वन्दनम्

महाकवि वल्लत्तोल्

[मूल]

वंदिप्पिन् माताविन, वंदिप्पिम् माताविन,
वंदिप्पिन् वरेण्ययँ, वंदिप्पिन् वरदय।
ऐँत्रयुं तपश्शक्ति पूण्ट जामदग्न्ययन्नु.
सत्राजित्तिनु पण्टु सहस्रकरन् पोलँ.
पश्चिमरत्नाकर प्रीतियाल्दानं चॅय्त
विश्वंकमहारत्नमल्लि नम्मुटॅ राज्यं ?
पच्चया विरिप्पिट्ट सह्यनिल्त्तलवच्चु,
स्वच्छाब्धिमणल्त्तिट्टां पादोपधान पूण्टु
पल्लिकॉण्टीटुन्न निन् पार्श्वयुग्मत्तक्कात्तु–
कॉल्लुन्नू, कुमारियुं गोकर्णेशनुमम्मे।
वदिप्पिन् माताविनँ वंदिप्पिन् माताविनँ.
वदिप्पिनुपास्यरायुल्लोर्क्कुमुपास्ययँ।

[हिन्दी अनुवाद]

माता की वंदना करो, माता की वंदना करो,
जो श्रेष्ठ है उनकी वंदना करो,
जो वर देनेवाली हैं उनकी वंदना करो।
जैसे प्राचीनकाल मे आदित्यदेव ने सत्राजित को वर दिया था,
वैसे ही पश्चिम रत्नाकर का ओजस्वी तपस्वी जामदग्न्य को
प्रतिदान किया हुआ यह हमारा देश विश्वैक महारत्न है न ?

हरी चादर ओढ़े सह्याद्रि में सिर रखती हुई
स्वस्छ रेती का पादोपधान लिए हुए विराजने वाली
हे माता, कन्याकुमारी और गोकर्णेश दोनो तुम्हारे
पार्श्वयुग्म की रक्षा करते हैं।
माता की वंदना करो, माता की वंदना करो,
उनकी वंदना करो जो उपास्यों की भी उपास्य हैं।

अवर इंड

गॉड सेव अवर इंड
गॉड सेव अवर मदरलैंड
गॉड ब्लैस अवर मच बिलवैड लैंड—गॉड सेव
सिग ऑफ हर स्टोरी ओल्ड
सिज ऑफ हर हीरोज बोल्ड
सिंग ऑफ हर हार्टस ऑफ गोल्ड......गॉड सेव
सिंग रामचन्द्राज़ प्रेज़
सिग ऑफ द राजपूत डेज ....गॉड सेव
सिग ऑफ ग्रेट अकबर्स स्वे
सिग ऑफ शिवाजीस डे,
सिग बोल्डली फ्रीडम्म ले...............गॉड सेव
लार्ड ऑफ द बर्निग ग्राउड
मेंड फोर्थ दाइ डमरू साउड............गॉड सेव
ग्राट अस द हीरो हार्ट
केयर लेस ऑफ लास ऑर स्मार्ट,
एज मेन टु प्ले अवर पार्ट...............गॉड सेव

— एनी बेसेंट —

स्वदेश गीत

इक सूत्रे बाँधियाछि सहस्रटि मन
एक कार्ये सपियाछि सहस्रटि जीवन
वन्दे मातरम् ।।
आसुक सहस्र बाधा, बाधुक प्रलय
आमरा सहस्र प्राण रहिब निर्भय
वन्दे मातरम् ।।
आमरा डराइब ना झटिका-झंझाय
अयुत तरंग वक्षे सहिब हेलाय।
टुटे तो टुटुक एइ नश्वर जीवन,
तबु ना छिड़िबे कभु ए दृढ़ बन्धन
वन्दे मातरम् ।।

— रवीन्द्र नाथ ठाकुर —(रचनाकाल १९०० ई०)

(स्वर वितान ४६ वाँ खण्ड बंगला में रवीन्द्रनाथ द्वारा स्वरलिपि सहित प्रकाशित तथा साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित गीत पंचशती के पृष्ठ ३४३ में प्रकाशित। वास्तव में यह कविता रवि बाबू की नहीं है। केवल स्वरलिपि उन्होंने बनायी है।)

"वन्देमातरम्"

वन्देत्वा भूदेवीमार्यमातरम्
जयतु जयतु पद युगलं ते निरंतरम्
मदस्मित हास्य वदन चारु यामिनीम्
विकसित नव कुसुम मृदुल दाम शोभिनीम्
धर्मस्त्वं मर्मस्त्वं त्वं यशोबलम् ॥

कविवर्य नारायण वामन टिलक

राष्ट्रीय पुकार

हम गरीबों के गले हार वन्दे मातरम्
छीन सकती है नही सरकार वन्दे मातरम्
सर चढ़ो के सर मे चक्कर उस समय आता जरूर
कानों में पहुँची जहाँ झनकार वन्दे मातरम्
हम वही हैं जो कि होना चाहिए इस वक्त पर
आज तो चिल्ला रहा संसार वन्दे मातरम्
जेल मे चक्की घसीटू भूख से हूँ मर रहा
उस समय भी कह रहा वेजार वन्दे मातरम्
मौत के मुँह पर खड़ा हूँ कह रहा जल्लाद से
भोंक दे सीने में अब तलवार वन्दे मातरम्
डाक्टरों ने नब्ज देखी सर हिलाकर कह दिया
हो गया इसको तो अब आजार वन्दे मातरम्
ईद, होली और दशहरा, शुबरात से भी सौगुना
है हमारा लाड़ला त्यौहार वन्दे मातरम्
जालिमों का जुल्म भी काफूर सा उड़ जायगा
फैसला होगा सरे दरबार वन्दे मातरम्

(आजादी के तराने नामक पुस्तक से)

भजे भारतम्

भजे भारतं चारु - शोभाऽभिरामम् ।
शुभ्रं शाश्वतं भारती भव्य धामम् ।
पदं पैतृकं मातृपीठ ललामम् ।
सदा संदधेऽहं मुद्रा पुण्यनामम् ॥ १ ॥

ध्रुवं धार्मिकं धीर धुर्यं धरेशम्
पर प्रेम बीजं वरं वीर वेशम्।
सुरै· सस्तुतं सुव्रतं सद्विशेषम्
भजे भारती भासुरं भव्य देशम् ।। २ ।।

लसच्छुभ्र हेमाचलम् मौलि भालम्
वृद्धवारिधि स्निग्ध कल्लोल नीरे
रभिक्षालितं विश्व वंद्यांध्रि नालम् ।। ३ ।।

बहु प्रातर प्रांत रम्यान्तरालम्।
दिगन्तश्रितं वन्यलावन्य जालम्।
भजेऽहं सदा भारतं विशालम् ।। ४ ।।

[सग्रहकर्ता—श्री रामदास गौड़—राष्ट्रीय गान से साभार]

माता के सर पर ताज रहे

मेरी जाँ न रहे, मेरा सर न रहे, सामाँ न रहे न ये साज रहे
फकत हिन्द मेरा आजाद रहे, माता के सर पर ताज रहे
पेशानी मे सोहे तिलक जिसके और गोदी मे गाँधी विराज रहे
नये दाग बदन मे सुफेद रहे, नये कोढ़ रहे, नये खाज रहे
मेरे हिन्दू मुसलमाँ एक रहे, भाई-भाई सा रस्मो रिवाज रहे
मेरे वेद पुरान कुरान रहे मेरी पूजा रहे और नमाज रहे
मेरी टूटी मडैया मे राज रहे कोई गैर न दस्तदाज रहे
मेरी बीना के तार मिलें हो सभी, एक भीनी मधुर आवाज रहे
ये किसान मेरे खुशहाल रहें, पूरी हो फसल सुखसाज रहे
मेरे बच्चे वतन पे निसार रहे, मेरी माँ बहनों की लाज रहे
मेरी गायें रहें बैल रहे, घर घर मे भरा नित नाज रहे
घी दूध की नदियाँ बहती रहे, हरसू आनद स्वराज रहे
माधो की है चाह खुदा की कसम मेरे बादे वफात ये वाज रहे
गाढ़े का कफन हो मुझ पे पड़ा, वन्दे मातरम् का अल्फाज रहे।

— कविवर बेनी माधव —

जेल में वन्दे मातरम्

चल दिये माता के बन्दे जेल वन्दे मातरम्
देशभक्तों की यही है गैल वन्दे मातरम्
हैं जहाँ गाँधी गये, बरसों तिलक भी थे वहाँ
हम भी वहाँ के कष्ट लेंगे झेल, वन्दे मातरम्।

जानते हैं, क्रूर हैं, खूंखार हैं, सैयाद वह
जाँच ले, हरगिज न होंगे 'फेल', वन्दे मातरम्।
एक को ले जायेगा तो सैकड़ों आगे बढ़ेंगे
जेल जाने को समझते खेल, वन्दे मातरम्।
देश भक्तो ने जिसे सींचा है अपने खून से
लहरायेंगी, फल लायेगी, वह बेल वन्दे मातरम्।

ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान—(धर्मयुग ७ मार्च १९७६ से)

तासीरे वंदे मातरम्

कौम के खादिम की है जागीर वन्दे मातरम्
हे वतन के वास्ते अकसीर वन्दे मातरम्
जालिमों को है उधर अपनी बन्दूक पर गरूर
है इधर पर बेकसों का तीर वन्दे मातरम्
कत्ल कर हमको न ऐ कातिल, हमारे खून से
तेग पर हो जायगा तहरीर वन्दे मातरम्
किस तरह भुलूं मैं, जबकि किसमत में मेरी
लिख चुका है कातिबे तकदीर वन्दे मातरम्
फिक्र क्या जब कत्ल पे जल्लाद ने बाँधी कमर
रोक देगी दूर से शमशीर वन्दे मातरम्
सर जमी हिल जायगी इंगलैंड की दो रोज में
गर दिखायेगा कभी तासीर वन्दे मातरम्
सन्तरी भी मजतरिब थे जबकि हर झंकार में
बोलती थी जेल में जंजीर वन्दे मातरम्

[राष्ट्रीय गायन से—संग्रहकर्त्ता श्री रामदास गौड़]

ओजमय वन्दे मातरम्

आहा, क्या ओजमय हैं, शब्द वन्दे मातरम्।
बोल दो सब हिन्दियों अब मन्त्र वन्दे मातरम्॥
मुख में वंदे मातरम् है मन में वन्दे मातरम्।
नाड़ियों के रक्त में बहता है वन्दे मातरम्॥
खंजरे कातिल भले ही कत्ल कर देना हमें।
चीख भी निकलेगी तो निकलेगा वन्दे मातरम्॥
बल जरा मकतूल के चेहरे पे हो मुमकिन नहीं।
हर लहू के कतरे से टपकेगा वन्दे मातरम्॥

खून मकतल मे बेहाल यू हो क्या, हरगिज नहीं।
भूमि पर लिखता चलेगा शुद्ध वन्दे मातरम् ॥
बावजूद इसके कि बोले सबसे पहले और कुछ।
दुधमुँहे बच्चे भी बोले शब्द वन्दे मातरम् ॥
वेनी माधव तप यही सिजदाँ यही मन्दिर यही।
है यही मसजिद यही मजहब है वन्दे मातरम् ॥

[श्री विश्वनाथ शर्मा द्वारा संपादित पुस्तक से— लेखक : कविवर वेनी माधव]

गुलजार वन्दे मातरम्

थे गुलामी में पड़े बेजान वन्दे मातरम्।
तहरीके आजादी हुवे बलिदान वन्दे मातरम् ॥

जेल में ठूंसे गये थे, तख्ते फांसी पर चढ़े।
हो रहा था घोर अत्याचार वन्दे मातरम् ॥
खून से सींची गई है, बाग जलियाँ की ज़मी।
खाकर हजारो गोलियों की मार वन्दे मातरम् ॥

वीर ऊधमसिंह ने लन्दन में बदला ले लिया।
मार दी डायर को गोली तान वन्दे मातरम् ॥
देखली जनता ने उसकी तडफड़ाती लाश को।
बढ गई दुनियां मे अपनी शान वन्दे मातरम् ॥

श्रद्धांजली अर्पित सदा है, देश भक्तों को 'तरंग'।
कर में लेकर यह दिलों का हार वन्दे मातरम् ॥
आज है शत वर्ष दिन जिस गीत की रचना हुई।
आजाद भारत हो गुले गुलजार वन्दे मातरम् ॥

— विनोद कुमार "तरंग" —



भारत माता मन्दिर



भारत माता मन्दिर— वन्दे मातरम् द्वार

मातृ वंदनाए

भुवन मोहिनी माँ

अयि भुवन मोहिनी निर्मल सूर्य्य करोज्वल धरणी जनक जननि जननी—
नील सिन्धु जल धौतचरण तल, अनिल विकम्पित श्यामल अँचल
अम्बर-चुंवित भाल हिमाचल, शुभ्र तुषार किरीटिनी—अयि भुवन मोहिनी,
प्रथम प्रभात उदय तव गगने, प्रथम सामरव तव तपोवने
प्रथम प्रचारित तव वन भवने, ज्ञान धर्म कत काव्य काहिनी—अयि भुवन मोहिनी,
चिर कल्यानमयि तुमि धन्य, देशे विदेशे वितरिछे अन्न
जाह्नवी-यमुना-विगलित-करुणा, पुण्यपियूषस्तन्यवाहिनी—अयि भुवन मोहिनी,

— रवीन्द्रनाथ ठाकुर

जय जय भारत माता
तेरा बाहर भी घर जैसा रहा प्यार ही पाता
ऊँचा हिया हिमालय तेरा, उसमे कितना दरद भरा !
फिर भी आग दबाकर अपनी, रखता है वह हमें हरा ।
सौ स्रोतों मे फूटफूटकर पानी टूटा आता ।।

— मैथिली शरण गुप्त

माता सी प्रिय भारत माता
तुल सकता इसकी तुलना में
कैसे और किसी का नाता ?
वंचित है इसके प्रसाद से, तज सच्ची सेवा, प्रमाद से,
कर असहाय हाय ! जननी को, जन-जन कौन नही दुख पाता ! माता सी……

— 'एक राष्ट्रीय आत्मा'

जय जय भारत-भूमि हमारी
जय हिम शृङ्ग-सुरसरि जंगा
साधु समाज सृजन-सतसंगा
जग जग-क्लेश-प्रभाश-प्रसंगा
सुमिरत भरत मोद मन भारी—जय जय
जय भुवि थंबिनि, सिंधु नितंबिनि
त्रिभुवन-प्रेयसी, प्रेम-प्रलंबिनि
जयति जननि निज जन-अवलंबिनि
जय तुअ सुअन तपोबल धारी—जय जय

— श्रीधर पाठक (संवत् १९७५)

जय जय प्यारा भारत देश
जय जय प्यारा, जग से न्यारा
शोभित सारा, देश हमारा
जगत मुकुट जगदीश दुलारा
जग सौभाग्य, सुदेश—जय जय

— श्रीधर पाठक (संवत् १९७४)

अहो छात्र वस्वृन्द, नव्य-भारत-सुत, प्यारे
मातृ-गर्व-सर्वस्व, मोद-प्रद, गोद-दुलारे

— श्रीधर पाठक (सन् १९१९)

माँ ! जीवन-अंजलि में मेरे तर्पण-हित कुछ अर्पित फूल।
उन्हे करूँ क्या ? चढ़ा दिया, लो, चरणों की लेने दो धूल ।।
गूज उठे यह चतुःपार्श्व मे, गर्वीला मन-निर्भय नाद।
"बलि हो जाऊँगी" माँ-हित, माँ ऐसा दे तू आशीर्वाद ।।

— महादेवी वर्मा (१९२७)

वान यही हो जन्म जन्म ही, रखे देश-माता का मान
काम पड़े जब, बलिवेदी पर, हँसते हँसते हों बलिदान

— शांत (१९२८)

समर्थ माता ! शिवदा ! 'त्वमेव' उद्धारकर्त्री ! सुखदा ! 'त्वमेव'
दे तू हमे माँ ! अब शीघ्र मुक्ति, 'का ते स्तुतिः स्तव्य परापरोक्तिः' ।

— राधाकृष्ण मिश्र —

"है जन्मभूमि जिनकी जननी समान
स्वतंत्रता है प्रिय जिन्हे शुभ स्वर्ग से भी।
अन्याय की जकड़ती कटु बेड़ियों को
विद्वान वे कब समीप निवास देगे ?"

— चन्द्रधर शर्मा गुलेरी —

सुहृद्वर भारत सन्तानों एक समययुत होय विनीत
असीम भारत की सत्ता के, गावो ध्वनि से यश के गीत।

— चम्पालाल जौहरी सुधाकर (संवत् १२६३)

ध्रुव धर्ममयी इसकी क्षमता। रखती न कहीं अपनी समता
अतएव इसे भजिये। जननी पर प्रेम नहीं तजिये।।

— अज्ञात (१९१८)

है कोटि-कोटि भाई सेवक सपूत जिसके
भारत सिवाय दूजा, वह देश कौन-सा है।

— रामनरेश त्रिपाठी —

मातृभूमि की मानवता का जागृत जय जयकार
फहर उठे ऊँचे से ऊँचे, यह अविरोध, उदार !
अगणित धाराओ का संगम मिलन तीर्थ संदेश
यह हमारा ऊँचा झण्डा, एक हमारा देश ॥

— सियारामशरण गुप्त —

वंदना के इन स्वरों मे, एक स्वर मेरा मिलालो ।
वंदिनी माँ को न भूलो, राग मे जब मत्त झूलो ॥
अर्चना के रत्न कण में, एक कण मेरा मिलालो ।
जब हृदय का तार बोले, शृंखला के बन्द खोले ॥
हो जहाँ बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिलालो ।

— सोहनलाल द्विवेदी —

है अनन्त प्रणाम मेरा, उसके चरणों मे सदा
जन्म दे जिसने बढाया मुझे सहकर आपदा ॥

— लोचन प्रसाद पाडेय (१९०७)

जन्म दिया माता सा जिसने
किया सदा लालन पालन
जिसके मिट्टी जल से ही है
रचा गया हम सबका तन ॥
ऐसी मातृभूमि है मेरी
स्वर्गलोक से भी प्यारी
जिसके पद कमलो पर मेरा
तन मन धन सब बलिहारी ॥

— मन्नन द्विवेदी —

माता की छाती का, अमृतमय पय काल कूट हो जाये ।
आँखो का पानी सूखे, वे शोणित की घूंटें हो जाये ।
अनरिक्ष मे एक उसी, नाशक तर्जन की ध्वनि मँडराये
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल पुथल मच जाये !

— बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' —

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूथा जाऊँ,
चाहा नही, प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ ।
मुझे तोड लेना बनमाली ! उस पथ मे देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक ।

— माखन लाल चतुर्वेदी —

विमल भूमि जैं
सजल, सफल, सदल, सबल भूमि जैं ।।
प्रकृति-देवी अक बसत, जलनिधि नित पद परसत
हिम गिरि वर मुकुट लसत, धवल भूमि जै ।।

— पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' (सबत् १९७८)

आओ निज जननी को, जुग-जुग गणतन्त्र निहाल करो,
फिर गौरवशाली माता का, भूतल पर उन्नत भाल करो ।

— हरिशकर शर्मा 'कविरत्न' —

कुछ मस्तक कम पड़ते होगे जब महाकाल की माला मे
माँ माँग रही होगी आहुति जब स्वतत्रता की ज्वाला मे
पल भी पड़ असमजस मे
पथ भूल न जाना पथिक कही ।

— शिवमगल सिह 'सुमन' —

वन्दे जननी भारत धरणी
शस्य श्यामला प्यारी
नमो नमो सब जग की जननी
कोटि कोटि सुत वारी ।।
है देह विश्व, आत्मा है भारत माता
सृष्टि प्रलय पर्यन्त अमर यह नाता ।।

(........................)

चल रे चल सबे भारत सन्तान ।
मातृभूमि करे आह्वान ।।
वीर दर्पे, पौरूष गर्वे साधरे, साध सबे देशेर कल्याण
पुत्र विना मातृ दैन्य के करे मोचन
उठो, जागो, सबे बोलो, माँगो, तव पद संपिनुपराण, सबे भारत सन्तान
एक मन्त्र कर जय, एक मन्त्रे तप, शिक्षा दीक्षा लक्ष मोक्ष एक, एक सुरे मांही सबै गान
देशदेशान्ते चल रे, अन्तेअन्ते नवज्ञान, नवभावे नवोत्साहे, मातो शिखा वोरे नवतर तान ।

राष्ट्रीय संगीत (ऋषी वैली ट्रस्ट, राजघाट, वाराणसी) (१९४८)

वन्दे जननी मम प्यारी
सीस मुकुट मणि हिम गिरिधारे
हिन्द पयोनिधि चरण पखारे
चन्द्र सूर्य आरती उतारे
वन्दे श्यामल आंचल धारी,
सरस सुपरिमल मलयज शीतल
कंठहार कल शुचि गंगाजल
फूले हृदय विपुल नवद्रुमदल,
जल थल की छवि न्यारी।
अस्त्र धारिणी भय निवारिणी
दुःख हारिणी सुख प्रचारिणी
कार्यकारिणी रिपु विदारिणी,
वन्दे ! कोटि कोटि सुत वारी।

—[संगीत सरिता आगर, *लालमणि मिश्र* साहित्य रत्नालय, कानपुर]—

मां तेरी पावन पूजा में
हम केवल इतना कर पाये
जगती के बंधन आकर्षण
या स्वयं काल से भी हो रण
मां तेरे पूजा-पथ पर हम
लड़ते - भिड़ते बढ़ते जायें।—मां

भारत मां तेरी जय हो विजय हो
तू शुद्ध, तू बुद्ध, तू प्रेम आगार
तेरा विजय सूर्य माता उदय हो—

आओ हम सब मिल कर गाये
जग जननी के गाने
सबसे न्यारा, जग का तारा
भारत देश महान।
मातृ भूमि यह सबकी प्यारी
जगती मे इसकी छबि न्यारी
कोटि स्वर्ग इस पर बलिहारी
इसकी रक्षा हित हम कर दें
अर्पित तन, मन, प्राण।—आओ

हम करें राष्ट्र आराधन
हमने अभिषेक किया था, जननी का अरिशोणित से
हमने शृंगार किया था जननी का अरिमुडों से,
हमने ही उसे दिया था, सांस्कृतिक उच्च सिंहासन
माँ जिस पर बैठी सुख से, करती थी जग का शासन।

हँसते हँसते आज चले हम नन्हे सेनानी
मातृभूमि की बलिवेदी पर, शीश चढ़ाने अभिमानी ॥

जागे मेरा देश महान, यह भारत यह हिन्दुस्तान
विश्वगुरु सिंहासन पर, फिर बैठे भारत माता
दिखे पुनः ससार चरण मे, माँ के शीश नवाता
हिमगिरि के शिखरों पर फहरे, आर्य देश का अमर निशान।

मातृभूमि हित जो मरता है
माँ का सच्चा पूत वही
वही सुमन सुरभित हो खिलते
जो कांटो के बीच पले—जीवन दीप जले

युगों युगों से यही हमारी बनी हुयी परिपाटी है
खून दिया है मगर नही दी कभी देश की माटी है
इस धरती ने जन्म दिया है, यही पुनीता माता है
एक प्राण दो देह सरीखा, इससे अपना नाता है ॥

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्
वर्ष तद्भारतं नाम भारती यत्र संततिः

अपि स्वर्णमयी लंका नमे लक्ष्मण रोचते
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

समुद्र वसने देवी! पर्वतस्तन मण्डले।
विष्णु पत्नि! नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्वमे ॥

अय मादरे हिंद, सुब्हतेरी, शिरीशाम
है साकि़-ए-दौरां के छलकते हुए जाम
लम्हों में तिरे राजे-अबद पिन्हां हैं
तेरी हर साँस एक पैग़ामे-दवाम ॥

हर फ़िरक़-ओ-हर-मिल्लत-ओ-हर मजहबओ-हरदीं
सबने जा - ए - पनाह पाई है यही
औलाद में मामता छलकती है तिरी
दुनिया की मादरेवतन है यह ज़मी।

-- फ़िराक़ गोरखपुरी

माता माता प्यारी माता
बच्चे तुझ पर वारी माता
ओ माता ! ओ भारत माता
तुझपे ख़ुदा की रहमत माता—

जगमाता भारत महरानी
सतवती धनवती ज्ञानी
तुझपे सलाम अय सोहनी माता
जगमाता, जगमोहनी माता।

— जमील मजहरी —

भारत भूमि हमारी प्यारी भारत भूमि हमारी भाई
और न कोई इस मन्दिर का हो सकता अधिकारी भाई
रत्नवती इस वसुन्धरा के हम ही हैं भण्डारी भाई
मावन इस यशुमति के सुत हम कृष्ण, गोप हलधारी भाई।

करले भारत माँ की सेवा, जीवन यूही बीता जाय,
जिस माता ने दूध पिलाया, पाल पोसकर बड़ा बनाया,
यदि उसके कुछ काम न आया तो तू है पूत कपूत कहाय।

जयति कान्तिमय सुशान्ति भारत. जय प्यारे
जय जय जय मातृभूमि पूरित यश उदधि उर्मि
चरण कमल तोरे चूमि गावें गुण तिहारे।

कर मन मातृभूमि को पूजन
जाकी मूरति मन मन्दिर धारी
वीर प्रताप बसे बीहड़ बन

ऐ मातृभूमि तेरे चरणों में सिर नमाऊँ
तेरा ही नाम गाऊँ, तेरा ही मन्त्र गाऊँ
मन और देह तुझ पर बलिदान मैं चढ़ाऊँ।



बंगला काव्य में देश भक्ति की भावना

[१८६० से १६१० तक]

कवे पुनः वीर रसे, जगत भरिबे यशे ।
भारत भास्वर हबे पुन. ।। —***श्री रंगलाल बनर्जी***, १८६२

जगत जननी जनम—भुवन
गुरुत्व गौरवे दुइ अतुलन ।
स्वरूप [ओ] निकृष्ट दुयेर [इ] काछे
मागो ओ मा जन्मभूमि
आरो कतकाल तुमि
ए वयसे पराधीना हये काल यापिवे—***श्री हेमचन्द्र बनर्जी***, १८८०

चल रे चल सबे भारत सन्तान
मातृभूमि करे आह्वान—***श्री ज्योतिरिन्द्रनाथ ठाकुर***, १८६८

तथापि जनमभूम आछिल आमार,
भार्या सम अति प्रिय
मातृसमा अद्वितीय·
पूजनीय समतुल्य पितृ देवतार
स्नेहेर पवित्र मूर्त्ति कन्या करुणार—***श्री गोविन्द दास***

आजि गाओ गाओ गाओ खुले मन प्राण
भारतेर कथा भारतेर जय गाथा—***श्रीमती गिरीन्द्र मोहन दासी***

मागो जाय जेन जीवन चले
शुधु जगत माझे तोमार काजे
वन्दे मातरम् बले
सेइ त रयेछमा तुमि, फले फूले सुशोभिता श्यामा जन्मभूमि
शिरोपरि गिरिवर, सेइ शुभ्र कलेवर
पदतले सेइ सिन्धु आछे अनुगामी—***श्री काली प्रसन्न काव्य विशारद***

जागो जागो भारतमाता, चरण तले तब अभिनव उत्सव
करिब, रचिब नवगाथा, अगणन जनगण धात्रि—***श्री विजयचन्द्र मजुमदार***

किमाधुर्य जन्मभूमि जननी तोमार
हेरिब कि तोमारे मा नयने आबार—*श्री द्विजेन्द्रलाल राय*

भारत आमार भारत आमार, जेखाने मानव मेलिल नेत्र
महिमार तुमि जन्मभूमि मा, एसियार तुमि तीर्थ क्षेत्र—*श्री द्विजेन्द्रलाल राय*

उठ गो भारत लक्ष्मी, उठ आदि जगत-जन-पूज्या
दुःख दैन्य सब नाशि, कर दूरित भारत लज्जा—*श्री अतुल प्रसाद सेन*

जानि ताहा जानि आमि अयि मातृभूमि
सब भालो, भालोबेसे जा दियेछ तुमि—*श्री प्रमथनाथ राय चौधरी*

बन्दो तोमाय भारत जननी, विद्या मुकुटधारिणि
वर पुत्रेर तप अर्जित गौरव-मणि मालिनि—*श्रीमती सरला देवी चौधुरानी*, १९००

आमार जनमभूमि, अभागिनी मा गो
आर घुमायो ना तुमि, जागो स्नेहे जागो—*श्रीमती सुरमा सुन्दरी घोष*, १९०२

सत्य कि तोमारे आमि बासी भालो, स्वदेश जननि ।
कहि बटे, साधनार धन तुमि, नयनेर मणि—*श्री योगीन्द्रनाथ बसु*

एक फिरंगी द्वारा भारत वंदना

[हैनरी लुई डिवियन डिरोजियो का जन्म सन् १८०८ मे हुआ था । वे भारत मे शिक्षक थे और भारत को ही अपनी जन्मभूमि मानते थे। सन् १८३१ में २३ वर्ष की अल्पायु मे इनका निधन हो गया । सन् १८३० मे इन्होने मातृभूमि भारत को संबोधित यह कविता लिखी थी ।]

—माई कंट्री ! इन दाइ डेज ऑफ ग्लोरी पास्ट
(मेरे देश अपने अतीत वैभव के दिनों में)

—ए ब्यूटिअस हैलो सर्किल्ड राउन्ड दाइ ब्राउ
(एक सुन्दर प्रभामंडल तेरे भाल को आवेष्टित करता था)

—एंड वर्शिप्ड एज ए डिटी दाइ वॉस्ट
(और देवी रूप में तू पूजित था)

—व्हेयर इज दाइ ग्लोरी, व्हेयर दैट रेवरेंस नाउ ?
(कहाँ है वह यश गान, कहाँ वह मान सम्मान ?)

—दी ईगल पिन्यन इज चेन्ड डाउन एट लास्ट
(अंतोगत्वा गरुड़ के पंख बांध दिये गये हैं)

—एंड ग्रॅवेलिंग इन द लोली डस्ट आर्ट दाउ,
(और अधम धूलि में तू मुह के बल पड़ा है,)

—दाई मिनिस्ट्रेल हैज नो रीथ टु गीव फॉर दी,
(तेरे चारण के पास गूथने को जयमाल नही है)

—सेव द सैड स्टोरी ऑफ दाइ मिज़री ।
(सिवा तेरे दुखों की करुण कथा के)

—वेल लेट मी डाइव इन्टू द डेप्थ्स ऑफ टाइम
(अच्छा तो मैं काल सागर की गहराइयों मे डुबकी मारूँ)

—एंड ब्रिंग फ्राम आउट द एजेस दैट हैव रोल्ड
(और बीते युगों से बाहर निकाल लाऊँ,)

—ए फ्यु स्माल फ्रैगमेटस् ऑफ दोज रेक्स सबलाइम
(उन दिव्य भग्नावशेषो के कुछ नन्हे टुकड़े)

—ह्विच ह्यूमन आई मे नेवर मोर बिहोल्ड;
(जिन्हे मानव नेत्र शायद फिर कभी न देखे)

—एंड लेट द गॅःडन ऑफ माइ लेबर बी
(और मेरे श्रम का पुरस्कार केवल इतना हो,)

—माइ फालन कंट्री ! वन काइंड विश फार दी !
(ओ मेरे गिरे हुए देश । तेरे लिए एक सदय इच्छा)



अन्य देशों से मातृ भूवंदना

इंडोनेशिया का राष्ट्रीय गीत

मूल

इण्डोनेशिया तानः आयरकु
तानः तुम्पाह दाराइकु
दीसानालाइ आकु बर्डीरी
जाडी पाण्डु इबुकु
इण्डोनेशिया कबग रुआन्कु
बांगसा उन तानः आयरकु
मारिलह किता बरसेरू
इण्डोनेशिया बरसातु ।
हिडुपलाह तानाइकु
हिडुपलाह नागरिकु

बांग साकु रायात्कु सम्वायां
बांगु न लाह् जीवायां
बांगु न लाह् बादायां
उन्तुक इण्डोनेशिया राया ।
इण्डोनेशिया राया मर्देका, मर्देका
तानाह्कु नागरिकु यांग कुचिता
इण्डोनेशिया राया, मर्देका मर्देका
हिडुपलाह् इण्डोनेशिया राया

अनुवाद

इण्डोनेशिया, हे मातृभूमि हमारी
अपने रक्त से किया हमने इसे पवित्र
रहते हम सब इसके रखवारे
रक्षा करने को अपनी इस मातृभूमि की ।
इण्डोनेशिया है राष्ट्र हमारा
यही हमारी जाति और यही हमारा देश
तो फिर आओ, लगाए हम यह नारा
सयुक्त इण्डोनेशिया अधिकार हमारा ।
चिरजीवी हो देश हमारा
चिरजीवी हो राज्य हमारा
हमारा राष्ट्र, हमारी जनता, और सब मिलकर
जाग्रत करो आत्मा को उसकी
संगठित उसके अपने अंगों को
ताकि प्राप्त हो हमें इण्डोनेशिया राया
इण्डोनेशिया महान, स्वतंत्र और स्वाधीन
हमारा देश, हमारा राज्य, हमारा हृदय दुलारा
इण्डोनेशिया महान, स्वतंत्र और स्वाधीन
चिरजीवी हो इण्डोनेशिया राया ।

श्री लंका का राष्ट्रीय गीत

मूल

नमो नमो माता अप श्री लंका
नमो नमो नमो नमो माता
सुन्दर श्री वरिणी सुरेंदु
अति शोभमान लंका

धान्य धन्य निक मल पल थुरु पिरी
जयभूमि रम्य अपहृट रूप श्री–सित–सदना
जीवन ये माता
पिली गणभन अप भक्ति पूजा
नमो नमो माता अप श्री लंका

अनुवाद

नमो नमो नमो नमो माता।
नमो नमो माता
श्रीलंका नमो नमो
सुन्दर सौम्य श्रीवरणी
अति शोभायमान लंका
धान्य धन्य और सुगन्धित
फूलों से रम्य
जयभूमि श्रीसित सदना
स्वीकार करो—
जीवन ये माता
गणमन की भक्ति ओ पूजा
नमो नमो माता
श्री लंका नमो नमो।

बर्मा का राष्ट्रीय गीत

मूल

तेया म्याक्य लुल्ला शिनः मतबे टोपिये डोमिये
म्यालु खात्तेई न्यई छांग सेफोल्वेंट नीम्योंह
वाडाफयू सेडपो डोपिये डोपियेपेडान्सू
अम्वे अम्ये टीडां से अडेठां फयूबे थेई तेई जोले

[दवामचे पमाप्ये डोबोवा अमवे सिम्मो छिमयानो पे]

प्येडांव सुगो अत्तेपेलो टोका पोयमले
टाडोप्ये टाडोप्ये डोपाई नः मे डोमिये डोमिये
चोगो नीयाज्वा डो डड्वे थंग सांग पा जोले

अनुवाद

करते प्रतिज्ञा हम, रक्षा करेंगे हम
जन्म जन्मान्तर तक अपनी इस शुभ्र थाती
बरमा के संघ की
हे यह हमारी अपनी निजी मातृभूमि
नीव जिसकी पड़ी विश्वशान्ति के वाहक
स्वतत्रता, न्याय और समानता के मूलभूत सिद्धान्तो पर सबके लिए
जीवन के समान अवसरों पर
अपनी प्रतिज्ञा हम दोहराते फिर एक बार
कि करेंगे प्यार और रखेंगे मौन
अपनी इस थाती का
अपने इस देश का
अपनी जन्म और आवास भूमि का
और रक्षा करने को उसकी
करेंगे हम अपने जीवन का बलिदान
अपने देश के प्रति है यह कर्त्तव्य हमारा
कि मिलाकर कन्धे से कन्धा बढ़ाएं अपनी मातृभूमि की
और सब लोगों की श्री सुख और समृद्धि



समाचार पत्रों में वन्दे मातरम्

हिन्दी समाचार, देहली—२०-१-१९५०

नई दिल्ली, १९ जनवरी ! भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रसिद्ध आचार्य मास्टर कृष्णराव जो कुछ दिनों से वन्देमातरम् को राष्ट्रगीत घोषित कराने के लिए देहली आये हुए है, सरकारी भवन में श्री राजगोपालाचार्य के सामने वन्दे मातरम् का तैयार किया हुआ नया स्वर प्रदर्शित किया, इन्होंने इस नये स्वर को वाद्य यन्त्रों पर भी बनाया है, ज्ञात हुआ है कि गवर्नर जनरल भी वन्दे मातरम् के नये स्वर के तैयार किये हुए रिकार्डो को सुनकर काफी प्रभावित हुए और इन्होंने कृष्णराव को यह आश्वासन दिलाया कि ये राष्ट्रीय गीत निश्चित करने सम्बन्धी लोगों से वन्दे मातरम् के नये स्वरों की सिफारिश करेंगे।

इसके पूर्व मा० कृष्णराव जनरल करिअप्पा से मिले थे और अपना नया स्वर उनके सम्मुख भी प्रदर्शित किया था। श्री करिअप्पा ने इनके स्वर की प्रशसा की। ऐसी संभावना है कि मा० कृष्णराव वन्दे मातरम् के इस नये स्वर का प्रदर्शन प० नेहरू और डा० राजेन्द्र प्रसाद के सम्मुख भी करेंगे। श्री गाडगिल ने पहले ही आपको सहायता देने का आश्वासन दिया था।

स्मरण रहे कि हाल ही में कर्नाटक मे धारवाड़ का नया रेडियो स्टेशन स्थापित किया गया है, और उसके उद्घाटन समारोह मे मा० कृष्णराव ने नये स्वर के साथ वन्दे मातरम् प्रसारित किया था।

—:•:—

वन्देमातरम्

स्वर लिपि—श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, गीत—श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी

सां	–	सां	–	–	–	निसां	रेंसां	निध	प	–	–	प	धप	मप	मग
वन	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मा	ऽऽ	ऽऽ	तऽ
ग															
रे	–	–	–	–	–	–	–	म	रे	म	–	गम	प	मप	ध
र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
पध	नि	धनि	सां	निसां	रें	–	सां	सांरें	सांनि	धप	प	प	–	–	प
ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	त	रऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म्
सां	–	सा	–	–	–	निसां	रेंसां	निध	प	–	–	प	धप	मप	मग
वन	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मा	ऽऽ	ऽऽ	तऽ
ग															
रे	–	–	–	–	–	–	रे								
र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म								
रे	म	म	–	–	–	–	ग	रे	ग	रेसा	नि	सा	–	–	सा
सु	ज	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म्	सु	फ	लाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म्
				गम				म							
रे	रे	म	म	प	–	–	म	प	–	–	–				
म	ल	य	ज	शी	ऽ	ऽ	त	ला	ऽ	ऽ	ऽ				
								–	–	–	प	यह पूरा चरण दो बा[र]			
								ऽ	ऽ	ऽ	म्	गाया जायगा।			
								धनि							
म	–	प	–	नि	–	–	सां	सां	–	–	नि	सां	–	–	सां
श	ऽ	स्य	ऽ	श्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ला	ऽ	ऽ	म्
सा	–	–	नि	रें	–	–	सां	सांरें	सांनि	धप	म	प	–	–	प
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	रऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म्
												ग			
सां	–	–	–	निसां	रेंसां	निध	प	रे	ग	म	ग	रे	–	–	रे
वन	ऽ	ऽ	ऽ	देऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	त	र	ऽ	ऽ	म्
म	–	प	–	नि	–नि	धनि	सारें	रे	सां	सां	सां	सां	–सां	सां	सां
शु	ऽ	भ्र	ऽ	ज्यो	ऽत	स्नाऽ	ऽऽ	पु	ल	कि	त	या	ऽमि	नि	म्
नि	–	नि	नि	सां	सां	सां	–	प	नि	सां	सां	निसांरें	–सां	रें	रें
फु	ऽ	ल्ल	कु	सु	मि	त	ऽ	द्रु	म	द	ल	शोऽऽ	ऽभी	नी	म्
सां	नि	–	ध	नि	–	ध	नि	ध	नि	सां	रें	सां	निध	प	म
सु	हा	ऽ	सि	नी	ऽ	ऽ	म	सु	म	धु	र	भा	षिऽ	णी	म्
प	पधनि	–	ध	नि	–	–	नि	नि	रे	सां	रें	सां	निध	प	म
सु	हाऽऽ	ऽ	सि	नी	ऽ	ऽ	म्	सु	म	धु	र	भा	षिऽ	णी	म्
प	नि	सां	सां	ग	म	प	सा	सां	नि	रें	सां	सांरें	सानि	धप	मग
सु	ख	दा	म	व	र	दा	म्	मा	ऽ	ऽ	त	रऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽम्

												ग (above)			
सां	–	–	–	निसां	रेंसां	निध	प	रे	ग	म	ग	रे	–	–	रे
वन	ऽ	ऽ	ऽ	देऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	त	र	ऽ	ऽ	म्
म	रे	म	–	गम	प	मप	ध	पध	नि॒	धनि	सां	निसां	रे	–	सां
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	त
सांरे	सानि॒	धप	म	प	–	–	प	धा	–	–	–				
रऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म्	वन	ऽ	ऽ	ऽ				
								ग (above)							
निसां	रेंसां	नि॒ध	प	ध	धग	मप	मग	रे	–	–	–				
देऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	मा	ऽऽ	ऽऽ	तऽ	र	ऽ	ऽ	म्				

वन्देमातरम्

स्वरलिपि—श्रीमती इन्दिरा देवी चौधुरानी

सा	–	सा	सा	प	प	प	–	प	–	प	ध	प	म	म	मग
त्रिं	ऽ	श	को	ऽ	टि	कं	ऽ	ठ	ऽ	क	ल	क	ल	नि	नाऽ
री (above)															
ग	रीसा	सा	सा	नि॒सा	री	री	–	नि	नि	–	नि	नि	सां	सां	सां
ऽ	ऽऽ	द	क	राऽ	ऽ	ले	ऽ	द्वि	त्रिं	ऽ	श	क्रो	ऽ	टि	भु
सां	–	प	प	प	प	प	म	प	ध	नि॒	–	–	–	ध	प
जै	ऽ	घृं	त	ख	र	क	र	वा	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ब
						प (above)		म (above)							
ध	–	–	–	–	–	म	म	प	–	–	–	–	–	गरी	ग
ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	के	नो	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	एऽ	त
ग	म	–	–	–	–	–	–	म	प	प	नि	सांनि	धनि	सारी	सानि
ब	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब	हु	ब	ल	धाऽ	ऽऽ	ऽऽ	रिऽ
								सा (above)							
सां	–	–	सां	प	नि	–	सां	नि॒	–	–	ध	प	–	–	प
णी	ऽ	ऽ	म्	न	मा	ऽ	मि	ता	ऽ	ऽ	रि	णी	ऽ	–	म
प	नि	सां	सां	नि	निध	प	प	रि	ग	रीगम	मग	री	–	–	री
रि	पु	द	ल	वा	रिऽ	णी	म्	मा	ऽ	ऽऽऽ	तऽ	र	ऽ	ऽ	म
म	री	म	–	गम	प	मप	ध	पध	नि	धनि	सां	निसां	रीं	–	सां
मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	त
सांरीं	सानि॒	धप	म	प	–	–	प	सां	--	सां	–	–	–	निसां	रींसा
रऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	वन	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ
नि॒ध	प	–	–	प	धम	मप	मग	री	–	–	–	–	–	–	रे
ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मा	ऽऽ	ऽऽ	तऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म्

वन्देमातरम्

स्वरलिपि–श्रीमती प्रतिभा सुन्दरी देवी

रागिनी देश-ताल कौवाली

सा — — सा — — । नी—(सा रे सा)—नि—ध । प – – ध
व न्दे म

प म ग । रे – – – – ।।
त रम्

म – रे – म – – । प – – ध – – । नि – सा (नि – सा – रे) –
मा त

सा । (सा – रे – सा) – नि – (ध – प – म) – प – ।।
रम् वन्

सा – –सा – – । नी – (सा रे सा) – नि – ध ।
दे ए

प – – ध प म ग । रे – – – – ।।
मा त रम्

रे – म – म – ग । रे – ग – सा – – ।
सु ज लां सु फ लां

रे – रे – म – म – । प – प – प – – ।। म – – प
म ल य ज शी त लां श स्य

– – । नी – नी – सा – – ।
श्या म लां

सा – नि – ध – प – । रे – ग – म – ग – । रे – – – – ।।
मा त रम्

म – – प – – ।
शु भ्र

ज्नी – – ध नी सा रे । रे – सा – सा – सा – ।
योत् स्ना पु ल कि त

सा – सा – सा – – ।। नी – – नी – नी – । सा – सा – सा
या मि नीं फु ल्ल कु सु मि त

प – नी – सा – सा – । नी सा रे सा रे
द्रु म द ल शो भि नीं

सां – नि – – ध – । नि – – ध नि – । नि – रे – सा – नि
सु हा सि नीं सु म धु र

नि – ध – प – – ।।
भा षि नीं

प – नि – – ध – । नि – – ध – नि – । नि – रे – सा –
सु हा सि नी सु म धु
नि – । नि – ध – प – – ॥
र भा षि णीं
प – नी – सा – – । ग – म – प – सा – । नी – सा
सु ख दां व र दां मा
रे – सा – नि – ध । प – ध – प – म –
त रम्
प – ॥ सा – – – – । नी सा रे सा नी – ध – प – ।
वन दे
रे ग म – प ध प म ग । रे – – – – ॥
मा त रम्

(वालक पत्रिका पृ० ६५)

वन्दे मातरम् :-- स्वर लिपि--श्री एस० एल० निगम
भैरवी राग--तीन ताल

वंदे मातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम् शस्य श्यामलाम् ।
शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम् ।
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम् ।
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम् ।
सुखदाम् वरदाम् मातरम् ।। वंदे मातरम् ॥

० स्थायी

२ ० ३ ×
प ग
सा –– ध — प | म –– पम ग | – मध निसा नि | सा — — ––
वं ऽ दे ऽऽ | ऽ ऽ ऽऽ ऽ | ऽ माऽ ऽऽ त | रम् ऽ ऽ ऽऽ
प
सा सा सा म | म म मग म | सा ग मप ग | रे सा सा —
सु ज ला ऽम् | सु फ ला म | म ल यऽ ज | शी त ला ऽम्
सा ग ग म | ध ध ध ग | –– मध निसा नि | सा — –– ––
श ऽ स्य श्या | ऽ म ला ऽम | ऽ माऽ ऽऽ त | रम् ऽ ऽ ऽ

० अन्तरा

२ ० ३ ×
नि
ध म म म | ध ध नि –– | सा सा सा सा | सा रेग रे सा —
शु ऽ भ्र ज्यो | ऽ त्स ना ऽ | पु ल कि त | या ऽऽ मि नी ऽम्
नि –– नि नि | सा सा सानि सा | प नि सारे निस | ध धप प —
फु ऽ ल्ल कु | सु मि तऽ ऽ | द्रु म दऽ लऽ | शो भिऽ निऽ म्
प पध निमा नि | प नि ध प | सा ग गप म | रे रे सा —
सु हाऽ ऽऽ सि | नी ऽ ऽ ऽम् | सु म धुऽ र | भा षि णी ऽम्
मि
सा ग म ध | ध ध धप ध | ग मध निसा नि | सा — — —
सु ख दा ऽम् | व र दाऽऽ म् | ऽ माऽ ऽऽ त | रम् ऽ ऽ ऽ

रागदेश

श्री आनन्द बिहारी तैलंग

×				२				×				२			
नि	सं	—	—	निसं		नि	—	ध	प	—	—	रे	ग	म	प
व	न्दे	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
—	—	मप	ध	म	मग	—	रे	—	—	ग	नि	स	—	—	—
ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	त	रम	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	ग	म	ऽ	ग	रे	रे	—	ग	रेग	नि	—	स	—	—	—
सु	ज	लां	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	ऽ	सुफ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म
रे	रे	म	प	मप	पनि	ध	प	—	—	म	—	प	नि	—	नि
म	ल	य	ज	शीऽ	ऽऽ	त	ला	ऽ	मृ	श	ऽ	स्य	श्या	ऽ	म
सं	—	—	—	सं	—	सं	निसं	रें	—	नि	—	ध	प	—	—
ला	ऽ	-	म्	मा	ऽ	त	रम्	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अंतरा

म	—		नि	—	सं	—	—	सं	नि	सं	नि	सं	—	नि	सं
शु	ऽ	भ्र	ज्यो	ऽ	त्सना	ऽ	ऽ	पु	ल	कि	त	या	ऽ	मि	नि
—	—	—	—	नि	—	नि	ध	नि	प	ध	—	ध	रें	सं	रे
ऽ	ऽ	ऽ	म्	फु	ऽ	ल्ल	कु	सु	मि	त	ऽ	द्रु	म	द	ल
ध	नि	ध	प	—	—	ग	म	—	ग	म	—	गरे	ग	—	म
शो	ऽ	भि	नी	ऽ	म	सु	हा	ऽ	सि	नी	ऽ	ऽऽ	मृ	सु	म
प	ध	ग	म	ग	रे	—	—	म	प	सं	—	—	—	म	प
धु	र	मा	ऽ	षि	णि	ऽ	म्	सु	ख	दा	ऽ	ऽ	म	व	र
सं	—	—	—	सं	—	सं	निसं	रें	—	नि	—	ध	प	—	—
दा	ऽ	ऽ	म्	मा	ऽ	त	रम्	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

(संगीत आलोक १ भाग)

'वन्दे मातरम्' राग मालकोश ताल कहरवा

स्वरकार—डा० लालमणि मिश्र

(grace नि over ध)
स – सं – | – ध नि ध | म – – – | – – – –
ब ऽ न्दे ऽ | ऽ मा ऽ त | रम् ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

दो बार गाई जाय ।।

(grace नि over ध)
म म म – | म ग म – | म ध नि ध | – म ध ग
सु ज ला –म् | सु फ ला –म् | म ल य ज | – शी ऽ त

(grace म over ग, नि over म, नि over –)
म – – – | – – – – | ग – म ध | – नि मं –
ला ऽ ऽ म् | ऽ ऽ ऽ ऽ | श ऽ स्य श्या | ऽ म ला ऽ

(grace नि over ध)
सं ध – नि | सं – – –
ऽम् मा ऽ त | रम् – – – | वन्दे

(grace नि over ध)
स – स म | – – म – | म ध नि ध | – म ध ग
शु ऽ भ्र ज्यो | ऽ ऽ त्स्ना ऽ | पु ल कि त | ऽ या ऽ मि

म – – – | – – – – | म – स ध | ध ध ध –
नी ऽ ऽ म् | ऽ ऽ ऽ ऽ | फु ऽ ल्ल कु | सु मि त ऽ

(grace नि over ध)
म ध नि ध | – धनि मं नि | मं – – – | – – – –
द्रु म द ल | ऽ शोऽ ऽ भि | नी ऽ ऽ म् | ऽ ऽ ऽ ऽ

(grace सं over नि)
म ध – म | ध – – – | ध नि मं नि | – मं – नि
सु हा ऽ मि | नी – – म् | सु म धु र | ऽ भा ऽ षि

सं – – – | ऽ ऽ ऽ ऽ |
नी ऽ ऽ म् | ऽ ऽ ऽ ऽ |

स स म – | ग म ध – | – धनि मं नि | मं – – –
सु ख दां ऽ | व र दां ऽ | ऽ माऽ ऽ त | रम् ऽ ऽ ऽ

वन्दे ... ...

(उक्त गीत यदि द्रुत-मध्य लय मे गाया जाये तो अपनी गंभीरता सुरक्षित रखते हुए भी फौजी गीत प्रतीत होगा !)

●

वंदेमातरम्—राग–काफी

म ध म नि
प – – म प ध् म प ग् रे – – ग् म पम ध् प –
वं S S ० ० ● ०० दे ० S S ० मा ०० त रम् S

रे म नि् सा
मम प – ध् प म – गम मप – मप मग्ग् रे रेग्म म ग् रे सा रे सा –
सु ज ला S म् सु फ ला S S म् म० S ल० य०० ज शी०० ०० ०० त ला S म्

म मं
सा रे रेम – प – पध – ध – –नि् रें गं् रें सां रें सां –
श स्या श्या० S म S ० ला ० S म् मा S S० ०० ०० ०० त रम् S

नि सां रें गं् रें सां रें सां नि् सांनि् धनि्ध पमप –
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० S

ध म सा
प – म नि् – प मपनिसां – प धधपमप ग् रे रे
वं S ० ० S ० ० ० ० ० S ० ० ० ० ० ० दे ० ०

नि्
रेम – पध न् धप ध् प –
मा ० S ० ० ० ० ० ० ० त रम् S

म–प नि – निसां – सांसां पध् सां रें –सां
शु S भ्र ज्यो S त्स्ना० S ०० पु ल कि त S०

सां
रें गं् मं मं गं् रं सां रें सां –
या ०० ० ० ० ० मि नी Sम्

रें नि – नि नि सां रें रें गं सां – नि रें – – सां नि ध् सां –
फु० S ल्ल कु सु● मि० त S● ० SS ० ० ० ० S

सां रें नि सां – प ध् प ध् म –
द्रु० म० S ० द ० ल ● S

प ध नि् – – प प नि् सां – – नि् नि् सां रें रें सां नि् सां – प प ध् नि् ध् प –
शो ० ० S S ० ० ० ० S S ० ० ० ० ० ० ० ० S ० ० ० ० भि नि S म्

म
म प – रे सा रे म प नि सां नि् नि् – ध ध प ग् – म प म म – रे
सु हा S ० ० ० ० ० ० ० ० ० S ० सि० नी S ● ० ० ० S ० म्

ग्
रे ग् रे ग् – रे,   म सा रे –   रे ग् म म ग् रे सा –
सु म धु र ऽ ०,   ० ० ० ऽ   मा ० ०   ० ० ० ० षि णी ऽ म्

म   सां   गं् मं
सा सा रे म –   ध नि्ध –   ध – नि् रें गं् रें सा रें सां –
सु ख दा ० ऽ म्   व र दा ऽ म्   मा ऽ ०   ० ०   ० ०   त र म् ऽ

नि सां   रें गं रें   सां रें सां   नि् सा नि्   ध नि् ध   प म प –
० ०   ० ० ०   ० ० ०   ० ० ०   ० ० ०   ० ० ० ऽ

ध   म   सा
प – म नि् – प   म प नि सां – प   ध ध प म प   ग्   रे रे –
वं ऽ ०   ० ऽ ०   ० ० ० ० ऽ ०   ० ० ० ० ०   ०   ० ० ऽ

नि्
रे म –   प ध नि् ध प ध् प ||
मा ० ऽ   ० ०० ००० ० त रम् ऽ ||

सां
रें – सां   रें – सां रें रें   गं् रें गं् सां   सां रें गं् – ग्रें्
को ऽ टि   को ऽ टि कं ठ   क ल क ल   नि ० ना ऽ द

गं् गं् मं रें   रें रें गं् सां
क रा ० ले   क रा ० ले

सां
रें – नि   नि – नि नि नि सां – सां सां सां सां सां सां   नि सां रें नि् –
को ऽ टि   को ऽ टि मु जै ० ऽ धृ त ख र क र   वा ० ० ले ऽ

सां   सां   सां   सां   नि्
नि्   नि्   नि्   प   नि् सां ध प
ख   र   क   र   वा ० ० ले ०

रें   सां
पनि सां नि सां   सां – सां प म   प ध् नि् ध् प
के ० ० बो ले,   के ऽ बो ले मा   तु मि अ ब ले

सां
म प नि नि   नि सां नि सां –   रें   रें गं – सां   रें रें नि सां –
ब हु ब ल   धा ० रि णी ऽ म्   न   मा ० ऽ मि ता   रि णी ऽ म्

म सा सा
प नि सा – नि़ प ग़ – रे रे रे ग़ म म ग़ रे रे प – ध़ नि़ ध़ प –
वं ० ० ऽ ० ० दे ऽ ० ० ० ० ० ० ० ० ० मा ऽ ० ० त रम् ऽ

प नि सा नि सा –प प नि़ नि़ ध – प म – रे म प ध पमधप
श्या ० ० म ला ऽम् स र ला ० ऽ ० ० ऽ ० म् सु स्मि ता००म्.

म प ग म – ग रे ग़ रे –
भू ० ० ० ऽ ० ० षि ता ऽम्

म सा म
रे – ग़ सा रे म ध नि ध – ; ध –नि रे ग़ रे सा रे सा –
ध ऽ ० र णी ऽम् म र णी ऽम् मा ऽ० ० ० ० ० त रम् ऽ

प सा – नि सा रे – सा रें ग़ं – सां सां रे – नि सां –
वं ० ऽ ० ० ० ऽ ० ० ० ऽ ० ० ० ऽ ० ० ऽ

ध
म नि़ प सा नि रे सा ग़ रे ग़ सा रे नि सा–प धधपमप ग़ रे –
वं ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०ऽ० ००००० दे ० ऽ

प – ध नि़ प ध नि़ ध प –
मा ऽ ० ० ० ० ० त रम् ऽ

रेग़ग़ ग़मम मपप पधध धनि़नि़ नि़सांसां
वं०० ००० ००० ००० ००० ०००

रें रें सां सां नि़ नि़ ध ध प प म म ग़ – ग़
० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ऽ दे

सा
सा रे म प ध नि़ – ग़ रे रे प – ध नि़ ध़ प –
० ० ० ० ० ० ऽ ० ० ० मा ऽ ० ० ० ० ० त र म् ऽ

प म सा
प सां – – – ग़ – – रे – – नि़ नि़ सा – – –
वं ० ऽ ऽ ऽ दे ऽ ऽ मा ऽ ऽ त – र म् ऽ ऽ

टिप्पणी—[अगले पृष्ठ पर संलग्न है]

स्वरलिपि चिह्न परिचय

स्वर के नीचे आड़ी लकीर मंद्र सप्तक का चिह्न है, जैसे नि॒ सा॒ स्वर के ऊपर बिंदी तार सप्तक का चिह्न है, जैसे सां रें स्वर के नीचे तिरछी लकीर विकृत स्वर का चिह्न है। जैसे—वि्

टिप्पणी—

पूज्य गुरुवर्य संगीत मार्तण्ड स्वर्गीय पंडित ओमकारनाथ जी ठाकुर हमेशा "वन्दे मातरम्" के पूरे गान का आग्रह रखते थे, और गाते थे। साथ ही वे अपने "वन्देमातम्" गान में उन्मुक्त भावाभिव्यक्ति के लिए कुछ पंक्तियाँ चुन लेते थे। यहाँ 'वन्देमातरम् शती समारोह' के उपलक्ष्य में प्रकाशित स्मारिका में 'वन्देमातरम्' का पूरा काव्य लेने के कारण पंडित जी की स्वरावलियों में कहीं-कहीं किंचित् परिवर्तन एवं परिवर्धन करना पड़ा है, किंतु पंडित जी के गान की स्वर रचनात्मक एकता एवं सरसता अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया गया है।

बलवन्तराय भट्ट
"भावरङ्ग"
१५-९-७६

वंदे मातरम्

सारंग त्रिताल

								नि	सां	नि	प	म	रे	—	सानि़
								वं	०	दे	०	०	मा	ऽ	त ०
सा	—	—	—	नि़सा	रेम	पनि	मप	नि	सां	नि़	प	म	रे	—	सानि़
रम्	ऽ	ऽ	ऽ	० ०	० ०	० ०	० ०	वं	०	दे	०	०	मा	ऽ	त
सा	—	—	—	—	—	—	—	नि़	सा	रे	—	म	म	प	—
रम्	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	सु	ज	लां	ऽ	सु	फ	लां	ऽ
रे	म	पनि़	पम	रे	—	नि़	सा	—	म	—	प	नि	सां	नि	सां
म	ल	य०	ज०	शी	ऽ	त	लां	ऽ	श	ऽ	स्य	श्या	०	म	लां
—	निसां	रें	सांरें	नि	सां	नि़	मप	नि	सां	नि़	प	म	रे	—	नि़
ऽ	मा ०	०	त ०	रम्	०	०	००	वं	०	दे	०	०	मा	ऽ	त
सा	—	—													
ऽ	ऽ	ऽ													

स्वर लिपि : बलवंतराय भट्ट 'भावरंग' द्वारा

संगीत मार्तण्ड ओंकारनाथ ठाकुर

और

—: वन्दे मातरम् :—

जिन लोगों ने देश के मूर्धन्य संगीतज्ञ पडित ओंकार नाथ ठाकुर को वन्देमातरम् गाते सुना है वे ही संगीत से भाव उद्वेलन का अद्भुत अनुभव सुना सकते हैं। पंडितजी में स्वर के साथ भावाभिव्यंजना की अद्भुत क्षमता थी और उनका यह गुण वन्देमातरम् गायन मे सबसे अधिक चमत्कारी रूप मे प्रगट हुआ था। उनके मुख से वन्देमातरम् सुनकर श्रोता रोमांचित भावविभोर हो उठते थे।

स्व० पंडित ओंकारनाथ सिद्धांतों के बारे मे हठी स्वभाव के थे। सन्' ३५ मे अब्दुल गफ्फार नगर मे हुए कांग्रेस अधिवेशन में उन्होंने 'वन्देमातरम्' गाया था पर जब सन्' ३७ मे कांग्रेस ने गीत के कुछ अंश निकाल देने का निर्णय किया तो सन् ३७ की हरी पुरा कांग्रेस मे आमंत्रण के बावजूद वे वन्देमातरम् गाने नही गये, उनका निर्णय था गाऊँगा तो पूरा गीत नहीं तो नही गाऊँगा।

सन्' ४५ में गुजराती वन्देमातरम् के संचालक श्री श्यामलदास गांधी ने एक भविष्यवाणी की थी कि 'आज चर्चिल का भारत है पर कल जवाहर लाल का भारत होगा और उस दिन का शुभारम्भ पंडित ओंकारनाथ ठाकुर के वन्देमातरम् गायन से होगा। श्री गांधी की भविष्यवाणी खरी सिद्ध हुई।

सन्' ४७ में भारत स्वतंत्र हुआ। १५ अगस्त को स्वतंत्रता की घोषणा होनी थी। उस समय पंडित ओंकार नाथ ठाकुर मद्रास में थे। वुडलैंड होटल में रेडियो निदेशक भागे हुए पडित जी के पास आये, बोले आपको सरदार पटेल ने दिल्ली रेडियो पर बुलाया है, १५ अगस्त को सबेरे वन्देमातरम् गाना है। पंडित जी ने कहा मैं तैयार हूं पर पूरा गीत गाने की अनुमति होगी तभी। भारत के उप प्रधान मंत्री सरदार पटेल ने तत्काल ही सदेश भेजा कि आप पूरा गीत गायें। १५ अगस्त ४७ को अलस भोर में, प्रातः ६॥ बजे जब स्वतंत्रता का सूर्य उदय हो रहा था आल इंडिया रेडियो पर पंडित ओंकार नाथ ठाकुर अपने हृदय द्रावी रोमांचक ढंग से वन्देमातरम् गा रहे थे। उनके साथ श्री बलवंतराय भट्ट 'भावरंग' और श्री लक्ष्मणाचार्य पुराणीक थे। पडित जी ने खडे रहकर पूरा गीत उस भारतीय स्वतंत्रता के स्वर्णिम बिहान मे मुक्त विहग की भाँति पूरे उल्लास के साथ गाया था। एक देश प्रेमी संगीतज्ञ की यह गौरव गाथा सदा ही स्मरणीय रहेगी।

(संस्मरण– ***श्री बळवंत राय भाव रंग*** के सौजन्य से)



श्री

वंदेमातरम्

— संगीत कलानिधि मास्टर कृष्णराव फुलंब्रीकर —

[राष्ट्रगीत में एक-सुरता लाने के लिये योग्य स्वररचना]

राग – *झिंझोटी* ॥ ताल—*त्रिताल*

इस राग में रिषभ, गंधार, धैवत तीव्र हैं और मध्यम स्वर कोमल है। निषाद स्वर कोमल और तीव्र दोनों तरह से लेने की प्रथा है। अवरोह मे निषाद कोमल लगता है। कुछ गायक लोग तीव्र मध्यम का भी कभी-कभी रसोत्पत्ति की दृष्टि मे उपयोग किया करते हैं। इस राग के सम्पूर्ण आरोह अवरोह तथा जब यह मंद्र, मध्य, सप्तकों मे गाया जाता है तब के आरोह अवरोह दोनों का निर्देष मैंने किया है। और दोनों की जानकारी रखना जरूर है।

सपूर्ण आरोह-अवरोह–सा रे ग म् प ध नी सा। सा नि् ध प म् ग रे सा।

मद्र, मध्य, आरोह-अवरोह– प ध नी सा रे ग म् प। प म् ग रे सा नि् ध प।

वादी—*गंधार* सवादी—*धैवत*

वंदे मातरम्। सुजलाम्, सुफलाम्, मलयजशीतलाम् ॥
शस्यश्यामलाम्, मातरम् ॥ शुभ्रज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्।
फुल्लकुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्। सुहासिनीम्, सुमधुर-भाषिणीम्।
सुखदाम् वरदाम् मातरम् ॥ वंदे मातरम् ॥

—:०:—

ना	ती	ती	ना	ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी	ना	ना	धी	धी	ना
०				१				+				३			
व	ऽ	दे	ऽ	ऽ	मा	ऽ	त	र	ऽ	ऽ	म्	सु	ज	ला	म्
रे	ऽ	सा	ऽ	ऽ	रे	ऽ	सा	रे	ऽ	ऽ	रे	रे	सा	रे	रे
सु	फ	ला	म्	म	ल	य	ज	शी	ऽ	ऽ	त	ला	ऽ	ऽ	म्
ग	रे	ग	ग	ग	म्	प	म्	ग	रे	ग	म्	ग	ऽ	ऽ	ग
श	ऽ	स्य	श्या	ऽ	म	ला	ऽ	म्	मा	ऽ	त	र	ऽ	ऽ	म्
प	ऽ	ध	प	ऽ	ध	प	ऽ	प	म्	ग	रे	सा	ऽ	ऽ	सा
व	ऽ	दे	ऽ	ऽ	मा	ऽ	त	र	ऽ	ऽ	म् ॥				
रे	ऽ	सा	ऽ	ऽ	रे	ऽ	सा	रे	ऽ	ऽ	रे				

अंतरा

ना ती ती ना	ना धी धी ना	ना धी धीं ना	ना धी धीं ना
ऽ शु ऽ भ्र	ज्यो ऽ त्स्ना ऽ	पु ल कि त	याऽ ऽ मि नी
ऽ म् ऽ म्	म् ऽ म् ऽ	ग म् ग रे	सारे ग रे ग
म् फु ऽ ल्ल	कु सु मि त	द्रु म द ल	शो ऽ भि नीम्
ग प ऽ प	प प प प	प ध प प	ग सा ग पप
सु हा ऽ सि	नी ऽ म् सु	म धु र भाऽ	ऽ षि णी म्
म् म् ऽ म्	म् ऽ म् म्	ग म् ग गरे	सा रे ग ग
सु ख दा ऽ	ऽ भ् व र	दा ऽ म् मा	ऽ त र म्
प म् प ऽ	ऽ प म् ग	म् ऽ म् म्	ग रे सा सा
व ऽ दे ऽ	ऽ मा ऽ त	र ऽ ऽ म् ॥	
रे ऽ सा ऽ	ऽ रे ऽ सा	रे ऽ ऽ रे	

इस गीत के आवश्यक साकेतिक चिन्ह.

कोमल स्वरका चिन्ह. ॒ जैसा—म्

तीव्र स्वर के लिये चिन्ह नही है—रे ग

तालों के चिन्ह.

गीत की समका चिन्ह. +

काल का चिन्ह.

बाकी मात्राओ के ताली के अक. १–३

स्वर एक से अधिक मात्रा तक् लंबाने के चिन्ह. ऽ जैसा—ग ऽ म् ऽ ऽ

त्रिताल के बोल और चिन्ह

ना धी धीं ना	ना धीं धीं ना	ना तीं तीं ना	ना धीं धीं ना	मात्रा
+	३	०	१	१६

एक पत्र :

'वन्देमातरम्' के लिये स्वरयोजना

झिंझोटी राग के स्वर में

वन्देमातरम् के लिये ऐसे स्वर (ट्यून) की आवश्यकता है, जिसको बच्चे, स्त्री और पुरुषों का बड़े मे वडा समुदाय सुगमता और मधुरता से एक साथ गान कर सके। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय मे यह गान स्थान वना ले। इसके अलावा यह भी आवश्यक दीख पड़ता है कि जिस प्रकार सम्पूर्ण राष्ट्र के लिये वन्देमातरम् गीत के नियत शब्द वाछनीय है, उसी ही प्रकार नियत स्वर या चाल भी वाछनीय है। इस बात को दृष्टिकोण रखते हुवे मैंने "वन्देमातरम्" गीत की सरल और कर्णप्रिय स्वर-योजना कर जनता से उसको अपनाने की प्रार्थना की है और कर रहा हूँ।

मै गत बीस पच्चीस वर्ष से स्वतन्त्र गायक या स्वर-नियोजक के रूप से, नाटक कम्पनियों द्वारा तथा प्रभात फिल्म कम्पनी में संगीत निर्देशक (म्यूज़िक डाइरेक्टर) के स्थान पर काम करता हुवा। "आदमी", "गोपालकृष्ण", "वहाँ", "अमरज्योति", "धर्मात्मा" आदि चित्रपटो के गानो की स्वरयोजना कर संगीत और जनता की सेवा कर रहा हूं। मैं आशा करता हूं जिस प्रकार जनता ने अब तक मेरी स्वर-योजनाओं को स्वीकार कर मेरा साहस वढाया है, उसी तरह मेरी वन्देमातरम् गीत की स्वर योजना को, स्वीकार कर अनुगृहीत करेगी। वन्देमातरम् की इस स्वरयोजना को, जिसको मैं अभी आपके सामने गाकर सुनाऊँगा, महाराष्ट्र प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने तथा अन्य राजकीय और दूसरी संस्थाओं ने स्वीकार कर मान्यता दी है। महाराष्ट्र प्रान्त मे तो वन्देमातरम् इस ही चाल से गाया जाता है। मैंने इस सरल और मधुर स्वर मे वन्देमातरम् गान को चालीस पचास हज़ार आदमियों के मुख से एक साथ गवा कर अनुभव कर लिया है कि इस चाल द्वारा लाखों आदमी एक साथ गा सकते हैं। दूसरी बात यह है कि यह गीत लोगो का अधिक समय न ले कर. एक मिनट मे पूरा हो जाता है। मैंने इस ही स्वर में वन्देमातरम् का ओडियन् ग्रामोफोन कम्पनी वम्वई मे रिकार्ड भी कर दिया है। रिकार्ड का नम्बर एस. बी. २३०९ है। संगीत-प्रेमियों के लिए इस गान की चाल का क्रम समझाने के लिये एक छोटी सी (नोटेशन) पुस्तक छपाई है। जिसकी कीमत दो पैसा है। इस पुस्तक की आय हरिजन कार्य की सेवा में अर्पण कर दी गई है।

मैं जनता तथा कांग्रेस से प्रार्थना करता हूं कि वह वन्देमातरम् के लिये इस ही स्वरयोजना को स्वीकार कर समस्त भारतवर्ष में इस ही स्वर से वन्देमातरम् गीत को गाये जाने की आज्ञा प्रदान कर मुझको अनुगृहीत करेगी।

तिलकवाडी, पूना २.
ता. १५-३-४०

प्रार्थी
मास्टर कृष्णा



मास्टर कृष्णराव रचित

वन्दे मातरम् की बैंड की स्वरलिपि

BANDE MATERAM.

MASTER KRISHNARAO
ARR. S. E. HILLS.

CONDUCTOR.

ALLEGRETTO

Tutti

Drums

f

Drums

Drums off

First time Short Verses

Add Drums

Drums off

Allargando

Add Drums

S. ROSE & CO. LTD FORT BOMBAY

संगीत कलानिधि मास्टर कृष्णराव का पत्र

(सन् १९४९ मे)

संविधान सभा के सदस्यों के नाम

महोदय,

राष्ट्रगान और उसकी तर्ज का निर्णय करने की बावत मै अपने विचार प्रकट करना चाहता हूं।

वहुत समय तक, लगभग आधी शताब्दी तक कांग्रेस के प्लीनरी सेशनों, ए० आई० सी० सी० की वैठकों, राष्ट्रीय समारोहों और सम्मेलनों में राष्ट्रगान के रूप मे गाये जाने का "वन्देमातरम" को अनूठा सम्मान प्राप्त रहा है। केवल "वन्दे" और "मातरम्" इन दो शब्दो के कहने के कारण लोगों ने कोडे खाये और जेल गये।

अब मुख्य बात पर आऊँ, कृपा कर मुझे अपना परिचय देने की अनुमति प्रदान करे, मै एक सगीत शास्त्री और गायक हूँ। विगत ३२ वर्षो से मैने यथाशक्ति भारतीय सगीत की सेवा की है। शास्त्रीय संगीतज्ञ होने के साथ ही मैने लगभग एक हजार नयी तर्जो की सरचना की है। नयी तर्ज को लोकप्रिय बनाना बडा ही दुरूह कार्य है और प्रभात, राजकमल प्रभृति प्रसिद्ध फिल्म कम्पनियो मे मेरा सगीत निर्देशन और सगीत रचना की लोकप्रियता के कारण फिल्मों का कई हफ्तों तक चलना इस कला मे मेरी योग्यता के साक्षी है। इस अपार अनुभव और ज्ञान तथा लोकमत की जानकारी से लैस होकर मैने हमारे राष्ट्रगान "वन्दे मातरम् की एक नयी तर्ज का आविष्कार किया। इस तर्ज का आविष्कार नौ वर्ष पूर्व हुआ था और यह इतनी लोकप्रिय हो चुकी है कि सार्वजनिक सभाओ, स्कूलों, कालेजों, सिनेमा घरो और थियेटरो तथा विभिन्न अवसरो पर जहाँ भारी भीड़ जमा होती है इसे जनसमूह द्वारा गाया जा रहा है। एक लाख लोगों के समूह के साथ प्रयोग किए गए हैं और वे तर्ज का अनुसरण करने में समर्थ हुए हैं। राष्ट्रगान के लिए आवश्यक गरिमा के वातावरण का यह सृजन करता है। इस तर्ज की सरल और मधुर शैली ने इसे वहुत लोक प्रिय वनाया है। कांग्रेस और ए० आई० सी० सी० के अनेक अधिवेशनो मे अपनी तर्ज गाने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

स्वतंत्रता पूर्व युग मे ब्रिटिश सरकार ने आल इडिया रेडियो पर "वन्दे-मातरम्" गाने पर प्रतिबंध लगा दिया था। सन् १९३८ मे मैंने ए० आई० आर० के बम्बई केन्द्र पर "वन्दे मातरम्" गाने का प्रयास किया था। पर मुझे ऐसा करने से रोका गया और तत्काल ही स्टेशन आफ कर दिया गया। इसके विरोध मे मैंने सकल्प लिया कि ए० आई० आर० पर भविष्य में कोई भी कार्यक्रम स्वीकार नही करूँगा और इस कारण मुझे हजारों रुपयों की आर्थिक हानि सहनी पड़ी।

२३ मार्च १९४७ को बम्बई के प्रधान मंत्री माननीय श्री बी० जी० खेर, केन्द्रीय धारा सभा के स्पीकर माननीय श्री दादा साहेब मावलकर और भारत के उप प्रधान मंत्री माननीय सरदार वल्लभ भाई पटेल की सद् कृपा से मुझे ए० आई० आर० के बम्बई केन्द्र पर वन्दे मातरम् गाने के लिये वुलाया गया। ए० आई० आर० पर "वन्दे-मातरम्" गाये जाने का यह पहला अवसर था।

कुछ लोग कहते हैं कि "वन्दे मातरम्" बैंड पर नहीं बजाया जा सकता। किन्तु मुझे पूरा विश्वास है कि यह संभव है और वह भी बड़े सुन्दर ढंग से। में अपनी तर्ज मे इसे "गाड सेव द किंग" से अधिक प्रभावोत्पादक बना सका हूँ।

मैंने नये गीतों की भी रचना की है (१) "अमर है हिन्दोस्तां हमारा" (२) "होशियार रहना" और (३) "भारत भूमि को वंदन है" ये भी बैंड पर बड़े प्रभावोत्पादक ढंग से बजाये जा सकते है।

मैं दिल्ली आने और संविधान सभा के समक्ष गाने और सबको प्रतीति कराने को तत्पर हूँ। आपका आमंत्रण पाकर मैं आभारी होऊँगा।

प्रत्याशा में धन्यवाद सहित—

मैं हूँ

श्रीमान्, आपका विश्वासपात्र

(मास्टर कृष्ण राव)



इंडिया न्यूज क्रानिकल (१८-१-१९५०) (अंग्रेजी)

—वन्देमातरम् की नयी धुन

—राष्ट्रगान के रुप में स्वीकृति के लिये प्रयास

नई दिल्ली (मंगलवार)—'वन्देमातरम्' प्रसिद्धि वाले मा० कृष्णराव ने आज शाम अपनी 'वन्देमातरम्' की ताजा धुन का प्रदर्शन किया, साथ वाद्य वृंद वादन भी हुआ। यह कार्यक्रम रेवरेंड माइकेल स्काट के भाषण के लिये आमंत्रित प्रेस कान्फरेंस के समक्ष हुआ। पत्रकार दल नयी धुन से प्रभावित हुआ।

—: ● :—

मास्टर कृष्णराव के नाम बम्बई सिटी पुलिस बैंड के इंस्पेक्टर श्री सी. आर. गार्डनर का पत्र

बम्बई सिटी पुलिस बैंड

(मिलिट्री एंड पाइप)

सी. आर. गार्डनर
ए. आर. सी. एम.
डिरेक्टर आफ म्यूजिक
टेलीफोन : १९८११–एक्स., २६०

'एल' डिवीजन
नईगाम पुलिस हेडक्वार्टर
बम्बई १४

अक्टूबर २२वी १९४८

टू

मास्टर कृष्णा,

महोदय,

आपके प्रश्नो के उत्तर मे, मेरी राय मे आपकी 'वन्देमातरम्' की तर्ज राष्ट्रगान के लिये इन कारणों से अत्यत उपयुक्त है ·

(१) यह सरल है और सरल तथा शुद्ध हार्मोनीज़ के अनुकूल है। इसमे मुझे 'गॉड सेव द किग' अर्थात् राष्ट्र की प्रार्थना जैसे ही गारिमा और विभूति प्राप्त हुई।

(२) पाश्चात्य स्वरलिपि मे इसे बजाना इतना आसान है कि एक मामूली बैंड भी इसे प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर सकता है। यह एक महान गुण है जो दुनियाँ मे कही भी दूतावासो के उत्सवों मे तत्काल ही बैंड द्वारा बजाये जा सकने योग्य 'एन्थम' (राष्ट्रगान) के लिये विचारणीय है।

(३) इसकी हार्मोनीज़ इतनी सरल और शुद्ध हैं कि इसके सम्पूर्ण चारो अंश कॉयर्स और बच्चे भी गा सकते हैं।

(४) पाश्चात्य कानों के लिये इसकी ध्वनि आनन्द दायक है और सभी योरोपियनों ने जिन्होंने मुझे इसे बजाते सुना है, पसन्द किया है।

ह० सी. आर. गार्डनर
ए. आर. सी. एम.
इंस्पेक्टर ऑफ पुलिस
डी. ऑफ. एम.
एल. ए. डिवीजन नईग्राम हेडक्वार्टर

वन्दे मातरम्

के

अमर स्वर ध्वनि मुद्रिका पर

★

विभिन्न रागो और रचनाओं मे गाये और बजाये गये वन्देमातरम् गीत के रेकार्डो और टेपों पर मुद्रित संकलन की एक सूची

(ये अमर ध्वनियाँ शताब्दी समारोह में सुनी जा सकेंगी)

(१) उत्साहवर्वक ओजस्वी रचना—फिल्म आनन्दमठ से—सुश्रीलता मगेशकर और साथियो की आवाज मे श्री हेमन्त कुमार के निदेशन मे—

राग भैरवी मालकोष — एलपी रेकार्ड—रीगल (ई एम आई)

D/ELRZ. 13 $\frac{X}{D}$ CEIX (S) 2331

(२) राष्ट्र चेतना प्रेरक—तिमिर बरन निदेशित—'वन्देमातरम्' आनन्द बाजार एण्ड हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड द्वारा संरचित ध्वनि मुद्रिका जिसमे एक ओर सपूर्ण वन्देमातरम् समवेत् स्वर में गाया गया है और दूसरी ओर वाद्यवृद पर प्रस्तुत है—

राग दुर्गा — AHR - 1 2 M C 11 731-3

,, ,, 2 M C 11 732-3

(३) भावप्रवण गीत शोभा खन्ना, कमला, सुरेश और साथियों के स्वर में, श्री पुरुषोत्तम जलोटा के निदेशन मे—

राग शुद्ध भैरवी — स्टार हिन्दुस्तान रेकर्ड

JQA 5305 KGS 699

(४) राष्ट्र के मुखर स्वर श्रीमती प्रोवाराय, श्रीमती जोयादास, श्रीमती बिजया देवी, श्री धीरेन गुप्ता तथा संगीत निदेशक श्री हरिपदो चैटर्जी के समवेत् स्वर मे, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा प्रशिक्षित समूह का गायन (सम्पूर्ण मूल गीत)—

राग देस — हिन्दुस्तान रेकर्ड

H. 170 HSB 1834

---

* रेकर्ड संख्या २, ४, ५, ७, १० श्रीमती शुभदा तेलंग के संग्रह से साभार

,, ,, ६—श्रीमती गायत्री दास गुप्त से साभार, स०—८, ६, के टेप श्रीमती वीना चिटको से साभार प्राप्त सं०—१० का टेप श्री प्रदीप दिक्षित के सौजन्य से

(५) भजन भाव भीना सुख्यात भक्त अभिनेता विष्णुपंत पगनिस ('संत तुकाराम' ख्याति) के स्वर में—

राग– सारंग
भाषा– संस्कृत

हिज़ मास्टर्स वायस
P. 133 61
80 – 1038

(६) लोकमन दर्पण, लालित्यपूर्ण गायन, उत्तर दक्षिण संगम—श्री दिलिप कुमार राय और श्रीमती शुभ लक्ष्मी द्वारा प्रस्तुत सम्पूर्ण गीत—

राग— बिलावल, बागेश्वरी, कर्नाटकी रागों मे मिश्रधुन

हिज़ मास्टर्स वायस
N 14421
OML 4811

(७) शास्त्रीय संगीत महिमा मंडित, सुख्यात मराठी गायक श्री केशव राव भोले के स्वर मे गाया हुआ वन्देमातरम् का प्रथम चरण---

राग– शुद्ध कल्याण

ओडियान
भाषा मराठी जर्मन वनावट–Ke 312
A 2450126

(८) भारतीय संगीत की मधुरिमा से भीना, सरल, सौष्ठवयुक्त रचना पद्मभूषण संगीत कलानिधि, मास्टर कृष्णराव फुलम्ब्रीकर द्वारा रचित और गाया हुआ प्रथम चरण—

राग— मिश्र झिंझोटी

आरिएंटल ग्रामोफोन कम्पनी

(९) बैंड पर प्रस्तुत वन्देमातरम्—रचना मास्टर कृष्ण राव—

राग— झिंझोटी

प्राइवेट डिस्क पर

(१०) राष्ट्र की आत्मा प्रतिबिंबित करता, अंतर मन की गहराइयो को छूता रोमांचकारी स्वर विन्यास युक्त गायन—संगीत मार्तण्ड स्व० पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर द्वारा सम्पूर्ण गीत—

राग— बंगीय काफी

[१] टेप से प्राप्त (संपूर्ण गीत)
[२] कोलम्बिका रेकार्ड (आंशिक)
BE×201–CE 1×4742

(११) गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की वाणी मे राष्ट्रगान की सम्पूर्ण गौरव गरिमायुक्त वन्देमातरम् के प्रथम अशंका गायन—शाति निकेतन संग्रहालय के सौजन्य से प्राप्त टेप।

(१२) सम्मान, स्वाभिमान युक्त राष्ट्रवाणी—आकाशवाणी से प्रतिदिन प्रसारित गीत—राग मिश्र देस समवेत स्वर मे प्रथम चरण मात्र।

—:●:—

वन्देमातरम्

गीत

किस दिन लिखा गया था ?

अनुसंधान से सिद्ध हो चुका है कि अमरगीत की रचना सन् १८७५ में हुई थी (अरविंद सन् १९०७ में—"३२ वर्ष पूर्व मह गीत लिखा गया")।

'आमार दुर्गोत्सव", "एक टी गीत', "कमलाकालेर एसोएसो", लेखों से ज्ञात होता है कि सन् १८७५ की दुर्गा पूजा में अष्टमी की रात उन्हें भारत जननी के दर्शन हुए। उस दुर्गा पूजा का तिथिक्रम इस प्रकार है :

(१) संवत् १९३२, शाके १७९७ आश्विन शुक्ल अष्टमी सम्पूर्ण) गुरुवार ७ अक्टूबर १८७५ ई०।

(२) आश्विन शुक्ल ८ शुक्रवार ता० ८-१०-१८७५ को भी।

(३) आश्विन शुक्ल ९ (महानवमी) शनिवार ता० ९ अक्टूबर १८७५ ई०।

आगे कार्तिक मास में 'आमार दुर्गोत्सव लिखा गया जिसके अन्त में जगद्धात्री का स्तवन है,

रविवार कार्तिक शुक्ल नवमी संवत् १९३२, शाके १७९७ को अर्थात् ७ नवम्बर १८७५ ई० को अक्षय नवमी अथवा जगद्धात्री पूजा थी !

नवम्बर १८७५ और फरवरी १८७५ के बीच बंकिम 'बंग दर्शन' के सम्पादक थे और इस बीच उनके प्रेस मैनेजर द्वारा स्थान रिक्त होने और उसमें 'कविता' छापने के अनुरोध का प्रसंग हुआ।

अतः बहुत सम्भव है यह मातृ वन्दना जगद्धात्री पूजा की रात्रि में कार्तिक शुक्ल नवमी (७ नवम्बर १८७५) को लिखी गयी।

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल नवमी, रविवार ३१ अक्टूबर १९७६ को पड़ रही है। वन्देमातरम्।

(सौवर्ष पुरानी तिथियाँ पं० रामनाथ गौतम जी ज्योतिषाचार्य, ज्योतिषरत्नाकर के ३७/७१ ग्वालदास साहू लेन, वाराणसी के सौजन्य से)



वन्देमातरम् समय सारिणी

ईस्वी सन्	
१४९८	१४ मई–वास्को द गामा का आगमन-पराधीनता युग का श्रीगणेश
१५१०	गोवा पर पुर्तगाल का कब्जा–प्रथम उपनिवेश
१६००	ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आगमन–अंग्रेज विषाणु का संक्रमण
१६०२	डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आगमन
१६१२	सूरत में कोठी
१६६४	फ्रांसीसी कम्पनी का आगमन
१७५७	पलासी का युद्ध–ब्रिटिश पूँजीवादी साम्राज्य का आरम्भ
१७६४	बक्सर का युद्ध, बगाल, बिहार, ओड़ीसा पराधीन
१८१८	मराठों की हार
१७६३–१८००	सन्यासी विद्रोह :—ढाका, राजशाही, कूचबिहार, पटना, उत्तर बंगाल, नेपाल तराई, दिनाजपुर, सारन, रंगपुर, मैमन सिंह, पुणिया, जलपाईगुड़ी बगुड़ा आदि में।

नारा "ॐ वन्देमातरम्" "विद्रोहियों की विजय"

विद्रोही नेता—मजनू शाह, फकीर मूसाशाह, फेरागुलशाह, चिराग अली, भवानी पाठक, देवी चौधुरानी, कृपानाथ, रामानन्द गोसाई, नूरुल मुहम्मद, पीताम्बर, अनूप नारायण श्रीनिवास आदि।

१७६६–६७	मेदिनीपुर विद्रोह (बगाल)
१७६६–७७	धल भूम विद्रोह (,,)
१७६७–६८	शमशेर गाजी का विद्रोह (त्रिपुरा)
१७६९–८०	संदीप द्वीप के विद्रोह (चटगाँव)
१७६९–९९	मोआमारिया विद्रोह (उत्तर असम)
१७७०–१८००	बुनकरों का सग्राम (बगाल)
१७७०–१८००	रेशम कारीगरों का संग्राम (बंगाल)
१७७०–१७९३	अफीम के किसानों का संग्राम (बंगाल)
१७७०–१८०	नोनियों का संग्राम (बिहार)
१७७०–१८०४	नमक कारीगरों का संग्राम (ओरिसा + चटगांव)
१७७६–१७८९	चाकमा विद्रोह (चटगाँव)
१७७८–१७८१	गोरखपुर का विद्रोह (उ० प्र०)

१७८५	रंगपुर का विद्रोह (बंगाल)
१७८८-९०	पहाड़िया विद्रोह (बंगाल)
१७९२	सुबान्दिया विद्रोह (बंगाल)
१७९४	विजय राम राजे की बगावत (आन्ध्र)
१७९६-१८०५	पायस्सी राजा का विद्रोह (केरल)
१७९९	सिलहुट में अशान्ति (बंगाल)
१७९८-९९	चोआड विद्रोह (बंगाल)
१७९६	वजीर अली का विद्रोह (उ० प्र०, अवध)
१७९९-१८००	ढुढिया की चुनौती (मैसूर, कर्णाटक)
१८००-१८०४	गजाम का संघर्ष (आन्ध्र)
१८००	चेरो विद्रोह (पलामू बिहार)
१८०१-०५	पांड्यगारों का विद्रोह (कर्णाटक)
१.०६	दक्षिण भारत में सिपाही विद्रोह
१८०६-१६	बगड़ी के नायकों का विद्रोह (बंगाल)
१८०८-०९	त्रावंकोर का स्वाधीनता संग्राम
१८०८-१२	बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड की चुनौती (उ० प्र०)
१८१०-११	बनारस की हड़ताल (उ० प्र०)
१८१३-३४	पार्ल किमेदी रियासतों में मुठभेड़ (गंजाम)
१८१५-३२	कच्छ में अशान्ति (काठियावाड़, गुजरात)
१८१६	बरेली का विद्रोह (उ० प्र०)
१.१७	हाथरस की चुनौती (उ० प्र०)
१८१७-१८	कटक के पाइकों का मुक्ति संग्राम
१८१८-३१	भील विद्रोह (विन्ध्य, सह्याद्रि)
१८२०-२१	हो आदिवासियों का मोर्चा (बंगाल)
१८२०	मेर विद्रोह (राजस्थान)
१८२४-२६	देशी पलटनों का विद्रोह, बुन्देलखण्ड मालवा में हमला, गूजरों का विद्रोह, ओमरेज के पटेल की बगावत, पंजाब और हरियाना में अशान्ति, गुजरात के कोलियों का विद्रोह कित्तूर विद्रोह, पूना के रमोसियों की बगावत।
१८२५-३३	पागलपंथी विद्रोह (गारो)
१८२८-३०	गदाधर सिंह का विद्रोह (बर्मा)
१८३०	कुमार रूपचन्द का विद्रोह (असम)
१८३०-३१	सिंगफो विद्रोह (असम)
१८२९-८८	अका उपजाति के आक्रमण (असम)
१८३०-६९	बहावी विद्रोह (बंगाल)
१८३०-३१	मैसूर की रैय्यत का विद्रोह (कर्णाटक)

१८३०–३४	विशाखपट्टनम् में बगावत
	–वीरभद्र राजे, जगन्नाथ राजे, पालकोण्डा की बगावत
१८३१–३२	कोल विद्रोह (नागपुर)
१८३२	गगानारायण का हंगामा (मानभूम)
१८३३–३४	कुर्गियों का मोर्चा (कुर्ग)
१८३३	गौंड विद्रोह
१८३५–३७	गुमसुर का संघर्ष (गंजाम)
१८३८–४७	फराजी विद्रोह (बंगाल)
१८३८	बँकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय का जन्म
१८३९	खामती विद्रोह (बर्मा)
१८३९–६२	सुरेन्द्र सांई का विद्रोह (गौंड)
१८३९–५०	कोलियों का मोर्चा (कच्छ)
१८४२	बुन्देल विद्रोह (उ० प्र०)
१८४४	कोल्हापुर का गड़करी विद्रोह (महाराष्ट्र)
१८४४–५९	सामन्त वाडी में विद्रोह (महाराष्ट्र)
१८४६–४७	नरसिंह रेड्डी का विद्रोह (आंध्र)
१८४६	खोंड़ विद्रोह (ओड़ीसा)
१८४८–६६	गारो लोगों का मोर्चा (असम)
१८४८–१९००	अबोरों का मोर्चा (असम)
१८४८–१८९२	लूशाइयों के आक्रमण (असम)
१८५२	सर्वेक्षण का हंगामा (महाराष्ट्र)
१८५५–५६	संथाल विद्रोह (बंगाल)
१८५७–५९	सशस्त्र राष्ट्रीय महाविद्रोह

"प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम"

(बैरकपुर-मेरठ-दिल्ली-पंजाब-सीमाप्रांत-पश्चिमी उत्तर प्रदेश-राजस्थान रुहैलखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश-कानपुर-बुन्देलखण्ड-लखनऊ - आगरा-मऊ - इन्दौर-कलकत्ता बंगाल - बिहार आदिवासी अंचल-असम गोदावरी जिला ।

१८५७	बेद विद्रोह (बीजापुर)
१८५८	बँकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय डिप्टी मैजिस्ट्रेट बने
१८६०–६१	नील विद्रोह (बंगाल)
१८६०–६३	जयन्तिया विद्रोह (असम)
१८६०–९०	कूकी विद्रोह (असम)
१८६१–९४	असम मे अशांति

१८६७ मिदनापुर में 'जातीय गौरव संपादिनी सभा' की स्थापना
श्री राजनारायण बसु द्वारा
१८६६ ओड़ीसा में अकाल—२० लाख मरे
१८६६ बँकिम चन्द्र के गुरु श्री ईश्वरचन्द्र गुप्त ने अपनी कविता में देश को 'जननी भारत भूमि' कहा
१८६७ हिन्दू मेला का आरम्भ
१८६८ सत्येन्द्रनाथ ठाकुर 'गाओ भारतेर जय' महात्मा शिशिर कुमार घोष, 'भारत माता' कविता
१८६९-७२ कूका विद्रोह
१८६९ 'मृणालिनी' उपन्यास में पराधीनता की पीड़ा
१८७० चुचड़ा में नदी के तट पर बंकिम को मछुवों के गीत से देश के नये रूप का दर्शन 'साधो आछे मा मने दुर्गाबले प्राणत्याजिबे जान्हवी जीबने ।'
१८७० पूना में सार्वजनिक सभा की स्थापना
१८७२-७३ पावना का किसान विद्रोह
१८७२-७६ बैकिम द्वारा 'बंगदर्शन' का संपादन
१८७२ 'भारत की एकता' संपादकीय (बँकिम)
विज्ञान सभा का प्रस्ताव
१८७३ 'भारत माता' नाटक (ले० किरन कुमार बंदोपाध्याय)
प्रकाशन एवम् मंचन (१५-१२-७३)
१८७३ राजनारायण बसु 'मिले सब भारत संतान' कविता
'हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता' लेख
१८७४ बंगाल में अकाल
१८७४ राजकृष्ण मुखोपाध्याय प्रथम शिक्षा बांगलार इतिहास'
जिसे बैकिम आलोचना में 'स्वर्ण मुष्टि' कहा ।
शंभु चन्द्र मुखर्जी द्वारा स्वदेशी का नारा ।
१८७५ महाराष्ट्र के किसानों का मोर्चा
१८७५ दुर्गा पूजा की अष्टमी को मातृदर्शन,
'आमार दुर्गोत्सव' (कार्तिक, फसली संवत् १२८१)
~~७ नवम्बर~~ वन्देमातरम् की रचना (अक्षयनवमी)
१८७६ सुरेन्द्र नाथ बैनर्जी तथा आनन्द मोहन बोस द्वारा 'इंडियन असोसियेशन' की स्थापना।
१८७६ बँकिम चन्द्र द्वारा बंग-दर्शन संपादक पद त्याग (मार्च)
१८७६ 'एकटि गीत'
१८७६ भूदेव मुखोपाध्याय रचित पुष्पांजलि में 'मातृमूर्ति' की कल्पना (सिंह वाहिनी संजीवनी)
~~१८६६~~ जदुभट्ट द्वारा 'वन्देमातरम्' की मलार राग कौवाली में संगीत रचना ।

१८७७	वन्देमातरम् लोकप्रिय गीत
१८७७	दक्षिण भारत में अकाल—५२ लाख मरे
१८७७	कविवर रवीन्द्रनाथ द्वारा 'स्वदेश गीत' की रचना जिसमें बन्देमातरम् शब्द का प्रयोग है।
१८७९	वासुदेव बलवंत फड़के का विद्रोह (महाराष्ट्र)
१८७९–८०	रम्पा विद्रोह
१८८०	१५ जुलाई को 'आनन्द मठ' की रचना पूर्ण
१८८१	बंगदर्शन में आनन्द मठ का धारावाहिक प्रकाशन आरम्भ (संपादक संजीव चन्द्र चट्टोपाध्याय) चैत्र, १२८७ फसली (बंगला संवत्)
१८८२	'आनन्द मठ' का प्रथम प्रकाशन पूर्ण
१८८२	इलबर्ट बिल
१८८२	'आनन्द मठ' प्रथम संस्करण
१८८३	'आनन्द मठ' द्वितीय संस्करण
१८८३	'आनन्द मठ' का नाट्य रूपान्तर और मचन— मंच पर वन्देमातरम् का प्रथम गायन
१८८५	इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना और बम्बई में प्रथम अधिवेशन।
१८८५	'आनन्द मठ' का अंग्रेजी अनुवाद।
१८८५	वन्देमातरम्' की कविवर रवीन्द्र नाथ तथा श्रीमती प्रतिमा सुन्दरी देवी द्वारा रागदेस, कौवाली ताल में स्वरलिपि (बालक पत्रिका में प्रकाशित)
१८८६	आनन्द मठ का जर्मन अनुवाद
१८८६	'आनन्द मठ' का तृतीय संस्करण
१८८६	कलकत्ता में कांग्रेस का द्वितीय अधिवेशन और उसमें कविवर हेमचन्द्र द्वारा काव्य पाठ जिसमें 'वन्देमातरम्' की पक्तियों का समावेश था।
१८८८	इलाहाबाद में कांग्रेस अधिवेशन और राष्ट्रीय संगठन का ब्रिटिश सरकार द्वारा विरोध का सूत्रपात
१८९०	देश के स्वातंत्र्य समर में 'वन्देमातरम्' की भूमिका की बाबत बंकिम को भविष्यवाणी
१८९१	टीकेन्द्र जीत सिंह शहीद हो गये (मणीपुर)
१८९२	'आनन्द मठ' चतुर्थ संस्करण
१८९	'आनन्द मठ' का पाँचवाँ संस्करण
१८९४	बंकिम चन्द्र का निधन
१८९६	कलकत्ता में कांग्रेस के १२ हवें अधिवेशन में रवीन्द्र नाथ द्वारा 'वन्देमातरम्' गायन (राग देश–एकताल)
१८९७	आनन्द मठ का मराठी अनुवाद–शिवराम गोविन्द फालके
१८९९–१९००	बिरसा विद्रोह (बिहार)

१९०१ दक्षिण रंजन सेन द्वारा 'वन्देमातरम्' की नयी स्वरलिपि महात्मागांधी का कांग्रेस अधिवेशन मे प्रथम आगमन

१९०५ २० जुलाई १९०५–बंग-भंग का आदेश

७ अगस्त १९०५–वन्देमातरम् का पहला नारा

बायकाट का नारा

स्वदेशी आन्दोलन, पिकेटिंग

–महात्मागांधी का वन्देमातरम् पर पहला वक्तव्य, मोतीलाल नेहरू का जवाहरलाल नेहरू को पत्र, वन्देमातरम् का उल्लेख,

वन्देमातरम् पर रोक

वसुधा में जीतेन्द्र मोहन बनर्जी का 'वन्देमातरम्' पर लेख

१६ अक्टूबर १९०५–"रक्षा बंधन"

चितरंजन गुहठाकुर पर वन्देमातरम् कहने के लिए लाठी वर्षा। बनारस के कांग्रेस अधिवेशन में सरला देवी चौधुरानी द्वारा 'वन्देमातरम्' गायन

रंगपुर में २०० विद्यार्थियों पर वन्देमातरम् कहने के लिये पाँच-पाँच रुपये जुर्माना (नवम्बर)

वन्दे मातरम् सम्प्रदाय की स्थापना (अक्टूबर)

१९०६ 'वन्दे मातरम्' के अंग्रेजी अनुवाद

–आनन्दमठ का अंग्रेजी अनुवाद

–वन्दे मातरम् बंगला दैनिक का प्रकाशन (अगस्त)

–'वन्दे मातरम् अंग्रेजी दैनिक का प्रकाशन—'भारत भारतीयों के लिए' का नारा

श्री अरविन्द के 'इन्दु प्रकाश' में 'वन्देमातरम् की राजनीतिक व्याख्या करते सात लेख

बारीसाल सम्मेलन (१४–१५ अप्रैल) और 'वन्दे मातरम्' का राजतिलक, पहला लाठी चार्ज। २० मई को बारीसाल में वन्देमातरम् जुलूस

भगिनी निवेदिता द्वारा राष्ट्रध्वज पर वन्दे मातरम्' (?)

'टाइम्स' में वन्देमातरम् पर वक्तव्य

–'वन्देमातरम्' भारत का मार्सेलिस

कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में सीमित स्वराज्य की मांग, रवीन्द्र द्वारा वन्देमातरम् गायन

कलकत्ता में लोकमान्य तिलक और गणेश श्रीकृष्ण खापर्डे का विराट जुलूस (जून)

अनुशीलन समितियों की स्थापना

मुस्लिम लीग का जन्म

वारीन्द्र कुमार घोष द्वारा क्रान्तिकारी दल की स्थापना।

धुलिया (महाराष्ट्र) में वन्देमातरम् सभा

१९०७ श्रीमती भीखाजी कामा द्वारा जर्मनी में वन्देमातरम् अंकित ध्वजा रोहण।
–लाहौर में जुलूस और गिरिफ्तारी
–रावलपिंडी में स्वदेशी आन्दोलन के नेताओं की गिरिफ्तारी और दमन
अरविन्द द्वारा बकिम का 'ऋषि'' कहकर सम्मान–१६ अप्रैल १९०७
अरविन्द गिरफ्तार (रवीन्द्रेर लह नमस्कार)
–ब्रह्म बांधव गिरफ्तार
बिपिनचन्द्र पाल की सजा
–सुशील चन्द्र सेन को वन्दे मातरम्' कहने के कारण बेंत लगे
१९०८ –क्रांतिकारी आंदोलन आरम्भ
–२७ फरवरी को तूतीकोरन की कोरल मिल्स में हड़ताल और वन्देमातरम्
–तिन्नीवैली में वन्देमातरम्
–जून १९०८ बम्बई में तिलक के मुकदमें के समय अदालत की सामने वन्देमातरम् का नारा
–पहला बम विस्फोट
–वन्देमातरम्' का अंतिम अंक
–खुदीराम बोस 'वन्देमातरम्' कह कर शहीद हो गये
–तिलक को दण्ड।
–अलीपुर बम काण्ड में अरविंद बंदी।
–बेलग्राम में तिलक के बिवासिब पर व देमातरम् कहने के लिये छात्रों की गिरिफ्तारी और पिटाई
१९०९ –जुलाई में इंगलैंड में मदनलाल धिंगरा वन्देमातरम्' कहकर शहीद हो गये।
–पेरिस के भारतियों द्वारा जेनेवा से वन्देमातरम् का प्रकाशन
–दिल्ली दरबार
–बंगभंग का आदेश रद्द
–राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित
१९१२ –लार्ड हार्डिग पर बम
–गोखले का २२ अक्टूबर को केपटाउन में स्वागत और वन्देमातरम् का नारा
१९१४ –रविन्द्र के घरे बाहिरे में वन्देमातरम् क्रांति सन्देश
–कामागाटामारू जहाज पर 'वन्देमातरम्' ध्वज (कनाडा)
–प्रथम विश्वयुद्ध आरम्भ (४ अगस्त १९ ४)
–लाला हरदयाल द्वारा स्विटजरलैण्ड से 'वन्देमातरम्' अखबार का प्रकाशन।
–अमेरिका में गदर पर्टी की स्थापना
–तिलक रिहा
१९१५ –गांधी जी भारत आ गये

१९१६ –लखनऊ कांग्रेस में औपनिवेशिक स्वराज्य की मांग, होमरूल आंदोलन

–्नीबेसेंट नजरबन्द

१९१९ –रोलट एक्ट का विरोध

जालियाँ वाला बाग में हत्याकांड

१९२० -असहयोग आन्दोलन, लाला लाजपतराय द्वारा दिल्ली से हिन्दी में 'वन्देमातरम्' अखबार का प्रकाशन

१९२१ · सविनय अवज्ञा आंदोलन, चौरी चौरा काण्ड, आन्दोलन समाप्त

१९२३ –स्वराज्य पार्टी का आन्दोलन

–काकीनाडा कांग्रेस में विरोध के बाबजूद पं॰ विष्णु दिगंबर पलुस्कर द्वारा वन्देमातरम् गायन

आनन्दमठ का मराठी अनुवाद–वासुदेव गोविन्द आप्टे

१९२७ रामप्रसाद बिस्मिल शहीद हो गये 'वन्देमातरम्' कहकर

–अस्फाकउल्ला खाँ शहीद हो गये

१९२८ –साइमन कमीशन का बहिष्कार

'इनकिलाब–जिन्दाबाद' का नारा

१९२९ लाहौर कांग्रेस में 'पूर्ण स्वाधीनता' की मांग

प॰ विष्णु दिगबंर पलुस्कर द्वारा काफी राग में 'वन्देमातरम्' गायन।

१९३०-३३ स्वदेशी सत्याग्रह आन्दोलन,

–वन्देमातरम् पर अनेक राष्ट्रीय गीतों की रचना

–आनन्द मठ जब्त

–२६ जनवरी को 'पूर्ण स्वाधीनता' की प्रतिज्ञा

–दांडी मार्च और नमक सत्याग्रह

१९३४ सूर्यसेन शहीद हो गये - 'वन्देमातरम्' कहने के कारण पिटाई और अचेतावस्था मे फांसी

१९३६ बनारस की रेकाॅर्डिंग कम्पनी द्वारा वन्देमारम् और मेरी माता के सरपर ताज रहे गीतों के रेकार्डों का निर्माण।

१९३७ 'वंदेमातरम्' पर मुसलमानो को आपत्ति

–'वंदेमातरम्' पर रवीन्द्र का वक्तव्य

–'वन्देमातरम्' पर पं० नेहरू का वक्तव्य और वन्देमातरम् प्रस्ताव

१९३७ कांग्रेसी मंत्रिमण्डलों की स्थापना।

१९३८ हरिपुरा कांग्रेस—वन्देमातरम् के अंश मात्र को स्वीकृति

–वन्देमातरम् में सशोधन—सप्तकोटि के बदले त्रिशंकोटि

–प्रभात स्टूडियो मे प्रथम ध्वनि मुद्रण

–पुलिस बैंक पर मार्च के लिए मास्टर कृष्ण राव द्वारा वन्देमातरम् की संगीत रचना

१९३९ द्वितीय महायुद्ध आरम्भ, गांधी जी द्वारा हरिजन (जुलाई अक) में वन्देमातरम् पर विचार

१९४०	व्यक्तिगत सत्याग्रह, आचार्य विनोबा भावे प्रथम सत्याग्रही
१९४१	बम्बई से गुजराती 'वन्देमातरम्' अखबार का प्रकाशन
१९४२	'भारत छोड़ो' आन्दोलन
	–नेताजी सुभाषचन्द्र बोस द्वारा आजाद हिन्द फौज की स्थापना और युद्ध
	–भारत भूमि पर विजय पताका रोपण (जयहिन्द)
१९४३	मद्रास मे सेना के नौ बंगाली युवक 'वन्देमातरम्' कहकर शहीद हो गये ।
१९४५	महायुद्ध की समाप्ति । अणु बम विस्फोट
१९४५	'आनन्द मठ' का बंगला नाट्य रूपान्तर – वाणीकुमार द्वारा
१९४७	भारत स्वतंत्र—१५ अगस्त १९४७पं० ओंकारनाथ ठाकुर द्वारा आकाशवाणी पर स्वतन्त्रता के प्रथम प्रभात मे वन्देमातरम् गायन ।
	–रेडियो पर मास्टर कृष्णराव द्वारा वन्देमातरम् गायन (चैत्र मास)
	–गाँधी जी के समक्ष श्री दिलीप कुमार राय द्वारा 'वन्देमातरम्' गायन (प्रार्थना सभा)
१९४८	वन्देमातरम् मे संशोधन—त्रिशंकोटि के बदले 'कोटि कोटि'
	–संविधान सभा में राष्ट्रीय गीत का प्रश्न
	३० जनवरी ४८–गांधी जी की हत्या। नेहरू जी द्वारा अगस्त ४८ को लोक सभा में वन्देमातरम् पर वक्तव्य
१९५०	२४ जनवरी—वदेमातरम् को राष्ट्रगान का पद (जन गन मन के साथ)
१९६४	'वदेमातरम्' बंगला पत्रिका का प्रकाशन
१९५५	'आनन्द मठ' का मामावेरेरकर द्वारा मराठी अनुवाद
१९६१	सम्पूर्णानन्द कमेटी द्वारा 'वन्देमातरम्' पर विचार
	–आकाशवाणी पर नित्य प्रसारण और छात्रों को गीत कंठस्थ करने का निदेश
	– आनन्द मठ' फिल्म—वन्देमातरम् की नयी तर्ज
	वन्देमातरम् फिल्म— (आन्ध्र में)—श्री नारसिंह रेड्डी
१९६२	आनन्द मठ का हिन्दी नाट्य रूपान्तर एवम् मंचन (रूपा. श्री ठाकुर प्रसाद सिह, मंचन-नाट्य परिषद् वाराणसी)
	आनन्द मठ का बंगला रुपान्तर और मंचन (रूपा० श्री शचीन्द्र नाथ, संगीत-श्री पंकज कुमार मल्लिक)
	बनारस की रेकार्डिंग कम्पनी द्वारा नस-नस बोले वन्देमारम् गीत का रेकार्ड
१९७५-७६	वंदेमातरम् शताब्दी समारोह ।

• विद्रोहों की विस्तृत कथा के लिए देखें—
'भारत का मुक्ति संग्राम'—लेखक श्री अयोध्या सिह
रेखा प्रकाशन, ११ मणि मुखर्जी रोड, कलकत्ता

संदर्भ ग्रन्थ (बंगला)

१—कमलाकान्तेर दफ्तर		
२—आनन्दमठ तृतीय, चतुर्थ, पंचम संस्करण		
३—बंकिमचन्द्र रचनावली (दोनों खण्ड) सम्पादक		श्री योगेशचन्द्र बागल
४—बंकिमचन्द्र		श्री अक्षय कुमार दत्त गुप्त
५—बंकिम मानस		,, अरविन्द पोद्दार
६—शिशु बंकिम		,, एक कड़ी दे
७—बंकिमचन्द्र		,, हेमेन्द्रदास गुप्त
८—भारत गौरव बकिमचन्द्र सुरेन्द्रनाथ		कम ा देवी
९—प्रतिभा		, रजनीकान्त गुप्त
१०—चरित कथा		श्री रामेन्द्र सुन्दर त्रिवेदी
११—बंकिमचन्द्र और मुसलमान समाज		श्री रेजाउल करीम
१२—बकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय जीवन चरित		,, शचीशचन्द्र चट्टोपाध्याय
१३—बंकिम जीवनी		,, ,,
१४—बंकिमचन्द्र		,, सुबोधचन्द्र मजुमदार
१५— ,,		,, सुबोधसेन गुप्त
१६— ,,		,, मणि बागची
१७— ,,		,, हेमेन्द्र प्रसाद घोष
१८—वंकिमचन्द्रेर स्मृति चिन्ह		,, योगेशचन्द्र बसु
१९—बंकिमचन्द्र		,, ब्र जेन्द्रनाथ वद्योपाध्याय सजनीकांत दास
२०—अनोन्यदर्शन बंकिमचन्द्र रवीन्द्रनाथ		श्री अमृतसूदन भट्टाचार्य
२१—बांगलार मनीषि		श्री बिजन बिहारी महाचार्य
२२—धर्मानुशीलने बंकिमचन्द्र		,, हेमेन्द्रनाथ दास गुप्ता
२३—शतवर्षेर आलोये		श्री असीमा मैत्रा
२४—चरित चित्र		,, विपिनचन्द्र पाल
२५—बंकिमचन्द्र और रवीन्द्रनाथ		श्री गोपालचन्द्र राय
२६—ढाकाये रवीन्द्रनाथ		,, ,, ,,
२७—बंकिम साहित्येर भूमिका		,, ,, ,,
२८—कालेर मानुष बकिमचन्द्र		,, सोमेन्द्रनाथ बसु
२९—साहित्य सम्राट बंकिमचन्द्र		श्री विश्व विश्वास
३०—बंकिमचन्द्रेर चिट्ठी पत्तर		श्री क्षेत्र गुप्त

६१ – बंकिम सरणी	श्री प्रमथनाथ बिशी
३२—बंकिम साहित्येर विचार	, तथा वीथिका चक्रवर्ती
३३—चिन्ता नायक बंकिमचन्द्र	श्री भवतोष दत्त
३४—स्वदेशी युगेर चार अध्याय	श्री पुलकेश दे सरकार
३५—बंकिम साहित्येर भूमिका	श्री मोहितलाल मजुमदार
३६—बंकिम वरण	,, ,,
३७—बंकिम साहित्य-पथ	,, हर प्रसाद मित्र
३८—बंकिम विचार	,, शंकर प्रसाद नश्कर
३९—बंकिमचन्द्र और शरत्चन्द्र	,, गोपालचन्द्र राय
४०—बंकिम दर्शनेर दिग्दर्शन	,, त्रिपुरा शंकर
४१— बंकिम प्रतिभा	,, विमलचन्द्र सिंह
४२ बंकिम अभिधान	,, अशोक कुण्डु
४३ प्रबन्धकार बंकिमचन्द्र और उन्नसवीं शताब्दी बांगाली समाज	,, आलोक राय
४४—कथा साहित्ये बंकिमचन्द्र	,, सुधाकर चट्टोपाध्याय
४५—बंकिमचन्द्र ओ रवीन्द्रनाथ	,, अर्पण मित्र
४६—बंकिमचन्द्रेर उपन्यास	,, मोहितलाल मजुमदार
४७—राजपथेर पांचाली	,, दीप्रेन्द्र कुमार सान्याल
४८—बंकिमचन्द्रेर अंग्रेजी उपन्यास	,, पल्लव सेनगुप्त
४९—बंकिमचन्द्रेर कमलाकान्तेर दफ्तर	आशा देवी
५०—बंकिम साहित्य-समाज और साधना	,, प्रशान्त बिहारी मुखोपाध्याय
५१ विविध रचनावली	,, बंकिमचन्द्र चटर्जी
५२— ईश्वरचन्द्र गुप्तेर रचनावली	,, ,,
५३— बंकिम काहिनी	,, श्रीशचन्द्र चट्टोपाध्याय
५४—मुक्तिर संधाने भारत	,, योगेशचन्द्र बागल
५५—बंकिमचन्द्र जीवन और साहित्य	श्री प्रेमेन्द्र मित्र
५६—भारतेर स्वाधीनता संग्रामेर इतिहास	,, नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य
५७—बंग दर्शन ओ बांगालीर मनन साधना	,, डा० सत्यनारायण दास
५८—बंकिमचन्द्र	,, अक्षयचन्द्र सरकार
५९—अमृतलाल बसु जीवनी और साहित्य	सं डा० अरुण कुमार मि·
६०—बंगला रंगमंचेर इतिवृत्त	?
६१—जातीयतार मंत्र गुरु जांरा	,, प्रियनाथ जाना
६२—बंकिम प्रसंग	, सं सुरेश समाजपति
६३—वन्देमातरम् (काव्य संग्रह)	,, योगीन्द्रनाथ सरकार
६४—भारतेर सशस्त्र विप्लव	
६५—घरे बाहिरे	,, रवीन्द्रनाथ ठाकुर

६६—कांग्रेस	श्री हेमेन्द्र प्रसाद घोष
६७—वन्देमातरम् (काव्य सग्रह)	,, निशाकान्त
६८—वन्दे मातरम (उपन्यास)	,, विनायक सदाशिव सुखठणकर
६९— ,,	,, रवीन्द्रनाथ बहरी
७०—स्वदेशी आन्दोलन और बंगला साहित्य	?
७१—देवी चौधुरान	बंकिम चन्द्र चटर्जी
७५ बंकिम चन्द्रेर विविध रचनावली	श्री ब्रजेन्द्र नाथ बनर्जी
७३—जीवनेर भरा पाता	सरला देवी
७४—जातीय गान	,,
७५—बंकिम सरणी	प्रेमेन्द्र मित्र
७६—जातीय गाद	खगेन्द्र नाथ मित्र
७७—उनविंश शतकेर गीत कविता संकलन	श्री कुमार वंद्योपाध्याय
७८ बंकिम-परिचय	श्री अमरेन्द्र राय
७९—देशेर कथा	श्री सखाराम गणेश देउस्कर
८०—बांगलाय विप्लववाद	श्री नलिनी किशोर गुह
८१—भारते विप्लवान्दोलन	श्री हेमेन्द्रदास गुप्त
८२—विप्लवी बांगला	श्री राजेन्द्र लाल आचार्य
८३—आत्म वाहिनी	श्री अरविन्द कानूनगो
८३—बांगलाय विप्लवेर प्रचेष्टा	श्री हेमचन्द्र कानूनगो
८५—बांगालीर इतिहास आदि पर्भ	श्री नीहार रंजन राय
८६—श्री अरविन्द ओ बांगलार स्वदेशी युग	गिरिजा प्रसन्न राय चौधरी
८७—भारतेर द्वितीय स्वाधीनता संग्राम, प्रथम खण्ड, द्वितीय संस्करण	डा० भूपेन्द्रनाथ दत्त
८८—वन्देमातरम् (उपन्यास ४ विभिन्न लेखकों के)	
८९—स्वर वितान	श्रीं रवीन्द्रनाथ ठाकुर
९०—जीवनेर झरा पाता	श्रीमती सरलादेवी चौधुरानी
९१ – जातीय संगीत	,, ,,

हिन्दी

१—राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास (१९६२)	श्री मन्मथनाथ गुप्त
२—ब्रिटिशकालीन भारत का इतिहास	,, विद्याधर महाजन
३—आधुनिक भारत का इतिहास	,, के० एन० त्यागी
४— ,, ,,	,, डा० ईश्वरी प्रसाद
५—कांग्रेस का इतिहास	,, पट्टाभि सीतारामैया
६—जमनालाल बजाज के पत्र	,, जमनालाल बजाज
७—भारत में सहस्त्र क्रान्ति की भूमिका	,, तारिणी शंकर चक्रवर्ती

८—भारत का मुक्ति संग्राम ,, अयोध्या सिंह

९—वन्दे मातरम् ,, आद्या प्रसाद नारायण सिंह

१० गीत गोविन्द ,, महाकवि जयदेव

११—संगीत आलोक

१२—संगीत सरिता ,, पं० लालमणि मिश्र

१३—राष्ट्रीय संगीत ,, ऋषि वैली ट्रस्ट

१४—वरद् वाणी ,, प्रेम नायायण

१५—हिन्दोस्तां हमारा १-२ ,, हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट

१६—राष्ट्रीय कविताएँ सूचना विभाग उ० प्र०

१७ – भारतेन्दु गुन्थावली स० शिव प्रसाद मिश्र

१८— राम प्रसाद बिस्मिल ईश्वर प्रसाद वर्मा

कानड़ी

वन्देमातरम्—वन्दुकथा वन्दुव्यथा शिवरामु

मलयालम

स्वयं शिक्षक

मराठी

वन्दे मातरम् श्री अमरेन्द्र लक्ष्मण गाडगिल

सुलभ विश्वकोश (भाग ४ का) स य. रा. दाते चिंग. कर्वे

भारतीय राष्ट्र जीते ज. ग. करंदीकर

अर्वाचीन चरित्रकोश म. म. सिद्धेश्वर शास्त्री चित्रांव

अंग्रेजी

अवर नेशनल साग्स् पब्लिकेशन्स डिविजन

वन्दे मातरम् रिसर्च सोसायटी एम० नम्बर ५

एन साइक्लोपडिया ब्रिटानिका खण्ड ५—१९५८

वन्दे मातरम् एण्ड इण्डियन नेशलिज्म प्रो० हरिदास मुखर्जी

एनल्स आफ रुरल बेंगाल डब्लू हण्टर

बकिमचन्द्र चैटर्जी एण्ड द वन्दे मातरम् सांग श्री नगेन्द्रनाथ गुप्त आर० के प्रभु

वन्दे मातरम् श्री बी० सी० चैटर्जी दिल्ली विश्व विद्यालय

ग्लेगस् मेमायर्स आफ द लाइफ आफ द राइट आनबुल वारेन हेस्टिंग्स

संन्यासीज एण्ड फकीर रेडर्स ऑफ बेगांल जैमिनी मोहन घोष

(ईस्टर्न बंगाल) डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स कलकत्ता १९१२

वन्दे मातरम् (अंग्रेजी अनुवादों का संग्रह)

रिसजेन्ट इंडिया क्षिक्षिर कुमार मित्रा

इंडिया डिवाइडेड डा० राजेन्द्र प्रसाद

द रोल ऑफ ऑनर	के. सी. घोष
ए हिस्ट्री ऑफ इंडिया (खंड २)	पर्सीवल स्वीयर
बकिम तिलक दयानन्द	श्री अरविंद
इवोल्यूशन ऑफ इंडिया	शिशिर कुमार मित्रा
इंडिया सिन्सर एडवेंट ऑफ द ब्रिटिश	जगदीश सरन शर्मा
ए बुक आफ इंडिया	बी० एन पांडे
श्री अरविंदो एन्ड न्यूथाट इन इंडियन पालिटिक्स	प्रो० हरीश मुखर्जी एन्ड उमा मुखर्जी

पत्र पत्रिकाएँ

१—साधना साप्ताहिक		गुजराती
२—कादम्बिनी मासिक		हिन्दी
३—ज्ञानोदय मासिक		,,
४—सगीत मासिक		,,
५ कल्याण	,,	,,

(नारी और धर्मांक, भक्ति अँक, उपासना अंक, हिन्दू संस्कृति और, श्री भगवत् कृपा अँक, शक्ति अंक उपनिषद अँक, देवी भागवत् अँक, साधना अँक)

६ –धर्मयुग साप्ताहिक*		हिन्दी
७—बालक मासिक		बंगला
८—बंग दर्शन	,,	,,
९—बग श्री	,,	,,
१० —नारायण	,,	,,
११ – बाँधब	,,	,,
१२—प्रवासी	,,	,,
१३—भारतवर्ष	,,	,,
१४—साहित्य	,,	,,
१५— बसुमती	,,	,,
१६—आनन्द बाजार पत्रिका		(काँग्रेस विशेषांक)
१७—देश साप्ताहिक		,,
१८—सोशलिस्ट इंडिया		सितम्बर, १९७५



एक शोध कथा–अपनी बात

–भानु मेहता–

काशी मे एक अनोखी संस्था है—ठलुआक्लब ! यहाँ मानव गुणों का अभिनन्दन होता है, कही नहीं होने वाले समारोहों का आयोजन होता है। क्लब का बाह्यरूप हास परिहास भरा हल्का प्रतीत होता है और इस रूप मे क्लब "रसगुल्ला की शतवार्षिकी" "घटोत्कच-जयन्ती" मनाता है। इसके साथ ही इसका अन्तर गुरुगभीर है। वह न्याय, गणित, भूगोल, इतिहास, संगीत मे निष्ठा और गहराई से खोजबीन करता है और अपने अभिनन्दन पत्रों और आयोजनों में अनकही कथाएँ प्रस्तुत करता है।

संसद सदस्य श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने 'धर्मयुग' में सन् १९७२ में एक लेख लिखा और उस पर टिप्पणी करते हुए श्री बालकवि बैरागी का एक पत्र 'के बोले माँ तुमि अबले' छापा। बैरागी जी ने लिखा था कि सन् १९७२ में वन्दे मातरम् गीत की शताब्दी मनायी जानी चाहिये, सारे भारत मे समारोह होने चाहिये। फिर सन्नाटा, कही कोई प्रतिक्रिया नहीं।

ठलुआ शोध कर्ता विकल हुए पर कोई ठोस प्रमाण नही मिला कि सन् १८७२ में गीत लिखा गया ! दो तीन और लोगों के लेख भी हाथ लगे पर उनसे प्रमाणों की बाबत पूछा तो कोई स्पष्ट उत्तर नही मिला। भारत के कुछ मूर्धन्य विद्वानों, राजनीतिज्ञो, ज्ञानवृद्धो के द्वार खटखटाये तो एक ही उत्तर मिला—'आनन्द मठ' उपन्यास में गीत छपा है, पढ़लें। तभी हाथ लगा 'आनन्द बाजार पत्रिका' (बंगला) मे प्रोफेसर भवतोषदत्त का लेख 'मंत्रेर जन्म' (जो इस स्मारिका मे प्रकाशित है)। यही प्रथम लेख था जिसमें ऐतिहासिक तथ्यों का समावेश था। किंतु यहाँ भी उन ग्रंथों और दस्तावेजों का संदर्भ उपलब्ध नही था। लेखों में कुछ लेखकों के नाम हाथ लगे थे पर जब उनके ग्रंथों की बाबत राष्ट्रीय पुस्तकालय से पूछ ताछ की तो पता चला कि इनकी पुस्तकें प्राप्य नहीं हैं। बंगीय साहित्य परिषद भी मौन लगा गया।

अब काशी के पुस्तकालयों में शोध आरंभ हुई। अभिमन्यु पुस्तकालय, कारमाइकेल, विश्वविद्यालय, तुलसी, सेंट्रल हिन्दू कालेज के पुस्तकालयों में कोई ऐसी महत्त्वपूर्ण पोथी नहीं मिली जिससे गाड़ी आगे बढ़ती। तभी "बंग साहित्य समाज" के पुस्तकालय से ४-५ पुस्तकें मिली जिनमे एक थी 'बंकिम प्रसंग'। इस पुस्तक से पता चला कि श्री दत्त के लेख की सामग्री का उद्‌गम क्या था।

बंगला के अमर नाटचकार तथा बंकिम बाबू के घनिष्ठ मित्र के पुत्र श्री ललितकुमार मित्र ने भारतीय जनता को पहली बार यह जानकारी प्रदान की थी कि 'वन्दे मातरम्' गीत कब लिखा गया था।

इससे पूर्व लिखे महर्षि अरविंद के एक लेख में (सन् १९०७) स्पष्ट उल्लेख है कि गीत ३२ वर्ष पूर्व (अर्थात् १८७५) लिखा गया था। किंतु श्री ललित कुमार मित्र ने बंकिम बाबू के प्रेस मैनेजर श्री रामचन्द्र बंद्योपाध्याय तथा बंकिम बाबू के अनुज श्री पूर्णचन्द्र चैटर्जी के बयान लिपिबद्ध किये थे जिनसे पता चलता है कि गीत

अक्टूबर १८७५ से मार्च १८७६ के बीच अवतारित हो चुका था।

जैसा हमेशा होता है कि पहले चरण में उलझाव बढ़ता है, वही हुआ। बंकिम, आनंदमठ, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम नये नये रूप में सामने आने लगे। हमने देखा रवीन्द्र अरविन्द को नमस्कार कर रहे हैं। अरविन्द की वाणी, प्रांज्वल विचार धारा, अग्निशिखासी दमकती भाषा, भारतीय कलम निःसृत रोमहर्षक अंग्रेजी! बंकिम की साहित्य गंगा में गोता मारा तो "आमार दुर्गोत्सव", "एकटी गीत", 'कमलाकान्तेर दफ्तर' मिल गये। इससे ज्ञात हुआ कि बन्दे मातरम् का बीजारोवण किस भाव भूमि मे हुआ रहा होगा। महर्षि को हुए भारत माँ के दर्शन की अद्भुत कक्षा साकार हुई, कान मे गगा तट के मांझियों का गीत गूंजा, अकाल पीड़ित पराधीन भारत के विकल स्वर अन्तर को छूने लगे और सहज अंग्रेजी बूटों की ताल पर उनका सामना करने खड़े निःशस्त्र भारती वीरों के रक्त से रंजित 'वन्दे मातरम्' समवेत स्वर मुखरित होने लगा। फाँसी के फन्दे 'वन्दे मातरम्' कहकर झूलने लगे। ऐसा लगा कि आज हम माँ को भूल गये हैं। अब हम 'बन्दे मातरम्' में निजी स्वार्थ मे हम इतना उलझे, कालाधन जुटाने और भ्रष्टाचार द्वारा जन जुटाने में इतना डूबे कि देश का ध्यान ही नहीं रहा! 'वन्दे मातरम्' हमारा राष्ट्र गान है, परम सम्माननीय है फिर भी वह गाया क्यों नही जाता? इस प्रश्न के मन मे आते ही हमें लगा हम राजनीति के अप्रिय अखाड़े में धँस रहे है जहाँ उत्साह के अजस्र स्रोत 'वन्देमातरम्' के प्रति अकल्पित उदासी छायी है, लोग 'वन्दे मातरम्' कहने से चौंक उठते हैं, बात टालने की कोशिश करते है। क्या चरित्रवान अच्छे बेटे माँ को प्रणाम करने से झिझकते हैं? किंतु हम अच्छे रहे कहाँ? हम तो धन के पीछे दीवाने हो गये, करापवंचन, भ्रष्टाचार' राष्ट्र विरोधी कार्य करने लगे; जितने गंदे काम है उन्हें करने में ही शान समझने लगे। हम कुपुत्र बन गये। नयी व्यवस्था से स्थिति सुधरी पर अभी हमें अपना परिष्कार करना है. अपने को 'वन्देमातरम' कहने के योग्य बनाना है।

हम अभी विचारों में डूबे ही थे कि राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता से बंकिम साहित्य पर लगभग १५० ग्रथों की सूची आ गयी। सहयोगी श्री विश्वनाथ मुखर्जी (ठलुआबोर) कैंसर के दुष्ट रोग से आक्रांत थे पर ठलुआ उत्साह ने उन्हें बेचैन किया और वे कलकत्ता पहुँच गये। यहाँ उन्होंने इन ग्रथों का अध्ययन किया और अन्य अनेक ग्रन्थ देखे। वे नैहाटी स्थित बंकिम की जन्म भूमि काटालपाडा गये और उस कक्ष का दर्शन किया जहाँ बैठकर बकिम ने वन्देमातरम् गीत लिखा था। यहाँ उन्हें बकिम संग्रहालय के क्यूरेटर श्री गोपाल चन्द्र राय मिले और उनसे भी ज्ञान का प्रकाश मि ा। कांटालपाड़ा से शांतिनिकेतन आये। शांतिनिकेतन में डा० शिवनाथ के सहयोग से पुस्तकालय मे अनेक अप्राप्य ग्रंथ मिल गये। पता चला कि गुरुदेव की वाणी में गाया 'वन्देमातरम्' यहाँ टेप पर सुरक्षित है और उसकी प्रतिलिपि विशेष आवेदन पर उपलब्ध हो सकेगी। श्री मुखर्जी शांतिनिकेतन से मकर सक्रांति के दिन महाकवि जयदेव की जन्मभूमि केन्दुलो ग्राम जा पहुँचे। उस दिन यहाँ बाउल गायकों का विशाल मेला जुटता है। यहाँ आनन्द मठ की पृष्ठ भूमि 'वारीन्द भूमि' के दर्शन हुए।

श्री मुखर्जी काशी लौटे तो उत्साह भरे थे। मिल गया था 'वन्देमातरम्' का सम्पूर्ण इतिहास। तभी श्री अयोध्या सिंह की एक पुस्तक मिली। उसमें लिखा था 'ढाका में रमना मैदान में स्थित काली मदिर के महाराष्ट्री पुजारी के कथनानुसार सन् १७७० ई० में विद्रोही सन्यासी 'ॐ वन्देमातरम्' कहकर इस्टइंडिया कम्पनी पर हमला

करते थे'। अर्थात नारा दो सौ वर्ष पुराना हो गया। फिर हाथ आयी चंडी प्रकाशन प्रयाग की एक पुस्तक 'वन्देमातरम्', जिसमें लिखा था कि सुन्दर बन के अघोर पंथी इसी मंत्र का जाप करते थे और शब्द द्वय अनादि बनने लगे। शोध इन दिशाओं में भी चली पर हाथ कुछ न आया। यही समझे कि भलेही 'वन्देमातरम्' मंत्र रहा हो पर उसे जगाया बंकिम ने, मंत्र के देवता-भारत माँ का साक्षात किया बंकिम ने और राष्ट्रगान का स्तवन किया ऋषि बंकिम ने।

अन्यत्र से कुछ कुछ सामग्री आने लगी . महाराष्ट्र गुजरात, आंध्र, तामिळनाडु, केरल से जानकारियाँ और साहित्य मिले। बूंद बूंद से सागर बनने लगा। पंडित कमलापतिजी की कृपा से सोशलिस्ट इंडिया में प्रकाशित न्याय मूर्ति श्री वैद्य का लेख मिला।

पुनः कलकत्ता, शांतिनिकेतन की दौड़ लगायी। गुरुदेव की वाणी में 'वन्देमातरम्' गीत मिला जो इस अवसर पर शान्ति-निकेतन के संग्रहालय को अपनी कृतज्ञता अर्पित करते हुए हम समारोह मे आपको श्रवण करायेंगे। शांतिनिकेतन और कलकत्ता में अध्ययन का दूसरा दौर चला। श्रद्धेय सीतारामजी सेक्सरिया ने अपने संस्करण सुनाये तथा अपने आशीर्वाद से प्रोत्साहित किया। कलकत्ता से उत्साह लेकर हम लौटे।

महाराष्ट्र मे चलते फिरते विश्वकोश श्रद्धेय श्री गजानन्द विश्वनाथ ने 'विवेक' में पत्र लिखकर मराठी लेखकों से हमें 'वन्देमातरम्' सामग्री भेजने का अनुरोध किया, फलत. श्री अ. ल गाडगिल तथा अन्य लेखकों ने सामग्री भेजी, गुजरात से श्री जगदीश भट्ट का लेख मिला।

वाराणसी में ही प्रो० हरिदास मुखर्जी और प्रो० उमामुखर्जी की एक पुस्तक प्राप्त हुई जिसमें अरविंद सम्पादित 'वन्देमातरम्' की बंगभंग आंदोलन में भूमिका का विशद विवेचन था। उधर श्रीमती मधुरा जसराज की कृपा से मास्टर कृष्ण राव फुलम्ब्रीकर की सुपुत्री श्रीमती वीणाचिटको से संपर्क स्थापित हुआ और 'वंदेमातरम्' गायन संबंधी सामग्री प्राप्त हुई। आर्य समाज शताब्दी समारोह में काशी पधारे वन्देमातरम् रामचन्द्र राव से भी भेंट हुई। ये सब सामग्रियाँ स्मारिका मे प्रकाशित है। इनसे 'वन्देमातरम्' गीत का ही नहीं हमारे राष्ट्र का इतिहास बनता हैं।

जिस अपूर्व मातृभक्ति, राष्ट्र भक्ति से प्रेरित होकर सौ वर्ष पूर्व बंकिम ने यह अद्वितीयस्तवन लिखा था आज उस वन्दना का वन्दन करते हुए, हम ऋषि बंकिम को और उन सभी शहीदों को अपना प्रणाम निवेदित करते हैं जिन्होंने 'वन्देमातरम्' कहकर मृत्युका सहर्ष आलिंगन किया! स्व० बाबू शिवप्रसाद गुप्त को प्रणाम करते हैं जिन्हों ने ४० वर्ष पूर्व दुर्गा पूजा की महानवमी को राष्ट्र को माता का मन्दिर' प्रदान किया और जिसका पूज्य बापू ने उद्घाटन किया।

यह स्मारिका, यह शोध यात्रा, समर्पित है राष्ट्र को इस आशा से कि उसके सपूत एक बार पुनः मातृभक्ति का संकल्प लेंगे भारत माता के निष्ठावान, सच्चरित्र, यशस्वी पुत्र सिद्ध होंगे और राष्ट्र के उन्नयन के लिये कुछ भी उठा न रक्खेंगे। तभी होगा माँ का शृंगार, उनके पूजन का महोत्सव और तभी सोल्लास हम मुक्त कंठ से गा सकेंगे 'वन्देमातरम्'।

वन्देमातरम्

चित्रावली



'पूजन' 'संकल्प'

वन्देमातरम्

पहली अक्टूबर

(आश्विन शुक्ल अष्टमी)

१९७६

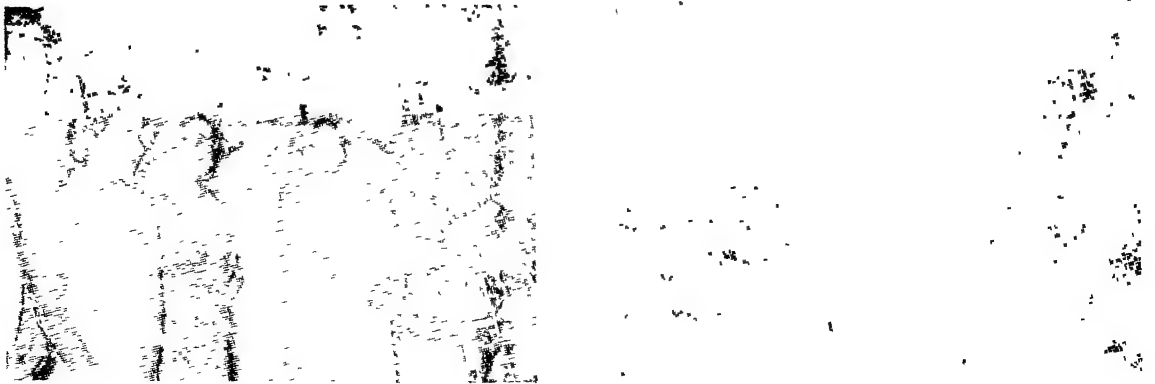
को

वन्देमातरम् शती समारोह

का

शुभारम्भ

वन्देमातरम्



'वन्देमातरम गायन' 'मातृदर्शन'

फोटो–ब्राइटस्टूडियो, वाराणसी

नमामि कमलां अमलां अतुलाम्

वन्दे मातरम्

राष्ट्रगीत

की

सौवीं वर्षगांठ पर

विनीत वन्दना



अरविन्द कुमार

सुन्दरविला, चौकाघाट-वाराणसी



सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम्
शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्

वन्दे मातरम्

●

कोटि कोटि कण्ठ निनाद कराले
कोटि कोटि भुजैधृत खरकरवाले
के बले मा तुमि अबले
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणीं मातरम्

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्

कमला कमलदल विहारिणी
वाणी विद्यादायिनी नमामी त्वाम्
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफला मातरम्, वन्दे मातरम्





प्रणमामि सुभग सुदेश भारत, सतत मम मनरंजनम्

मम देश मम सुखदा समय तन, प्राण-धन जन-जीवनम्

—श्रीधर पाठक

०

०

बाहुते तुमि मा शक्ति

हृदये तुमि मा भक्ति

तोमारई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे

वन्दे मातरम्

को

सादर प्रणाम







फोन :
३७०

मेसर्स रमेशचन्द्र एण्ड ब्रदर्स

ब्रिक्स मैन्युफैक्चरर्स

मोतीनगर, उन्नाव (उ० प्र०)

वन्दे मातरम्

गाहिलो सकले मधुर काकली

गाहिल वन्दे मातरम्

सुजलाम सुफलाम मलयज शीतलाम्

सुखदाम वरदाम मातरम्

मिले सब भारत सन्तान
एक तान मन प्राण,
भारत भूमिर तुल्य आछे कोन स्थान ?
कोन अद्रि हिमाद्रि समान ?
फलवती वसुमती स्रोतस्वती पुण्यवती
शतखनी रत्नेर निधान
होक भारतेर जय
जय भारतेर जय

वन्दे मातरम्

शताब्दी समारोह

को

हमारी शुभकामनाएँ



वन्दे मातरम्

—यह मंत्र केवल बंगाल के लिए नहीं है।
यह वास्तव में विश्वमाता की वंदना है!

—रवीन्द्र ठाकुर

—जिन लोगों को भारत से प्यार है या करते हैं, भारत के हितैषी हैं, वे लोग इस गीत को मंत्र के रूप में स्वीकार करेंगे।

—डाक्टर जी० ए० गियर्सन, (१२।६।१९०६)

फोन : ५२७६०
५४५०९

अ नु प मा

(वातानुकूलित)

२०।३१ चौक-वाराणसी

⁂

कलात्मक बनारसी साड़ियों

के

निर्माता एवं विक्रेता



के

वन्दे मातरम्

प्रदर्शन कक्ष

अनामिका   केडिया कला केन्द्र   सुमित उद्योग

वन्दे मातरम्

*

वन्दे मातरम्

*

वन्दे मातरम्

*

वन्दे मातरम्

*

वन्दे मातरम्

*

वन्दे मातरम्





मेसर्स रमेश मेडिकल हाल

[होलसेल केमिस्ट]

लहुराबीर—वाराणसी



मा गो जाय जेन जीवन चले
शुधु जगत माझे तोमार काजे
वन्दे मातरम् बले

वन्दे मातरम् शताब्दी

अमर हो

वन्दे वन्दे मातरम्, सदा पूर्ण विनयेन।
श्रीदेवी परिवन्दिता, या निज पुत्र जनेन॥
या निज पुत्र जनेन, पूजिता मान्या नूपा।
या धृत भारतवर्ष, देश वसुमती स्वरूपा॥

—श्रीराय देवी प्रसाद पूर्ण

वन्दे मातरम्

शताब्दी को

हमारा सादर नमन

मेसर्स पीकेज फार्मास्युटिकल्स

(पूर्वी उत्तर प्रदेश में ट्रांसफ्यूजन बोतलों के एक मात्र निर्माता)

भगवानपुर, लंका-वाराणसी-५

होक भारतेर जय
जय भारतेर जय
गाओ भारतेर जय
कि भय कि भय
गाओ भारतेर जय





हमारा राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम्

देश-वन्दना का

एक पवित्र नारा है

बोलो--वन्दे मातरम्



हमारा राष्ट्रीय गीत

वन्देमातरम्

अमर रहे







वाराणसी नगर महापालिका नागरिकों की सेवा में अहर्निश प्रयत्नशील

अपने घर और उसके आस-पास के वातावरण को
स्वच्छ व सुन्दर रखकर हम अपने नगर को
स्वच्छ व सुन्दर बनाने में नगर महापालिका
की बड़ी सहायता कर सकते हैं

सन् १९७६ की प्रमुख उपलब्धियाँ

१ नगर महापालिका की आय में विभिन्न करों से लगभग एक करोड़ रुपये की वृद्धि।

२ चुङ्गी की आय में ७५ प्रतिशत की वृद्धि।

३ सार्वजनिक मार्गों एवं स्थानों से ८००० से अधिक अतिक्रमण हटाये गये। अतिक्रमण हटाओ अभियान तीव्र गति से चल रहा है।

४ नगर के मुख्य मार्गों का विकास व उनके चौराहों पर विद्युत-नियंत्रण सिगनल-यातायात की व्यवस्था।

५ सार्वजनिक पार्कों का सर्वांगीण विकास व हजारों की संख्या में वृक्षारोपण।

६ मुख्य बाजारों एवं मार्गों पर बल्बों के स्थान पर मरकरी लैम्प और ट्यूब राड लगाये जा रहे हैं।

७ आर्थिक दृष्टि से कमजोर आय वर्ग हेतु शिवपुर तथा संक्रामक रोग अस्पताल के समीप सैकड़ों आवासीय भवनों का निर्माण।

८ छुट्टा पशुओं को पकड़ कर नगर के मुख्य मार्गों एवं धार्मिक स्थानों को उनसे उन्मुक्त कराया जा रहा है।

९ घाटों, मन्दिरों और नगर के अन्य स्थानों से भिखारियों को पकड़ कर काशी नगरी को भिक्षुकों से अब मुक्त कर दिया गया है।

सार्वजनिक भूमि व सम्पत्ति की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का परम कर्तव्य है और उस पर अतिक्रमण करना गम्भीर अपराध है।

ह०—बी० के० गुप्ता
उप-प्रशासक

ह०—रामदास सोनकर
प्रशासक

महान् मंत्र

वन्दे मातरम्

की

शतान्दी के अवसर

पर

वंदना



VANDE MATRAM

The Clarks

Group

of Hotels

A chain of five Luxury Hotels in cities that no tourist should miss—Agra. Jaipur, Varanasi, Patna and Lucknow.

Hotels which offer the hospitality and amenities that you are looking for.

Clarks Shiraz, Agra, Clarks Amer, Jaipur, Clarks Hotal, Varanasi.

Clarks Avadh Lucknow. Hotel Mourya Clarks Patna.

CLARKS

GROUP OF

HOTELS

Courtesy

Lion Brijpal Das

Gram :
'CLARKOTEL' Varanasi.
Phone—62021, 22-23 and 62316



वन्दे मातरम् शताब्दी को हमारा सादर प्रणाम

लायन्स क्लब

वाराणसी विशाल

अध्यक्ष—लायन डा० एस० पी० गुप्ता

सचिव—लायन मूलचन्द मेहरोत्रा

एवं सदस्य गण

With Best Compliments

OMEGA SPORTS & RADIO WORKS / RAAG RANG

AUTHORISED DEALERS FOR :

PHILIPS : Radios. Transistors. Recordplayers. Radiograms. etc.

PHILIPS : Hi-Q Stereo System. Portable AC/DC Electrophone etc.

POLYDOR/HMV : Gramophone, Records (English-Hindi-Bangali)

VENUS : Automatic Water Heaters.

VAKILS : Greeting cards for all occasions.

EVEREADY : Radio and Transistor Batteres.

HEARWELL/RIONET CORDS : Hearing Aids, Batteries etc.

SERVICE Prompt and satisfactory service to all types of music and sound articles.

CAR RADIO : Fitting-Service-at.

BANS PHATAK
VARANASI
Phone : 62738

New M. P. Building
Golghar-Gorakhpur
Phone : 1725

तीन लाख से भी अधिक व्यक्ति
गलत नहीं सोच सकते

हजारों परिवारों में आज पुरुषों की पसन्द है
नसबन्दी

उत्तर प्रदेश में परिवार नियोजन कार्यक्रम अब जनता
का कार्यक्रम बन चुका है
और लोग

नसबन्दी कराकर परिवार का आकार छोटा रखने
के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ हैं
नसबन्दी के फायदे अनेक हैं
और
नुकसान कोई नहीं

अफवाहों को कान मत दीजिये !
क्या आप सोच सकते हैं कि
लाखों लोग अपना नुकसान कराने को
तैयार होंगे ?

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित

वन्देमातरम् शताब्दी पर हमारा अभिवादन स्वीकार करें—

हर प्रकार के सिले सिलाये सुन्दर; मजबूत, एव टिकाऊ कपड़ों के लिये पधारें

"सैम्सन" पोशाक के वाराणसी, मिर्जापुर आजमगढ़, बलिया, गाजीपुर जिले के वितरक

★ वस्त्रालय ★

बांसफाटक ★ दशाश्वमेध

वाराणसी

फोन — ६३६३८

वन्देमातरम् शताब्दी समारोह पर वन्देमातरम् समिति की ओर से प्रकाशित स्मारिका का नगर पालिका, मुगलसराय अपने नागरिकों की ओर से स्वागत करती है।

तथा

राष्ट्रीय गीत वन्देमातरम् जिसने सम्पूर्ण भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रभावित किया, जो हमारा पवित्र राष्ट्रीय नारा रहा और जिस नारे ने राष्ट्रीय आन्दोलन को बल दिया, की प्रथम शताब्दी पर हार्दिक अभिनन्दन करते हैं और पुष्पाञ्जली अर्पित करते हुये राष्ट्र की बहुमुखी प्रगति की कामना करते हैं।

पुलक चटर्जी	प्राणनाथ वोहरा	एस० के० विश्वास
प्रभारी अधिकारी	अधिशासी अधिकारी	प्रशासक

नगर पालिका, मुगलसराय, वाराणसी

वन्देमातरम्

राष्ट्र को

शत बार वन्दे मातरम्

प्रधान मंत्री-
रामप्रकाश कपूर

अध्यक्ष-
राजकृष्ण दास



काशी व्यापार प्रतिनिधि मंडल

वा रा ण सी

हमारी शुभ कामनाएं—

कम्बल घर प्रतिष्ठान

विश्वनाथ प्रसाद एण्ड सन्स

बुलानाला, वाराणसी

ऊनी व टेरीन वस्त्रों के प्रमुख विक्रेता

मुख्य प्रतिनिधि—दी रेम्मण्ड ऊलेन मिल्स लि० बम्बई

(बिहार, नेपाल व पूर्वी उत्तर प्रदेश)

भारत टेक्सटाइल्स

कालभैरो, वाराणसी

ऊन, ऊनी होजरी व प्राधुनिक साड़ियों के प्रमुख विक्रेता

मुख्य प्रतिनिधि—*माडेला टेक्सटाइल इन्डस्ट्रीज प्रा० लि० बम्बई*

(बिहार, नेपाल व वाराणसी)

ऊलेन टेक्सटाइल ट्रेडर्स

बुलानाला, वाराणसी

मुख्य प्रतिनिधि—*ऊलेन एन्ड टेक्सटाइल्स इन्डस्ट्रीज लि० बम्बई*

(बिहार व उत्तर प्रदेश)

कम्बलघर इन्डस्ट्रीज

मवइया (सारनाथ) वाराणसी

ऊनी कम्बल व शाल के प्रमुख निर्माता

वन्देमातरम्

द्रुत परिवहन

[२० सूत्री कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण सूत्र]



वाराणसी मुगलसराय

मोटर आपरेटर्स यूनियन

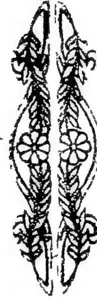
वाराणसी

वन्देमातरम्

हमारा

चिरन्तन मन्त्र

सतत् प्रेरणा स्रोत



वाराणसी जिला परिषद्

सिद्धेश्वरी प्रसाद सिंह
अध्यक्ष

देवव्रत दीक्षित
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

वन्दे मातरम् शताब्दी पर

हार्दिक अभिनन्दन

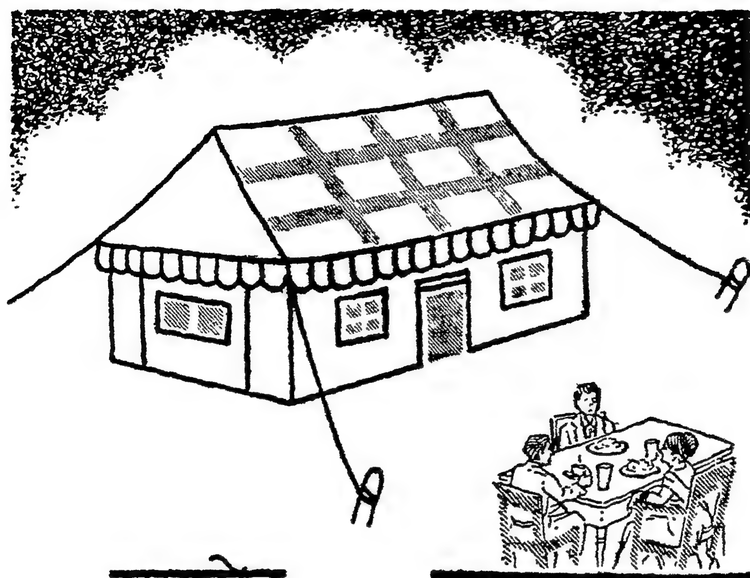
●



वन्दे मातरम् शताब्दी पर

हार्दिक अभिनन्दन

●



समारोह
डिनर
पार्टियों की
खूबसूरती
और प्रतिष्ठा
के लिए



रेल गाड़ी में यात्रा करते समय आपके पास या सह-यात्री के पास विस्फोटक पदार्थ का होना, अविलम्ब भयंकर खतरे को आमंत्रित करता है। इस प्रकार अग्निकाण्ड की घटनाऐं हो सकती हैं जिनमें जान व माल का नुकसान उठाना पड़ सकता है।

इसलिये

निजी सामान के रूप में—

- पटाखे और आतिशबाजी के सामान लेकर यात्रा न करें
- अतिशीघ्र जलने वाले सामान, ईंधन तथा विस्फोटक पदार्थ लेकर न चलें।
- सवारी डिब्बे के अन्दर लापरवाही से जलती माचिस की तीली अथवा सिगरेट आदि न फेंकें।
- सवारी डिब्बे के अन्दर स्टोव अथवा चूल्हा न जलायें।

ऐसा करना अवैध तो है ही, साथ ही खतरनाक भी है क्योंकि चलती गाड़ियों में अग्निकाण्ड की घटनाऐं हजारों लोगों के जीवन को संकट में डाल देती है। आप स्वयं ऐसी सामग्री लेकर न चलें और यह भी ध्यान रखें कि जिस डिब्बे में आप यात्रा कर रहे हैं उसमें कोई यात्री ऐसे पदार्थ लेकर सफर तो नहीं कर रहा है।

मुख्य जन सम्पर्क अधिकारी

पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा प्रसारित

वन्दे मातरम् शताब्दी पर
हार्दिक अभिनन्दन



वन्दे मातरम् शताब्दी पर

हार्दिक अभिनन्दन



वन्दे मातरम्

•

देश की आजादी

के

महामन्त्र—वन्दे मातरम्

के प्रति

हम

हार्दिक अभिनन्दन

व्यक्त

करते हैं

वेद प्रकाश ढींगरा

अध्यक्ष—वाराणसी जेसीज

संचालक–सालोमन फार्मा

पिपलानी कटरा, कबीर रोड

वाराणसी

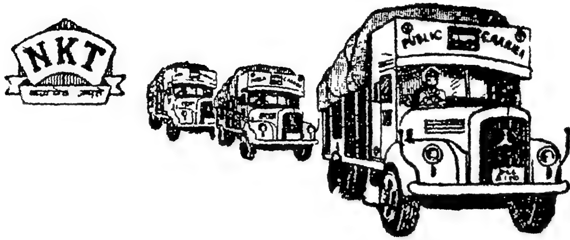
फोन : ६२२४२ : ग्राम - सालोफार्मा

वन्दे मातरम् शताब्दी पर

हार्दिक अभिनन्दन



न्यू काश्मीर एण्ड ओरिएण्टल ट्रांसपोर्ट प्रा० लिमिटेड



वाराणसी बुकिंग • ६५७७६ : डिलिवरी एवं आफिस : ६२४७१

मैनेजर • आवास : ६६४०४ : गोदाम : ६२२९१

एजेंसियां—उज्जैन, खलीलाबाद, आगरा, जयपुर, सीतापुर, लखीमपुर, गोरखपुर, अम्बाला, जम्मू, श्रीनगर (काश्मीर) बेंगलोर, बड़हलगंज, बड़ौदा, मैसूर, हैदराबाद, मद्रास, सलीम, त्रिचूर, सिकन्दराबाद, मदुराई, बेझवाड़ा, गोवा, बम्बई, ग्वालियर गाजीपुर, मेरठ, सूरत इत्यादि. **चेयरमैन एल. एच. कपूर**

- उत्तर प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ भार-वाहन स्वामी ट्रांसपोर्टर्स
  रजि० आफिस—फ्लैट न० १० नवीन मार्केट, कानपुर-
  फोन : ६७४५५

- सुविधाएं—इन्श्योरेंस कराने पर माल की पूरी जिम्मेदारी हमारी होगी.
  आपका क्लेम भी एक माह के भीतर चुकता कर दिया जायगा.

हमारी सेवाएं देश भर के सभी प्रमुख शहरों में उपर्युक्त ब्रांचों एवं एजेंसियों द्वारा प्राप्य हैं.

वन्दे मातरम्

शत्

शत्

अभिनन्दन



जगमोहन दास संतोष कुमार

सतीश कुमार विजय कुमार

मेसर्स विजय ब्रदर्स

गोदौलिया, वाराणसी फोन - ६७०७५

स्वतन्त्रता संग्राम

के

महाप्राण मंत्र

वन्दे मातरम्

के

प्रति

अगाध पूजा

असीम श्रद्धा

और

हार्दिक वन्दन भावना

के

साथ

समर्पित



